HINDI MSS

Two Manuscripts (Sangreh)

1. AKADISH SKAND by Sant-Dass (Bhagwat) BIK 1692

Trans. Punjabi to Hindi by Moti Ram Multani

2 Bani GRIB DASS (Page 145)

5/A

...ਤਸਨਾਲਭਗੋਲ

...ਨਤਾਕਟਾਮਾਕੀਆਗਾਗੀਆ

...ਣਾਗ ਮਗਜਅਪਸੋਗਥਾਠੀਆਵਣੀਆ

ਪਾਇਵਾਲਠੀਨੀ ਤਬਾਜੀਰ ਰੁਪੈਕੇਵਰਕ ਸੋਨੇਕਵਰਕ

ਮਿਸਰੀਜ ਮਾਨਪਾਵਣੀ

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री परमात्मने नमः ॥ दो 
हरा ॥ सतगुरदेव दियाल हूं मंगलमूरत लाल ॥ संतसु
हिरदै सुषकरि उमन भगत भावत तकाल ॥ १ ॥ बिर
द आपने की सदा लाज राषी ये संत ॥ सेवक जन निज
भगत देव मयावंत यसवंत ॥ २ ॥ अथ येकादसस्कं
कंद की भाषा लिष्यते ॥ चौपई ॥ संत दास सतिगुर के
चरना ॥ तिनकी गहों सु द्रिड कर सरना ॥ जांतें उपजे
ग्यांन विचारा ॥ छूटे भ्रम कर्म विवहारा ॥ १ ॥ बहुडों ज
गत जनम नहि आवों ॥ तिनको निजानंद पद पावों ॥
तिनकी आग्या हिरदै धरों ॥ लोक हितारथ भाषा करों ॥
२ ॥ श्री भगवांन बिरंचहि भाष्यो ॥ सो विरंच नारद सों
आष्यो ॥ सो नारद व्यास हि समझायो ॥ व्यास भागवत क
रि सुक हि पढायो ॥ ३ ॥ सो सुक कह्यो परीष्यत आगे
छुटयो छेत सुपन ज्यों जागे ॥ सोई सूत अजेहूं विसतारे
सहंस अठ्यासी रिषमुनि धारे ॥ ४ ॥ श्री भगवंत आप
ही भाष्यो ॥ ता तें नाम भागवत राष्यो ॥ आप मिलण
को पंथ बतायो ॥ यह मारग बहु तन हरि पायो ॥ ५
दोहरा ॥ व्यासदेव भागवत जो भाष्यो द्वादस सिकं
द ॥ तिन में येकादस कह्यो नैंन लहै ज्यूं अंध ॥ ६ ॥ चौ

पई॥। एकादसस्कतीसध्याइ॥ तिनकोंबक्ररोंकहोंसु
नाइ॥ यदऊलनासप्रिथमसेंगायो॥ बक्रतम्रांतवेरा
गजनायो॥ ७॥ हरिग्रुरपंथकह्योग्रुनचार॥ जनकहि
जोगेसरनविचार॥ सोनारदवसदेवदिकह्यो॥ पायो
ग्यांनपरमपदलह्यो॥ ८॥ छठेकिग्यानउधवप्रसता
व॥ तेईसकरिनिजग्यांनसुनाव॥ देजादवविनास
विसतार॥ एइकतीसग्यांननिजसार॥ ९॥ तबसुकजी
यहकरतअरंभ॥ स्रोताग्रिपतहांबिनदंभ॥ तबसु
कजीयहकरतविचार॥ ग्यांनविग्यांनकहोंउरधार॥
१०॥ तातेंब्रह्मग्यांनसमझावों॥ प्रिथमेंक्रिडवेरागज
नावों॥ पंषीउडेपंषदेजेसे॥ ग्यांनवेरागमिलेहरिऐसे
से॥ ११॥ श्रीसुकोवाच॥ राजासुनोजगतसुषजेसो॥
जिनसोंलागनरमतनरऐसो॥ नरैकोटछपनऊल
जादव॥ जूंघनघूमरचहूंदिसजादव॥ १२॥ तिनको
बक्रतम्रांतविसतारा॥ गनतीगनतनलहेकोईपा
रा॥ नवनआपनोंकवलाकीनो॥ नवनिधजहांबेस
२३ रालीनो॥ बक्ररसुधरमांसभामंगाई॥ बेठेजहांन
म्यापेकाई॥ तिनकीसमताकोंनबतावों॥ तीनलोक
मेंकहूंनपांवों॥ १४॥ तिनकीबातकहतअबऐसी॥

पलकमांहिसुपनेकीजेसी॥ चारघरीमेंसमनसंघारे २
जूंबुदबुदापवनकेमारे॥२५॥रामक्रिशनतहांको
तकहारे॥ आपआपमेंसमनसंघारे॥ विप्रश्रापको
कीनोसाज॥ ऐसमनक्रिशनदेवकेकाज॥२६॥ लोक
नकोंवैरागजनायो॥ उधवआदिग्यारसमझायो॥
प्रथमजीमअरजुनदेअनी॥ दुष्टनृपअरसैंनाह
नी॥२७॥ याविधभुवकोभारउतारयो॥ नामरूपय
सकोविसतारयो॥ यांकोगहेपकचेनवपारा॥ आ
गेजोजनहोतअपारा॥२८॥ बक्रतजांतकरिअद
भुतकरमां॥ थाप्योजगतभागवतधरमां॥ यावि
धसमनकेकाजसवारे॥ तबहरिजीबैकुंठपधारे॥२९ व
दोहरा॥ ऐसीसुनअदभुतकथापदअकलकोदिज
श्राप॥ प्रश्नकरीराजेतहांलखीऐतिनकोपाप॥३०
राजोवाच॥ चौपई॥ तिनतोविप्रजगतथेसारे॥ प
रमदांनअरसेवकन्यारे॥ विप्रकोपकीनोंकांपूरण
जांतेंनासजनऐसमनचूरण॥३१॥ कौंननमितआप
सोकौंन॥ कहोक्रिपाकरकरणांजोंन॥ एकमनायया
दवथेसारे॥ आपहिआपकौंविधमारे॥३२॥ श्रीसु न
कोवाच॥ भूकेभारहरनकेकाज॥ भूअवतारलीयाहु

ब्रिजराजा ॥ बहुबिध नृकों मारउ तासों ॥ तब मन नैमें
गोपाल विचारयो ॥ २३ ॥ जौ लग है जादव कुल सारो
तौ लग नहि नृ मारउ त्यासों ॥ मम अधीन रहैं एं
सारे ॥ तातें निज कर बनें न मारे ॥ २४ ॥ दूजो कोई
सकै न मार ॥ तातें कीजे यतन विचार ॥ जूं बहु बां
सब ढंबन मांही ॥ पवन नमित पारे धर पाही ॥ २५
आप आप मैं अगन उपावैं ॥ बांसों लाग सगल जल
जावैं ॥ तूं ही ईहां पवन दिज आप ॥ क्रोध अगनि
तहां आपे आप ॥ २६ ॥ कर विसतार होइ संघार
यह ठहिरायो क्रिशन विचार ॥ आऐ सकल रषी
सर नवन ॥ निकट षेत्र कर वायो गवन ॥ कनक
अंगरा विसामित्र ॥ दुरबासा भ्रिगु अत्रि असित्र ॥
कश्यप वांमदेव अर नारद ॥ और बहुत रिषस
कल बिसारद ॥ २७ ॥ तहां सजे मुन मुष सों बैठे ॥
यदकुमार तहां छल कर पैठे ॥ सांब हि बनता मे
षबनायो ॥ बसत्रादिक उदर अधिकायो ॥ २८ ॥ अ
ति विनीत सों चरनन लागे ॥ पूछें प्रश्न षरे तिन आ
त गे ॥ यह बनता पूछे दिजराजा ॥ सनमुष होत लगै अ
ति लाजा ॥ निकट प्रसूत आयो है यांको ॥ करो विचा

रआपमैंतांकों॥ ३मत्रिकालदरसीसज्जनजांनो॥ कारिजजे ३
मैसोहमहिबषांनक्क॥ २१॥ तबकरिक्रोधवचनतिन
नेमे॥ यदकुलनासमूसलाजने॥ जोतेजमसजमद
सोंमते॥ कउबुधजनरोसनजाने॥ २२॥ बैंनसुनतअ
तिजेमनआयो॥ तबतांकोउदरछुटकायो॥ देख्यो
तहांलोहकोमूसल॥ तबतिनजांन्योनाहीकूस
ल॥ २३॥ तिसजनबकतजीतपछतोये॥ लीएमूसल
राजापैंआए॥ उग्रसैंनसोंबोलेबैंन॥ आतमलीन
जोरैनदीनैन॥ २४॥ सुन्योआपआरमूसलदेख्यो॥ जी
वनसजनगयोकरलेख्यो॥ मूसलरेतचूरणोकर
वायो॥ क्रिशननपूछसमुंद्रबहायो॥ रेतरह्योकछ ३५
तोअतिउछ॥ तांकोनिगलगयोइकमछ॥ तेचूर
णलहिरनकेमारे॥ आएतीरजनएत्रिणनारे॥ २६
कीवरएकजालविसतास्यो॥ अवरनसंगमछसो
मास्यो॥ तांकेउदरलोहसोपायो॥ बधकएकसुबां
नबनायो॥ हरिजीबातसकलसोजांनी॥ बकतन
लीहिरदेमेंमांनी॥ जदपजोगहैंअनथाकरने॥ प
रमनमांहिसकलसंहरने॥ २७॥ दोहरा॥ यदहबैरा
गनिरूपयो ग्रंनकाजसुकदेव॥ ग्रंनकहोअबजो

कह्यो नारदसों बसदेव ॥ ४० ॥ इति श्रीभागवते महापुरां
णे एकादसस्कंधे पद ऊल श्री प निरूपणं प्रथमो
ध्याइ ॥ १ ॥ श्रीशुकोवाचा चौपई ॥ द्वारावती आप जहां पा
लिक ॥ तहां नउष आपको तालिक ॥ नारद तहां नि
रंतर आवे ॥ क्रिश्न देवका दरसन पावे ॥ १ ॥ जीवन
मुकत नजें नित जांको ॥ बंधे जीव तजें जे तांको ॥ तां
को सकल लोक मैं काल ॥ जहां तहां निसदिन बेहाल
२ ॥ मांनुष तन दूर्लभ सो राजा ॥ इहि तन हरिसेवा के का
जा ॥ बंछे जाहि ब्रह्म सुरराजा ॥ क्रिश्नदेव सेवा के
काजा ॥ ३ ॥ ऐसी देह भाग तें पावे ॥ हरिकी सेवा कूं
छुटकावे ॥ पल महि कटें काल के फास ॥ हरिको पावे
हरिको दास ॥ ४ ॥ एकवार वसदेव के भवन ॥ नारद
कीयो क्रिपा करि गवन ॥ तिन बहु बिध पूजा विसता
री ॥ तापीछे बांनी उचारी ॥ ५ ॥ श्री बसदेवोवाच ॥ हे
प्रभुजी तुम रो आगमना ॥ सब देहनको सुष को भव
ना ॥ तुप मांउ महि कवन की दीजे ॥ जिनके दरसस
कल मै छीजे ॥ ६ ॥ और देव दे वैं सुष दुषकों ॥ तुमसे
साध प्रगटे पर सुषकों ॥ जिनके रिदे बिराजे राम ॥
तिन तें होइ कों मन ही कांम ॥ ७ ॥ ऐसे फल दाइक स

नदेवा॥ ततोलहैकरेजितीसेवा॥ जांकरिकरलेदरप ४
नकोंकोई॥ आपकरेआजासेसोई॥ ८॥ उमसेसाधसदा
सुखदाई॥ जिनकीमहिमांकहीनजाई॥ यदिपदरस
मैंनयोकिरतारथ॥ पूर्छोदेवतथापिहितारथ॥ ६॥
जोभागवतधरमसुनजीवे॥ जनममरणातजअंम्रितपी
वै॥ जनआचरणनउमकोंदेवा॥ हरिप्रसंनसोभाखो
जेवा॥ १०॥ पूरबजनमसेवामेंकरी॥ मायामोहिसमझ
नहीपरी॥ तबमैंहरिचक्रकरखस्यो॥ ताहीतेंहोंनही
उधस्यो॥ ११॥ तातेंअबमैंउमरीसरना॥ सोकछुकरोमा
टेजोंमरना॥ कहींलोंकहींजगतकेदुख॥ जामहिसुपने
हूंनहींसुख॥ १२॥ जहांजहांजाइतहींतहांकाला॥ हरि
बिनजीवसदाबेहाला॥ ऐसेवचनसुनेजबनारद॥ त
बतेबोलेपरमविसारद॥ १३॥ श्रीनारदोवाच॥ धनव
सदेवधंनतववांनी॥ जांकरपूछेसारंगपांनी॥ कोईहो
इसकलजगघातक॥ विशनधरमतेंरहेनपातक॥ १४
श्रवनकीरतनआदरध्यांन॥ अनमोधनहूंकरेस्पांन॥
सोपुनीतहोवेततकाल॥ बक्रपरेनहीजमकेजाल॥
१५॥ उमयहकीयोबडोउपकार॥ सुहिसिमरायोसिर
जनहार॥ जांकोश्रवनकीरतनऐसा॥ अंधकाररवीसू

रजजैसो ॥ १६ ॥ उमसोंकहौंकथाइतहास ॥ जांतेंछूटेभव
केफास ॥ रिषभदेवकेसुतनवजोगेस ॥ तिनतेंसुन्यो
जनकनरेस ॥ १७ ॥ सुनकेब्रह्मपराइणभयो ॥ जनमम
रणसंसासभगयो ॥ अबउतपतकहतहौंतिनकी ॥ पू
रनप्रीतरामसोंजिनकी ॥ १८ ॥ सुयंभूमुनमुनसिरता
जा ॥ ताकोतनैंप्रियाब्रतराजा ॥ ताकेअगनिंद्रसुतभ
यो ॥ नाभजनमताहीतेंलयो ॥ १९ ॥ ताकेरिषभदेवअ
वतार ॥ जिनप्रगटायोब्रह्मविचार ॥ ताकेपुत्रऐकसो
भऐ ॥ सकलदेवकेपारहिगऐ ॥ २० ॥ तिनमेंबडोभरथ
आजि सेनामां ॥ जांकेरिदेवसेनितरामा ॥ जातेंभरथषंडयह
ता भाष्यो ॥ तजेनामननाभसोराष्यो ॥ २१ ॥ प्रिथमेबक्रुतजो
गिरेभोगा ॥ समऊत्यागपुनिलीयोजोगा ॥ मनवचकर
त मकरीहरिभगत ॥ तीजेजनमलहीनिजमुक्त ॥ २२ ॥
तिनमैंनवनवषंडनरेस ॥ ऐकअरअसीकरमउपदे
स ॥ नवतेमहाभागअधिकारी ॥ सभतजसेवेंसदामुरारी
२३ ॥ तेजेअनरथअरथविसतारे ॥ याबिधबक्रुतजी
वनिमतारे ॥ देहअतीतदिगंबरभेष ॥ सदारिदैमेंऐक
अलेष ॥ २४ ॥ कविहरिअंतिरिषपरबुध ॥ पिपलाइन
अवरहोतअरसुध ॥ द्रुमलचुमसकरभांजननाभ ॥ ६

नंनक्ककीयोब्रह्ममैंधांम॥२५॥आपआदिसंसारपसा ५
रा॥सनकरजांनेसिरजनहारा॥देतनावकोकीनोबंद
पाबिधविचरेंसनब्रह्मंन॥२६॥सुरअरसिधसाध
गंध्रब॥किंनरजषनागनरसरब॥सकललोकमैंइछा
चारी॥आदरहितसनमैंअधिकारी॥२७॥निमसोना
मजनककेरआ॥ऐकवारकीनीतिनजात्रा॥रविसेसो
नतजिनकीदेहा॥आवतदेषोजनकबिदेहा॥२८
राजाविप्रअगनिउठधाऐ॥आगेकेलेबेकोंआऐ॥क
मकमआंनधरेसिंघासन॥कमहीकमतेबैठेआसन
२९॥तबउठअंकमालराजाकर॥इकगोनवनसहित
हीमिलकर॥तबबोलेजोगेसरबांनी॥उमकोंमिले
ऐकठेआंनी॥३०॥तबहूंराजाबचनउचारत॥जीवन
पलकनाहिहूंसारत॥तांतेमिलनऐकगोकीनो॥मति
रहिजाइऐकदेचीनो॥३१॥दोहरा॥तबजोगेसरयोंक
ह्योउमबड़ोबिधअपार॥जगतयथारथउमलहीगों
नसहितनिरधार॥३२॥तबताहीकरपूजाकीनी॥कर
दंनोतप्रदषणादीनी॥अंकआजरणावसत्रबडूरंगा
तेसनसोनततिनकेअंगा॥३३॥गोंनविचारब्रह्ममय
ऐसे॥ब्रह्मपुत्रसनकादिकजेसे॥तबकरजोड़नयो

निरपगाढो॥ कोमलवचनप्रेमअतिबाढो॥३४॥ दोह
रा॥ तबनिरपकोआनंदबढ्योकछूनरहीसंभाल॥प्रे
मभगनहोइबोलियोबांनीपरमरसाल॥३५॥विदेहोवाच
उभयपारषदपरमहरिजीके॥मैंजांनेसज्जनमैंनीके
जीवनकेउधारबेकारज॥सकललोकमैंविचरोआ
रज॥३६॥धनमैंधनमेरोअवतारा॥जांतेपायोदरस
उभारा॥ नांनांजोंनजीवयहपावै॥मांनुषतनकबहूंद
कआवै॥३७॥याबिधनरदेहीबङभागी॥दुरलभसा
धूसंगनलहै॥जिनकेसंगमिटेभवबंधा॥मैंनअनंतल
२ हैनअंधा॥३८॥प्रांननाथहरिहिरदेबिराजे॥छूटेक
रमभरमभैभाजे॥आधोछिनहोवैसतसंगा॥सोऊक
रैजगतभैभंगा॥३९॥तातेंममसंदेहमिटावो॥परम
मोषसोमोहिजनावो॥भगवतधरमकहोविसतारी॥
जोमैंहोंसुनबेअधिकारी॥४०॥जिनतेंमिटेजगतभै
भारी॥बङरआपकोंदेतमुरारी॥ऐसुनवचनश्रव
नसुषपाए॥तबैंमांनदेबैंभअलाए॥४१॥कवोवाच
राजाप्रश्नानकरीउमअैसी॥वङभागीपूछतहैजैसी॥
निरभैपदरोकेहेदेवा॥हरिकेचरनकवलकीसेवा॥
४२॥तांकोछोभनकरैनरजोई॥दुषकोमूलङतोहैसोई

जहां जहां जाइ तहां उपजारी ॥ कालफास कहूं टरे न टा ६
री ॥ ४३ ॥ तातें कहों भागवत धरमां ॥ मिले राम छूटे भ्रै
मरमा ॥ श्री मुष श्री भगवांन सुनाये ॥ आप मिलण को
पंथ बताये ॥ ४४ ॥ मूरष हूं जे होवै कोई ॥ इन पंथ न ह
रि पावै सोई ॥ अमन होइ बिलं मन लागे ॥ भरम निसा
सू तो जन जागे ॥ ४५ ॥ आंष मूंद कै धावै कोई ॥ याहि
पंथ न कछु भै होई ॥ मन करम वचन बुध अरचित ॥
होइ सुभाव इन हूं तें मित ॥ ४६ ॥ सो सब हरिहि समर जो
पन करे ॥ यों भागवत धरम विसतरे ॥ जब यह जीव
हरिहि विसर्यो ॥ तब हरि की माया आवर्यो ॥ ४७ ॥ त
ब आपनों सरूप भुलायो ॥ आप मांन तन मैं मन लायो
दैत भाव तब तें उपनयो ॥ ताही तें यह मरमर जनमि
यो ॥ ४८ ॥ तातें बुध सेवै हरि चरना ॥ जांतें मिटे जनम
अर मरना ॥ सोध लेत उतम गुरदेवा ॥ हरि को जांन क
रे ता सेवा ॥ ४९ ॥ सो जूं जूं आचरन बतावै ॥ नूं त्यों ही
तूं हरि सों चित लावै ॥ कपट न भ्रजे तजे सनकांम ॥ छू
टे जगत मिले तब रांम ॥ ५० ॥ वे तक छूटे है न हि रामा
आसा स्यों सो मन को कांमा ॥ जैसे मिथ्या मनोरथ सुप
ना ॥ मन हीं करते दोनों उपना ॥ ५१ ॥ है कछु न हि पंर

हैसोसोहै॥ ताकेसंगलागसमोहै॥ तासंकलपविक
लपनकीजै॥ मनकिडराबरामरसपीजै॥ पर॥ हरि
केजनमकरमगुणनामा॥ सुनेकहैसुमरेसचजा
मा॥ तजैलाजहोवैनिहसंगा॥ मगनरहैनितहरि
केरंगा॥ ५३॥ ऐसेभजतप्रेमअधिकावै॥ तबतन
रोमंचितहोइआवै॥ गदगदसबदअटपटेबैंना॥
द्रवैचितजलबरषैनैंना॥ ५४॥ रोवैहसेऊचेसुरगा
वै॥ कबहूंमौंनगहैघटजावै॥ लोककेवदकुललाज
नआंनै॥ जंउनमतविवस्योगंनै॥ ५५॥ दसदिससि
रतसिंधनगनागा॥ रविससितालहंसअरकागा॥
षितजलपावकपवनअकासा॥ जोकछुदेषैसोह
रिदासा॥ ५६॥ हरिकोरूपसकलकोजांनै॥ जहांतहां
परनामहिगंनै॥ कबहूंभूलनजांनेआंना॥ जैया
अननभजेनगवांना॥ ५७॥ ज्योंज्योंबढैक्रियाअनअ
नरागा॥ त्योंत्योंऔरसकलकोत्यागा॥ त्योंत्योंअनभ
वजोतप्रकासा॥ तोषपोषअरभूषनिवासा॥ ५८॥
याबिधकरतेसाधनजगत॥ हरिजीसौंबाढैअनरक
त॥ तबकछुभूलअवरनहिभासै॥ तबहीहिरदैबू
हंसप्रकासै॥ ५९॥ बूझ्योएकदसहूंदिसदेषै॥ घेतंनाव

करकदेनलेषे॥ऐसेग्रंगभागवतमांही सोहरिमेंहैं ७
जगमेंनाहीं॥९०॥दोहरा॥रिसुनकवजीकेवचनकी
नीप्रश्नानविदेह अबभागवतकेकहोलषणाकर
णांग्रेह॥९१॥विदेहोवाच॥चोपई॥प्रनजीकहोभा
गवतलषण॥जिनवसहोवेरामविचषणा॥कवन
सुभावनिरंतरतिनके॥द्वैतभावनाहीउरजिनके
९२॥बोलेहरिजोगेस्वरहूजे॥त्रिपकेवचनबक्तत
तिनपूजे॥९३॥हरिरोवाच॥इसथावरजंगमसूष
मइसथूला॥रिकप्रक्रितसबकोहेमूला॥सोइकआ
तमकेआधारा॥सोआतमअंसनिरंकारा॥९४॥ह
रिजीतेंउपजेरेहोई॥अंतलीनहरिजीमेंहोई॥ता
तेंअबहूंहरिकोजांने॥द्वैतभावकबहूंनहीआंने
९५॥ज्योंसागरबुदबुदातरंगा॥योंसबजगतजगत
पतसंगा॥याबिधजांनभयोजोधीरा॥सोहरिजनउत
मकहेबीरा॥९६॥जांकोहरिसोंउतमप्रेमा॥अरहरिज
नसंगतनितनेमा॥सबजीवनपरकरनाआंने॥स
बउधरेंहिरदेयोंजांने॥९७॥जोकोईतापरदोषहिगां
वे॥तहांभुजंगमजूंतजभावे॥निसदिनरहेरामरंगरा
ता॥सोहरिजनमधमकहेताता॥९८॥जोमूरतमेहरि

कोजांने॥ मनकर्मवचनग्रांन नही मांने॥ ताकोपूजे हा
तचित लाई॥ कछू न मांगे सहिज सुभाई॥ ६९॥ हरिज
न मांहि जे हरि जांने॥ सतगुर बिना नही पहिचांने
सत्र आतम मैं हरि को जांने॥ सो प्राक्रित जन साधब
षांनें॥ ७०॥ बहुर कहो उतम हरि जगत॥ जाही पुरष
हूजे आसकत॥ दरस परस तें कारज सारे॥ ते हरिज
न त्तवहू षनिवारे॥ ७१॥ क्रिशान वसे जाके मन मांही
औरस ति कछु जांने नाही॥ जो कछु के देसु नेत्र र देषे
इंद्रे क्रित सत्र माया लेषे॥ ७२॥ सो हरिजन उतम मह
रिसेवा॥ तातें मिले निरंजन देवा॥ जे जन ब्रह्म विचा
रहि पायो॥ आप सम सुष मांहि समायो॥ ७३॥ ज
नम मरन देहके जांने॥ षुध्या त्रिषा कों प्रांणहि मांने
त्रिसना बुध अरु चैन सो मनको॥ यह लषण उतम हरि
जनको॥ ७४॥ करम वास ना अरु सजनकां मां॥ तिनको
जूल न जांने नामां॥ वासदेव मैं कीनो वासा॥ सो कही
ये उतम हरिदासा॥ ७५॥ तिनके जात वरन कुल धर
मा॥ लोक वेद नाहीं आश्रमा॥ जूल देह अभिमांन न
भावै॥ सो उतम हरि दास कहावै॥ ७६॥ किसी वसत
पर ममता नाहीं॥ अरु तन को अभिमांन न ताही॥ स

मनूतनपरसमताआंने॥ सोउतमहरिदासबषांने २
७७॥ अष्टसिधत्रिभवनसुषआवै॥ तापरकबहूंन
मनमोलावै॥ लवनिमिषारतजे नहिचरना॥ गुणाती
तनिरलैपदसरना॥ ७८॥ जांकोशिवबिरंचमुनदेवा
तनमनलाइकेरैनितसेवा॥ तेऊजाकेचरननपावै॥
ताको जनक्यूंकरछुटकावै॥ ७९॥ हरिकेचरनचंदद्व
तजांके॥ त्रिहूंतापउठेक्यूंताके॥ असोहरिजनउत
मकहीऐ॥ ताकेसंगपरमपदलहीऐ॥ ८०॥ तांकोंहरि
जी निमिषनत्यागे॥ प्रेमडोरबांधेक्यूंभागे॥ सोकहीऐ
उतमहरिदासा॥ कदेनतजीऐताकोपासा॥ ८१॥ दोह
रा॥ त्रिविधभगतलषणाकहेनृपसांहरिजोगेस
तबमायाकेजानबेकीनीप्रश्ननरेस॥ ८२॥ इतश्रीभा
गवतेमहांपुरांणेएकादससिकंदेश्रीनारदवसदेवसंबा
देजायंतेजोगपाषांनेदुतीयोध्याइ॥ २॥ जनको॥ अबकर
क्रिपाकहोहरिमाया॥ जिनयहसकललोकभरमा
या॥ उभरेमुषसरोजकीबांनी॥ हरिकीकथाअंम्रित
मैमांनी॥ १॥ ताकोपीवतत्रिपतनमांनो॥ सदापीवों
असीमनजांनो॥ भवकेतापतपतजोदेही॥ ताकोंपर
मऔषदीएही॥ २॥ असेसुनत्रिपतकेबेंना॥ वकताको

उपजावनतेचेंना॥ तबबोलेवांनीअग्निरामा॥ तीजेअं
तरिषसेनामां॥ ३॥ अंतरिषेवाच॥ प्रिथमेंद्रजोकु
तोननामा॥ आपहिआपबिराजहिरामां॥ दयासें
हि धमनमांविचारा॥ तबयहकछ्योसकलसंसारा॥ ध
पंचभूतनकररच्योदेहा॥ बंध्योतहांआतमांएहा
जांतेपहिलेंजोगवैजोगा॥ बकरोंकुषतदोइजनवेरा
गा॥ ५॥ तातेंमोसांचितलगावे॥ मेरोनिजानंदपद
पावे॥ मगनरहेमेरेआनंदा॥ बकरनमापेकुषत्र
रकुंदा॥ ६॥ याहीतेंयहजैविसतास्यो॥ भीतरअंस
आपनोधास्यो॥ इंद्रेदसअरमनविसतारे॥ बकत
मांतकेविषेपसारे॥ ७॥ सोयहअंसईस्त्रीअरमन
सो॥ जोगजोगवैसनहीतनसों॥ आपमूलजोगन
मेंदीयो॥ तबअग्निमांनदेहकोकीयो॥ ८॥ जोगन
मितकरमविसतारे॥ तिनेफलसुषकुषजेरनारे
तिनकरमनतेंजोंनअनंता॥ जनममरनकोलहे
नअंता॥ ९॥ पलेअवधलोंचूमेंनिरंतर॥ लीनहो
इपुनमायाअंतर॥ श्रिष्टसमेंबकरोंतनपावे॥
भवसागरकोअंतनआवे॥ १०॥ भ्रमतभ्रमतपलें
औधआवे॥ तबसतजनासकालमनभावे॥ तबआ

तवरषनवरषेजलधर॥तिजतपैतबबादसदि ५
नकर॥११॥बक्रैअगनिससमुषनिसरै॥पैले
अंचधपवनमिलपसरै॥सारेलोकजसमतबक
रै॥बक्रैंपैलेमेघसंचरै॥१२॥हाथीसूंढधारा
जलवरषै॥यौंअबकोबीतेथ्रातवरषै॥तबहोवै
विराटकोनासा॥आतमकरैप्रक्रितमैंवासा॥१३
जोअजगतहोवैब्रह्माहूं॥तोहूंब्रह्ममांहिनहिगं
ऊं॥जोहरिजगतहरिहितेपावै॥अवरप्रक्रितमैं
सकलसमावै॥१४॥पवनकरैगंधहिजबषीन॥
भूमहोइतबजलमैंलीन॥तूंहीरसकोहरैसमीर
तातेंमिलैतेजमैंनीर॥१५॥अंधकारजबरूपहि
हरै॥तिजतबपवनहिसंचरहि॥बक्ररसपरस
हिहरैआकास॥पवनकरैतबनभमैंवास॥१६॥
कालकीयोजबसबदहिषीन॥तांमसअहंकारतं
मैंबनभलीन॥तांमसअहंकारनभमैंमिलै॥राज
सअहंकारदोऊतबगलै॥१७॥इंद्रेअरराजसअ
हंकारहि॥सातकअहंकीनोअहारहि॥बुधिदेव
सातकअहंकारा॥महातत्वकीनोसंघारा॥१८॥म
हाततसोप्रक्रितमिलै॥याविधकालसकलको॥

गले॥ ऐसेही विधवारंवारा॥ उतपत प्रलै अनंत प्र
कारा॥१९॥ यह सब हरि की माया करै॥ उपजावै
प्रतपालै हरै॥ मैं तुम को संषेप सुनाई॥ बकुसैं क
हो प्रभु मन लाई॥२०॥ दोहरा॥ ऐसी सुनि माया
प्रबल उपजो नृप को चीत॥ तब पूछी आधीन हो
इ तांतर बे की रीत॥२१॥ राजोवाच॥ ऐसी प्रबल
ईश्वर की माया॥ जिन यह सकल लोक भरमाया
तां को तुम से ग्यानी तरें॥ हम से देही क्यूं निसतरें
२२॥ ता को सुमें नहीं तरी पदेवा॥ सो कर कृपा बता
वो भेवा॥ ए सुन वचन निरपत के सुध॥ तब बोले
चौथे प्रबुध॥२३॥ परबुधोवाच॥ सकल मनुष सुष
न के काजा॥ करे करम आरंभे राजा॥ तिन तें केव
ल दुष अधिकारा॥ अब हूं अर आगे विसतारा॥ २
४॥ पायो धन बहु दुष अपारा॥ निस दिन चित को आ
धकारा॥ सो कुअतिडु रलैं जन महि आवै॥ जो आवे
सो थिर न रहावै॥२५॥ तां ही ग्रहि कुटंब सुत दारा
पलक मांहि ढहि जाइ पसारा॥ जूं पंथ मांहि मिल
नो होई॥ घडी इक मांहि विछडे सजन कोई॥२६॥ जो
पावै कछु इहां करम कमावे॥ तिन तें जोंन जोंन दुषा॥ इव

मैंकोईनांहिकछुभावै ॥ आपआपकोमननकोजावै ॥ २७
याहीबिधनरसुरअरलोका ॥ थिरनरहैहबिधहूंको
ओका ॥ छोटेबडेनीचबहुजांती ॥ तिनकेमनकी
मिटेनभ्रांती ॥ २८ ॥ मदमतसरअरचाहेमांना ॥ कां
मक्रोधअरलोभसमांना ॥ त्रिमनोबंधेकछुनहिजां
ने ॥ आपआपमैंयुधहिठांनहि ॥ २९ ॥ कालपाइकु
हांतेंमरे ॥ बहुरोंआइईहांअवतरे ॥ योंविचारवै
रागउपावै ॥ तबहिसोधगुरुचरनीआवै ॥ ३० ॥ स
बदब्रह्मसकलजोभाषे ॥ परंब्रह्मनितहिरदेराषे ॥
ऐसेगुरबिनग्यांननपावै ॥ तांतेंसोधगुरूपैआवै
३१ ॥ ब्रह्मजांनतासेवागंने ॥ आलसकपटकांमनां
मांनै ॥ तांतेंसिषेजगतकेअंगा ॥ जिनतेंहरिजीत
जेनसंगा ॥ ३२ ॥ सजतेंमनकोसंगमिटावै ॥ उलट
साधसंगतसोंलावै ॥ अरदीननपरकरनाआंनै ॥
समभित्रताउतमबहुमांनै ॥ ३३ ॥ सोचपावतपमां
नतितिष्या ॥ बहुबिधगुरतेंलेवैसिष्या ॥ ब्रह्मचर
जेअरकोमलरहनां ॥ हिंसात्यागदंदसमसहिना
३४ ॥ एकाकीआश्रमनहीबांधे ॥ वसत्रेटूककेवल
कलसाधे ॥ जहितहिचेतनआतमदेषे ॥ परमात

मांनियंतालैषे ॥ ३५ ॥ ग्रंथ भागवतसरधाकरै ॥ निंद्या
रागद्वेषपरहरै ॥ दृढवचनअरमनकोदंडे ॥ समद
मसतसंतोषमनछंडे ॥ ३६ ॥ जनमकरमअरगुणहि
रिजीके ॥ सदासुनैउधारनजीयके ॥ योंहीकरैनिरं
तरध्यावै ॥ सोईकरैहरिहिजोभावै ॥ ३७ ॥ जपतपयो
यग गब्रततनपदांना ॥ तनमनदारासुतप्रांना ॥ जोकछ
धन सोसनहरिहिनिवेदै ॥ याविधसकलकोमनाछेदै ॥
३८ ॥ इसथावरजंगमहरिमहिजांने ॥ परसेवासाध
नकीठांने ॥ निलेपरसपर हरिगुणगावै ॥ नि
सदिनकहतसुनतसुषपावै ॥ ३९ ॥ पलपलप्रीत
बढेहीयाफूले ॥ गुननसंज्ञालतननकोभूले ॥ दू
जोभावनकबहूंउपंने ॥ प्रेममगनजाग्रतअरसुप
ने ॥ ४० ॥ ऐसेप्रेमभगतकोपावै ॥ पलपलतनपुल
कतहोइआवै ॥ कबहूंहरिचितवनतेंरोवै ॥ कब
हूंहसेअनंदतहोवै ॥ ४१ ॥ कबहूंनाचेकबहूंगावै
लाजरहितजूंजूंमनआवै ॥ कबहूंगुनसिमरत
मिलजावै ॥ सासबदबाहरिनहींआवै ॥ ४२ ॥
याविधलेवैगुरसिषा ॥ गुरसिषनकीयहीपरिष्या
न बूझपरांइणताजनकेरै ॥ मायाभूलआवेनेरै ॥ ४३

दोहरा॥ यहसुनवचनविदेहजबहिरदैबहोआनं ११
द॥ प्रश्नकरीतबब्रह्मकी जांसूटेजमफंद॥४४॥
विदेहोवाच॥ चौपई॥ ब्रह्मवेतनमेंउतमअधिका
री॥ यहमेंहिरदेसतविचारी॥ तातेंकहोब्रह्मकोरू
पा॥ जातेंजांनमिटेभवकूपा॥४५॥ परमातमांब्र
ह्मभगवांना॥ ऐसभनेरोककिधोंहैनांनां॥ सभजीव
नकोअतिकरणांइन॥ तबबोलेपंचमपिपलांइ
न॥४६॥ पिपलाइनोंवाच॥ सूक्षमइसथूलसकल
संसारा॥ जाकीसकतसकलविसतारा॥ उतपतप्रले
करेवकृयांको॥ काहूकृतेजनमनहीतांको॥४७॥
जाग्रतसुपनसुषोपततुरीया॥ सभमेंसदाऐकरस
भरीया॥ इंद्रेदेहहिरदेअरप्रांना॥ जांतेचलनहो
ऽवरतांना॥४८॥ जेसेंयहजडलोहावरते॥ चुंब
कसंगबकृतबिधनिरते॥ सोभगवांनब्रह्मपुन
सोई॥ सोपरमातमजांनेकोई॥४९॥ मनअरबुध
चितअरप्रांना॥ इंद्रीदेहसबदअभिमांना॥ कोई
ताहिपकृचनहीसकें॥ जातेंजातसभेओरेथके॥५०
जेसेपावकलोहतपायो॥ पावकसमांनतेजतिन॥
पायो॥ सभप्रकासेसभको जाले॥ परपावकपरजो

रनचाले ॥५१॥ यौंसबइंद्रीरिदैअचेतन ॥ तांकेसंगक्त
तैबक्तचेतन ॥ अवरसकलअरथनकोजांने ॥ कव
नसकतजोताहिपहिचांने ॥५२॥ लेअरथवषांनेवे
दा ॥ परपरतछनजांनेभेदा ॥ यहनहियहनहिय
हनहिहोई ॥ यांकेपरेसतहैसोई ॥५३॥ सूषमइसथू
लनजांनेवरना ॥ गगनपवनपावकजलधरना ॥ न
हिमनचितबुधअहंकारा ॥ सतचिदानंदमैसबके
पारा ॥५४॥ नांसोबालवृधअरजुवा ॥ नांसोबिनसे
नासोऊवा ॥ त्रियापुरषकलेवरनहोई ॥ सुरनरना
गअसुरनहिकोई ॥५५॥ रकतपीतसेतअसेतनह
रता ॥ जातवरनआश्रमनहीधरता ॥ सीतनउसन
हि चंदनसूरा ॥ दिवसनरातनिकटनहिदूरा ॥५६॥
सुषदुषकहतवसेमनमांही ॥ आपहिआपमिलै
कहूंनाही ॥ बंधेभावसुआतमअंसा ॥ सुनसरोवर
विलसैंहंसा ॥५७॥ गगनपवनपावकअरनीरा ॥ ध
रनबंधसबकीएसरीरा ॥ पंचवसतएपंचोबंधा ॥
सबदसपरसरूपरसगंधा ॥५८॥ इंद्रीदसअरति
नकेदेवा ॥ सांतकराजसतामसभेवा ॥ मनबुध
चितमहततत्अहंकारा ॥ एकप्रक्रितकोसकलपसा

रा॥८०॥ ऐक ब्रह्म है ताको कारन॥ बिन इछा सब जनको
विसतारण॥ ज्यूं नभ मांहि घट मट उपजावै॥ नभ महि
रहि नभ मांहि समावै॥८१॥ तैसैं जग घट दीसैं बिधि नांनां
पर नभ भेद नहीं कछु आंना॥ त्यूं सब जगत आदि अ
र अंता॥ और न कछू ऐक भगवंता॥८२॥ सो हरि उप
जै बिनसै नांही॥ बाल जुवा दिपरै नहि छांही॥ बढै न घ
टै चलै नहीं डोलै॥ रोष न तोष मोंन नहीं बोलै॥८३॥
जहां तहां पूरन परम अनूपा॥ चिदानंद विग्यांन सरू
पा॥ देह भेद बहु दासो सो है॥ ग्यांन बिना सारो जगमो
है॥८४॥ जेस्य पवन रोकही प्रांना॥ दस इंद्री संग दीसैं नां
नां॥ उतनुजसेत अजैरजअंमा॥ चारषांन पूरन ब्रह्मं
मा॥८५॥ लिंगदेह जां देह इक जावै॥ प्रांनवाइ तहां
आइ समावै॥ सबद सपरस रूप रस गंधा॥ मन अहंका
र चित बुध बंधा॥८६॥ लिंग देह इन हीन व कोहै॥ यां
के मिटे निरंजन सो है॥ निंद्रा वस सुषपत जब आवै॥
तब यह लिंगा देह छुटकावै॥८७॥ अहंकार ममताक
हूं नाही॥ मन अर बुध चित समजाही॥ तब अद्वैत रो
कहै सोई॥ द्वैत भाव कों नाम न कोई॥८८॥ मन बुधि चि
त अहंकार न रहै॥ जाग्रत विषय न बात को कहै॥ जो कर

नोथोसोतोकीयो॥ आगेपाछेलीयोदीयो॥ द्ध्य॥ तोतेसो
हरिजांननहारा॥ याबिधकीजेब्रह्मविचारा॥ परवा
सनांसहितहीरहै॥ तातेंदेहफेरकरलेहै॥ ७०॥ लिं
गसरीरसहितवासना॥ ताहिमिटेनाहीजवसासनां
तातेंहरिचरननचितलावे॥ औरसकलबंधछुटकाा
वै॥ ७१॥ याविधसकलचितमलनासे॥ रवसमांनत
बब्रह्मप्रकासे॥ जोनरप्रिथमजगतनहिजाने॥ तो
वऊकरमजोगकोंठांने॥ ७२॥ करमजोगतेंउपजेज
गत॥ तबहरिचरनबढेआसकत॥ तातेंहोइब्रह्मप्र
कासा॥ छूटेकालजालजवफासा॥ ७३॥ दोहरा॥ रोपा
पलाइनकेबेंनसुनकीनीप्रश्ननरेस॥ करमजोगअब
करिक्रिपाकहोपरमजोगेस॥ ७४॥ विदेहोवाच॥ चौ
पई॥ करमजोगअबकहोगुसांई॥ जांकेसुनेचितभ्र
मजांही॥ जांकेकीयेकटेसवकरमां॥ उपजेंसांनहो
इनिहकरमा॥ ७५॥ हूजेप्रश्नकरोतुमरोहा॥ यांकेमे
रेअतसंदेहा॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचारी॥ ब्रह्मपरा
इनब्रह्मविचारी॥ ७६॥ एकवारकिरपाकरआरो॥ पा
तासमीपदरसमैंपाये॥ यहीप्रश्नमैंतिनसोंकीनी॥ उ
तरनदीयोरिदेधरलीनी॥ ७७॥ बोलेनहीसोकववने

कारणा ॥ यहनाम्रोभवसागरतारणा ॥ ऐसेवचननृ
पतजबभाषे ॥ अवरहोत्रछठेतबभाषे ॥ ७८ ॥ अव
रहोत्रोवाच ॥ राजासुनोकरमगतगहना ॥ जांतेजहां
तहांबनेनकहना ॥ यहजांहेतूंबेदबषांने ॥ तातेंया
हिनकोईजांने ॥ ७९ ॥ वेदप्रगटकरताहरिदेवा ॥ रि
षअरपुरषलहेकोऊभेवा ॥ भेवलहेबिनमिटेनभ
रना ॥ लहेभेवपावेहरिचरना ॥ ८० ॥ तांतेउमहोतेत
बबोला ॥ तांतेंकह्योनकरमबिसाला ॥ अबमेंकहोंसु
नोचितलाई ॥ जांतेहोवेज्ञांनअधिकाई ॥ ८१ ॥ करमजो
गहेतीनप्रकारा ॥ करमअकरमविकरमपसारा ॥ हरि
नमितसोकहीएकरम ॥ हरिविहीनसोसकलविक
रम ॥ ८२ ॥ सोअकरमजोदोऊत्यागे ॥ बिनाज्ञांनसुष
देहोनआगे ॥ करमकरतसनछूटेकरमां ॥ उपजेज्ञांन
मिटेभयभरमा ॥ ८३ ॥ करमतजनकोकरमगहावे
तातेंभेदनसमझेआवे ॥ पहिलेसुरगादिकफलभाषे
आगेसकलहूरकरनाषे ॥ ८४ ॥ जूंकोईबालकरोगी
होई ॥ औषदकटकनामसुनरोई ॥ ताकोलाहूपिता
दिषावे ॥ औषदकाजलोभउपजावे ॥ ८५ ॥ औषदका
फललाहूनाहीं ॥ औषदपीवेरोगतबजांहीं ॥ तूंसु

रगादिक लोक दिषावे ॥ करम आतर कों करम करांवे ॥
२६ ॥ सुरगादिक फल पकृपत बांनी ॥ तो रे पुहप है
त फल हांनी ॥ तांतें करे वेद के करमा ॥ हरि के हेत ब
नो यह धरमां ॥ २७ ॥ और कछू फल मूल न जांने ॥ ह
रि के हेत करम सब ठांने ॥ मैं करता यों कदे न भाषे
जो कछु सो हरि का करि राषे ॥ २८ ॥ या बिध प्रेम मग्न ग
त उपजावे ॥ तब सब करम आपही जावे ॥ तब ही
उपजे ग्यांन प्रकासा ॥ मिले राम छूटे भव पासा ॥ २९ ॥
वेद क पंथ कह्यो मैं तोसों ॥ अब सुन तंत्र पंथ कुंन मो
सों ॥ हिरदे गांठ काटी जो चाहे ॥ सो विध सों पूजा अवगा
है ॥ ३० ॥ वेद विहत भाषत हां पूजा ॥ जां ते मिटे सकल
भ्रम दूजा ॥ श्री गुर के प्रसादि ते पावे ॥ सो ज्यों ज्यों करि वा
ध हिब तावे ॥ ३१ ॥ जां मूरत पर इछा होई ॥ हरि है जांन
करि पूजे सोई ॥ अ तपवित्र होइ करे इसनांनां ॥ मन की
तजे वासनां नां नां ॥ ३२ ॥ वाइ अपांन छीक जंनाई ॥ अ
वर पवन गुन रुठे न काई ॥ सन मुष बैठ करे तन रष्या
अंगन्यास मंत्र पढइ ष्या ॥ ३३ ॥ आसन सोध सों जस वा
की ॥ सत्र लेबे ठेत जेन बाकी ॥ विश्रान रूप प्रत मां मैं श्रां
मैं ॥ अरघ पाद अर [illegible]से वा [illegible]ठांने ॥ ३४ ॥ मूल मंत्र कर

पूजाकरे ॥ औरनकहूवचनउचरे ॥ सकलअंगहरि 
जीकेध्यावै ॥ संषचक्रगदापदमभिलावै ॥ ९५ ॥ भूष
नवसत्रपारषदसहिता ॥ हसतवदनदेषतदुषद
हिता ॥ विविधभांतहूसनांनकरावै ॥ करितिलका
दिकवसत्रपहिरावै ॥ ९६ ॥ बहुसुगंधमालापहिरा
वै ॥ बहुतभांतकरिभोगलगावै ॥ गंधधूपआरतीस
वारे ॥ घंटानादसबदविसतारे ॥ ९७ ॥ तापीछेउसत
तउचरे ॥ याविधमंत्रनसोंसनकरे ॥ बहुरोंकरेदंडो
तप्रनामां ॥ पढेमंत्रलेवैहरिनामां ॥ ९८ ॥ बाहरवस
तमिलेतेआंने ॥ औरनसोंमिलपूजाठांने ॥ तनमन
नयेनिरंतरसेवै ॥ ममप्रसादिमाथेपरलेवै ॥ ९९ ॥
बहुरदेवकोहिरदेधरै ॥ मूरतमंजमपरिवेकरै ॥
याविधहरिकोआतमजांने ॥ यथासकतसनपूजा
ठांने ॥ १०० ॥ ऐसेसेवतउपजेग्यांन ॥ बेगहीआइमा
लेभगवांन ॥ तबहीआतमअनभवहोई ॥ परमा
तमपदपावैसोई ॥ १०१ ॥ दोहरा ॥ ऐसुनेवचनवि
देहजबबाढोमनमेंप्यार ॥ तबगुनअरकरमहि
सहितपूछेहरिअवतार ॥ १०२ ॥ इतश्रीभागवतेम
हांपुराणोएकादससिकंदेश्रीनारदवसदेवसंबा

द्वितीयाध्याइ॥२॥ राजोवाच॥॥ अबअवतारकथा वि
सतारो॥ गुनअरुकरमसहितउचारो॥ जेजेलीऐखे
हिगेआगे॥ अबहूंसुननाचाहोअनरागे॥१॥ ऐसुनज
निकनिरपतकेबैंना॥ क्रिपासिंधकरनाकेअैं ना॥ त
बसातवैंद्रमलसेनांमा॥ बोलेवचनपरमअभिरामां
रा॥ द्रमलोवाच॥ जेअनंतकेगुनअवतारा॥ तिनको
न्रिपतकोऊलहैनपारा॥ भूमरेणकेजोकोऊगने॥
सोऊकहांसकलगुणजानै॥२॥ हरिकेगुनअवतार
अनंता॥ बालबुधजोचाहेअंता॥ तंतिकछुहौंकमैंगा
वों॥ तेंरेरिदैनसंसाराबो॥४॥ पंचभूतनिरमतब्रह
मंडा॥ राखोनीरमांहिजोअंडा॥ तामहिअंसआप
नोधार्यो॥ सोहैआदिपुरषअवतार्यो॥५॥ जिनकी
देहूंतेंसबदेहा॥ देहमांहिवरतेसबऐहा॥ तिनके
अंगनकेसबअंगा॥ इंद्रीअहंबुधबडरंगा॥६॥
सतरजतमहूंतेसकलपसारा॥ उतपतअरुपालन
संघारा॥ प्रिथमैंरजतेंब्रह्माकीयो॥ सांतकजनम
विश्नकोदीयो॥७॥ तांमसकरिशंकरउपजोए
तिनसोंसकललोकप्रगटाए॥ ब्रह्मारचेविश्नप्र
तपाले॥ हरेरुद्रयोंत्रवपथचाले॥८॥ बडरसुनो

हरिके अवतारा॥ भवसागरके तारनहारा॥ धरमपिता २५
अरमूरतमाता॥ तहां नरनारांइन सुत विष्याता॥ ९॥
आतमग्यांन जगत विसतारे॥ जांसो लागजीवनिसता
रे॥ कबहूं प्रगट करे आचरना॥ नारद आदि नरसेवेंच
रना॥ १०॥ ऐकवार सुरपत मनआंन्यो॥ ममलोक हिले
हे यों जांन्यो॥ तब तिन अपछराकां प्रहिदीनी॥ कांमसंग
सैं नाव कुलीनी॥ ११॥ रंभादिक अपसरा अपारा॥ त्रिवि
धिपवन बसंत पसारा॥ वद्रीषंड सबै चलआये॥ नरना
रांइन तहां बेठे पाये॥ १२॥ जरजरबांन न हने सरीरा
निहफल जरे अगनि ज्यूं नीरा॥ तब तेरांमरांमथर
राने॥ आप अगनि जीवन मांने॥ १३॥ हरि अपराधइंद्र गत
क्रितजांना॥ हसबोले तिनसौं भगवांना॥ मतभैकरी
पंचसखीरा॥ दिवनार भव प्रांन समीरा॥ १४॥ बैठोइहां
अथित करावो॥ हम आश्रमसफल करि जावो॥ ऐसुन
अभैदांन के बैना॥ तेसभ जो रसके नहीनैना॥ १५॥ लज्जा
धार निवाऐसीसा॥ बोले वचन जांन जगदीसा॥ हे प्रभु य
ह कछु नाहि अचंभा॥ तुम हो पुरष प्रक्रित के थंभा
१६॥ निरविकार निरगुन निरभेदा॥ जिनको जांनस
केनहीवेदा॥ निजानंद पूरन मुनसारे॥ तेसेवतहेंच

रन उमारे ॥१७॥ उमरे चरनसरन जो आवे ॥ तिनको सुरख
कुविघनप गवे ॥ तीनों लोक दैवे पद नीचे ॥ जाइ चढे
उमरे पद ऊचे ॥१८॥ तांते विघन करें सनदेवा ॥ मिट
ती जांन आपनी सेवा ॥ अवर किसी सों विघन न करही
जां तें तिनहि दंद्र सन्नमरही ॥१९॥ परतव जन नही
विघन संतावें ॥ विघन न नसी सचरन दे जावे ॥ जो त्रि
नवनपत उमर षवारे ॥ कहा करैं ते विघन विचा
रे ॥२०॥ तांतें उमको कहा अचंना ॥ जांते मोहि सकें न
ही रंना ॥ षुध्या त्रिषा अर आलस निंद्रा ॥ सीत उसन व
रषा अरतंद्रा ॥२१॥ जिह्वा सिस नाद्रिक विसता रा ॥
इनके गुण ते जलध अपारा ॥ तातें बहुत कष्ट करि
तरे ॥ गोपद औध रूब ते मेरे ॥२२॥ तिनको तपस नमा
थ्या होई ॥ इहूं लोक तें ऐकन कोई ॥ तांते स नसाधन
उउ करैं ॥ उमरी नमत बिना न हीतरैं ॥२३॥ या वि
धि देव वचन उचैरें ॥ तब हरि ऐक अचंना करै ॥ अत
अद्भुत छबनार अनेका ॥ मनोमोहिनी ऐक तें ऐका
२४ ॥ ते सनसे वाकरत दिषाई ॥ मोनोर मांस षीयन
सों आई ॥ तिनके गंध रूप रस मोहे ॥ चंद्र उदे उमगा
न जूं सोहें ॥२५॥ तिनसों हरि जी बोलैबैं ना ॥ इनमेंरो

कलेऊउमभैंना॥ सुरगलोककोभूषनरूपा॥ जांते १६
ऐसनवपरमअनूपा॥ २६॥ तिनसनहरिकोकीयो
प्रनामां॥ लीनीऐकउरबसीनामां॥ करप्रनामभुन
वारंबारा॥ पऊचेसकलईन्दरबारा॥ २७॥ तिनहूं
न्हहिप्रसंगसुनायो॥ विसमैत्रासईन्द्रमनआयो॥
बऊरलीयोहंसाअवतारा॥ चारनऐसनकादिकु
मारा॥ २८॥ दतकपलअरपितामहमारे॥ अठहूंबु
धरूपविसथारे॥ हयग्रीवमधप्रांननिवारे॥ ताक
रिहरिहिवेदउधारे॥ २९॥ सतब्रितराजाहरिनगत
ताकोहरिजीकीयोबिरकत॥ बिनहीप्रलेप्रलेदि
षरायो॥ मछरूपआंनहिसमझायो॥ ३०॥ बऊरवा
राहिरूपहरिधार्‍यो॥ हरणाक्षअंतकसटहिमार्‍यो
बोरीक्रतीमहीजलमांही॥ सोऊपरथापीपलमांही
३१॥ कूरमहोइमंदरगिरधार्‍यो॥ अंम्रितकाढसुरका
रजकर्‍यो॥ ग्राहिग्रस्योगजराजपुकार्‍यो॥ तबहरि
जीततकालउधार्‍यो॥ ३२॥ बालिबिलआदिकजेरि
षराजा॥ अंगुष्टसमांनअकारबिराजा॥ कस्यपकेका
रजइककबारा॥ समधनलैंनतेबनंपधारा॥ ३३॥ तहां दि
गांइनकेपगजेलनरिया॥ तिनमैंआपआपसनव

रिया॥ दासी करी इंद्र तहां षरी॥ तब तिन हरि दे हरि
सिंमरयो॥ ३४॥ जब आतम को कोई नाहीं॥ तब तु
म नाथ उधारन मांहीं॥ तातें अब हम मन ऐम अनाथा
कि पा सिंध गहो मम हाथा॥ ३५॥ इतनी सुन आरत
की बांनी॥ तहां उधारे सारंगपांनी॥ तब हरि क
रग हि सजन उधारा॥ बालषिल उधारन अवतारा
रुद्द॥ ब्रह्महत्या जई इंद्र सं जा रयो॥ तब ही हरि जी प्र
गटि उधारयो॥ सुरबन तासन असरन हरी॥ तब ते
हरि चरनें अनसरी॥ ३७॥ तब हरि जी ते सकल उधा
री॥ असुर मार सन विपत निवारी॥ पुन नरसिंघ रू
प हरि धारयो॥ असुर हरन करा प जिन मारयो॥ ३८
की जन प्रहिलादि हिली नो राषी॥ जां प्रगट कहे सन सा
षी॥ जब जब असुर प्रबल जग जरो॥ देवन के दुस थि
ल हरि लरो॥ तब तब सन मनंतर माहीं॥ विछ्रान
क लो अवतार कराही॥ मार असुर सनक्षषमिटा
वै॥ सरनागत सुर नर सुष पावैं॥ ३९॥ बांवन रूप इं
द्र के काजा॥ भिष्या छल छलियो बलराजा॥ तीन
लोक ले इंद्र हि दरो॥ बलकी भगत आप बस जरो
४१॥ बक्र अधरमी उपजे राजा॥ परसराम प्रगटे

तिनकाजा॥ इकीसवारकरैनिहक्षत्री॥ नूमैंकहूंनरा
धिपत्री॥४१॥ बहुरजुरैदसरथसुतरामं॥ जेहैंप्रग
टलोकअभिरामा॥ सागरऊपरसिलाजिनतारे॥ रांव
णआदिदुष्टसंघारे॥४२॥ आगेरामकृष्णअवतारा
नूकोप्रबलहरैंगेभारा॥ यदुकुलजनमकरमतेकर
हि॥ जिनसोंलागजीवनिसतरहै॥४३॥ असुरदेषयग
नकेकरता॥ जीवनमारउदरकोभरता॥ बोधरूपह
रिजीतबधरहै॥ यगनिंदपाषंडविसतरहै॥४४॥ बहु
रधरैंगेनिहकलंकीरूपा॥ अतिअपराधकरहिंगेभू
पा॥ कलकेअंतसकलसंघरहैं॥ बहुरप्रविरतसत
जुगकोकरहैं॥४५॥ ऐसविज्ञानकरमअवतारा॥ को
ईकहितानपावेपारा॥ कछुइकमैंउमहूंसोंकहे॥ औ
रेकोटअनंतहूंरहै॥४६॥ इ॥ इनकोकहैसुनैअरगावै
प्रेमसहितनिसबासरध्यावै॥ सोभवसागरमैंनहीरहै
पावैज्ञांनपरमपदलहै॥४७॥ दोहरा॥ एबैंनासुनद्र
मलकेकीनीप्रशननिरंद॥ प्रभुजीतिनकीकोंनगत
जोनचलैंगोबिंद॥४८॥ इतश्रीमहापुराणेइकादसमि
केंदेश्रीनारदवसदेवसंबादेअवतारकथानिरूपणोंच
उरथोध्याइ॥४॥ बिदेहोवाच॥ जीनकरैंहरिजीकीसेवा॥

तिनकी कहौं कवन गति देवा॥ तिनके त्रिपत न सुपने
आवै॥ निसदिन त्रिसना आगनि जलावै॥२॥ परजो
बहु विधि कर मनु पावै॥ ते मोहि कहौ कछु सुष पावै
ऐकहि वचन जनक जब रहै॥ अष्टम चमस नाम सो
कहै॥३॥ चमसो वाच॥ हरिजी विप्र वदन तें केरे॥ बा
दन तें छत्री विसतारे॥ जंघन तें वैस उपजारो॥ सूद्र ति
वै चरनन तें आरो॥४॥ याही जांतकी ऐ आश्रमां॥ तातें
नजन सजन कों करना॥ ते आपहि करहि पितपाला
आपहि पोषहि दीनदयाला॥५॥ ऐसे प्रभु को जो विस
रै॥ ते अपार अपराध न करै॥ तेई गुरद्रोही पितरद्रोही
श्रो स्वांमीद्रोही कितघन ही॥ तिन अपराधन अधोगत
जावै॥ कबहूं भूलनां हि सुष पावै॥ सूद्र जो षता अंतज
आदि॥ तिनकों हरि हरि कथा श्रवणादि॥६॥ ते मन में अ
भिमांन न करहीं॥ तातें उमसे किरपा करहीं॥ यां तें इन
कों है उधारा॥ परकुं चन को वार न पारा॥७॥ विप्र अरु ष
त्री वैस त्रैवरणां॥ उपनयनादि वेद मष करना॥ इन
बहुत स्त्रहन के तें अधिकारी॥ तांते होइ अहंकारी॥८॥ ता
तपर जकों जांने नाहीं॥ उहपत वांनी मैं नर मांहीं॥ विद्या
न जगत उतम अधकारा॥ पायो ताहि न लषैं गवारा॥९

करमअकरमविकरमनजांने ॥ अतकठोरआपाबं १८
क्तमांने ॥ हमपंडतयगनकेकरता ॥ औरौंबक्तनक
ता रमविसतरां ॥ १० ॥ आपनुमैंऔरननरमावे ॥ प्रिय
वांनीबक्तजनांतसुनावे ॥ कामअरथअरथकरिमां
ने ॥ पडपडवेदसाषबक्तआंने ॥ ११ ॥ बक्तसंकलप
करेमनमांही ॥ बक्ततते ई आरंजसबांही ॥ तूंहीत्यां
राजसअधिकारा ॥ कांमअरक्रोधलोनअहंकारा ॥ १२
दंनकपटचतुराईआंने ॥ हरिजनगतनपरहासीजां
ने ॥ आपआपमिलबैठेजबही ॥ ग्रहिकेसुषनसराहें
तबही ॥ १३ ॥ जिनमैंआनंदषिणहूंनाहीं ॥ दंनमांन
सोयगकराहीं ॥ बक्ततपसनमांरेंअज्ञांनी ॥ तिनअप
राधनसकैंनजांनी ॥ १४ ॥ इतनोधनआयोअरऐहै ॥ ए
तोमिलरोतोतबकैहै ॥ कुलसंपतविद्यावडाई ॥ त्या
गरूपबलकरमबडाई ॥ १५ ॥ इनकोमदबाढोअध
काई ॥ तांतेहिरदैसमकनआई ॥ हरिजनगतनसोंवां
नेंहासी ॥ मगहरमरेंछोनषलकासी ॥ १६ ॥ इसथाव
रजंगमसजघटमांही ॥ हरिपूरनषालीकोनाही
जूंआकासलिपतनहोई ॥ तूंहरिवेदकहतहेसोई
परवैमूढनकबहूंजांने ॥ जांतेंहरिजनगतननहीमांने

बक्रुत मनोरथ मन मैं करे ॥ त्रिसना ताप जलन नहीं टरे
१८ ॥ मद पांन अरु मास अहारा ॥ नारी नेह सकल जग
सारा ॥ तास सकल त्याग बिन मिता ॥ विध मैं वेद लगावै
चिंता ॥ १९ ॥ संग करे तो नार विवाही ॥ ताहू मैं बक्रु ते थि
त नाही ॥ बक्रुर कहे है दैवे रितदांना ॥ प्र जान मित चित
नहीं आंना ॥ २० ॥ या विध क्रम मक्रुम बक्रुर छुडावे ॥ बक्रु
र वेद सन त्याग करावै ॥ ऐसे आमिष अरु मद पांना ॥ य
ग मांहि नादिक छुआं ना ॥ २१ ॥ बक्रुरीं ऊहांहूं तें छुडवा
वे ॥ ऐसे तात परज को पावै ॥ हरि के सरनै आवे कोई ॥ सा
री विध छक समझै सोई ॥ २२ ॥ जो कोतिन की सरनै आवे
अन्नि प्राइ सारो सो पावै ॥ वे हरिजन अरु हिर हिन जांने
पड पड वेद अरु नरथ न गांने ॥ २३ ॥ धन ऐसो जो करे उ
धारा ॥ सो धन खोवे विरथा गवारा ॥ अरथ अनरथ समझे
कछु नाही ॥ मगन रहै विख्या सुष मांही ॥ जो धन हरि के
काजल गावै ॥ सो तब प्रेम जगत को पावै ॥ २४ ॥ प्रेम मग्न
गत कर हो वे सुध ॥ मिटे मलन ता होइ प्रबुध ॥ तातें होइ
ग्यांन परकासा ॥ तब हरि मिले मिटे जव फासा ॥ २५ ॥ ऐ
से धन तें मूढ अग्यांनी ॥ देह काज खोवै अभिमांनी ॥ काल
निरंतर हर तन देषे ॥ बक्रु मद मत छूर करि लेषे ॥ २६

मद मास यज्ञ मैं आनी जे॥ और भूल कहूं नाम न लीजे॥ १९
तहां आप लेवै सो ग्यांना॥ षांन पांन तें अधोगत जांना
२७॥ त्यों बनतारि तद्दां न हि देवै॥ और भूल कहूं नांम
न लेवै॥ सो ऊजे बल गरो कमुत होई॥ मुत के नरो त्यागी
होसोई॥ २८॥ ऐसे सकल वेद के धरमां॥ ताको भूल न
पावे मरमा॥ मरम हीन श्रुति सिंम्रित बषांने॥ मूरष
आपहि पंडित मांन हि॥ २९॥ तां तें बकत करम न आ
रंभे॥ इंद्री मन हि कंदें नहीं थंभे॥ जो हकारे बक जीव
न मारे॥ ते बकजन मति नहि संघारि है॥ ३०॥ अस था
वर जंगम सब घट मांही॥ हरि पूरन षाली को नाही॥
तिनको जो हकरे तन पोषे॥ दारा सुत तन आं न संतोषे
३१॥ नहि मूरष नहि तत ग्यांनी॥ पडे पडे ग्रंथ हों अ
भिमांनी॥ ते तो असाध रोग सब जांनी॥ तिन सों ग्यांन न
मांभिग्यांनी॥ ३२॥ ते सब करैं आपनो घाता॥ सुष नेहूं नहीं
लहैं ऊस लाता॥ करम पंथ मैं सुष को चाहै॥ अंम्रित दे
करि विषे वसा है॥ ३३॥ नांनां ताप तपत तें रहै॥ करम मनो
रथ फल नहीं लहै॥ बकत नांत कर श्रम उपजावे॥ सु ल
त वित दारा सकल मन भावे॥ ३४॥ तिन सब्रह न को छो
रई हां ही॥ बंधे आप जम द्वारे जांहीं॥ जम के दूत न रक

भोगावैं॥ ताकेदुषकहेनहीजांवे॥ ३५॥ तिनकोंकोकन
राषनहारा॥ हरिरषकसोनाहिसंसारा॥ कहौंकहा
सोकहीनजाई॥ हरिबिनसुषपलककहूंनपाई॥ ३६
दोहरा॥ चमसवचनसुनभूपकोबाढ्योआसअपा
र॥ तबयुगयुगकोपूछियोहरिकोभजनप्रकार॥
३७॥ विदेहोवाचः॥ चौपई॥ कवनसमैंकेसोअवतारा
केसोवरननामअकारा॥ किहविधभजेंवरनआश्र
मां॥ कहोसुनकेसाधनधरमा॥ ३८॥ जिनतेंसुनल
हेसमत्यागे॥ तिनतेंहरिचरननअनरागे॥ सुनन्रिप
बैंनसुगतिकेभंजन॥ तबबोलेनवमैंकरभंजन
३९॥ करभंजनोवाचः॥ सततत्रेताद्वापुरकलकाला॥ ब
हुतभांतभजीएगोपाला॥ विविधवरनबहुतनआ
कारा॥ बहुतनामबहुभजनप्रकारा॥ ४०॥ सतयुग
न शुकलवरन(+)भुजचारी॥ सीसजटाबलकलतनधारी
कंठजनेऊकरजपमाला॥ दंडकमंडलअरम्रिगछा
ला॥ ४१॥ तबमनुषहोवैंसमसुधा॥ समनिरवैरसुहि
रदैप्रबुधा॥ इसथितकरेंइंदेमनध्यांना॥ करेंसमेत
नहरिकोध्यांना॥ ४२॥ हंससुपरनधरमजोगेस्वर॥ ना
रमलपरमातमांअरईस्वर॥ परषोतमवैकुंठअवि

युकता॥ तिनकेनामहोइरोवकता॥४३॥ रकतवरन २०
त्रेतायुगमांही॥ त्रिगुनमेषलागलपहिरांही॥ पी
तकेससरवादिकहाथा॥ रिगजुजरसांमत्रईमैंना
था॥४४॥ तबतिनहितयग्यादिककरै॥ वेदविहत
करमनविसतरै॥ सरबदेवमेंहरिकोजांनै॥ तबस
नयोंहरिपूजाठांनै॥४५॥ परसनगरजउरगाइक
हीजे॥ विस्नव्रिष्याकरियजुजनीजे॥ सरबदेवउरक
रमविजयंता॥ ऐसेनामकहेसजसंता॥४६॥ द्वापुरपी
तवरनघनस्यांमा॥ संषादिकआयुधअभिरामा॥ चा
रबाहुजिरगलताधरना॥ लषमीचिहनबछतअन
रना॥४७॥ रामरछत्रआदिबकसैंना॥ महाराजलष
मणासुषदेना॥ विदतंत्रपंथसेवाकरै॥ सजअरपण
पूजाविसतरै॥४८॥ वासदेवसंकरषणादेवा॥ परदु
मनअरअनुरुधअजेवा॥ नारांइणाजगवांनअनं
त॥ सरवेसरसरबरूपजगवंत॥४९॥ विस्वरूपवि
स्वेसरस्वांमी॥ सरबआतमांअंतरजांमी॥ बछतजां
तउसततविसतरै॥ विधसोंपूजाद्वापुरकरै॥५०॥
कलयुगपीतपीतंबरधारी॥ क्रिशानदेवघनस्यांमसु
रारी॥ सहितपारषदबजतआजरना॥ श्रवनकीरत

नपूजाकरना॥५१॥ इंद्रेमनबहुजेरेविकारा॥ तिनतेरा
षेचरनउमारा॥ सभविधसभतीरथकोवासा॥ सि
मरतहीपूरवेसभआसा॥५२॥ शिवविरंचसुरनरमु
नध्यांवे॥ ताकोभेदवेदनहीपावे॥ राषलेहिसरनाजो
आवे॥ जनममरनसभदुषमिटावे॥५३॥ केवलदीन
होइउचारे॥ भवसागरकेपारउतारे॥ ऐसोचरनउमा
राध्यायो॥ ताकीसरनदीनमेंआयो॥५४॥ अतदुसत
रसुरवंछेजाको॥ ऐसोराजछोडकरतांको॥ दसरथ
भगतवचनसतकरना॥ बनकोगवनकीयोजिनच
रना॥५५॥ हेमस्रिगदेंतमुनभयो॥ जोताकेपीछेउठ
धयो॥ जोभगतनकेपौंआधीना॥ ऐसेचरनसरनमें
लीना॥५६॥ ऐसीविधकलउसततकरे॥ बहुविधिह
रिनामनउचरे॥ सुनेकहेसिमरेअरध्यावे॥ तेततका
लततकोपावे॥५७॥ याविधजेजुगजुगहरिसेवे॥ तिन
तिनकोहरिग्यांनदिढदेवे॥ ग्यांनपाइनिजततसमावे
जहांजाइबहुरांनहीआवे॥५८॥ जेकलजुगकेगुन
कोजांनत॥ तेबहुबिधपूजाकोंठांनत॥ जेसेपरमसा
रकलमांही॥ ऐसोऔरयुगनमेंनाही॥५९॥ सतजुग
ध्यांनयग्यत्रेतामांहि॥ द्वापुरप्रितमांपूजहिरामहि

कलकेवलनामादिकगावे॥ सोफलतातकालहीपां
वैं॥९०॥ याभवसागरमांहिनिरंतर॥ उपतजीवपर
हिनहीअंतर॥ तामैंहरिगुननामउचारण॥ एकज
हाजसकलकोतारण॥९१॥ पापअपारघोरकलमां
ही॥ जांमैंपुंनलेसकहूंनांही॥ तामैंजेहरिगुननउचा
रन॥ एकजहाजसकलकोतारण॥९२॥ तेक्रितक्रित
तेईवडभागी॥ जेकलहरिकीरतनअनुरागी॥ आ
पसिमरनऔरनसिमरावैं॥ तेजगजनमबहुरनहीं
आवैं॥९३॥ सतित्रेताद्वापुरअवतरहीं॥ तेकलजुग
कीइछाकरहीं॥ कलकुछसाधनअरश्रमनाहीं॥ हरि
गुनगावतहरहिसमाहीं॥९४॥ अरकहूंकहूंकोइस
भसुध॥ द्राविडदेसमांभवतहांबुध॥ जेउपजेतेभगत
हींकरे॥ तांतेतहांबहुतउधरे॥९५॥ अरजहांतांम
रप्राकृतमाला॥ कामेरीपंथसुनेविसाला॥ अरस
रस्वतीपसंमवहनी॥ गंगाआदिकतरसभदहनी॥९६॥ च
जोमांनुषपीवैजलइनको॥ दूरहोइहिरदैमलतिन
को॥ तेसरवथाहोवैहरिभगत॥ साधसंगहोवैआसक
त॥९७॥ भूतकुटंबपितररिषदेवा॥ इनकोरिणी
करैसभसेवा॥ सोनरिणीनहीसेवाकरही॥ जोसभ

तजिहरिकोअनुसरीई॥ ६८॥ जेविधतजिहरिचरन
नआवें॥ तिनकेमलहरिहरवहोवें॥ वक्रेंगेमल
उपजेनहीकोई॥ उपजेकबहूंहरेहरिसोई॥ ६९
तातेंसत्तविधकोफलएेका॥ गहीएेहरिपदछांड
अनेका॥ सन्तकेवचनुसन्तहीसुषदाता॥ सरनागत
पालिकविष्याता॥ ७०॥ जबजबजोजोसरनेआयो
तबहींतिनतिनहरिकोपायो॥ तातेंअवसेकलप
२ रहरीये॥ श्रीभगवांनचरनचितधरीये॥ ७१॥ ऐसेसु
ननवहूंकेबैंना॥ जनकरिदेअतिउपज्योचैंना॥ सं
सामिटयोसकलभ्रमनाग्यो॥ ब्रह्मज्ञांनसूतोसोजा
ग्यो॥ ७२॥ तबतिनकीबहुपूजाकीनी॥ विप्रनसहि
तबहुदक्षणादीनी॥ याविधदरसनपाएजबहीं॥ अं
तरध्यांनभएतेतबहीं॥ ७३॥ जनकविदेहअवर
सन्तत्यागयो॥ हरिकेचरनकवलअनुरागयो॥ याविध
ब्रह्मपरांइसाभयो॥ तरनवसिंधब्रह्ममेंगयो॥ ७४
श्रीनारदोवाच याहीविधउमहूंवनभागी॥ हरिकर
श्री हरिचरनेंनअनरागी॥ औरसकलतजहोंसंगा॥ तब
पैहोब्रह्मप्रसंगा॥ ७५॥ अरजोउमदेवकीवसदेवा
भएेकितारथकरिहरिसेवा॥ उमरेजसपूरयोजगमा

रा॥ जिनकेहरिलीनोअवतारा॥ ७६॥ दरसनअलिं
गनअलापा॥ आसनभोजनसैंनमिलापा॥ हरिसो
जांनछत्रचितदीनो॥ तातेंसकलजनउमकीनो
७७॥ कपटवसदेवअरससपाला॥ दंतवक्रसाला
दिकराला॥ वेरभावक्रिअहितधास्यो॥ तिनहूंको
हरिदेवउधास्यो॥ ७८॥ तेजोप्रेमप्रीतसोंसेवैं॥ ति
नकोक्यूंनपरमगतदेवैं॥ अबउमपुत्रबुधमतआं
नो॥ क्रिअदेवकोब्रह्महीजांनो॥ मायाकरिधारीन
रदेही॥ पारब्रह्मउमजांनोएही॥ बढोदेषनुवमें
अघनारा॥ मेटनकाजधस्योअवतारा॥ ८०॥ परम
पुनीतजसहिविसतरहीं॥ जासोंलागजीवनिसत
रहीं॥ जेजेइनसोंहेतलगावैं॥ तेतेसकलपरमगत
पावैं॥ ८१॥ अैसेसुननारदकीवांनी॥ वसदेवदेवकी
अदभुतमांनी॥ आपहिउहनमुकतकरजांन्यो॥ ह
रिमेंभावब्रह्मकोआंन्यो॥ ८२॥ याइतहासकथाजो
भाषे॥ सावधांनसुणाहिरदेराषे॥ सोसवबंधनकोछु
टकावै॥ उपजेग्यांनपरमपदपावै॥ ८३॥ दोहरा॥
यहभाष्योसंषेपसोंहरिमिलनेकोचार॥ हरिउधव
संबादअबवरनोंकरविसतार॥ ८४॥ इतश्रीभागवते

महांपुराणेएकादसमिकंदेश्रीनारदवसदेवसंबादे
जायंतेजोगपर्बानेपंचमोध्याइ।।५।।नारदवसदेवसं
बादसमापतं।अथश्रीक्रिस्नउधवसंबादप्र।।बक्तसु
नोनृपआतमविद्या।।जांकेजांनेमिटेअविद्या।।मिटे
अविद्याब्रह्ममहिपावै।।ब्रह्ममहिपाइफेरनहीआ
वै।।१।।तबब्रह्मासनकादिकसंगा।।नारदआदिरंगे
हरिरंगा।।सकलप्रजापतत्रिगमरीचादिक।।महादे
सुर वलीनेचूतादिक।।२।।सुरसंबृहसंगलैंपती।।पवन
असनीसुतग्रहिपती।।वसूअंग्रादाअरमुनदेवा।।
साधादिकअरविसेदेवा।।३।।रिषगंध्रबपितरअर
नागा।।चारनसिधजरेअनरागा।।अपसरअरगुह
जकविद्याधर।।किंनरयक्षादिकमायाधर।।४।।आ
अदेषबिकारनसारे।।आनंदतघारकानाथपधारे।
कोईनाचेकोईगावै।।कोईबाजेबक्ततबजावै।।५।।कोई
क्रिस्नजसिदेविसतारे।।बक्ततेलोकनकोनिसतारे
याविधबक्ततकरेउछाहा।।मगनजपेहरियेमयवाहा
६।।श्रीभगवांनमनुजतनधारी।।दरसनसभमनहर
नमुरारी।।लोकनमांहिजसहिविसतारे।।अबनारद
कसकृतअघजारे।।७।।निधरिधपूरनद्वारावती।।जा

केसमनहीं अमरावती॥ तामें ब्रह्मादिकचलआरो॥ २३
क्रिअदेवकादरसनपारे॥८॥ स्वरगब्रिछफूलनकी
माला॥ छादतकीनीदीनदयाला॥ पावतदरसत्रि
पतनहीं॥ चित्रलिषेसेसनमुषजोवै॥९॥ चित्रपदन
बऊउसततकेरें॥ औउतमअरथनजसविसतरें॥
सहितवेंनतीकरप्रनामा॥ दरसनरेसकलपूरनकामा
१०॥ देवोवाच॥ हेप्रभुचरनसरोजउमारा॥ मनकर्म
वचनचितहैंमारा॥ इंद्रेप्रांणबुधअरदेहा॥ वंदतहैं
हमप्रगटरेहा॥११॥ जाकोप्रांणवचनमनसाधे॥ सा
वधांननिसदिनआराधे॥ नावसहितसनअंतरध्या
वै॥ तेऊयाविधप्रगटनपांवै॥१२॥ धंनधंनहमधन
भागहमारे॥ प्रगटदेषेचरनउमारे॥ जिनकेध्यांन
कीरतनश्रवना॥ बऊरनहोवैआवागवना॥१३॥
उमअद्वैतद्वैतयहकरयो॥ अपनीमायासनविसतरयो
उमहीतेंउपज्योसंसारा॥ सदारहैउमरेआधारा॥१४॥
उमहीमांहिलीनसबहोई॥ उमकोपरससकैनहीको
ई॥ रागरहितआनंदसरूपा॥ सबहीमांहिसबनरहित
अनूपा॥१५॥ बऊअर्थेनश्रवनअरदीना॥ क्रियाउ
पासनातपदसनाना॥ त्यागजोगजग्यादिकजेते॥ आ

तसमुधकरेंनहींतेते॥१६॥उसमगुनश्रवनकीरतनग्र
घनासे॥जूंतमसांहिसूरप्रकासे॥ तातेंजनसकरम
उमधारो॥दीनबंधूदीननउधारो॥१७॥जोतवचर
नकवलमुनध्यावें॥नवस्नेनीतपलकछुटजावें॥
अरनिजजगतनिरंतरसेवें॥सेनहिसमझहिनही
कछुलेवें॥१८॥अरएकेवेकंठनमिता॥रिदेधरेंतव
चरननचिता॥बकरएकसेवेंसहकांमां॥एकजग
तचाहेंनिहकामां॥१९॥जीवनमुकतजएकसेवे
प्रेमजावसांअतिसुखलेवें॥एकेयगादिकसांजजे
मरबदेवसेंउमकोजजे॥२०॥एकेवरनादिकआश्र
मां॥ उमरेंदेतकेरेंसजधरमां॥एकेएकरूपकरिध्यां
वें॥देतजावकबहूंनहीलावें॥२१॥एकेतवप्रितमां
कोंसेवें॥एकेनामनिरंतरलेवें॥एकेश्रवनकीरतनध्यां
ना॥कहांलगेकहीएविधनांनां॥२२॥योंजेजेतवचर
नहिसेवें॥तेतेसजवंछतफललेवें॥सोतवचरनप्रग
टहमपायो॥तातेंअबदीजेमनजायो॥२३॥यहहमवं
छापूरनकरो॥अपनेचरनकवलचितधरो॥जरमक
रोंजोहूजीवासना॥जिनहीतेंउपजेजयमासना॥२४॥
परमदयालजगतहितकारी॥इछापूरनकरोहमारी

निसचलउपजेजगतउमारी ॥ जांतेंहूरहोइहैजारी २४
२५ ॥ जोतवजेनबनमालाकेरे ॥ प्रेमसहिततवआगे
धेरे ॥ कवलोंदेषसपरधाआंने ॥ ताकोआपसपूजनी
जांनै ॥ २६ ॥ परउमऐसेदीनदयाला ॥ जगतउधारन
करनप्रतपाला ॥ तवब्रिंदानिरादरकस्यो ॥ बनमाला
ताऊपरधस्यो ॥ २७ ॥ जोतवजगतचरनसुषकारन ॥
दुष्टअसुरसैंनासंघारन ॥ असरनकेअधगतिकोदा
ता ॥ सुरनसरगदीजेविष्याता ॥ २८ ॥ ऐसेदांनअघना
सनजांनो ॥ लोकवेदयहप्रगटवषांनो ॥ बांधीधुजा
गंगातिहूंलोका ॥ जाकेदरसमिटेनवसोका ॥ २९ ॥ ब्र
ह्माआदिकसुरनअधिकारी ॥ उमरेचरनकवलवस
चारी ॥ जोअतिबलीबेलमधजीना ॥ नाथेनाकधनीआ
धीना ॥ ३० ॥ जबजबअसुरनतेंदुषपावैं ॥ तबतबसर
नचरनकीआवैं ॥ तबहीसुषउपजेदुषनाजे ॥ अपने
अपनेठौरविराजे ॥ ३१ ॥ प्रक्रितपुरषमहततनियंता
उमहनकोकारनजगवंता ॥ उमतेंपुरषशाकतकोपा
वै ॥ प्रक्रितमिलमहततउपावै ॥ ३२ ॥ तातेंउपजेयह
ब्रहमंडा ॥ जलआधाररहैजोंअंडा ॥ इसथावरजंगम
विविधप्रकारा ॥ तातेंहोइसकलविसतारा ॥ ३३ ॥ ता
तेउमयासनकेकरता ॥ उपजावनप्रतपालनिहरता

तुम अपार सकल के स्वामी॥ तुम फलदाता अंतरजामी
३४॥ जो कछु होइ सकल जग मांही॥ तुम कर ताहू जो
को नाही॥ पर कहूं लिपत होत नहीं देवा॥ कोई लषि
न सकै तव भेवा॥ ३५॥ सो क्रा सहं अरेक रसा तन्या गा॥
जिनके रिदे प्रेम अतिगाढ़ा॥ हाव भाव सों प्रीत बढ़ा
वैं॥ मदन बान बहु त्यागत चलावैं॥ ३६॥ तुम तो हूं वस हो
वो नाही॥ निसचल निजानंद सुष मांही॥ और छोम हूं
बैठे कोई॥ करत बास मां बंधे सोई॥ ३७॥ ऐ द्वै नदी प्रगट
तुम कीनी॥ जिनकी महि मां परे न चीनी॥ एक गंग चर
नन को नीरा॥ पर सत निरमल करे सरीरा॥ ३८॥ दूजी
तव कीरत की सरता॥ त्रिभुवन माहि आपवित सत रता
श्रवन करत अंतरमल नासै॥ निरमल हिरदै ब्रह्म प्रका
सै॥ ३९॥ ब्रह्म प्रकास भव भै नाही॥ षेलै एक मेक मिल
मांही॥ इन द्वै नदी यन न्हजैं जे पंडित॥ तिन को काल क
रै नहीं षंडत॥ ४०॥ तांते नाथ कृपा अब कीजे॥ साध सं
ग हम को नित दीजे॥ जिनमें कथा नदी हम पावै॥ जां
तें तव चरनन चित लावै॥ ४१॥ श्रीशुकोवाच॥ यों ले शि
व विरंच शक्र संगा॥ उसतत करी बहुत प्रसंगा॥ बहु
रों विध ऐ वचन सुनाये॥ जां के काज सकल मिल आये॥ ४२
ब्रह्मोवाच॥ हे प्रभु हम तब विनती कीनी॥ धरती भार

न्हरी जबचीनी॥ तांते तुम लीनो अवतारा॥ सकल उता
र्‌यो भुवको भारा॥ ४३॥ मेट अधरम धरम विसतार्‌यो
सकल जनन को कारज सार्‌यो॥ अरु कीरत बहुती वि
सतारी॥ भवसागर तरबे को तारी॥ ४४॥ ले अवतार
भूव यदवंसा॥ सकल जनन को मेटो संसा॥ बहु विधकी
ने करम अपारा॥ जिनसों लाग जाई ये भवपारा॥ ४५॥
अरु यदकुल दिज श्राप विनास्यो॥ नहि रहि है है दिनके दो
ऊ नास्यो॥ तांते देव काज सब नक र्‌यो॥ करबे कछू नही अ
बरह्यो॥ ४६॥ गये वरष इक सत अधिक पचीसा॥ तांते हम
विनवैं जगदीसा॥ अब कर क्रिपा चलो निज लोका॥
करो पुनीत हमारो ओका॥ ४७॥ हम हैं दास तुमारे दे
वा॥ निसदिन करें तुमारी सेवा॥ ऐसी सुन ब्रह्मा की वां
नी॥ तब हस बोले सारंगपांनी॥ ४८॥ श्री भगवांनोवा
च॥ मैं सब सुनी तुमारी वांनी॥ तुमरो कारज भयो यह
जांनी॥ पर यदकुल यों ही पर है रैं॥ तो सकल नास भ
व को मैं करें॥ ४९॥ ऐस भजा दव बहु मद मता॥ निवैं
रहैं सो मेरी सता॥ मोहि तजे सब भव लेठां ने॥ जैसा इर
म्रिजादा भांने॥ ५०॥ तांते नास हेत उपजायो॥ आप सभ
न विप्रन ते पायो॥ अब इन सब हन को बिनसां वो॥ पी

छेउमलोकनमेंआवों॥५१॥ऐसेसुनहरिजीकेबेंना
रिदेबहोसत्रहनकेचेना॥करप्रनामतेबिनतीसा
रे॥अपनेअपनेलोकपधारे॥५२॥तबनिरपतकीस
भामंकारी॥बेठेयदकुलसहितमुरारी॥द्वारावती
उठेउतपाता॥तिनकोदेषकहीहरिबाता॥५३॥
श्रीभगवांनोवाच॥एउतपातउठेचहूंओरा॥अतिये
दाइकदीसेंघोरा॥अरद्विजश्रापभयोकुलमांही
तांतेभलीदेषीयेनाही॥५४॥तांतेअबइहांनहीर
हीये॥तजीयेवेगजीवनजोचहीये॥अतपुनीतषे
त्रप्रभासा॥तहांवेगचलकीजेवासा॥५५॥एकवा
रदक्षश्रापहिदयो॥ससकोषईरोगतबभयो॥जब
सोससप्रभासेनायो॥छूटोश्रापपरमसुषपायो॥५६॥
तांतेअबप्रभासचलीजे॥तहांजाइस्नानहिकी
जे॥त्रिपतदेवपितरनकोकरीये॥विप्रभोजनबहु
विधविसतरीये॥५७॥तिनकोदांनबहुतविधदीजे
सरधासहितप्रनामहिकीजे॥तिनप्रसादिदुषप
रहरीये॥ज्योंनावनसोंसाइरतरीये॥५८॥ऐसीसुन
जी हरिकीबांनी॥सभजादवनभलीकरमांनी॥तबब
लबकोसकलविचारे॥अपनेअपनेरथनसवारे॥६०॥

तबउधवहरिकोनिजदासा॥देषसकलविधभयोउ 
दासा॥चलऐकांतहरिजीपैंआयो॥चरननपडकेव
चनसुनायो॥६४॥उधवोवाच॥देवदेवईसरजोगेस
सरवनकीरतनहरनकलेस॥यदिकुलकोसंघार
हिकस्यो॥याविधउममनमांहीधस्यो॥६५॥विप्रश्रा
पमिटनसमरथा॥नहिमिटोसोइहिहैअरथा॥मे
रोजीवनचरनउमारा॥जैसेमीनउदकअधारा॥६६
प्रांननाथअबऐसीकीजे॥संगआपनेमोकोंलीजे
उमरेसुनआचरनअनूपा॥सनकोअतिकल्पांन
सरूपा॥६७॥जिनकोपाइऔरसनत्यागे॥त्रिभवन
केसुषउषसेलागे॥आसनगवनअरइसनांनां॥जा
गतअरसोवतविधनांनां॥६८॥सदानिरंतरहोंमैंदा
सा॥क्योंपलतजोंउमारोपासा॥यहमायाजैतेनहीक
हूं॥उमबिनअरधनिमषनहीरहूं॥६९॥गंधवसन
मालाआभरना॥तवआरतीकोंमैंनितकरना॥महां
प्रसादिआपनिरीतेरषोबो॥दरसपरसबकुबिधि
संतोषो॥ऐसेमैंनिजदासउमारा॥मायाकरहैकहा
हमारा॥मायाजैअरउमरेहेता॥होइदिगंबरऊर
धरेता॥७०॥इंद्रेदेहप्रांनमनसाधे॥सावधांनउमको

आराधे॥ ब्रह्मविचारसदा मन लावै॥ ते निज रूप उमा
गोपावैं॥ दूध्य॥ ह मकछु करम अकरम न जांने॥ रिदै ग्यां
न वैराग न आंनै॥ उमरे ज्ञातन के मिल संगा॥ ज्ञवत
रहैं सुनत वपरसंगा॥ दूध्य॥ उमरे करम वचन परहा
सा॥ आस न गवन रूप परकासा॥ कहत सुनत सिमर
त सुष मांही॥ ज्ञवसागर मैं रहि हैं नाही॥ ७०॥ तां ते मा
या जै न हीआं नो॥ आप हि सदा मुकत कर मांनो॥ पर
उम बिना प्रांन तजि जाहीं॥ तां ते मोहि छोभी ऐ नांही
७१॥ दोहरा॥ यह उधव निज ज्ञगत के सुने वचन गोपा
ल॥ तब करणा मै करि रिझि पा बोले वचन रसाल॥ ७२
इति श्री भागवते महापुराणे एकादसमिकंदे श्री कि
चौपाई स्न उधव संबादे षष्टमोध्याइः॥ ६॥ श्री भगवां महा भाग उ
धव यह यों ही॥ जो तव कही बात है त्यों ही॥ शिव वि
रंच शक्र आदिक व्यासा॥ वं छे मम वैकुंठ प्रवेसा॥ १
भूमहि भार रब छो जब भारी॥ तब ब्रह्मा पास पुका
री॥ ब्रह्मादिक न वेनती करी॥ तां ते मनुज देह मैं धरी
२॥ अब जुव को सब भार उतार्यो॥ सकल सुरन को का
रज सार्यो॥ अर कीनो यस को विसतारा॥ जां ते जीव जा
हि भव पारा॥ ३॥ यद कुल आप लयो द्विज पासा॥ आ

पआपमेंहोइहैनासा॥ आजहूंतेंसपतमदिनमांही
सिंधवारका राषेनाही॥४॥ जबहीमैंतजद्वांयहलो
का॥ तबपांवहिगेडषजेमेसोका॥ कलजुगआंन
अविष्टतहोई॥ तांतेंअनरथकेरसजकोई॥५॥ तां
तेमुरारउधववचनाभा॥ अबतमकरसनहीकोत्या
गा॥ मोमेंसदाचितथिरकरो॥ समदरसीहोइजूव।
चरो॥६॥ जोकछकहनसुननमेंआवै॥ अरमनबु
धजहांलगजावै॥ सोयहसबमनकीक्रितजांनो॥
षिणभंगरमायाकरमांनो॥७॥ जिनयहसकलम
तकरिजांना॥ तिनकेभेदभयोहैनांना॥ ताभेदहि
भ्रमकरनहीजांने॥ विधनिषेदताहीतेंमांने॥८॥
विधिनिषेदजोभाषेवेदा॥ सोतांकोंहैभेदअभेदा
भेदमिटेबिनकरेनत्यागा॥ तांतेरोषैकीरोविभागा
९॥ जूंज्यांतजेसुषीत्योंहोई॥ तांतेवेदबतावेसोई
आगेजाइछभावेंसारे॥ जोआपहिभ्रतेविसतारे॥
१०॥ तांतेंयहसबमिथ्याजांनो॥ ऊचनीचगुनदोष
नमांनो॥ इंद्रेअरमननिसचलकरो॥ अहंकारमम
तापरहरो॥ ११ सूषमइसथूलसकलविसतारा॥
एकहिआतमकेआधारा॥ सोअधारब्रह्मकेजांने।

ऐसी विधि त्रवके मैं मांनों ॥ याविधवेदअरथकोजांनो
बऊडक्रिदै निसचैकरमांनो ॥ ऊहूंलोककीआसाछा
डो ॥ याविधअंतराहसत्रषांडो ॥ १३ ॥ जितनीयाके
आसाहोई ॥ तितनोविघनकेरसत्रकोई ॥ जंजांतज
तेजांवैंआसा ॥ त्योंत्योंमिटेविघनकोपासा ॥ १४ ॥
जबयहहोइआतमांरांमां ॥ तबतिहेनहिंआसा
कोधांमां ॥ तबविघननकेकरतादेवा ॥ तेईउलट
करेंतासेवा ॥ १५ ॥ तातेंविधनिषेधसत्रनाषो ॥ आसा
छांडरिदेहरिराषो ॥ एकब्रह्मकरिसत्रकोदेषो ॥ डू
जोकबहूंमूलननलेषो ॥ १६ ॥ अरजिनपायोब्रह्मग्यां
ना ॥ तिनकोविधनिषेदनहीमांनां ॥ परतिनकेनित
हीविधहोई ॥ कदेंनिषेदनपरसेकोई ॥ १७ ॥ वेसुष
(ही) दुषगुनदोषनजांनै ॥ बालकसमअचरनठांने
परविधसारीसेवाकेरे ॥ अरनिषेदआपहिपरहरे
१८ ॥ सत्रपरसुधरिदेअतसांता ॥ ग्यांनविग्यांनसहि
तनितदाता ॥ सत्रजगब्रह्मजांनथिरहोई ॥ बऊरो
जनमनपावैसोई ॥ १९ ॥ ऐसेसुनहरिजीकेबैंना ॥
अतिउहिकरिअरअतिसुषदैंना ॥ ततसुननकीबा
डीप्यासा ॥ तबबोलेउधववनिजदासा ॥ २० ॥ उधवोवा

च॥ जोगसरूप जोग उपजांवन॥ जोगध्यांन जोगेसर जां २२
वन॥ उमयह त्याग कह्यो मेरे हित॥ सोउ हि कर नही
आवै मे चित॥२१॥ जांहा वै विषियन को त्यागा॥ पुत्रक
लत्रादिक अनरागा॥ यह तन यह धन यह सुत मेरे॥ ए
बन ताके यहि के चेरे॥२२॥ या विधम मत्र है कारस मुंज
द्रबर ह्यो मैं मत को छुत्रा॥ उमरी माया अति न रमायो
तां तें ज्ञांन हिरदै नही आयो॥२३॥ अब उम मो सिष्या उ
पदेसा॥ मेरे उर कछु ज्ञांन प्रवेसा॥ तातें अब बहु विधस
मझावो॥ मम उर पूरन ज्ञांन बढावो॥२४॥ जांतें सन्नत
जि उमकों पावों॥ बहुरें जगत जनम नही आवों॥ अर
अैसो ह जो नही कोई॥ जांते लोनज्ञांन को होई॥२५॥ ब्र
ह्मादिक तनधारी जेते॥ उम माया वस कीने तेते॥ तातें मा
याही को देषें॥ कर मत्र रजोग नले कर लेषें॥२६॥ तातें
मैं जन उमरी सरना॥ सो कीजे पांवों तव चरना॥ उम राअ
द्विन अंत अपारा॥ ज्ञांन रूप सन्नहीतें न्यारा॥२७॥ सोई
तरंग हो कर जांको॥ माया कछ कर सके न तां को॥ उम
हीतें उपजो यह जीवा॥ जैसे अगन हुतें बहु दीवा॥२८
सदा रहे उमरे अधारा॥ नित उ व पोषे सिरजनहारा॥ अै
से प्रभु को सैवे नाही॥ तांते परे पर मडषमांही॥२९॥ या

नवकेदुषकहेनजांही॥ पसोनिरंतरमैंतिनमांही॥ अ
बमोकोंसरनागतजांनो॥ देकरग्यांनसकलदेनांनो
२०॥ मेरेतनमनधनतवचरना॥ मनवचक्रमआयोमें
सरना॥ असेसुनउधवकेबेंना॥ हसकरबोलेअंबुज
नैंना॥ २१॥ श्रीभगवांनोवाच॥ उधवमैंकहिदेवोग्यांना
सतकहतहोंनांहीआंना॥ यहजगसाधनरोहैंजेते॥
आपहिआपउधारहितेते॥ २२॥ आपहिभलोबुरोप
हिचांने॥ छोडेबुरोभलेकोंगेंने॥ गुरूआपनोआपहि
न होई॥ पसपंषीनांवैंजोकोई॥ २३॥ परनरतेंअसोहे
नीको॥ ब्रह्मादिकसनहनकोटीको॥ यांतेब्रह्मविचा
रहिपावे॥ बहुरोंजगतजनमनहीआवे॥ २४॥ इक
पदद्वेपदत्रेपदरोका॥ चहुपदादिबहुपादअनेका
मेंबहुनांतश्रिष्टविसतारी॥ तिनमेंप्रेयनरदेहहमा
री॥ २५॥ मोहिपावैसोयांकरपावे॥ औरसनजनसुषदु
चा षभोगावे॥ यांमेंमेरोकरेविचारा॥ सावधांनहोइबहुत
प्रकारा॥ २६॥ नाइयहतोजडहेदेहा॥ इंद्रेआदिअ
स रसकलसंनेहा॥ अपनेअपनेअरथनगेहैं॥ सोरोकत
कवनकीलहैं॥ २७॥ अरसोवतजबसुपनापावैं॥ त
बतोइंद्रेतनछुटकावैं॥ सुपनमांहिसुषदुषकोल

है।। जागे बात सकल सो कहै।।३८।। तां ते यह तन तो मैं नाही
मैं तो वास कीयो यां मांही।। त्यों वनता सुत वित परवारा
मेरो तो नहि सकल पसारा।।३९।। ऐ तो सकल देह संग जा
ही।। सो यह देह कहूं मैं नाही।। जां ते सुपन मांहि नही को
ई।। कहां सकल ओर ही होई।।४०।। अस्नाई मैं तो वऊ
नाही।। जो तन दीसे सुपने मांही।। जां ते वऊ हूं थिर न र
हावै।। वां को तज या मैं फिर आवै।।४१।। वां ते यह ह्यां ते व
ऊ फूटी।। यह द्रिड ग्यां न गहो निज मूठी।। जो इन द्वै देह
न को लहै।। इंद्र न होइ सत्र अरथ न गहै।।४२।। इंद्रे बुध
आदिक अरु बांनी।। जां को कोई सकै न जांनी।। सो मैं नित
निरंतर ऐका।। उपजे बिनसे देह अनेका।।४३।। जाई सो
मैं कहां ते आयो।। किन तन दीनो किन उपजायो।। अब
तो मैं द्वै देह अधारा।। पल को रहि न सकों निरधारा।।४४
ऐ दोई तज का मैं रहों।। सो है सत ता हि द्रिड गहों।। ऐसे ब
ऊ बिध कर विचारा।। त्यागे देहादिक परवारा।।४५।। सो
जहि तहि तें लेवै ग्यांना।। कबहूं कछु नहि जांने आंना
या विध आप आपको तारे।। लहे ब्रह्म नव रूष निवारे
४६।। यह विचार मांनवत न होई।। दूजो मूल न पावे
कोई।। तां ते उत्तम मांनव तन पायो।। अर कछु इक मेलो

हिलषायो॥४७॥ तांते तजों सकल को संगा॥ मन क्रम बच
न होइ निहसंगा॥ समतें परे आपकों जांनो॥ सो आधा
र ब्रह्म के मांनो॥४८॥ जहां तहां देषों उपदेसा॥ या विध
करों ब्रह्म प्रवेसा॥ ऐसे जहां तहां लेस्यां ना॥ बकृत क
ह्यो ब्रह्म परवांना॥४९॥ तिनमें कहों एक की बाता॥ जो
इतहास कथा विष्याता॥ दत दिगंबर अत्रयदनूपा॥
तिनको है संबाद अनूपा॥५०॥ दोहरा॥ सुन उधव इत
हास अबनाषें परम अनूप॥ ब्रक्त दत्तात्रे जहां अर
पूछत यदनूप॥५१॥ चौपई॥ एक समें नृप तयदनामां
गयो शिकार हों मदनिज धांमां॥ तब ता नगर निकट है मू
ता॥ देष्यो एक परम अवधूता॥५२॥ निरभै निसचल
इछाचारी॥ तेज निधांन तरन तन धारी॥ करपर ना
म बक्रत प्रकारा॥ यदनूप तत बचन उचारा॥५३॥
यदोवाच॥ हे प्रन्नपूरन परम द्याला॥ कहो क्रिपाकर
होइ क्रिपाला॥ ऐसी बुध कहां उम पाई॥ जो तें विचरो
महि जसु नाई॥५४॥ नरो अकरता इछाचारी॥ बालक
मम सन चिंतातारी॥ सब जग निसदिन यही विचारे
धर मअर्थ अरथ कांम विसतारे॥५५॥ सो ऊ नहि उ
पजे दुष पावे॥ तिन सों लाग सन्न आयु गवावें॥ उमस

मरथसमनहीविधजांनो॥ क्रिपानिधांनप्रियबैंनबषां
नों॥५६॥समनविधसरसतरनतनसुंदर॥उहपुहको
लिपनकुंदं॥ नांकछवंछोनांकछुकरो॥जडउनमत
जिवैंविचरो॥५७॥त्रिसनाकांमक्रोधदैंलागी॥सक
ललोकदाकेतिनआगी॥उमआनंदमैंदाजोनांही
जांगयंदगंगोदकमांही॥५॥देहअरथमननहीकोंत्या
गे॥ रहोअनंदतसोकनलागे॥संगनकोईराषोदेवा
कोईलहिनसकेउमनेवा॥५९॥तातेंकहोक्रिपाकर
नाथा॥ नवजलडूबतपकरोहाथा॥योंयदनूपबेन
तीकरी॥ तबअवधूतगिराउचरी॥६०॥अवधूतोवाच
सुणायदनूपपरमवडभागी॥ जांकीमतहरिसोंअन
रागी॥ बकतेहैंमेरेगुरदेवा॥जिनतेंमैंसनजांन्योनेवा
६१॥परमैंमतोआपनोलीनो॥ तिनमैंसोंकिनहूंन
हीचीनो॥ तेगुरसकलसुनोउममोसों॥हरिजनजां
नकहतहोंतोसों॥ ६२॥धरनीगगनपवनअरपांनी
अगनचंद्ररविकपोतहिजांनी॥ अजगरसिंधपतं
गअरभ्रिंगा॥ ऊंचरमधहिरताअरकुरंगा॥६३॥
मीनपिंगलाकुकरअरबाला॥ कंन्यासरकरताअर
व्याला॥मकरीभ्रिंगीऐचोवीसा॥इनतेंसीष्योसुनोनृ

ही सा ॥ ६४ ॥ प्रिथमे मैं धरनी गुर देष्या ॥ सो मैं पर मत सक
र लेष्या ॥ सहै रहैं धरनी अधारा ॥ तां पर मूढ करैं अपचा
रा ॥ ६५ ॥ गौर गौर अति उतम अंगा ॥ तिन को करै बहु
त विध संगा ॥ तां ते परबत बिछ अनंता ॥ पर उपका
र सहै वरतंता ॥ ६६ ॥ पर अपराध कछू नहीं मांने ॥ उ
लट आप अपकार हि ठांने ॥ ऐसी सीष धरन की लेवै
जो जन हरि चरनन कों सेवै ॥ ६७ ॥ प्रांन वाइ जूं लेइ अ
हारा ॥ स्वाद कुस्वाद न कोई प्यारा ॥ यौं हरिजन अहार
हि लेवै स्वाद कुस्वाद नहीं चित देवै ॥ ६८ ॥ तां ते रो तोल
ई अहारा ॥ जेतो होवै प्रांन अधारा ॥ बिना अहार वि
चार न आवै ॥ स्वाद कुस्वाद न मन ठहि रावै ॥ ६९ ॥ अर
जूं पवन फिरै जग मांही ॥ सुध असुध लिपे कहूं नाही
नां नां भेद न मैं संचरे ॥ प्रिय अप्रिय गुण दोष न धरे
७० ॥ यौं विष्यन ग्रहि तेहूं योगी ॥ मन क्रम वचन न हो
वै जोगी ॥ भेद अनेक न मैं अनसरे ॥ पर कछु भेद न हि
जो रदै धरे ॥ ७१ ॥ अर जूं गंध पवन संगा ॥ लिपत न यो जां
नै सन लोगा ॥ पर सो पवन सदाइक रूपा ॥ लिपे न क
बहूं ऐसो अनूपा ॥ ७२ ॥ पंच भूत न कर रच्यो सु देहा
सकल विकार नहीं को ग्रेहा ॥ ता मैं जोगी लिपत न

होई ॥ और लिपत जांने सन्न कोई ॥ ७३ ॥ ज्यूं सन्न हन मैं ३१
एक आकासा ॥ अरस न्नहन को ता मैं बासा ॥ सन्न उप
जे विनसैं वरतांही ॥ गगन न लिपै काल तिहूं मांही
७४ ॥ त्यौं सन्न बहु विध जगत पसारा ॥ मुन देषै आतम
अधारा ॥ जो कछु दसै जड है सोई ॥ तांके संग तैं चेतन न
होई ॥ ७५ ॥ ज्यूं आतम देहन मैं देषै ॥ त्यूं परमातम ज
हित तहि लेषै ॥ एक अनंत तन कहूं अवरना ॥ लिपै न ते
सो जनम न मरनां ॥ ७६ ॥ सो परमातम जहित तहि एका
कदें न देषै मूल अनेका ॥ ज्यूं ज्यूं गगन घट न मैं होई
बाहर रहूं पुनि जहित तहि सोई ॥ ७७ ॥ कहबे कौं दोइ नीत
र एका ॥ यौं आतम अरब्रह्म विवेका ॥ ज्यूं बहु भेद पव
न दामनी ॥ वरषै बहु वासर जांमनी ॥ ७८ ॥ पर न न लि
पत कदें न ही होई ॥ और लिपत जांने सन्न कोई ॥ त्यौं आ
तम मैं दैं अनंता ॥ उपजे वरते पावैं अंता ॥ ७९ ॥ परमांत ६
मां लिपत कहूं नांही ॥ साध विचारे यौं मन मांही ॥ यह
अंबर गुन ताहि सुनायो ॥ अब जाषौं जो जल तैं पायो
८० ॥ नित निरमल और न मल हरे ॥ ताप मेट सीतल
ताके रे ॥ सन्न सुष दाइक हित रसवंता ॥ ए गुन जल तैं सी
षे संता ॥ ८१ ॥ तेजवंत अर दीपत युकता ॥ षोन्न रहित

जहितहिनरमुकता॥स्वादरहितजनषणासन्नकरै॥अ
गननलिपैसंचनहीधरै॥८२॥त्योंहीज्ञांनतेजमेंहोई
इंद्रीआदिकक्रियादीपकसमसोई॥यदपबकुविध
भोजनकरै॥स्वादरहतगुणदोषनधरै॥८३॥काहूकु
तैषोजननहीहोई॥काहूकेगुणमिलेनसोई॥उदरप्र
मांनलेईअहारा॥कछूनजांनेसंचपसारा॥८४॥गुपत
रहैनहीनूलजनावै॥कीनेप्रगटप्रगटहोइआवै॥प
रइछाअद्भूतकौंलेई॥तिनकोपापरहैनहींदेही॥८५
त्योंमुनगुपतआपतेंरहै॥षोजलेहताकोजूमदहै॥
उतमभोजनआदितेंहोई॥परइछातेंलेवैसोई॥८६
बकुरोंअगनरोकरसएका॥बकुविधदीसकाष्टअ
६ नेका॥त्योंआतमांएकसजनमांहीं॥भेदहक्रितसाच
नांहीं॥८७॥दीपमशालप्रगटजोहोई॥ज्वालाजात
लषेसजनेकोई॥परतेदीसेंजूंकेतूंही॥प्रतदिनदेह
जातहैयोंही॥८८॥जैसेससकेबाढीकला॥तूंतूंदि
नदिनदीसेजला॥पूरनहोइकरदिनदिननासे॥स
कलमिटैतेंनहिपरकासै॥८९॥जूंबालादिअवसथा
आवै॥होइकरतरनकुमहिक्रमजावै॥तिवैआतमां
देषीएनाही॥परहैसदाकालतिहूंमांही॥९०॥ज्यों

सेंन बैंनि न्हारी विधांना को

रवि किरननस्यों जल लेवै ॥ समेपाइ बकरों समनदेवै ॥ प ३२
रक ब्रहं अग्नि मांन नआं ने ॥ लीयो दीयो आपन नहीं मां
ने ॥ ५१ ॥ यों मुनकहै सुनेंअ र देषै ॥ सकल अरथ हृदे
क्रित लेषै ॥ नित आतमं कर ता जां ने ॥ सनतजब्रह्मवा अ
चारहि गां ने ॥ ५२ ॥ जों घट जलप्रतबिंबत सूरा ॥ लिप
तन देषै परहै दूरा ॥ त्यों आतमां देहसन बंधा ॥ इसथूल
द्रिष्टजां नत है अंधा ॥ ५३ ॥ अबकपोतकी कथा सुना
वों ॥ तेरे मनका भ्रम मिटावों ॥ ऐक कपोत कपोती संगा
बन मैं कीनो ग्रह प्रसंगा ॥ ५४ ॥ आप आप मैं अत आ
सकता ॥ आठ पहिर मैं पलन विरकता ॥ मनसों मन अं
ग नसों अंगा ॥ नैननैंन बध्यो बक्र रंगा ॥ ५५ ॥ आसन
गवन असन इसनाना ॥ मिले सकल कर मनको करने
निरभै रहैं न कब्रहुं डरने ॥ ५६ ॥ सो कपोत बनता वस
कीयो ॥ हाव भाव तन मन हिर लीयो ॥ वंनता जो वंछे
सो ल्यावै ॥ कष्ट सहित जा ही विधपावै ॥ ५७ ॥ सो इसत्री
जित ज्यों उमराजा ॥ आपनो लषें न काज अकाजा ॥ ति
न मैं मन यो निरंतर रहै ॥ प्रां न कों तें ताहि प्रिया कहै ॥ ५८
ता की त्रिया अंड उपजाऐ ॥ तिन मैं मन दोनो मिललाऐ
तब हरि माया सिसन निरमऐ ॥ कोमल अंग रोंमते जऐ

९९॥ तबदोनोमिलतिनकोंपोषे॥ बहुतजांतनिस
दिनसंतोषैं॥ कोमलवचनसुनेमुषदरसे॥ अपनेअं
गअंगसपरसें॥ २००॥ हरिकीमायाबहुतनुलाये॥
आपआपमेंसकलबंधाये॥ पुत्रनसनेहरहेअनरा
गे॥ सिरपरकालनलषेंअनागे॥ २०१॥ एकवारबा
लनकेकारन॥ चोगोलेनिगएतजआरन॥ ताहीसमें
व्याधीइकआयो॥ बालकदेषजालतिनपायो॥ २०२
देष्योकननदेष्योजाला॥ बंधेआंनसकलषगबाला
तबदोऊचोगोकोंल्याये॥ तिनग्रहिमांहिनबालक
पाये॥ २०३॥ तबमातादेषेतेबाला॥ बंधेजालमांहि
बेहाला॥ तबसोतहांपुकारतधाई॥ जालमांहिसु
त तहींबंधाई॥ २०४॥ तबकपोतदेषेसबबंधे॥ हरिमा
याकीनेअतिअंधे॥ तबसोबहुविधकरेंबिलापा॥
लेषेबहुतआपनेपापा॥ २०५॥ हाहापापकोंनमेंकी
नो॥ ऐसोदुषदईमोहिदीनो॥ जांकीयहपतब्रतना
री॥ पुत्रनलेसुरलोकसिधारी॥ २०६॥ मोहिछोडसूने
ग्रहिमांही॥ सबमिलआपइंद्रपुरजाहीं॥ नांमेंसुष
भोगेयहलोका॥ नहिसाधनपायोपरलोका॥ २०७॥
धरमअरअरथकामसबजांमे॥ कछुवेरह्योनहीं

हितामैं॥ अबग्यांन नराषोंकहितांई॥ घरीघरीमैंदु
षअधिकाई॥१०८॥ याविधबकुतनयोबेहाला॥
बंधेदेषवनताअरबाला॥ व्याकुलबुधविचारन
कस्यो॥ आपहिआइजालमहिपस्यो॥१०९॥ सहि
तकुटंबकपोतहिपायो॥ तबहीनयोव्याधमनभा
यो॥ ऐसमैंकपोतकीदेषी॥ तबअपनेहिरदैयोंले
षी॥११०॥ यहकुटंबहोवैजाहीके॥ त्रिसनारोगब
ढेताहीके॥ जीवतअतअरंजनकरै॥ सहितकुटंब
कालमुषपरै॥१११॥ याविधजोमानवतनपावै॥ सो
तोघारखूहकेआवै॥ ताहूपरजोग्रहहितकरै॥ सोन
रखूहघारचढपरै॥११२॥ तातैजोगकुटंबअरगेहा
तिनकोजीवलहैव्रतदेहा॥ ऐसोमानुषतननगवा
ये॥ जोकरदेवनिरंजनपाये॥११३॥ दोहरा॥ यहनाषी
गुरअष्टकीसिष्यामैंतुमपास॥ अबअवरनकीकह
तहौंजुं छूटेभवफास॥११४॥ इतश्रीभागवतेमहा
पुराणेएकादसस्कंदे श्रीक्रिस्नउधवसंवादेसप
तमोध्याइ॥७॥ अवधूतोवाच॥ जेइंद्रेसुषकहूकहावैं
तेतोसरगोंनरककहोआवै॥ जांसूकरकूकरसुषमांही
तूंहीदेवअवरकछुनाहीं॥१॥ असोसुषआपहि

तेंआवै॥ कर मलि ष्योसो कों न मिटावै॥ ज्यों कोइ ऊष को
नहीं चहै॥ पर ऊष आइ आपही रहै॥ त्यों ही सुष आ
पहितें आप हि आवै॥ बिन जांने नर बहु दुष पावै
तातें बुध सुष नाम न लेवै॥ होइ अकरता हरि पद से
वै॥ ३॥ स्वाद अस्वाद बहुत के थोरा॥ जो हरि जी पठ
वै तिहि आरा॥ तांको नषे रहै उदासा॥ अजगर विर
त गहै इक दासा॥ ४॥ जो कबहूं अहार न आवै॥ तो
थिर रहै न मन नों लावै॥ कर माधीन देह कों जांने॥
मन क्रम बचन न उदम ठांने॥ ५॥ अत समरथ इंद्रे
मन देहा॥ पर कछु उदम करे न रोहा॥ निसचल ब्र
ह्म निरंतर सेवै॥ यह सिष्या अजगर तें लेवै॥ दरस ६
न परसन परम गंभीरा॥ अत अगाध ज्ञांन सो नीरा
वार पार को थाहि न लहै॥ ऐ गुन मुन साइर तें गहै
६॥ ज्यों वरषा बहु नीर प्रवेसा॥ साइर कबहूं बढै न
लेसा॥ ग्रीषम मैं कछु हीन न होई॥ सदा सुबुधि आ
पतें सोई॥ ७॥ त्यों कोइ बहु विध अरचावै॥ जो जन
वस्त्रादिक पहिरावै॥ उसतत मांन बडाई देवै॥
बहुत जांत बहुते मिल सेवै॥ ८॥ अरु रोके ले जाइ
उतारी॥ निंदा निंदक गांने इक नारी॥ पर नारा इणा

मैमनमांहीं॥रागदोषकछुउपजैनांहीं॥१०॥वनता
वसत्रकनकअंमरनां॥बहुविधमायाकेउपकरनां॥
इनमैंआइपरेजोकोई॥अगनपतंगसमावैसोई॥
११॥जोलगमुनसमझैनिजदेहा॥जाचअहारलेइ
बहुगेहा॥जांतेबहुअनरागनबढै॥यहसिष्यामं
धकरतेंपढै॥१२॥छोटेबडेबहुतविधग्रंथा तिन
तेंसारगहैहरिपंथा॥ज्यूंमधकरबहुफूलनमांहीं
बासगहैफूलनकोनांहीं॥१३॥सोमधकरदोइविध
कोकहीये॥कुहूंपासतेंसिष्यालहीये॥बहुतग्रहन
तेंलेइअहारा॥उदरप्रमांनएकहीबारा॥१४॥इ
जोकछुनसंचोधरै॥निरभैब्रह्मविचारहिकरै॥सं
ग्रहमूलकरैजैकबहीं॥मधमाषीज्यूंबिनसैतब
हीं॥१५॥पुतलीकाष्टहूंकीजोहोई॥कबहूंबुधप
रसैमतकोई॥परसकरतहोवैद्रिढबंधा॥ज्यूंहीक
रदकरदनीसंगा॥१६॥म्रितजांनवनताकौंतजै॥
पंडितकबहूंभूलनभजै॥भजतहोवैकीरीसमांना
एकहिमिलमारहिगजनांनां॥१७॥ज्यूंकोईधनसं
ग्रहकरै॥सोकोईअवरेपरहरै॥ज्यूंमधमाषीमध
संग्रहि॥मधहासोबिनउदमलेहै॥१८॥हरिबिन

गीतसुनेनहीअोरा॥गयोचढेजोहरिकेंठोरा॥अोरसुन
तगतहोवेअैसी॥ व्याधगीतहरनोकीजेसी॥१९॥सु
नोहरणागतसुनबजरंगा॥सिंगीरिषज्योंगनकासं
ला गा॥अबंदीनमुकतनहीहोई॥तिनकेसबदसुने
जोकोई॥२०॥मुनजिह्वाआसकतनकरे॥स्वादअ
स्वादसकलपरहरे॥जिह्वारसतेंहोवेकाला॥जेसे
मीननरेततकाला॥२१॥जेमुनसन्नअरथनपरह
रे॥जाइइकांतवासकोकरे॥सन्नहोवेंइंद्रेतबषीना
पररसनानहीहोइअधीना॥२२॥रसनासन्नकोंफेर
जिवावे॥जबहीरससंजोगहिपावे॥जोसन्नईद्रीजी
तेकोई॥पररसनावसकरनहीहोई॥२३॥तोलग
सकलब्रिथाकरजांनी॥रसनाजीतजीतकरमांनी
स तांतेंमुनरनावसकरे॥अोरसकलसाधनपरहरे॥
२४॥यौंजेएकोएकवसन्नऐ॥तिसन्नजमकेवारेगऐ॥
परजोएकपंचवसहोई॥ताकेउषजांनेगासोई॥
२५॥बकरएकगनकापिंगला॥तांतेंमेंसीव्योगुन
नला॥सोउमसोंनाषतहोंराजा॥जातेंसरेउमारोका
जा॥२६॥जनकविदेहपुरीमेंवासा॥नांमपिंगलारू
पनिवासा॥एककवारसीगारबनायो॥धनीपुरबमें

नमैंगहिरायो॥२७॥बैठीनिकसजनवनकेद्वारा॥आगे ३५
चालेलोकबजारा॥कोईजनलोआवतोदेषै॥यहआ
वेगोयोंकरलेषै॥२८॥जबवक्रआगेकोंचलजावै
तबहिपिंगलाओरकोंध्यावै॥ओरेआइआइचल
जाहीं॥त्योंत्योंदुषपावेमनमांहीं॥२९॥कबहूंउठ
भीतरकोंजावै॥कबहूंयाकुलबाहरआवै॥आधी
रातअैसीविधगई॥लोकबजारचलतरहिगई॥३०
तबवक्रभंगनमनोरथजई॥चिंतादुषअनलतन
दही॥अपनोत्रिसकारकरमांन्यो॥सजतेंहीनआव
कोंजांन्यो॥३१॥तबतांकोकोईवदभागा॥जांतेउप
ज्योजिडवैरागा॥जबलगनहिउपजेनिरवेदा॥तब
लगनांहींमिटेभयषेदा॥३२॥याजवमैंसुषदुषअनेका
तामैंपरमरतनसुषरेका॥बंधनबाधेजीवअपारा॥
तिनकोहरिजीरचोउगारा॥३३॥तिनकीमहिमांकही
नजावै॥जाकेनागबदेसोपावै॥जाकोनामकहैंवेरा
ग॥सोतोहरिकोदीयोसुहाग॥३४॥जाहिदेइसोईपे
पावै॥जबतेंछोमदबुद्धमैंजावै॥तांतेंमांनवसनछुट
कावै॥जंत्योंकरवैरागउपावै॥३५॥तबहिपिंगलाव
चनउचारे॥बकुतजांतआपहिधिधिकारे॥गरेदिन

नको अंतपछताये ॥ तातें छिड़ वैराग उपावे ॥ ३६ ॥ पिंग
वाच ला ॥ अहो ऐक मेरो अज्ञांना ॥ जाके रिदे बस्यो जू मनां
नां ॥ जलबुदबुदा सम जो नरदेहा ॥ तांसों सुष हित
कीयो संनेहा ॥ ३७ ॥ सरवर जल पूरन तज पासा ॥ म्रिग
जल धाइ करी जल आसा ॥ चार पदारथ दाइक देवा
सदा निकट लहों नही सेवा ॥ संत सदा सुषदाइक स्वां
मी ॥ सो छोड्यो निज पत घट स्वांमी ॥ ३८ ॥ जैसे दा काल मु
ष मांही ॥ जांतें दुष सोक अधिकाई ॥ ३९ ॥ ऐसे दुरष
ताहि मैं जो ॥ आप हि दुष आपकों सजों ॥ देह वेच
मैं देह है पोष्यो ॥ याही जांत मन हि संतोष्यो ॥ ४० ॥
इस त्री लंपट त्रिसना दाह्यो ॥ दुषत नरसों मैं सुष
चाह्यो ॥ हा हा मेद मि जा अरु अंता ॥ मास रुधर उचा
रों मल अनंता ॥ ४१ ॥ विष्टा मूत्र से तक्रिम ग्रेहा ॥ ऊरे
धार नव ऐसी देहा ॥ ता मैं कहो रमत क्यों होई ॥ मो सी
मूढ अवर नही कोई ॥ ४२ ॥ या पुर मांहि जनक न्रिप
ऐसो ॥ सुष अधिकार सुरेसुर जैसो ॥ तो हूं परस न सु
ष कों तजे ॥ होइ विदेह हरि चरनन भजे ॥ अरु सनक
प जानजे हरि चरना ॥ जांते मिटे जनम अरु मरना
जाको भजें ब्रह्मा शिव सेषा ॥ परस्यो तिनहूं कदें न देष

षा ॥ ४४ ॥ ऐसे प्रन कों जे नर सेवैं ॥ तिन कों रीझ आप
कों देवै ॥ ऐसो प्रन मैं नांहि अराध्यौ ॥ कीयो अनरथ
अरथ न साध्यौ ॥ ४५ ॥ अब मैं आपन वेदन करों ॥ और
सकल उर तें परहरों ॥ अपने पत हरि के संगा ॥ सदा र
हों जुं श्री अरधंगा ॥ ४६ ॥ कहां और सुर नर प्रिय करि
हैं ॥ जे ऊबा पेर आप ही मरे हैं ॥ अर ते सुष कों ऊ थिर ना
हीं ॥ देषत काल पलक मैं जांहीं ॥ ४७ ॥ मेरी द्रिष्टि दुषी
सन आंवें ॥ काल अधीन कहा सुष पांवैं ॥ तां तें मैं निस
चै यों जांनी ॥ क्रिपा करी हे सारंगपांनी ॥ ४८ ॥ जिन मेरे
वैराग उपायो ॥ अपने चरन कवल मन लायो ॥ यह ह
रि क्रिपा बिना नहीं होई ॥ जां वैराग लहै न र कोई ॥ ४९
जां तें सब भव बंधन नासे ॥ हिरदै मा पत आंन प्रकासे
मैं तो मंद भागनी ऐसी ॥ त्रिभवन मांहि नहीं मो जैसी ॥
५० ॥ ता कों कैसे हरि कों भजनों ॥ कैसे काल कों तजनों ॥ जाल
पर जो दीनबंध गोपाला ॥ पतत उधारन परम दयाला
५१ ॥ तिन ही आप क्रिपा हूं करी ॥ जिन मेरे उर ऐसी ध
री ॥ अब लेया प्रसाद हि सीसा ॥ निसदिन भजों चरन
जगदीसा ॥ ५२ ॥ जिन ते या देहा निरबाहूं ॥ सो न हिआ ऊ
रंभ न सबाहूं ॥ सहिज मांहि जो हरि जी ल्यावे ॥ तां करिया

देहहिवरतावै॥५३॥याभवकूपपर्योनितप्रांनी॥
विषैआवरनजिहछपांनी॥तापरअजगरकालग्रा
स्यो॥यौंनरबकृतपासतेंफास्यो॥५४॥तांकौंहरिबि
नकौनछुडावै॥आपेकोइनछूटनपावै॥अरआप
हिआपकौंराषै॥जबसरवंसरिदेतेंनाषै॥५५॥ज
बहीहरिकीसरनेआवै॥तबहीआपहिआपछुडा
वै॥वैप्रभनिजानंदमेंदेवा॥कहांकरेकोतिनकीसे
वा॥५६॥परसभजगतकालछुटकावै॥हरिकीसर
नआइसुषपावै॥तांतेऔरसकलकौंतजों॥प्रेमभा
वहरिचरननभजों॥५७॥याविधआपहिआपउधा
रौं॥अबनहिभवसागरमेंडारौं॥यौंपिंगलापरमग
तपाई॥कुहूंलोककीआसमिटाई॥५८॥सीतलहोइ
सेजापैगई॥परमानंदपरापतभई॥यहसिष्यामेंतां
तेलीनी॥भलीजांनउरहसथिरकीनी॥५९॥जोलग
आसकरेनरकोई॥तौलगसुषीकदेंनहीहोई॥जब
हीसकलआससुटकावै॥तबततकालपरमपदपा
वै॥६०॥दोहरा॥यहगुरसत्रहिकीकहीसिष्यामेंसम
काइ॥अबअवरनकीकहतहोंसुनीयेहितचितला
इ॥६१॥इतश्रीभागवतमहांपुराणेएकादसमिस्कंधे

अवधूतोवाच

श्रीक्रिस्नउधवसंवादेअष्टमोध्यायः जोजोहितकरसं ३२
ग्रहकरे॥सोईसोअतदुषविसतरे॥जबहीहितसंग्र
हछुटकावै॥तबअपारसुषसागरपावै॥१॥कुकरपं
षीकहूंआमिषपायो॥सोलेउड्योबकतहितलायो
तबबकतेऊररनदुषदयो॥आमिषतज्योसुषीत
बभयो॥२॥यहमैंसीषकुररतेंपाई॥जोंतेसंग्रहक
रोंनकाई॥बकुरसीषबालकतेंलई॥मेरेउरजोंतेम
तभई॥३॥नामैंमांनअपमांनेजांनो॥चिंताकछुचि
तनहींआंनो॥निसदिनरहोंआतमांरामां॥कबहूंक
छूनउपजेकांमां॥४॥यहजगमेंदोईकोंसुषहे॥अव
रसकलजीवनकोंदुषहे॥उदमरहतबालमतहीना
अरजोगुणातीतपदलीना॥५॥ऐकविप्रकीकृतीकु
मारी॥ताहिविवाहिकीविप्रविचारी॥ताकेमातपिता
इकबारा॥अवरग्रांमकहूंकांमसिधारा॥६॥समाचार
इकविप्रनपारो॥विवाहकाजदिजकेग्रहआरो॥कंन्या
वचनकिसीसोंभाषे॥तिनतेंदिजआदरकरिराषे॥७॥त
बतिनकेभोजनकीधारी॥चावरकूटनलगीकुमारी
तबतांकेकरजूंजूंमोलें॥त्योंहीत्योंकरिकंकनबोलें
८॥तिनलजतहोइसकलउतारे॥वैवैहूंहाथनमेंधा

रे॥ बक्रर लगी जब चाव रछरने॥ तोहूं लगे सब दतेकरने
ष॥ तब तिनऐ करो एक ही रा षो॥ चुपकर रहै बक्रर नही
नाषो॥ मैं विचरत यो इछ्याचारी॥ याही देषि रिदै मैं धा
री॥१०॥ बक्र तन संग बढै बक बादा॥ दूजे क्रते हो इ
अनबादा॥ तांतें रहै ऐकलो जोगी॥ सदा विचार ब्रह्म
रस जोगी॥११॥ आसण प्रांणा देह मन बाधे॥ द्रिढ वै
राग हिरदै मैं साधे॥ निसचल होइ नित ब्रह्म विचारै॥
यों क्रम क्रम रज तम को जारै॥१२॥ त्यों त्यों निसचल ब
ढै समाध॥ तजते जावे सकल उपाध॥ तब ज्यों पावक
ईंध नहीं मां॥ त्यों होवे निजपद मैं लीना॥१३॥ तब क
छहूं कछु है तन जांने॥ सिला समांन देह गुन मांने॥ ज्यों
आगे निरपत है गयो॥ सैंना सब दबक्रत विधनयो॥१४
परसर कर किकछु भेद न पायो॥ या विधि सर मैं चित ल
गायो॥ औसी सीबलई मैं तांते॥ निसचल बुध नई मम
जांते॥१५॥ ज्यों लोक न तें डरे भुजंगा॥ बसे गुहा मैं रहै अ
संगा॥ सावधांन अ तयो रो बोले॥ गतादिक अंतर नहीं
षोले॥१६॥ ग्रह आरंभ कड़ बनको मूला॥ सेअरंभे जे नर
मूला॥ सरपपराऐ घर मैं रहै॥ या विधि मुन यह सिष्या
गहै॥१७॥ ऐके आहि निरंजन देवा॥ जाको कोई लेंन जे है

वा ॥ आपहितें मायाविसतारे ॥ सतरजतम बहुभेदप
सारे ॥ १८ ॥ बहुरआपहीसत्त संग्रहै ॥ निजानंदमैंरा
केरहै ॥ तांतें यह सत्त मिथ्या जांने ॥ यांकोकरतासोंस
तमांने ॥ १९ ॥ यहसिष्या मकरीतें लैवे ॥ सत्ततें परब्रू
ह्लकोसेवै ॥ जहांतहां यह मनकौंधारे ॥ निसबासुर
ही कबहूं नंटारे ॥ २० ॥ रागदोषसैं क्यूंही होई ॥ होतरू
पवाही को सोई ॥ भ्रिंगीकीटहूंतें लीनो ॥ तामनह यह
रिचरनन थिरकीनो ॥ २१ ॥ यह चौबीसगुरनकीस ऽ
ष्या ॥ तासों मैं नाषी जिड हू ष्या ॥ अबतनतें सीष्योसो
कहां ॥ तेरेसत्तअन्नां नहिंदहीं ॥ २२ ॥ मेरीदेहमोहि
सम भावे ॥ हिरदेग्यांनवैरागजनावे ॥ ज्यों बालपन
गयोबिलाई ॥ त्योंही यहअबजोबनजाई ॥ २३ ॥ आ
वेजरामरननितआगे ॥ बहुविधदुषदेहसोंलागे ॥ स्वां
नश्रगालनकौ यहभष्या ॥ तासोंप्रीतनजोरदष्या ॥
२४ ॥ पुत्रकलत्रअरथपसुग्रेहा ॥ कुलकुटंबसेवक
बहुतेहा ॥ तिनसोंमिलजोंदेहहिसेवै ॥ सोइक्अंतमहां
दुषदेवै ॥ २५ ॥ आगेकौं बहुकरमकमावै ॥ सत्तजम
कैद्वारपठावै ॥ रसनमितषिंचेनितरसना ॥ इंद्रीच
हैनारकोरसना ॥ २६ ॥ नैंनरूपअरुसबदहिश्रवना

नांमाचाहिकरेनितघ्रांना ॥ उचासप रसचौंहेसनबंधा
चरनकरहिगवनबकुधंधा ॥ २७ ॥ याविधसनमा
ललूटेंजांको ॥ बंध्योदेहसोंदेषेतांको ॥ तांतेंसननविष
नेहकोतजीऐ ॥ सदानिरंतरहरिकोनजीऐ ॥ २८
हरिजबमायागुणविसतारे ॥ तबनांनाविधदेहस
वारे ॥ तिनतिनमनसंउछ्रनभयो ॥ बकरोंमांनवत
ननिरमयो ॥ २९ ॥ तांकोदेषबकुतसुषपायो ॥ तांम
हिअपनेधांमबनायो ॥ तबहरिजीबोलेयहबांनी
प्रगटकहेहैवेदबषांनी ॥ ३० ॥ मोहिलहेसोयांकरल
है ॥ यांकरसननबंधनकोदहे ॥ जबमेरेहितकरेउपा
या ॥ तबतांकोंमैंकरोंसहाया ॥ ३१ ॥ तांतेंयहअतउ
रलनदेहा ॥ श्रीनगवांनरच्योनिजगेहा ॥ अतउर
लनकहूंजतननपावे ॥ जोपावेतोथिरनरहावे ॥
३२ ॥ प्रतदिनभ्रितनिरंतरग्रासे ॥ ऐकदिनातनका
लबिनासे ॥ जरारोगनेसोकनिधांना ॥ जामेंसुषीप
लकनहीपांना ॥ ३३ ॥ तांतेतांहिपाइकरराजा ॥ क
रलीजीऐआपनोकाजा ॥ जांतेयहछूटेसंसारा ॥ जा
केदुषकोवारनपारा ॥ ३४ ॥ निसदिनदेवनिरंजनन
जीऐ ॥ होइनेनीतविषैसनतजीऐ ॥ विष्याषांनपां

न सुत दारा॥ ऐसे जन देह न बारंबारा॥३५॥ तांते त्याग सक ३५
ल कों कीजे॥ हरि के चरनकवल चित दीजे॥ याविध
गुरुन तें सिष्या पाई॥ सब मैं अवर सकल छुटकाई॥३६
भूमें विचरैं होइ निहसंगा॥ या तन को छोडे पर संगा
सदा रहे हरि चरन निवासा॥ बहु बिध देखो सकल
तमासा॥३७॥ बहुत गुरन तें पूरन ग्यांना॥ जहं तहं
लेवै साध सुजांना॥ छूटे अहंकार अर ममता॥ हिर
दै आंन बिराजै समता॥३८॥ निरगुन सुरगुन भेद पहि
चांने॥ सार असार अथिर थिर जांने॥ जहां तहां लेवै
दिसटंत॥ संसे दैत मिटावै संत॥३९॥ परऐ परमार
थ गुर नांही॥ ऐसे जगुरु हैं सत गुर मांही॥ सतगुर तें ज
ब ग्यांन हि पावै॥ तब सारो जग ग्यांन सिषावै॥४०॥
तांते मेरे सदा अनंदा॥ हिरदै बिराजे परमानंदा॥
याविध जे ई हरि को सेवै॥ तिन को हरि निज चरनन
देवै॥४१॥ श्रीभगवांनोवाच ऐसे पद को वचन सुनाऐ
मन के भरम संदेह गवाऐ॥ राजा बहु बिधि पूजा की
नी॥ कर प्रनाम प्रद छना दीनी॥४२॥ तब राजा को
करसन मांना॥ दत्तात्रे मुनकी यो पियांना॥ राजा व
चन धार उर मांही॥ सजन को संगत ज्यों छिन मांही

४४॥ ब्रह्मद्रिष्टसजमैंश्रांनी॥ श्रैसोजयोपरमविज्ञांनी
मोराजाजदबमोहमारो॥ जिनअपनोजवसंकटटा
र्‌यो॥ ४५॥ तांतेउधवअवरनकोई॥ गुरूआपनोआप
हिहोई॥ आपहिछूटेआपहिअरे॥ आपहिजीवेआ
पहिमरे॥ ४६॥ दोहरा॥ यहजाख्याविज्ञांनमैंसजअवेत
उपाइ॥ अवतांकोसाधनकहौंबकउतजांतसमभाइ॥
४७॥ इतश्रीभागवतमहापुरांणेएकादसस्कंदेश्री
क्रिश्नउधवसंवादेचउरविंसगुरूवरननंनामनवमों
सुनउधवसाधनअवकहौं॥ तेरसजसंदेहहेदहौं॥ जां
तेउपजेब्रह्मविज्ञांना॥ छूटेऔरसकलभ्रमनांनां॥ १
ममजगतननिजमारगजांमे॥ तेसजरिदैबैठमैंआ
मे॥ तेकहीरेआतेकेघरमां॥ औरसकलबंधनके
करमां॥ २॥ तिनकोसावधांनहौंजांनो॥ वरणाश्र
मकुलमिथ्यामांनो॥ जेजेबकअरंभनकरैं॥ सुषचा
हैंनिसदिनदुषभरैं॥ ३॥ आगेकोबंधनउपजांवें॥
यांतेज्ञांनीकरमनजावैं॥ याविचारस्त्ररंभनतजे॥
होइनिहकांमचरनममजजे॥ ४॥ जहांलगहैनां
नांबुध॥ सासजउधवजांनकबुध॥ येतजावसोजु
मकरजांनो॥ सुपनमनोरथसमकरमांनो॥ ५॥ तां

भाषाश्रीभागवतएकादस

म

८

तेअवरकरमसन्तजे॥ नितनमितकछूइकसंजे॥ ते
ऊकछूसतनहीजांने॥ करैतोकरेनहीतोजांने॥ ६॥
जगतमांहिजोअंतरपरे॥ तेतोभूलनकबहूंकरे
जोजासमैंनअंतरजांने॥ तोतासमैंसहिजमैंगांने
७॥ यमनमांहिनिसचलचितधरे॥ नेमनकोंजावें
त्योंकरे॥ ब्रह्मवेताजांनगुरसरनेजावै॥ जांतेभेद
सकलकोपावै॥ ८॥ यमअरनेमकछूनहीसेवे॥ सत
गुरकहेसीषसोलेवे॥ मांनरहतमतसरनहीजां
ने॥ तनमनअरपप्रीतकोंठांने॥ ९॥ जहितहतेमम
तापरहरे॥ सावधांनआलसनहीकरे॥ तजेआसबि
थानबोले॥ तनमननिसचलकदेंनडोले॥ १०॥ सर
धासहितआसकतनहोई॥ गुरचरननसेवेसिषसो
ई॥ दाराबितसुतलोककुटंबा॥ सकलभूतआतम
प्रतबिंबा॥ ११॥ तिनसमहनकोंसमकरिदेषे॥ मैं
मेरोकरकदेनलेषे॥ रहेउदासआसपरहरे॥ निस
दिनब्रह्ममांहिमनधरे॥ १२॥ सूषमअरसथूलदेह
हैजेहैं॥ नरमरूपमायाकेतेहैं॥ इनदोनोतेंआतम
दूर॥ सुयंप्रकासमदाभरपूर॥ १३॥ असथूलसरीर
प्रगटजडरोहा॥ चेतनकरैतहिसूषमदेहा॥ सोसू

षमतनजडहैअंगा॥चेतंनहोइआतमपरसंगा॥१४
सोआतमांकुहूंतेंन्यारा॥कुहूंप्रकासककुहूंआधारा
ज्यूंइककाष्टअगनपरजेरे॥सोइजेप्रकासककरे
१५॥परसोअनलकुहूंतेंन्यारा॥सुर्यंप्रकासआतम
आधारा॥बकुधासोबकुकाष्टनसंगा॥पावैउतप
तइसथितअंगा॥१६॥त्योंचेतनहरिमायाकीने॥
तेआतमांआपकरिलीने॥तिनसंगजनममरन
दुषपावै॥लहैआनंदजबैछुटकावै॥१७॥तांतेबकु
विधकरेविचारा॥आतमजांनेसवतेंन्यारा॥एकअ
जनमांअरअबिनासी॥चेतंनपूरनसदासुषरासी
१८॥तनउपजेवरतेबिनसाही॥परमअसुधसुध
नहीकाई॥सकलविकारनकोसंघाता॥परगटदी
सेआवतजाता॥१९॥मोकोंयासोंकैसोसंगा॥मैंचेतंन
यहजडबकुरंगा॥योंविचारत्यागेतनममता॥आत
मद्रिष्टसकलमेंसमता॥२०॥याविधरिदेहोइथिर
ग्यांना॥मिलिबुधछूटेअभिमांनां॥प्रथमीअरिणअ
रथगुरदिवा॥दूजीसिषकरेनितसेवा॥२१॥गुरके
वचनश्रवनमथांना॥याविधउपजेपावकग्यांना॥
उपजकाष्टतनकेगुणदहै॥करमबीजकोइनहीर

है ॥२२॥ तब ज्यों पावक तेज समावै ॥ ईंधन बिना न
पलक रहावै ॥ त्यों आतम ब्रह्म मैं होई ॥ ईंधन करम
न सम करै सोई ॥२३॥ अर जे मूढ न या विध जांनै
ते बहु विध करमन कौ ठांनै ॥ ते करमन के फल
न भुगावै ॥ जनम मरन को अंत न आवै ॥२४॥ जहां
जहां जाइ तहां तहां काला ॥ निसदिन सदा रहै बेहा
ला ॥ यह जगदीस ज्यों का त्यों ही ॥ परै को पल रहै
न क्यों ही ॥२५॥ और रे और र और आकारा ॥ तन संग
तम नब कूप रकारा ॥ कबहूं सो नरि दिन ही आवै
जनम जनम मर मरहु षपावै ॥२६॥ करम अर जे
करमन आचरैं ॥ सुष अर जो सुष भोगन करैं ॥ ते चा
रौं दीसैं परतंत्रा ॥ तो ते सत्त जी ऐ यह मंत्रा ॥२७॥ जे पं
डित श्रुत सिंम्रित जांनै ॥ तत लहै बिन करमन ठांनै
ते मूरष देहा अभिमांनी ॥ आप हि आप कहां वैं ग्यांनी
२८॥ हरिजन संग न कबहूं करैं ॥ तातन सुनै करम
विसतरैं ॥ तिनतैं नलो जो कछु न जांनै ॥ तत वचन सैं
न हिरदै आंनै ॥२९॥ यद पअंत सुषन को जांनै ॥ अर
थिराने गरदह हि मांनै ॥ पर सो ततन समझै ते कु
जांत लहै जगत को नेकु ॥३०॥ कालम्रित जां को नित

कहा

ग्रासे॥ तौ कोऊ कहौं सुष भासे॥ जौं कोई मार न कौं लीजे
सूली निकट षडो लै कीजे॥ ३१॥ अरु तांको जो लोग गनु
गावे॥ सो तो कहो कि धौं सुष पावे॥ अरु तूं ही नर सुर
परलोका॥ मद मतसर निंदा ज्ये सोका॥ ३२॥ तिनके
हेत जतन बहु करे॥ सिध न होइ विघन अरु तपरे॥ ज्यौं
षेती मैं विघन अनेका॥ त्यौं सुरगादिक लहै कोई एका
हं ३३॥ अरु जो लह्यो तौ थिर नाहीं॥ दुष तवि[illegible]न सजा
इ पल मांही॥ ईहां यग करे बहु कोई॥ अरु जो अंतरा
इ न ही होई॥ ३४॥ तब सो सुरग लोक कौं जावे॥ होइ
करि देव देह सुष पावे॥ अपने पुंनन कौं उपजायो
उतम जाइ बिवांन न पायो॥ ३५॥ बहु गंध्रब गाइ कौं
करें॥ बहु तसुं दरी नार मन हरें॥ इछा होइ तहां च
ल जावे॥ सहित बिवांन बिलंब न लावे॥ ३६॥ अंम्रि
त पांन तहां नित करे॥ वसत्र आभरन देह बहु धरे॥
पौ नित नौंमन बहु सुष पावे॥ पूरब की कछु चित न आ
वे॥ ३७॥ जितो पुंन ईहां को होई॥ ते तो रहै सरग मैं सो
ई॥ पुंन षीण हो वे फुन जब ही॥ काल तहां ते डारे त
ब ही॥ ३८॥ सो सुष कहो त ज्यो कां जावे॥ ताड षकी क
छु कही न आवे॥ रहे च हे पर कौं करे रहे॥ काल अधी

नमहांदुषसहै॥३९॥कोईसुषपावैकहूंजेतो॥छीनली 
ऐपावैदुषतेतो॥सोतजिसरगजूममैंआवै॥पीछेजों
नअनंतहूंपावै॥४०॥यहनाषीविधकीगततोसों॥अ
बनषेदकीसुनीऐमोसों॥जोऊसंगमेंप्रानीपरै॥ताब
ऊतेजुअधर्मनकरै॥४१॥मैंहीऐकवसोंसननमांही॥
तिनकेद्रोहनरकमेंजांही॥बजरआइदसथावरतन
लहै॥जनमजनमबडुसंकटसहै॥४२॥तांतेविधन
षेदजोकरै॥तेसनजनमजनममेंपरै॥करमकरैति
नतेंतनधरै॥तनधरधरबडुदुषसोंमरै॥४३॥तांतेप्र
विरतमेंसुषनांही॥जांवैंब्रह्मलोकलगजांही॥लोक
त पांसनलोकसमेता॥इतनोरहैब्रह्मादिनजेता॥४४॥
सोब्रह्माहूंअंतनरहै॥तीनरबाजकालजांगहै॥अग
निरहैमेरनेमांही॥पवनवहैनिसचलपलनाही॥४५
सूरजचंदऐकरसचलें॥मिरजादातेंसिंधनटलें॥मि
तनिरंतरसनकोंग्रासे॥मेरकालरूपतेंत्रासे॥४६॥
तांतेकछूनसुषप्रविरत॥सुषचाहैसोगहैनिविरत
अरइंद्रेकरिकरमउपावै॥तिनकोंसतरजतमवरता
वै॥४७॥सोआतमइंद्रेवसहोई॥तांतेसुषदुषपावै
सोई॥परमातमांअकरताजांनों॥जोगरहततताहीको

मांनो॥४८॥करमअरुभोगआदिकहैजेते॥इंद्रेअरुगुण
क्रितमनतेते॥जोलगयहइंद्रेगुणबंधा॥तोलगनांहि
मिटेमनबंधा॥४९॥तनमनबंधमिटेनहीजौलौं॥नां
नांनांवबक्रतविधतोलौं॥नांनांभावरहेजबपागे॥प
राधीनआतमतबलागे॥५०॥पराधीनयहजौलगर
है॥तौलगकालनिरंतरग्रहै॥तांतेजोप्रविरतमैंहोवे
जुगजुगजनममरनतेरोवे॥५१॥प्रिथमजतोमैंएक
निरंजन॥ताहीतेंउपज्योयहअंजन॥कालआतमांलो
कअरुवेद॥धरमसुभाववक्रतविधभेद॥५२॥ऐसम
मायासतनकोई॥तांतेबुधअनरकतनहोई॥एकनि
रंजनआतमजांने॥तबसभसंकटभवकेभांने॥५३॥
लोकअरुवेदवासनातजे॥इंद्रेदेहविषेनहीभजे॥म
नहिरचोसोमिथ्यालेषै॥मनअतीतसोजहतहदेषै॥
५४॥अमरआतमांरोकविचारे॥याविधसकलउपाधे
जांरे॥तबहिरोकब्रह्मकोंपावे॥छूटेद्वैतबकरनही
ह आवै॥५५॥यहआतमअरदेंहविवेका॥तांकोजांनेरो
ककोएका॥ऐसेवचनकहेजबक्रिश्न॥उधवदासक
रीतबप्रश्न॥५६॥उधववाच॥हेप्रभुजोयहसारोरू
मा॥इंद्रेदेहविषेगुनकरमां॥अरुआतमअनीहअ

बंधा॥ तांकों भयो कवन बिध बंधा॥ ५७॥ अरु जो बक्र
त्रां न कों लहै॥ जो मउपाध देह में रहै॥ सो बक्रारों कूं लि
पत न होई॥ अरु क्यूं करि जांनी जे सोई॥ ५८॥ कैसे विचरे
कैसे रहै॥ कैसे जेंवे कैसे कहै॥ कैसे पउढे कैसे सोवे॥ कै
से सुने कवन विध जोवे॥ ५९॥ अरु आतमां ऐक है नाही
ऐक मुकत कों ऐक बंधा ही॥ ऐक बंध ऐक कूं मुकता
ऐ तो बक्रत ऐक कूं उकता॥ ६०॥ गुन अनादि आतमा आ
द॥ तांते यह तो बंधन आदि॥ नित मुकत कूं कही ऐ देवा
यां को मोहि बतावो भेवा॥ ६१॥ दोहरा॥ ऐ उधव निज भ
गत के सुनकर निरमल बैंन॥ ताको प्रति उतर कह्यो ह
रिजी करुणा ऐंन॥ ६२॥ इति श्री भागवते महांपुरांणे ऐका
दसमि कंदे श्री क्रिस्न उधव संबादे दसमों ध्याइ॥ १०॥॥
श्री भगवांनो वाच॥॥ सुन उधव अब परम ग्यांना॥ जां ते
भेद मिटे भव नांनां॥ बंध अरु मुकत तोहि समझावो॥ ते
रो संसै अग्यांन मिटावो॥ १॥ बंध मुकत जो कहीऐ कोई॥ सो
तो सकल गुनन तें होई॥ ते सत गुन माया के जांनो॥ इन तें दू
र आतमां मांनो॥ २॥ सो कौंर मोहि जनम अरु सुष॥ भै कर म अ
न आदिक बक्र डष॥ ते सारे माया क्रित केवल॥ सदा ऐक
आतम निह केवल॥ ३॥ जूं सुपने सुष डष अनेका॥ तिन

मों आतम को नही एका ॥ तेस जबुध अरु मन कों होवें ॥ इं
द्रे देह प्रगट ते सोवें ॥४॥ फुन बुध आदिक छू नही रहे
जाको प्रगट सबोपत कहें ॥ तब आतमां निरंतर होई
पर तां को सुष दुष नही कोई ॥५॥ जो सुषपत महि आत
म रहे ॥ तो विवहार पीछले गहे ॥ पर तां को कोई नही वि
कारा ॥ ऐसे ज माया के विवहारा ॥६॥ परमातमां आप
नही मांने ॥ तां ते सुष दुष बहु विध ठांने ॥ परमातमां
एक रस नित ॥ बंध मोष ऐस कल अनित ॥७॥ उधव जां
नो एक अविद्या ॥ अरु दूजी जो कही ऐ विद्या ॥ ऐ दोऊ
हैं मेरी शकत ॥ इन मैं सज्न हन की आसकत ॥८॥ बं
धन कस्यो चाहों मैं जां को ॥ पेर अविद्या पठावों तां को
अरु जां को बंधन मिटावों ॥ तां को विद्या शकत पठा
वों ॥९॥ ऐ जो दोऊ मुकत अरु बंधा ॥ तेम मशकतन
के सन बंधा ॥ आतम है सो मेरो रूप ॥ सज्न ते न्यारो प
रम अनूप ॥१०॥ जां ससि के प्रतबिंब अनेका ॥ पर तेब
कत नही सज्न ऐका ॥ अरु जां जां को घट बिनसा ही
सोई सो ससि मां हि समाई ॥११॥ त्यों सज्न आतम मेरी अं
सा ॥ पर घट संग लहे दुष संसा ॥ विद्या शकत जाइ जहां
जब ही ॥ घट को नास करे सो तब ही ॥१२॥ सोई सो तब मो

कोंपावै॥ अवरसकल नहीमेंजावै॥ अरप्रतिबिंबघ ४४
टनहूंमांही॥ सदाअलिपतलिपतकहूंनांही॥ १३॥
परघटसंगलिपत सोहोवै॥ अर त्योंलिपतओरहूंजो
वै॥ तऊआतमांसकलतेंन्यारा॥ सदाअलिपतनलिपे
विकारा॥ १४॥ परयातनमेंआपबंधानां॥ ताकेसंगल
है दुषनांनां॥ अबमैंबंधमुकतकीकहों॥ तेरसनसं
देहेदहों॥ १५॥ एकंदेहमैंदोइकोवासा॥ परमातमआ
तमकेपासा॥ ज्यूंदोइपंषीरहैंतरमांही॥ तरतेंभिंन
लिपतकहूंनाही॥ १६॥ दोऊचेतंनएकसमांना॥ स
मारूपएकेअसथांना॥ आपहितेंतिनवासाकीयो॥
तिनमहिएकतरहिचितदीयो॥ १७॥ देहब्रिछकेसु
षफलषावै॥ तांतेंदुषआपहीपावै॥ तबतांकाजत ज
नबकोकरै॥ तिनतेंजुगजुगजनमैंमरै॥ १८॥ देहमरे
मरनोकरजांनै॥ देहजनमतेंजनमहिमांने॥ ऐसेस
दादेहसंगदुषपावै॥ येमहिसोईआतमांकहावै॥ १९॥
परमातमांदेहतरमांही॥ सुषफलकबहूंषावैनाही
तातेंकरमनहीगहे॥ निजानंदमैंनिसचलरहै॥ २०॥ कछू
सोपरमातमजोआतमजांनै॥ देहअतीतकुहनको
मांनै॥ सुषफलअरआरंजनतजे॥ मुकतहोइपरमा

तमन्नजे । २१ ॥ ज्यूं तन मांहि मुकत परमातम ॥ विद्याया
इवसै तूं आतम ॥ तन मैं है पर तन मैं नाही ॥ आपहि
आप नयो थिर मांही ॥ २२ ॥ सुपनें देष ज्यूं जांगे कोई
सोसो सुपन चितारे सोई ॥ पर सो सुपन देह अरसुप
ना ॥ मिथ्या जांने ग्र्यूं मतें उपना ॥ २३ ॥ अर जो सहित
अविद्या होई ॥ सो तन मैं नहि परहै सोई ॥ ज्यूं सोवत
सुपना तन पावै ॥ तांको आप जांन मन लावै ॥ २४ ॥ त
न मैं बंध मुकत ते जीवा ॥ बंध जीव मुकता सो सीवा
बक्रर कहो मुकत के लछन ॥ जिनके जांने होइ बिच
षन ॥ २५ ॥ देषै सुनै कहै कछु करे ॥ सो कछु कदें न हि
रदै धरे ॥ सकल अरथ इंद्रे क्रित जानें ॥ आपहि एक
अ करता मांनें ॥ २६ ॥ पूरब करम अधीन सरीरा ॥ क
रम करे इंद्रे मन मीरा ॥ तिन मैं वास कीयो नही जांनै ॥
आपहि सूरष करता मांनै ॥ २७ ॥ बक्रर मुकत असी विध
रहै ॥ अहं कार या तन को दहै ॥ आसन असन अटन अ
रसैं ना ॥ दरस परस घ्रांण अर बैंना ॥ २८ ॥ इन मैं इंद्री
यन को वरतावै ॥ आपन कबहूं प्रीत लगावै ॥ रहै मां
हि परलिपत न होई ॥ ज्यों आकास पवन रवि त्यों ही
२९ ॥ विद्या नाम सह थी पाई ॥ क्रिडै वैराग सांन धरवा

ई॥ तासों काटे संसे सारे॥ जाग सकल जु मन ने दनिवारे
२०॥ ईं के प्रांण बुध मन मांही॥ कबहूं कछू वासना नां
ही॥ सो जद पतन हूं में दरसे॥ पर सो मुकत तांहि न ही
परसे॥ २१॥ एक कष्ट तन पीडा करैं॥ एक बकत पूजा
विसतरें॥ पर बुध रोष तोष न ही आंने॥ सकल देह
क्रित मिथ्या मांने॥ २२॥ विध निषेद जो कोई करे॥ किं
वा ग्रंथ कहै विसतरे॥ गुन कछु न लो बुरो नही देषे
गुन अर दोष समहि करि लेषै॥ २३॥ विध निषेद नाही
न कछु करे॥ नां कछु कहै न हिरदै धरे॥ निसदिन रहै
ब्रह्म रस रता॥ इछा में ज्युं जड उनमता॥ २४॥ ऐसे चिह
न मुकत कर मांनो॥ अर ममोष के साधं जांनो॥ मुक न
त भयो जो चाहै कोई॥ एसन साधन साधे सोई॥ २५॥
जिन सन सबद ब्रह्म है जांन्या॥ पर निज तत न ही पहि
चांन्यो॥ इन साधन मां हिरत नाही॥ तांके श्रम सन मि
थ्या जांही॥ २६॥ सबद ब्रह्म ब्रह्म के काजा॥ हरि जी अ
रहरि जगतन साजा॥ तां ते ब्रह्म बिना श्रम ऐसे॥ बंध्या
गाइ सेवीये जैसे॥ २७॥ बंध्या गाइ दूध बिन होई॥ परा
धीन तन राषे कोई॥ इस त्री बिन चर पूत अंन्याई॥ धरम
विहीन धन अध कांही॥ २८॥ जां जां इन तें दिन दिन कु

षहोइ॥ कबहूं सुष पावै नहीं कोई॥ सो नाम बिनां त्यों ब
ऋबिधवांनी॥ केवल बंध नहीं कर जांनी॥ ३९॥ सो ते
जग्य तप तप संघारा॥ सत्र वृति पालक विविध प्रकारा
किं वाजन मकरम बक्रतेरे॥ जा बांनी मैं नाहीं मेरे॥ ४०
मेरे नांनां विध मन बंधा॥ जा बांनी मैं नाहीं बंधा॥ बं
धा वांनी ताहि विचारे॥ निहफल जांनन पंडित धा
रे॥ ४१॥ या विध जांन बक्रत प्रकारा॥ बक्रतनांत क
रि बक्रत विचारा॥ जहां तहां तें मन निहै निवारे॥ पूर
न लोक ब्रह्म मैं धारे॥ ४२॥ जो तज हूजे नांनां अरथ॥
म मन धारन की नहीं समरथ॥ सो मन हेत करम सं करे
प्रेम मगन फल जिस पर हरे॥ ४३॥ औरे करम अकर
म विकरमां॥ बंधन जांन तजे सब्र करमां॥ जाहीं ते उ
पजे मन जगत॥ ताही मैं राषे अनरकत॥ ४४॥ सरधा स
हित सुने गुन मेरे॥ जिन तें करम न आवे नेरे॥ गावे सिम
रे उसतत करे॥ प्रेम सहित निसदिन विसतरे॥ ४५॥ जो
कछु करम कांम अरु अरथ॥ करे सकल ते मेरे अरथ
न मम आधीन सो निसदिन रहै॥ मंकू मवचन आंन न नही
गहै॥ ४६॥ या विध होवै निसचल जगत॥ और सकल
तें सहिज विरकत॥ तब मेरे निज रूप हि जांने॥ तां से

मां मां भेद हि मां ने ॥४७॥ तब ता ही पद मांहि समावे ॥ जां 
ते जनम फेर नही आवे ॥ पर यह सतसंगत तें होई ॥
सतसंगत बिन लहे न कोई ॥४८॥ भगत बिना भगत
हि नही पावे ॥ भगत बिना नही मोमें आवे ॥ तांते स
तसंगत को करहे ॥ हृ जो जतन सकल परहरिहे ॥४९
दोहरा ॥ असे सुन हरि के वचन मन मैं बाढी प्यास ॥ तब
भगत न अर भगत के लछन पूछे दास ॥५०॥ उधवोवा
च ॥ हे प्रभु पूरन परमअनंता ॥ यह जग बकत तजांत के
संता ॥ जां को संत कहो उमदेवा ॥ तां को मोहि बतावो भे
वा ॥५१॥ अरसो भगत कवन जो गांने ॥ जां ते तवनिजरू
प हि जांने ॥ तब उधव कों देव कमांना ॥ क्रिपासिंध बोले
भगवांना ॥५२॥ श्रीभगवांनोवाच परम क्रिपाल द्रोह नही
जांने ॥ छिमांवंत अरसत बषांने ॥ निंदा रहत ढंद समभस
मता ॥ परउपकारी रिदे न ममता ॥ ५३॥ आरे कों सबु थथा
रहे ॥ इंद्रेजित को मलतागहे ॥ सदा विचार हिंसा नही
जांने ॥ लघ अहार नही आघांने ॥५४॥ सीतल रिदे विचा
रे हि करे ॥ धरम आपने द्रिड ताधरे ॥ सावधांन अर रहत
विकारा ॥ धीरजवंत दया अधिकारा ॥५५॥ सोक मोहि अ
रु छुधा पिपासा ॥ जरा म्रित जीते षट मासा ॥ मांन अोर अ

पमांननजांने॥ औरनकोंबक्रमांनीठांने॥५६॥ जोको
ईसरनागतआवै॥ तांकोज्योंत्योंहांनउपावै॥ सजको
मित्रसुजावकरजांने॥ द्रिडविसवाससकलजरमजां
ने॥५७॥ ममअधीनसदाईरहै॥ साधनकोबलकछुदेंन
गहै॥ मोहीकोंकरिताकरजांने॥ कबहूंभूलनआपा
नांने॥५८॥ यदपवेदरूपमैंगाऐ॥ वरनाश्रमकुलध
रमबताऐ॥ तोहूंविधनिषेधसजतजे॥ द्रिडनिसचैभ
मचरननजजे॥५९॥ ऐसोजगतनिजजगतकहावै
तांकोसंगजगतकोपावै॥ देसअरकालरहितसरबा
तम॥ चिदानंदमैप्रजपरमातम॥६०॥ ऐसोजांनज
गतमोहिजजे॥ औरसकलसंकलपनतजे॥ सोकही
ऐमेरोनिजजगत॥ तासोंनिजहूजेअनरकत॥६१॥
अरजोऐसोमोहिनजांने॥ परअत्यंतप्रीतकोंठांने
लेकरमोहिसकलपरहरे॥ तेजनमोहिआपवसक
पह रे॥६२॥ ऐजगतनकेलछनकहीहें॥ मेरीक्रिपाहूंतेंल
हीहैं॥ तिनकोपाइजगतकोपावै॥ जगतपाइममचरन
नआवै॥६३॥ तांतेमोहिचहैजोकोई॥ ममसतसंगहि
सेवैसोई॥ अबमैंकहोंजगतकेअंगा॥ जांतेपावैमेरो
संगा॥६४॥ ममप्रितमांमैंमोकोंजजे॥ मनकर्मवचनफ

लाढिक तजै ॥ हित सों दरस परस परचर जा ॥ उसतति
अरहं कीत सुपरजा ॥ ६५ ॥ मेरी कथा विषे अतसार
धा ॥ मो बिन कछु न करे पल अरधा ॥ मेरे जनम कर्म
गुन गावै ॥ सदा निरंतर मोकौं ध्यावै ॥ ६६ ॥ तन अरु म
न के लछन जेते ॥ मोकौं सकल समरपै तेते ॥ जनंअ म
ष्टमी आदि जे व्रत बा ॥ बहुत उतसाह करे ते सरबा
६७ ॥ गीत निरत अरु बहु विध बाजा ॥ मंदर रूप ब
हुत विध साजा ॥ कथा कीरतन बहु बिध चरचा ॥
मम हित करै प्रेम सों अरचा ॥ ६८ ॥ असे बहुत भांत
उतसाहा ॥ सजन पुरबन सजन विध निरबाहा ॥ मथ
रादिक हरिधांम महि जावै ॥ बहुत भांत कर प्रेम बढावै
६९ ॥ औरन कौं अरचा सिषरावै ॥ ठौर ठौर प्रित मां
प धरावै ॥ बहु बिध करे बाग फुलवारी ॥ क्रीडा थांन
सहित चित्रसारी ॥ ७० ॥ हरि मंदर बहु भांत करावै
ज्यों हरि अरु हरि जगतन भावै ॥ आप मांहि जो आ
कत न होई ॥ तो हूं उदम ठांने सोई ॥ ७१ ॥ बहु बिध
महिमां कहे कहावै ॥ औरन सों मिल करे करावै ॥ मं
दर आदि बहु भांत बुहारे ॥ बहु बिध सींचे धूल निवा
रे ॥ ७२ ॥ चित्र विचित्र चौक बिसतरे ॥ होइ करि दास आ

पहीकोर॥मांनरहतकछुदंभनजांने॥जोकछुकरेसो
नहिंमरपांने॥७३॥मोकोंकरेआरतीजासों॥औरकू
छूनहीदेषैतासों॥ममप्रसादिप्रीतसोंलेवे॥प्रीतहीं
नजीवननहीदेवै॥७४॥ज्यूंज्यूंयोंहींउपजेप्रेम॥त्यूं
के त्यूंअधिकबढावैनेम॥ममजगतनेंरहेअधीन॥त
नमनधनसोंनितलेलीन॥७५॥अरएकादसठोर
नजग्य॥ममपूजाकरहोइअनन्य॥सूरजअगनवाऽ
प्रअरगाइ॥जगतजेषआकासअरवाइ॥७६॥
जलअरअर्थनेआपमैंत्योंही॥सजनमांजममपूजा
योंही॥विद्याअईसूरजकीपूजा॥मोकोंछोमनआं
नेहूजा॥७७॥बरषाराजसकरउपजावे॥सांतकसां
तसजनवरतावै॥तांममसग्रीषमसकलबिनासे॥
सकलजगतकोंआपप्रकासे॥७८॥तांतेमेरीपर
मविभूत॥ऐसेजांनकरेउसदूत॥पावकमांहिहों
मकरिजजे॥विप्रअथितजावसोजजे॥७९॥त्रि
णाजलआदिगांइनकीपूजा॥जगतजेषमैंअब
रनहूजा॥जगतजेषसजनबांधवजांने॥अतिप्रसं
नहोइपूजांठांने॥८०॥ज्यूंअपनेबंधसबंधी॥ति
नसोंप्रीतसजननेंहेबंधी॥तिनकोबकुतमांतकर

सेवे॥ तन मन धन निसचै कर दे वै॥८१॥ त्यों ही भग
त आपने भाई॥ ऐसे जांन करै अधिकाई॥ तन मन
धन सों प्रीत बढावे॥ जिन तें मेरे भेद दृढि पावे॥८२॥
हिरदे आकास ध्यांन सों सेवे॥ सम अधार पवन चि
त दे वै॥ जल को जल अरु फल फुलादिक॥ भूधर णी
पूजै मंत्रादिक॥८३॥ जो गन सों निज देह हि तजे॥ मो
विच अंत राइ सो तजे॥ सत्व भूतन में मो कों जांने॥
सम दरसन यह पूजा मांने॥८४॥ इन सत ठौरन पूजा
करे॥ मेरो रूप हिरदे मैं धरे॥ रूप चतुर भुज आयुध
धारी॥ स्यांम सरीर पीतांबर धारी॥८५॥ सीस मुक
ट सुत ॐ मन लकर ना॥ कौतक आदि बहुत अभरना
ऐसो रूप सरब मैं ध्यावे॥ सावधांन होइ प्री बढावे त
८६॥ या विध वाइ कूप सर बाग॥ जप तप दांन दया
ब्रित राग॥ मेरे हेत करे जो करे॥ मो बिन और न हिर
दै धरे॥८७॥ इन साधन करे नर जोई॥ प्रेम भगत म
म पावै सोई॥ ए साधन कर ते बहु भांत॥ साध मिलाप
होइ दिन रात॥८८॥ तिन सों ऐसी जुगत दृढि पावे॥ जां
ते ग्यांन भगत उर आवे॥ तां ते ग्यांन भगत को कारन
ऐक भगत भवसागर तारन॥८९॥ तां ते भगत न सों

हित लावै ॥ जिनतें मेरी भगत हि पावहि ॥ तिनकौ व
राज भगत को नित ॥ कबहूं और न आवै चित ॥ ५०
मैं वांको मेरे है तेई ॥ ऐसे भेद न जानै कोई ॥ जो क
छु कहैं करों मैं सोई ॥ यह पमेरे मन नही होई ॥ ५१ ॥
मोहि मिलण को एक उपाउ ॥ बहु बिध षोजत औ
र न पाउ ॥ साध संग मिल भगति ह करही ॥ सोई एक
जगत जलत रही ॥ ५२ ॥ भगत बिना भगत न ही
पावै ॥ भगत बिना नही मो मैं आवै ॥ मो मैं आइ बिना
जहां जाई ॥ तहं तहं काल निरंतर षाई ॥ ५३ ॥ यह
अत गोप मतो है मेरा ॥ अर मेरे आधीन चित है तेरा
तांते यह तो सों मैं कह्यो ॥ आगे कछु कहबो नही र
ह्यो ॥ ५४ ॥ दोहरा ॥ बहुर गोप अपनो मतो कहों तोह
समझाइ ॥ जां तें छूटे जगत भै मो मैं रहै समाइ ॥ ५५ ॥
इति श्री भागवते महापुराणे एकादस स्कंधे श्री कृष्ण
उधव संबादे भगत लछणा नाम एकादसोध्याइ ॥ ११ ॥ श्री
भगवानो वाच ॥ उधव मतो गोप सुन मेरो ॥ पावें मोहि
मिटै भव तेरो ॥ आप मिलन को पंथ बताऊं ॥ और स
कल को पंथ दिषाऊं ॥ १ ॥ जोग कही जे अष्ट प्रकारा
सांष प्रक्रित पुरष बिचारा ॥ बहु बिध वरनाश्रम

केधरमा॥ सकलत्यागहोवैनिहकरमां॥ २॥ वेदादि
कबक्रविद्यापाठा॥ जहां लगेहैतपव्रतकाठा॥
होंमयग्पसरवापीकूपा॥ इच्छा दांन समेअनरूपा
३॥ इकादिसी आदि वरतहैंजेते॥ गुपतमंत्रमेरेहैं
केते॥ ममपूजाप्रितमांआचरना॥ तीरथरटनने
मको करना॥ ४॥ औरसमदम आदिकजेते॥ सा
धनसकलमुकतकेतेते॥ इनसत्नहिनतेंमोहिनपा
वै॥ साधूजनपलमांहिमिलावै॥ ५॥ जनतेंमनको
संगनछूटे॥ ममचरनननमैंचितनचहूटे॥ तातेमोहि
नपावैजनते॥ पावैवचनसाधकेसुनते॥ ६॥ साधूऐ
सेवचनसुनावै॥ शत्रमित्रसुषदुषजनावै॥ सास्त्र
सारकालनहीकाला॥ साधदिषावैंसत्नतकाला॥ त
७॥ सत्नतेंमनकोसंगमिटावै॥ मेरेचरनकवलल
पटावै॥ ऐसीविधभवसागरतारें॥ मेरेजनततका
लउधारें॥ ८॥ जेतेतरेतरेंगेजेते॥ अरअबहूंतरते
हैंकेते॥ तेसतसाधसंगततेजांनो॥ इजोऔरउपा
इनमांनो॥ ९॥ षगम्रिगजातिधांन असुरादिक॥
चारणसिधनागगुह आदिक॥ अपसरणविद्याधर
गंध्रबा॥ जिनजिनपायोतेतेसरबा॥ १०॥ वेसमूह

अंतज अर नारी ॥ बक्रराजसतां मस अधिकारी ॥ जुग
जुग जे सत संगत आरो ॥ तिनहीं तिन मेरे पद पारो
११ ॥ वरतासुर विरघासुर बांना ॥ बलप्रहिलादि वि
भीषण जांना ॥ मैं सुग्रीव रीछ हनमंता ॥ गज अरु गी
ध व्याध अघमंता ॥ १२ ॥ कुलाधार कुबजा ब्रिज
गोपी ॥ धरमन की सेवा जिन लोपी ॥ यग्यपविखेवि
प्रन की बनता ॥ पुरषन की कीनी अविमनता ॥
१३ ॥ और अनेक कहां लौं कहीए ॥ कहत कहूं अं
त न लहीए ॥ तिन कछु विद्या वेद न जांने ॥ सांष
जोग नाही पहिचांने ॥ १४ ॥ जप तप यग्य बरतादि
न कीने ॥ औरौं धरमन को रुचि ने ॥ पर जो साध संग
तिन पारो ॥ तेसत्त मेरे चरनन आरो ॥ १५ ॥ अरु हुं उ
धव यौं मत जांनो ॥ तिन कौं संगत मेरी मांनो ॥ उध
व संत अर मैं द्वै नाही ॥ मैं ही हों संतन उर मांही ॥ १६
किनहूं मिलौं धार कर तन कों ॥ मिल कर सोधौं ति
न के मन कों ॥ असी विध लोकन कों तारों ॥ लोकन साधु
रूप उधारों ॥ १७ ॥ साधन होइ मन के मल हरों ॥ सोम
३ न अपने चरनन धरों ॥ असी विध तिन कों धारों ॥ ज
हां तारों तहां मैं ही तारों ॥ १८ ॥ साध संग सो मेरो संग ॥

साधसकलहैं मेरो अंग ॥ तातें हौं ऊधसाधसंगमांनो ॥
केतो हौं ऊध मेरई जांनो ॥ १९ ॥ गोपी गांइ ब्रिछ नर नां
गा ॥ औरो मूढ बुध बदनागा ॥ मम सतसंग पे मतिन
बाढ्यो ॥ भावजगत मो कौं अराध्यो ॥ २० ॥ औरकहूं सा
धन नहीं जांन्यो ॥ अरु नहीं ब्रह्मरूप करमांन्यो ॥ पर
तिन को हित मो सो भयो ॥ तां तें सब मन को मल गयो
२१ ॥ अमें बिना तिन मो कौं पायो ॥ अत अपार भव दुष
मिटायो ॥ जां को जोग सांष बिरत ध्याना ॥ यग्य वेद वि
द्या विध नांनां ॥ २२ ॥ कर संन्यास बहुत दुष सहै ॥ ता
हूं मो कौं कदें न लहै ॥ तां तें तिन सुष न सो पायो ॥ जो
केवल मन मो सों लायो ॥ २३ ॥ राम सहित मोहि पायो
जबही ॥ चले अक्रूर मधपुरी तबही ॥ तब तें गोपी मेरे
हेता ॥ पाइ मूरछा भई अचेता ॥ २४ ॥ बहुरें सम भऊ ब
हुत दुष पावैं ॥ निसबासर मम चरन ध्यावैं ॥ मोहि छो
ड सब दुष मे देषैं ॥ लोक वेद कुल कछू न लेषैं ॥ २५ ॥
जो निस मो सों पल ये बीते ॥ ते ई तिन कौं कलप सम बी
ते ॥ मेरे गुण न सुणो अरु गावैं ॥ लीला रूपी मो कौं ध्या
वैं ॥ २६ ॥ कबही बिरहि महां दुष रोवैं ॥ कबहूं तपै द
सों दिस जोवैं ॥ कबहूं प्रांनतजन की भाषैं ॥ मम मद रस

नआसाते राषैं ॥२७॥ नींद भूष तिन सकल गवाई ॥ औ
र देह गुन रहै न राई ॥ तिनके दुष ते ई पै जांनै ॥ के सैंती
जो कहा बषांनै ॥२८॥ द्रिढ प्रचंड मन अनल अधिकारा
सकल विकार भये जर छारा ॥ प्रेम प्रवाह सकल मिल
छाले ॥ यों सो विचके अंतर टाले ॥२९॥ तब वह रूप
जी परम अनूपा ॥ भूली आप भई समरूपा ॥ ज्यों जो
गेस्वर ब्रह्म ध्यावैं ॥ त्यों होइ ब्रह्म आप विसरावैं ॥३०
अरु ज्यों सरता सिंध समावैं ॥ नाम रूप गुण भेद मिटा
वैं ॥ त्यों वै भई रूप सनमेरो ॥ द्वैत भाव कहूं भयो न ने
रो ॥३१॥ पाप जौंन अबला तें सारी ॥ अरु श्रुत की मिर
जादा टारी ॥ निज पत छोड़ सकी यो बिभचारा ॥ अरु ति
न सो कौं जांन्यो यारा ॥३२॥ ब्रह्म भाव कबहूं नही जां
न्यो ॥ नित पर पुरष सो हित मांन्यो ॥ पर तौ हूं भव
सिंध मिटायो ॥ सो तन सहं अन मसपद पायो ॥३३॥
तां ते सुन उधव बड़ भागा ॥ लोक वेद सब हूं कर त्यागा
जो है सुन्यो सुनन को जोई ॥ प्रविरत निविरत जो कछु
होई ॥३४॥ सन्नतज रोक सरन मम आवो ॥ द्वैत भाव म
न तें विसरावो ॥ जहां तहां मम रूप हि देषो ॥ आपा पर
कछु और न पेषो ॥३५॥ ऐसो होइ कर मो कों पैहो ॥ जो

तेंजगतजनमनहीं ओहो॥योंहरिजीवांनीविसतारी ५२
तबउधवआसंकाधारी॥३६॥उधववाच॥प्रनउम
त्यागवेदकोकह्यो॥सोमेरेउरसंसेरह्यो॥उमरीआ
ग्यावेदकहावै॥ताहिछोडकेसेसुषपावे॥३७॥उम
हीश्रुतमेंकरनेजाष्यो॥उमहीईहांदूरकरिराष्यो
तांतेमनभरमतहैमेरो॥थिरकीजेआपनेजनकेरो
३८॥ किधोंवैसतकिधोंहैंदेवा॥याकोमोहिबतावोभे ह
वा॥तबगोपालवचनउचरे॥जंरविउदेमधअंध्या
रे॥३९॥श्रीभगवानोवाच॥ उधवअबसुनउतमग्यां
ना॥जांतेबुधछूटेभ्रमनांनां॥प्रिथमैंआपनिरंजन
ऐका॥औरकछूनहिकृतोअनेका॥४०॥बहुरकीयो
मायाविसतारा॥रचोदेहबहुअंगप्रकारा॥तामेंआ
पप्रवेसाकीयो॥प्रांनअरसबदसंगकरलीयो॥४१
सोतासबदचक्रआधारा॥परानामकीनोआगारा॥म
णपूरकपसंतीनामा॥चक्रविसुधमधमांधांमा॥४२
बाहिरप्रगटवैषरीबांनी॥जोयहलोकअरबेदबषां
नी॥सुरलघमात्रअछरहैंजेते॥नांनांभांतविसतारेते
ते॥४३॥लोकमांहिथोरेविसतारे॥वेदमांहित्रैसठहैं
सारे॥परतिनकोबहुबिधविसतारा॥जांकोकोईल

हे न पारा ॥ ४४ ॥ जैसें अनल काष्ट मथ काढो ॥ ईंधन
पवन संग मिल बाढ्यो ॥ यों मम वांनी को विसतारा
जांतें प्रगट्यो सकल पसारा ॥ ४५ ॥ या विसतार सबद
को सारा ॥ जामें चेतन रूप हमारा ॥ इंद्रे उपजी दसप
रकारा ॥ श्रोत मन बुध चित अहंकारा ॥ ४६ ॥ सत र
ज तम माया गुन जांनो ॥ या विसतार तिनहीं कों मांनो
जो अवै तऐक निरधारा ॥ तिन कीनो माया विसता
रा ॥ ४७ ॥ तिन मैं बक्रत जांत अज्ञास्यो ॥ उतम मध
म नीच प्रकास्यो ॥ विधनिषेद तांते करल है ॥ सुषदु
ष तिनके वे फल भये ॥ ४८ ॥ या संसार ऐक तें ऐसो
ऐक बीज तें बक्ष वन जैसो ॥ तांतें यह सब ऐक अधा
रा ॥ अर ऐके को सकल पसारा ॥ ४९ ॥ जैसें वसत्र तं
त मैं होई ॥ ओत पोत दूजा नहीं कोई ॥ ऐसें या तर
वर है ऐका ॥ वे फल फूल अर साष अनेका ॥ ५० ॥ य
ह सब मम चेतन अधारा ॥ पर तो हूं चेतन तें न्यारा
न पर चेतंन है मेरो अंसा ॥ यामें मूल अं नो संसा ॥ ५१
यह संसार ब्रिष है जैसें ॥ मैं भाषत हों सुनीऐ तैसें ॥
पाप पुंन बीज है जां के ॥ मूल अपार वासना तां के
आदि रोत्रे गुरा त्रेसाषा ॥ तिन तें पंच मूल पर साषा

उपसाषा मन अरु ई के दस ॥ सबदादिक सरवै पं ५२
चों रस ॥ ५३ ॥ कफ अरु पित वात त्रै बल कल ॥
सुष अरु दुष पग टे रो वै फल ॥ तां मे वै पंषी कोवा
सा ॥ पर मात म अरु आतम दासा ॥ ५४ ॥ जे मूरष
यह भेद न जांने ॥ ते बहु भांत वेद विध ठांने ॥ ति
न तें हो वै बहु बिध बंधा ॥ जुग दुष पांवै ते अंधा उग
५५ ॥ जे यह देह ब्रिह्म कर जांने ॥ आप हि पंषी न्या
रो मांने ॥ वेद सिंम्रित सब माया देषै ॥ सकल अती
त आपकों लेषै ॥ ५६ ॥ तब यह बिध न भेद छुट जा
वै ॥ सुष अरु दुष के निकट न आवै ॥ सरब भूत
ऐकै पहिचांने ॥ भेद देह माया कर जांने ॥ ५७ ॥ चेतं
न ब्रह्म कत ब्रह्म कर देषै ॥ और सकल माया कर ले
षै ॥ पर यह भेद सकल तब पावै ॥ जब सतगुर की
सरन हि आवै ॥ ५८ ॥ सतगुर बिना न कोई पावै ॥ ब्र
ह्मादिक भांवै सो कहांवै ॥ तां ते गुर की सरने आ
वै ॥ त्रिड उपासना ज्ञान तब ढावै ॥ ५९ ॥ गुर सेवा को
ऐसो प्रभाव ॥ जां ते उपजे मेरो भाव ॥ गुर सेवा तें पा
वै मुकत ॥ गुर सेवा तें सहिज विरकत ॥ ६० ॥ गुर सेवा
तें ज्ञांन हि लहै ॥ गुर सेवा तें करम नहि दहै ॥ गुर सेवा

तें ग्यांन प्रकासा ॥ गुर सेवा ते मन मचर न निवासा ॥ ६१
मोहि मिलन कोइ है उपाई ॥ गुर सेवा बिन अवर
न काई ॥ तां ते गुर की सर नहि जावै ॥ तन मन धन
सौं हित लगावै ॥ ६२ ॥ तां ते उपजे ग्यांन कुठारा ॥ स
न फांस न को काटन हारा ॥ त्रिगुण लिंग सरीर
उपाध ॥ सो आतम को लागी व्याध ॥ ६३ ॥ ग्यांन कुठार
सकल सो हरे ॥ या विध आतम निरमल करे ॥ पीछे
ग्यांन ध्यांन सर्व त्यागे ॥ निसदिन एक ब्रह्म अनरागे
६४ ॥ तब सो ब्रह्म महि माहि समावै ॥ जां ते बहुर ज
नम नही पावै ॥ तां तें उभ सर्व साधन त्यागो ॥ निसदि
न एक ब्रह्म अनरागो ॥ ६५ ॥ दोहरा ॥ यह उधव तोसौं
कह्यौ सर्व मोचन मम ग्यांन ॥ अब बहुर कहौं साधन सहि
त जा सौं परम निधांन ॥ ६६ ॥ इति श्री भागवते महांपुरा
वाच णे एकादस सकंदे श्री क्रिस्न उधव संबादे भगत जोग ना
म दसमो ध्याइ ॥ १० ॥ श्री भगवांनो ॥ सुन उधव यह परम ग्यां
ना ॥ जां ते पावैं परम निधांना ॥ जां ते ग्यांन होइ सो कहौं
या विध सर्व अग्यांन हि दहौं ॥ १ ॥ सांत क रजस तांम
स जे हैं ॥ उधव त्रैगुण माया के हैं ॥ सुख दुख सर्व ति न
ही ते जांनो ॥ तिन ते परे आतमा मांनो ॥ २ ॥ तां ते नर सां

तककों गहै॥ सांतककरजतमकोदहै॥ पीछेबूद्ध
मांछिथिरहोई॥ सांतककों तबत्यागेसोई॥३॥ ऐसी
विधतीनोगुणदहै॥ तबहोइबूद्धब्रह्ममें रहै॥
ज्यांज्यांहोइसांतकअधिकारा॥ त्यांत्यांप्रेमजगतव (सांत)
सतारा॥४॥ सकलवसतंकजबजजे॥ तबहूंसांत
कगुणउपजे॥ सांतकज्यों ज्यो त्यांत्यां जग त॥ त्यांही
त्यांआनतेंविरकत॥५॥ जबरजतमदोऊमिटजां
वैं॥ तांतेतिनकेगुणनहिंआवे॥ हरषसोगमांनअ
पमांना॥ निंद्राआलसगरबगुमांना॥६॥ रागदोष
आदिक हैंजेते॥ कुंदसकलरजतमकेतेते॥ तांतेज
बयहरजतमजांही॥ तबतिनकेगुणउपजेनांही
७॥ तांतेसांतकसंगतकरो॥ रजतमकीसंगतपरह
रो॥ मूलसकलकोसंगतकारण॥ संगतकोबेसंगत
तारण॥ ८॥ देसअरकालअसनजलपांना॥ ग्रंथअ
रकरमजनमअरधांनां॥ गरजादांनआदिसंस्का
र॥ मंत्रजापएदसप्रकार॥९॥ एदसजांकोहोवैजेसे
गुणविसतारेतांकोतेसे॥ सांतकतोसांतकउपजावे
राजसतोराजसअधिकावे॥१०॥ तांमसतोतांमसविस
तारे॥ जेसपरससोतेसधारे॥ जाहीजामेंजोगुणहोई

सोसोउतमग्यानि बसोई॥११॥ परजो उतम साध बषांनै
सोवक्रसांतक उतम मांनै॥ जोअतिनिंदत मों गुण
मोहै॥ राजसकछुक मध्य मंहोहै॥१२॥ तांतैऐदस सां
तकसै वै॥ राजसतामस नांम नलैवै॥ राजसतांमस जो
दितहोई॥ तो हंसन छुटकावै सोई॥१३॥ सांतक सं
गतै उपजे संत॥ त्यां त्यां लहै नगतकोतत॥ जो लग
त्रिंड उपजै विग्यांना॥ देषै सकल ऐक नग वांना॥
१४॥ अरजो दोक दैह नद्युम जांनै॥ सत्रविसतार
सुपनसम मांनै॥ तब यह ब्रह्ममाहि थिर होवै॥
सांतककौ हूं और न जोवै॥१५॥ जां बांसनतें उपजै
अनल॥ अरमारततें होवै प्रबल॥ सत्र बांसनकों
दाहै सोई॥ आपहि बक्र रसमापत होई॥१६॥ त्यों सा
धन यह तनतें होवै॥ होइ प्रचंद या तनकों षोवै॥
बक्ररें आपसमापत होई॥ साधन लेस हूं रहै न कोई
१७॥ गुणातीत सो कहीऐ जोगी॥ तीनो कालब्रह्मर
सभोगी॥ सो बक्ररें नव मांहि न आवै॥ मोहि मिल्या
मो मांहि समावै॥१८॥ तातें सन साधन छुटकावै॥
ऐक निरंजन मोकों ध्यावै॥ तब हरिकी सुन अदभुत
वांनी॥ जन ऊधव यह प्रश्न बषांनी॥२०॥ ऊधवोवाच

हे प्रभु इहां असे कहीये॥ ग्यांनादिक तजे सुष लहीये।
पर जे विषे सुष न को चाहैं॥ तां तें बकुआरंभ सब बाहैं।
२१॥ ते ब परिस दा दुषी रहैं॥ कब हूं भूल न सुष कों लहैं
पर ते जो विषा न दुष जांने॥ जांन बूझ कौं उद्दम ठांने।
२२॥ ज्यों बकरा मारन कौं लीजै॥ ले छेर न में गाढो कीजै॥ वकु निरलजन कछु हूं जांनै॥ तिन सौं मिल विषादिक ठांने॥ २३॥ अर जैसे गरधप अरकूता॥ त्रिसकार
तेस है बहूता॥ सुष के हे तेस न न आधीनां॥ सदा रिदै
दुरबल अतदीना॥ २४॥ वे तो मूड न कछु ही जांनै॥ तां
ते विष्या उद्दम ठांने॥ ऐ तो नर जांने सन बाता॥ देषैं जम
तच ल्यो सन जाता॥ २५॥ प्रिथमें तो सुष आवै नाही॥ जो
आवै तो थिर न रहाई॥ अर जो दिना चार न हि जावै॥
काल हूं ते तो षा न हि पावै॥ २६॥ काल निरंतर ग्रसते जां
वै॥ ऐक दिना जम द्वार पठावै॥ तहां नरक है बहुत प्र
कारा॥ जिनके दुष को वार न पारा॥ २७॥ आगे चौरासी
जे नारे॥ विष्यन कौं बहु दुष विसतारे॥ या भव जल के
दुष अपारा॥ कहीं कहां लग वार न पारा॥ २८॥ असे सन
विध मां न व जांनै॥ तो हूं कौं आरंभ ठांने॥ आपे आप कों म
दुष उपजावै॥ आपे आप जम द्वारे जावै॥ २९॥ सोयह

सकलक्रियाकरिकहो॥मेरेउरकासंसादहो॥योंकहिकें
उधवजबरहै॥तबहरिजीप्रतउतरकहै॥२०॥श्री
भगवांनोवाच॥उधवयहआतमअविनासी॥ग्यांनस
रूपपरमसुषरासी॥सोजबहीयातनमेंआवै॥तब
सुवाधीनविषयासुषपावै॥२१॥बहुरोंतिनहितउदम
गहै॥नहिपावैतौदुषकोंलहै॥जबहींदेहआपकोंजां
नै॥याविधसुषदुषतबहींठांनै॥२२॥ऐसेबढेदेहअ
हंकारा॥तबहींराजसकोअधिकारा॥राजससहित
जबहींमनहोई॥तबऐईसुषजांनेसोई॥२३॥तबसं
कलपविकलपनकरै॥निसदिनरिदैविषयनसुष
धरै॥जबजहांसुषहिसुनेअरदेषै॥तबवसहोइनिज
सुषकरलेषै॥२४॥तबहिरदैमेंबाढेकांम॥ग्यांनविचा
रनराषैनाम॥तांतेबहुराजसअधकारा॥राजसतेंम
नगहैविकारा॥२५॥तबराजसकोवेगप्रचंडा॥ग्यांन
हिमारकरैसतषंडा॥तांतेग्यांनसुनेअरजांनै॥अरऔ
रनसोंआपबषांनै॥२६॥परसोकांमनहीगहिराषै॥लै
करपकडकरमकरवावै॥परयदपयानरकीबुध॥
रजतमतेंनहीपावैसुध॥२७॥तोहूंनिसदिनदोषवि
चारै॥उरतेंसकलकांमनांटारै॥सावधांनआलसमन

हीकरे॥ मनक्रमवचनचरनचितधरे॥३८॥ आसराजी ५५
तकरेवसर्पांना॥ निसदिनउरराषेमसध्यांना॥ अर
ममसिषचारसनकादिक॥ सकलततग्यांननकीआ
दिक॥३९॥ तिनविचारकरयोगदिनाष्यो॥ सोईसुन्यो
औरसजनाष्यो॥ ज्यांहीज्यांमनषेतातजै॥ त्यांहीत्यां
ममचरनन्नजै॥४०॥ याहीतेंसजमिटैविकारा॥ याही
तेंछूटेसंसारा॥ याहीतेंममचरननपावै॥ बहुरोंजग
तजनमनहीआवै॥४१॥ तांतेपरमजोगततराषो॥
जोंतमेरेसिषनभाष्या॥ जबयहबांनीबोलेक्रिश्न॥
उधवजनतबकीनीप्रश्न॥४२॥ उधवोवाच॥ हेप्रभु
कोंनसमैंक्यारूप॥ उमभाष्योयहग्यांनअनूप॥ सन
कादकनकोंनविधलह्यो॥ क्योंपूछ्योकैसेउमकह्यो॥४३
ग्यांनसहितसजमीस्योंकहो॥ मेरेउरकासंसादहो॥ ज
बयहउधवकीनोप्रश्न॥ तबबोलेकरणांमेक्रिश्न॥
४४॥ श्रीभगवानोवाच॥ ब्रह्मपुत्रसनकादिकचार॥ मन
तेंउपज्योब्रह्मविचार॥ जनमहीतेंजिनगहीनिव्रित॥
मनक्रमवचनसोंतजीप्रव्रित॥४५॥ प्रश्नकरीतिन
ब्रह्माआगे॥ ऐसोभेदजोसोवतजागे॥ अतसूषमजांनी
नहीपरे॥ उतरकहोकोंनउचरे॥४६॥ सनकादिकोवाच

विषैवासनाचितहिगह्यो
हेप्रभुब्रह्मब्रह्मभेदेवा॥ याकोहमहिबतावोभेवा॥
चितप्रीतकरकैमिलरह्यो॥४७॥दोऊमिलेआपमें
ऐसे॥नीरअरुषीरपरसपरजैसे॥भिंनभिंनाबिनमु
कतनहोई॥ क्यूंकरिभिंनहोंहिरोदोई॥४८॥याबांनी
ब्रह्मउरधारी॥उतरदेनकौंबऊतविचारी॥परतोहू
उतरनहीआयो॥जौंतेकरमनसौंमनलायो॥४९॥त
बब्रह्मायहबुधविचारी॥ जादिनकोईताहिमुरारी
तांतेकह्योचितवनमेरो॥हंसरूपप्रगटोमैंनेरो॥५०॥
रूप हंसतांतेदिषरायो॥जौंतेयहसंसेसमझायो॥केजो
हंसब्रितकोगहै॥सोईयांकेमेदहिलहै॥५१॥तबति
सुब नमोहिदेषंपायो॥ब्रह्मामिलउठमाथोनायो॥कर
बिनतीतबवचनबषांने॥हेप्रभुमकोहमनहीजां
ने॥५२॥तबतिनसौंमैंजोकछुकह्यो॥तिनकेउरका
संसा दह्यो॥तेईवचनकहौंअबतोसौं॥सावधांनहोसुनीये
मोसौं॥५३॥तुमकोहौंयौंपूछौजबही॥ज्ञांनकह्योउ
तरमैंतबही॥सनकादिकनसुनजोउरधार्‍यो॥सोई
उमकौंकहौंविचार्‍यो॥५४॥हंसोवाच॥विप्रोप्रश्नक
रीउमजैसी॥करनेनहीसंभवैतैसी॥वस्तविचारें
पैतनकोई॥तोयांकोउतरक्यूंहोई॥५५॥अरजोदेह

रूपहीकहीये॥ तोहूंकछूद्वैत नहीलहीये॥ पंचभूत ५६
निरमततनसारे॥ जोकछुजहांलगेविसतारे॥५६
तांतेसकलयेकद्वैनाही॥ दूजोकौंनविचारोमांही
पुरषद्रिष्टदेषेतेंयेक॥ प्रक्रितद्रिष्टहूंतेंअनेक॥
५७॥ तांतेप्रश्नकरीउमश्रैसे॥ बहुतनमांहिकरी
जेजैसे॥ अरदीसेजोतत्वविचारा॥ तोनहिप्रक्रितपु
रषविसतारा॥५८॥ जोकछुदीसेसुनीयेकहीये॥ म
नअरबुधजहांलौंलहीये॥ सोसबमेंहीदूजोनांही
असोग्यांनधरोउरमांही॥५९॥ नामरूपतेसकल
विकारा॥ आदअंतमधमेंहीसारा॥ त्यांहीआदिअं
तमधमेंही॥ मेंहीयेकद्वैतकछुनांही॥६०॥ द्वैतद्रि
ष्टसोदुषकोकारण॥ ब्रह्मद्रिष्टनिजसुषविसतार
न॥ लगेतरंगनसोंदुषलहै॥ तबसुषजबतेंनिज
जलगहै॥६१॥ त्योंहीद्वैतद्रिष्टसोंदुष॥ येकद्रिष्ट
सोईनिजसुष॥ अरउमप्रश्नविरंचहिकरी॥ सोमें
अपनेहिरदेधरी॥६२॥ विग्यानमांहिचितमिलर
ह्यो॥ अरविग्यानचितहिद्रिढगह्यो॥ हिगुत्रोयहयों
हीसत॥ परतेआतममांहिअसत॥६३॥ विषेचितरो
द्रोऊमाया॥ आतमब्रह्मनिरंजनराया॥ विग्यान

सोंजबचित लगावै ॥ तबही चित तिन तें सुषपावै ॥ ६४
तबविष्यन के ध्यांन हि करे ॥ तिनके हेत कर मविस
तरे ॥ तांते एक मेक मिल रहै ॥ ऐसे जन मजन मक
षसेहे ॥ ६५ ॥ तांते आतम मेरो असा ॥ मेरी सरन गहै
तज संसा ॥ बाहर हूं तें विष्यन परहरे ॥ अर चित सों
चितवन नहीं करे ॥ ६६ ॥ विषे अर चित बिरथा क
रमांने ॥ तिन तें परे आतमां जांने ॥ ब्रह्म रूप एक अ
विनासी ॥ ग्यांन सरूप चैतंन सुषरासी ॥ ६७ ॥ मन अ
रचित बुध अहंकारा ॥ इंद्री विषे देह विसतारा ॥ ए
नरम रूप सकल है माया ॥ मूल आतमा आप बंधा
या ॥ ६८ ॥ ऐसे जांन सकल छुटकावै ॥ आप हि मां
हि एक कर ध्यावै ॥ जाग्रत सुपन सषोपत बषांने ॥
ते आचारन बुध के जांने ॥ ६९ ॥ तिन तें परे आतमां
रूप ॥ सदा एक रस परम अनूप ॥ सांतक हूं ते जा
ग्रत होई ॥ राजस सुपन लहै सज्जन कोई ॥ ७० ॥ सुष
पत तांमस गुण तें आवै ॥ मन अर बुध तहां कोपा
वै ॥ एक रूप आतम प्रति हूं मांही ॥ साषीभूत लिपे क
हूं नाही ॥ ७१ ॥ तातें तिहूं गुणान तें न्यारो ॥ निजानं
द मै रूप हमारो ॥ तांते थिर ह्वै इह करे विचारा ॥ सहा

जे छूटै त्रिगुणपसारा ॥७२॥ देहविषै बांध्यो अभिमां ५७
ना ॥ तांते भेद उपज्योयह नांनां ॥ तांते निजानंद विस
राया ॥ काल असंष महांडुषपायो ॥७३॥ अैसै जांनत
जे अजमांनां ॥ कदैं न करे सुषन को ध्यांनां ॥ त्रिहं गुण
न ते रहै विरकत ॥ चौथे पद बांधे आसकत ॥७४॥ ते
सहिजे मो मांहि समावै ॥ बहुरों देह कदैं नही पावै ॥
अरजो सकल ग्रंथ विसतरे ॥ वेद धरम नांनां विधक
रे ॥७५॥ पर विरत मांहि बहुत विध जागे ॥ पर जो जांन
है तन नही त्यागे ॥ सो नित सोवत जागत जांनो ॥ तां को मैं
द्रिष्टांत बषांनो ॥७६॥ जैसे सैं न करे नर कोई ॥ सोवत
सुपन लहै फुन सोई ॥ जागे बहुर करे विविहारा ॥ लैंन
दैंन जल पांन अहारा ॥७७॥ बहुरों रैंन नरोतें सोवै ॥ दी
न वसरे त्यों ही उठ जोवै ॥ अैसी विध केयों दिन बीते
जागत सोवत सकल विती ते ॥७८॥ बहुरों वहु अैसी
मन आंनें ॥ रात दिना की निंद्रा जांनें ॥ कदैं न सोवै जाग
त रहै ॥ सावधांन आलस नही गहै ॥७९॥ अैसे काज आ
पनो करे ॥ चोरादिक धन कौं नहि हरैं ॥ पर जब ईहां
जाग कर देषे ॥ तब यह सकल ब्रिथा कर लेषे ॥८०॥
सोवन जागन सकल विविहारा ॥ जा के हित जागे सो सा

रा॥ आपहि सम मिथ्या करजांने॥ कबहूं न लसत न मां
ने॥२१॥ त्यांही वेद धरम आचरना॥ अरु ते सुष जिन
के हित करना॥ ते सम सुपन रूप विविहारा॥ पंडित
छोडि सकल पसारा॥२२॥ नर मे धर्यो देह अभिमांना
तांते वरनाश्रम न्यारे नांनां॥ तांते करे बकृत विधकार
मां॥ सुषन मित विसतारे धरमां॥२३॥ पर ते सकल बि
था करजांनो॥ सुपन जाग्रत सम करि मांनो॥ जो देहा
दि सकल पसारा॥ चेतन कर वरतां वराहारा॥२४
सुषदुष जोग करे अरु जांने॥ आपहि सुषी दुषी करि
मांने॥ बकरों जबै सुपनकों पावै॥ बक विविहारन मां
मन लावै॥२५॥ तबहूं जांने सकल पसारा॥ आपापर
सुषदुष विविहारा॥ बकरों सुषपत में जब जांही॥ म
नबुध चित अहंकारन काहूं॥२६॥ तब आतम मां नि
रंतर रहै॥ जागे सकल बातकों कहै॥ लीयो दीयो अ
र आयो गयो॥ जहां लगे पीछे अनन्तयो॥२७॥ सो आ
तमां रोके रस रहै॥ तिहूं काल की बात न कहै॥ यों अबि
नासी आतम एक॥ दूजे माया भेद अनेक॥२८॥ तीन अ
वस्था ते हैं मन की॥ मन में आ नामें हैं तन की॥ तब तिन
के तीनों गुण जे हैं॥ तीनों गुण माया के ते हैं॥२९॥ ऐसी

विध निसचै सो जांने ॥ निसदिन हिरदै विचार हि गांने ५८
सकल उपाधन को आगारा ॥ ग्यांन षडग कांटै अहंका
रा ॥ ५० ॥ हिरदै मांहि मैं तांको भजों ॥ सावधांन होइ क
देन तजों ॥ यह सारो जगत भ्रम कर जांनो ॥ मन को क्रि
त मिथ्या करि मांनो ॥ ५१ ॥ ज्यूं ऐकन कौं उपजत देषै
अरु बिनसत ऐकन कौं पेषै ॥ सोई रीत सकल की जां
नो ॥ सुपन समांन हिरदै मैं मांनो ॥ ५२ ॥ आगन सहित
ज्यौं लकरी होई ॥ बालक लेकर फेरे कोई ॥ और भांत
है दीसै और ॥ थिरपर चंचल लहै न ठौर ॥ ५३ ॥ त्यौंय
ह जगत रहै थिर नित ॥ पर अत चंचल सकल अनि
त ॥ ऐक ब्रह्म मैं सत्त आभासो ॥ त्रिगुण पाइ बक्र भे
द प्रकासो ॥ ५४ ॥ सुपन रूप गुण मे ज्यों जोगी ॥ यौं ब
हु भांत विचारै योगी ॥ तांते जगत द्रिष्ट उतारो ॥ साच
जांन रिदै न ही धारो ॥ ५५ ॥ त्रिसनां छोडे निसचल रहै
मन वच क्रम कछुक रमन गहै ॥ इछा रहत ब्रह्म रस
भोगी ॥ निजानंद मै होवै योगी ॥ ५६ ॥ ऐसे ब्रिथा जां
न सम त्यागे ॥ निसदिन रिदै ब्रह्म अनुरागे ॥ सो जोर
है देह हू मांही ॥ तो हू फेर लिपै कहूं नाहीं ॥ ५७ ॥ ज्यों
यह देह जाइ कहूं आवै ॥ बैठे उठै पीवै कहूं षावै ॥ औ

रेकब्रूकेरविविहारा॥ परसोसुधनजांनेसारा॥९८॥
क निसचलरहैनिरंजनमांही॥देहादिकछुजांनेनांही
जांकोईतनवसत्रहिधरै॥ बकौरेंसुरापांनकोंकरै
९९॥सोतिनवसत्रनजांनेनाही॥ प्रिथमबंधेतांतेन
हिजांही॥करमदेहप्रारातनजौलौं॥सहितइंद्रीयन
वरतेतौलौ॥१००॥करमैंताकेतनकोंपोषैं॥षांनपांन
सौंनितसंतोषैं॥योगीब्रह्ममांहिथिररहै॥कहूंदेह
कीसुधनलहै॥१०१॥जैसेसुपनदोषकरजागै॥तबसु
पनेसोंनहिअनरागै॥तैसेमोहिनिसातेंजाग्यो॥क
न हूंलिपेब्रह्मअनराग्यो॥१०२॥देहथकेब्रह्ममहिमि
लरह्यो॥नवकेसकलबीजतनदह्यो॥सोबकौरेंन
वभैनहीआवै॥ब्रह्ममिल्योसोब्रह्मसमावै॥१०३॥
तांतेदेहादिकविसतारा॥ भ्रमकरतजोत्रिगुणमै
सारा॥ त्रिगुणअतीतब्रह्मकौंसेवै॥विषयानकोकछु
नामनलेवै॥१०४॥विषैचितदोऊभ्रमजांनो॥ब्रह्म
मांहिरुऊहजोजांनो॥सकलअतीतआपकोंदेषो॥
सभघटएकद्वैतनहीपेषो॥१०५॥ब्रह्मअरआपरो
ककरमांनो॥द्वैतभावकबहूंनहीआंनो॥निसदिन
ब्रह्मविचारहिकरो॥परब्रह्ममेरोहिरदैधरो॥१०६॥

न

ममआधीननिरंतररहो॥याविधजगतबीजसंदेहो
जांतेबक्रनजनमैंआवो॥ब्रह्मरूपहोइब्रह्मसमा
वो॥१०७॥यहमैंउमसोंकह्योविचारा॥सांषजोगसोस
कलविसतारा॥मेरोगुह्यमतोअनंतजांनो॥बक्रत
मांतहिरदैमोआंनो॥१०८॥उमरोहितमनमांहिवि
चारयो॥मैंहोंविज्ञानहंसतनधारयो॥मैंहोंब्रह्मसक
लकोईस॥मोबिनऔरसकलअनीस॥१०९॥सांतअ
रसततेजतपजोग॥प्रियसमदमश्रीकीरतजोग॥
औरषसतजहांलौंसारे॥तेसबंतमेरेआधारे॥११० स
तांतेजोममसरनेआवै॥उतमवसतसकलसोपावै
मोबिनसकलसाधनांगहै॥तोहूंकदेनसुषकोल
है॥१११॥मैंनिरगुनपेसगुनसेवै॥मैंनिरपक्षस
कलचितदेवै॥कछुनहिचहोंकरोंउपकारा॥सज्ज
कोहितसज्जकोआधारा॥११२॥सज्जउपजावोंसज्ज
प्रितपालों॥अंतसमैंमैंनासकरघालों॥तांतेमोहि
तजेदुषपावै॥तबहीसुषीसरनमोंआवै॥११३॥उ हि
धवयहमैंज्ञांनसुनायो॥सनकादकनपरमसुषपा
यो॥हिरदैधरयोसंदेहनकाई॥मोहिमिलताकीवा
धसजपाई॥११४॥बक्रतजांतममपूजाकरी॥बक्र

तनां तउसततितविसतरी ॥ मेरो जजननिंदि मोधा स्यो
औरसकलततकालनिवास्यो ॥ ११५ ॥ आपक्रितार
थकरति नमांन्यो ॥ चेतनावतजब्रह्मपछांन्यो ॥ त
बतिनकेउसततकरतेई ॥ ब्रह्माकेदेषतआगेंही
११६ ॥ सबहिनकोआनंदबढायो ॥ तबमैंअपनेधां
मसिधायो ॥ तांतेउधवउमयहजांनो ॥ अपनेपर
मजागकरमांनो ॥ ११७ ॥ सनकादकनसंबादमम
कीयो ॥ तेईवचनउमसोंकहिदीयो ॥ तांतेयहीग्यांन
उरधारो ॥ ब्रह्मजांनसउचेतनिवारो ॥ ११८ ॥ ममआधी
नसदाईरहो ॥ हूजीसकलवासनादहो ॥ ऐसेसकरकै
मोकोंपैहो ॥ जांतेजनमनहीऐहो ॥ ११९ ॥ दोहरा ॥
यहउधवतोसोंकह्योपरमग्यांननिजसार ॥ यांकोग
हेनिजपदलहैछूटेजवसंसार ॥ १२० ॥ इतश्रीभाग
वतेमहांपुरांणेएकादसमिस्कंदेश्रीक्रिस्नउधवसंबा
देहंसगीतानामत्रियोदसोध्या ॥ ऐसोसुनहरिजीसोंग्यां
न ॥ भगतउधारकजरमसजहांन ॥ यहउधवफि
डकरउरधरी ॥ परकछुप्रस्नक्रिस्नसोंकरी ॥ १ ॥
उधवोवाच ॥ परमदयालदयानिधदेवा ॥ मोकोंब
होबतायोभेवा ॥ भगतहूंतेंपाईएतवचरना ॥ हू

भगत

अध्या ॥ १३ ॥

रेजगतजनमअरमरना॥२॥परअबरोकपुरुषकों
कहीं॥मेरेयासंदेहहैदहो॥जबहूंवेदश्रुतसिंम्रित
जांने॥तांतेबहुतेसाधनबषांने॥३॥मुकतहेतब
हुपंथनकहे॥अरतेऊबहुतनमितहै॥तांते
तेऊपंथअसेष॥जगतसमांननकछूवसेष॥४
जांजांपंथउमेंप्रजुपईऐ॥बहुरोंजवसागरनही
अईऐ॥असोपंथक्रिपाकरकहो॥मेरीसकलमू
ढतादहो॥५॥उमबिनयाहूजोनहिकहे॥तांनल
हेसोउमतेंलहे॥उधवअसीपूछीबांनी॥तबउत
रकीक्रिस्नबषांनी॥६॥श्रीभगवांनोवाच॥उध
वकलपसमांजबभयो॥तबयहततलीनहोइग
यो॥पुनमैंस्रिष्टसमैंयहग्यांना॥ब्रह्मासोंश्रुततत
बषांना॥७॥सोईश्रुतपुनब्रह्मापढायो॥म्रिगा
दिकसुर्यचंद्रमुनपायो॥सपतमहांरिषभ्रिगुजन
आदि॥अरसुर्यचंद्रमुनमुननआदि॥८॥तिनअ
ष्टनतेंयहविसतारा॥नांनांविधकेभेदअपारा॥
सुरनरअसुरदेवगंधरवा॥विद्याधरयषआदिक
सरवा॥९॥सपतदीपनरबहुपरकारा॥किंनरकि
पुरषादिकअपारा॥सतरजतमतिनकीउतपत

तांतेबहुविधभईप्रक्रित ॥१०॥ तिनतेंभयेबहुत
विधभेद ॥ तिनतेंसोईजांनेवेद ॥ वेदततसोकत
हूंरह्यो ॥ आपसुभावसमांनसुकह्यो ॥११॥ जंजं
तिनकेभयेसुभाव ॥ त्योंत्योंजांन्योश्रुतकोभाव ॥ त्यों
हीत्योंआचारनकरे ॥ त्योंत्योंआपसोश्रुतविसत
रे ॥१२॥ परंपराजेतिनतेंहोवै ॥ तेतिनकेश्रुतसिं
म्रितजोवै ॥ तिनतेंआपकरेबहुग्रंथ ॥ नांनांभांत
चलोयेपंथ ॥१३॥ ऐसीविधउपजेपाषंड ॥ तांनस्त्र
रधरमहोइसतषंड ॥ ममममायाकरमोहतहोवै ॥
तांतेततपंथनहींजोवै ॥१४॥ अपनीअपनीरुच
अनमीना ॥ करेकरमअरभाषेतांना ॥ नांनांविध
साधननसुनावै ॥ तिनतिनकेकल्पानबतावै ॥१५
ऐकैबहुविधकरमनभाषैं ॥ तिनतेंजगतमुकत
कोंराषैं ॥ ऐकैकहेंमैहिजैविसतरीऐ ॥ जांतेसकल
दुषनतेंतरीऐ ॥१६॥ जांकोंजसयाजगमेंजोलों ॥
सोनररहेसुरगमेंतोलों ॥ ऐकईहांहीकांमबषांनै
आगेसुरगनरकनहीमांनै ॥१७॥ जांनईहांकरेभो
गनकों ॥ ईहांछोडजाइतांतनकों ॥ आगेसुषदुषल
हैनकोई ॥ तांतेभोगकरेसबकोई ॥१८॥ ऐसेसग्रंथ

नकरमनरमारे॥ धरमराइकी षबरन पारे॥ एककहैं
समदमअरुसत॥ हूजेसाधनसकलअसत॥१९॥
योंग्रंथबहुसाषबषांने॥ तिनतेंमूढमुकतकोंमा
नें॥ सांमअरुदांमदंडअरुभेद॥ इनकोंगहैंएककर
वेद॥२०॥ न्याइसहितसत्रुउदमकेरें॥ उतमधर्म
जांनउरधरें॥ दांनजोगउतमकरजांषैं॥ यहैमुक
कतसाधनकरराषैं॥२१॥ एकेयगदांनतपगहैं॥
एकेयमनेमसंग्रहै॥ एकेतीरथवरतमनधरें॥ कहां
कहांलौंबहुविधकरें॥२२॥ तिनतेंसुरगादिकसुष
पावैं॥ षीणनहोइहांफिरआवैं॥ बहुरोंनीचजोंन
कोंपावैं॥ नरकनमेंकेईजुगआवैं॥२३॥ अरुजब
रहैंसुरगहूंमांही॥ कबहूंकछुसुषपावैंनांही॥ कां
मक्रोधनिंदाअभिमांना॥ रागद्वेषइर्षाअपमांना
२४॥ इतादिकनग्रसेनितरहैं॥ तांतेकोंनजांतसुष
लहैं॥ जगतबिनाविधलोकहूंजावै॥ कालकहांहूं
तेंमदिकावै॥२५॥ तांतेउधवचूमहैसारा॥ सुषहैमम
मचरननआधारा॥ जिनमेरेचरननचितधरयो॥
साधनसाधसकलपरहरयो॥२६॥ तिनकोंउधवजो
सुषहोई॥ सोसुषकहूंनपावैकोई॥ सोसुषकहो

सुन्यो नही आवै ॥ सोई पै जांनै जो पावै ॥ २७ ॥ सो पावै
जो मोसों मांगै ॥ औ सकल आलस कों त्यागै ॥ मम
आधीन निरंतर रहै ॥ दूजी सकल कांमना दहै ॥
२८ ॥ सकल वसत कों कीनो त्याग ॥ अंतहकरण
षरो वैराग ॥ समदरसी नित सीतल चित ॥ मम चि
तवन हिरदै दिढ नित ॥ २९ ॥ तां को दरसों दिसा सु
षरूप ॥ सो सुष जो अत परम अनूप ॥ जो जन मेरे
सुष को जांनत ॥ तां को मन कितहूं नहीं मांनत
३० ॥ तांके मन आधीन रहीहैं ॥ पर सो मो बिन क
छू न गहै ॥ ब्रह्मलोक कों कदैं न लेई ॥ इंद्र लोक प
रचित न देई ॥ ३१ ॥ सप्त जू राज मैं न नही देषै ॥ सप
त लोक सुष त्रिण सम लेषै ॥ योग सिध अणिमादि
क अष्ट ॥ योगी जिन हित साधै कष्ट ॥ ३२ ॥ तिन हूं
को कबहूं न लेई ॥ आपहूं तें नित सेवै सेई ॥ मुकत
निकट नित रहै सदाई ॥ पर मेरो जन न छुवै न काई
३३ ॥ मैं ही एक सदा प्रियतां कों ॥ मम चरनन चित
राचो जांको ॥ ताही तें मेरे प्रिया सोई ॥ तां बिन और
नही प्रिय कोई ॥ ३४ ॥ त्यों मेरो सुत वित नही प्यारो
न हिरंकर जो रूप हमारो ॥ नहि तो प्रिया ब्रह्मा करष

ए जाई ॥ श्री अरधंगी तोन सुहाई ॥ ३५ ॥ यों नही प्रिया
मेरो यह देह ॥ जैसे उमसों पर म संनेह ॥ उमसि जगत
म हां प्रिय मेरे ॥ तां के रहौं निरंतर नेरे ॥ ३६ ॥ इह्यार
हित अरसी तल हिरदे ॥ सजन निरवैर सजन सुहिर
दे ॥ ब्रह्म द्रिष्ट देषे सजन मांही ॥ ब्रह्म विचार तजे पलना
ही ॥ ३७ ॥ मैं तां कौं व्रथ मैं यों कह्यो ॥ निरगुन उपासना
बंधन विसतर्यो ॥ पर तां को अैसो बल नारी ॥ काटे मा
या जाकूं तह मारी ॥ ३८ ॥ एते सजन परब्रह्म व गुरा तजे ॥
उलट आइ मम चरनन भजे ॥ अर सजन सुष तां के वस
रहैं ॥ सीतजमो बिन कछू न गहै ॥ ३९ ॥ वक्त तन के न
व बंधन दहे ॥ नाम प्रगट कर मेरो कहे ॥ तिनतिन
कौं मंचरने न लावे ॥ सदा सजन तें आप छपावे ॥ ४०
अहंकार ममता नही आंने ॥ मोहि छोड़ दूजो नही मां
ने ॥ गुणातीत तां जन के पाछे ॥ यह तन धरों फिरों मैं
आछै ॥ ४१ ॥ सांत कू गुणाधारी यह देहा ॥ करों सुध ता
चरनन षेहा ॥ निह कंचन कतहूं नही रकत ॥ मोही
सों नितहूं आसकत ॥ ४२ ॥ सीतल रिदै विगत अभि
मांन ॥ क्रिपावंत सजन एक समांन ॥ काहू कों मच ले
नही बुध ॥ मो मैं रहै अतब जसुध ॥ ४३ ॥ मुकतहूं ते

नितनिसप्रेहरहै॥ तेजनमेरेसुषकोंलहै॥ तांसुषको
जांनेपुनतेई॥ औरसकलसमझैनहीकोई॥४४॥
नितनिसप्रेहमहांसुषपावै॥ इसप्रेहहूंकेकहूंन ।
कटनआवै॥ विषयनकेवसमांनवहोई॥ इंद्रीजी
तसकैनहीकोई॥४५॥ परआधीनहोइममजबही
विषैकछुकरसकैनतबही॥ विषैशत्रुमैंसबैनि
वारों॥ आपमिलाइजैसवटारों॥४६॥ पावकप्रग
टकरोंब्रह्मअसम॥ होइप्रचंडकरैसबभसम॥ त्यों
ममभगतप्रगटजबहोई॥ जाकेपापरहेनहीको
ई॥४७॥ बहुरपापकोनिकटनआवै॥ भगतप्रता
पमोहिसोपावै॥ साधेसिधयोगअष्टांग॥ बहुविधि
यगहोइजोसांग॥४८॥ सांषविचारसकलसोजांने
वेदपडेबहुदेवैदांने॥ तपहीकरइंद्रेमनबांधे॥ अ
वरसकलधरमनकोंसाधे॥४९॥ तोहूंमोहिकदें
नहीपावै॥ भगतमोहितत्कालमिलावै॥ ऐकभग
तमोकोंवसकरै॥ दूजेतेंअतअंतरपरै॥५०॥ सर
धासहितकरैममभगत॥ तासोंमेरीअतआसक्त
मैंब्रह्मादिकसकलकोईस॥ मोबिनअवरसकल
आनीस॥५१॥ सोमैंभगतनकेआधीन॥ तेमोसों

कहै भगता बिना न रसुष नही

ज्यौं जल मैं मीन ॥ जो चंडाल भगत मैं आवै ॥ ताही त ६२
न निरमलता पावै ॥ ५२ ॥ बरनाश्रमतह बंदन करै ॥ ता
पढै रणसी सपरधरै ॥ तीन भवन दास सभ ताकै ॥ मे
री भगत बिराजै जांकै ॥ ५३ ॥ कष्ट सहित पूरन तप सा
धै ॥ मन इंद्रै देहादिक बांधै ॥ विद्या पढै धरम बहु क
रै ॥ जीव दया बहु ती विसतरै ॥ ५४ ॥ सत ब्रित अरु द्रि
ड संतोष ॥ कबहूं करै नही को रोष ॥ तीरथ व्रत नै
मादिक जेते ॥ सभ आचरन करै जो तेते ॥ ५५ ॥ पर जो मे
री भगत न होई ॥ तब सभ निहफल है वैं सोई ॥ बिन
रोमंच द्रवै न चित ॥ आनंद आंसू कला बिन नित ॥ ५६
तो लौं सुध भगत नही लहै ॥ द्रवै प्रेम सों जां को चित ॥
कबहूं सुरोवै मेरे हित ॥ ५७ ॥ कबहूं गदगद बांणी हो
ई ॥ कबहूं ऊचे गावै सोई ॥ कबहूं मधुर मधुर सुर गा
वै ॥ कबहूं प्रेम मगन होइ जावै ॥ ५८ ॥ कबहूं प्रेम वस
निरतहूं करै ॥ कबहूं मोह से गुण न विसतारै ॥ लोक
वेद की लाज न जांनै ॥ ज्यूं उनमत सकल यों ठांनै ॥ ५९
जो ऐसो मेरो जन होई ॥ त्रिभवन सुध करै ता सोई ॥
सकल भवन के पाप निवारै ॥ सकल भवन कौं सो ज
न तारै ॥ ६० ॥ जैसे हेम मलनता होई ॥ बहु जल मांहि

षोई रोसोई ॥ और जतन बहुत बिध कीजे ॥ है महि
बहुतक सो टीदी जे ॥ ६१ ॥ पर कहूं विध सुध न होई
कोटक जतन करे जो कोई ॥ सोई है मन अगन मेंदी
जे ॥ टेक रफू कृत पत बहु कीजे ॥ ६२ ॥ तांते कोई म
लन ही रहै ॥ अपने सुध सरूप कों गहै ॥ त्यों ही जतन
करे नर कोई ॥ पर आतम निरमल नहि होई ॥ ६३ ॥
मेरी भगत मांहि जब आवै ॥ तब मन कर मम लन बु
ट कावै ॥ निरमल होइ लहै निज रूप ॥ पावै मो हित
जै भव कूप ॥ ६४ ॥ ज्यूं ज्यूं मेरी भगत ही करे ॥ मेरे गुण
हिरदे में धरे ॥ श्रवन कीरतन सिमरन गांने ॥ त्यूं त्यूं
उर वासना भांने ॥ ६५ ॥ त्यों त्यों रिदे प्रकासे ग्यांन ॥ दे
षे बुद्ध मिटे सभ्रांन ॥ है त भावक बहूं नहीं रहै ॥ ना
र भै निजानंद पद लहै ॥ ६६ ॥ नैंनन मांहि रोग ज्यूं हो
ई ॥ तांते कछू न देषे सोई ॥ फिर ज्यों ज्यों औषद हिल
गावै ॥ त्यों त्यों द्रिष्ट होत तन भावै ॥ ६७ ॥ त्यों त्यों सकल
देषै वसत कों देषै ॥ आप हि परम सुषी कर लेषै ॥ तांते भ
गत रूप द्रिड अंजन ॥ जांतें देव निरंजन ॥ ६८ ॥ जो सं
सार सुषन कों ध्यावै ॥ सो संसार मांहि वहि जावै ॥ अ
र जो ध्यावै मेरे चरन ॥ पावै मोहि मिटे भव मरन ॥ ६९

तांतेसज्जनसाधनजूमजांने॥ सुपनसमांनदेषेतसज्जमा
ने॥ मनक्रमवचनसकलकोत्यागे॥ हौंइनिरीहचर
नअनरागे॥७०॥ जोयहमनवहिचैहेछुटकायो॥ अ
रचाहेममचरननआयो॥ तोतिनकीसंगतपरहरे
जेजनजुवतीसंगतकरें॥७१॥ जुवतीसुषनसुनेनही
श्रवना॥ नैननदेषेकरैनगवना॥ कबहूंभूलनहि
रदेआंने॥ मनक्रमवचननिरंतरमांने॥७२॥ असो
बंधनकतहूनहोई॥ [illegible]नसंगकरेजेकोई॥ जोजो
षितअरजोषितसंगी॥ बंधनकरेहोतपरसंगी॥
७३॥ तांतेतिनकेसंगहितजे॥ सावधांनममचरन
नभजे॥ निरभैगैरकरेइसथांन॥ मोबिनसंगतजे
सनआंन॥ मेरोध्यांननिरंतरकरे॥ प्रेमसहितहिरदे
मोधरे॥ क्रिश्नवचनसुनहिरदेराष्यो॥ उधवओर
प्रश्नकोभाष्यो॥७५॥ उधवोवाच॥ हेप्रभउमहि
कवनविधध्यावें॥ कवनरूपमेंचितलगावें॥ हेतोमु
कतसोइतवचरना॥ परजोचाहेमिटायोमरना॥
७६॥ क्रिपासिंधउमकररगाकरो॥ ध्यांनजोगबांनी
उचरो॥ सुनउधवनिजजनकीबांनी॥ तबश्रीहरि
जीआपबषांनी॥७७॥ श्रीभगवांनोवाच॥ उधवतो

कौं ध्यां नमुनावों॥ योग सहित मन्त्र अंग बतावों॥ योग
सहित जो ध्यां नहि करे॥ तो मन वेग जाहि पर हरे॥ ७८
मुन आसण मैं इस थित होइ॥ अंघन पर राषै कर दो
ऊ॥ देह समांन चले नहीं डोले॥ नासा द्रिष्ट कबहूं न
हो बोले॥ ७९॥ इडा पूर कुंभक थिर धारै॥ पुनि रेच
क पिंगला निसारै॥ बहुर पूर पिंगला धार॥ इडा निसा
रे वारंवार॥ ८०॥ इहै अर्थ सकल परहरै॥ मेरो हेत
हिरदै मैं धरै॥ उधव दोइ विध जोग कहावै॥ तां भेद
हि सतगुर तें पावै॥ ८१॥ मंत्र सहित सो नाम सगरभ
मंत्र बिना कहीये निहगरभ॥ तां ते योग सगरभ से
नाम॥ सो उतम है प्राणायाम॥ ८२॥ पूरे राषै रेचक
करै॥ ओअंकार मंत्र उचरै॥ घंटा नाद ताल उर ध्यां
वैं॥ तासों मिल कर प्रां न चलावैं॥ ८३॥ यों त्रिकाल अभ्य
ासे कोइ॥ प्राणायाम सहित थिर होइ॥ बहुरों हा
रदै कवल कों ध्यावै॥ अष्टपाषरी सों विगसावै॥ ८४
आधे मुष तें उरध करे॥ तां के मध्य सूरज हि धरै॥ सू
रज मैं पूरन ससि आंनै॥ ससि महि अनल तेज मैं मांनै
८५॥ अनल मध्य मम रूप हि ध्यावै॥ परम प्रीत सों
मन हि लगावै॥ अंगुसट प्रमांण चतुर भुज रूप॥ अ

तसी तलसुषदाइ अनूप ॥ ८६ ॥ नवतन सजल ६५
मेह तन स्यांम ॥ तडत तुल अंबर रुचधाम ॥ मंद
हास सोभा निधान न ॥ मकराक्रित कुंडल सुन्न
कांनन ॥ ८७ ॥ कंठ कौसतक मणि बनमाला ॥ उ
र भ्रिगलता कटसूत्र विसाला ॥ संष चक्र गदा
अर पदम ॥ इसत चारहूं सोभा सदन ॥ ८८ ॥ है
म मुकट हीरा मणि जड्यो ॥ अत सुभाइ मांनस
र धर्यो ॥ भाल तिलक अंबुज वर नैंना ॥ भगत
प्रसादि सुधा कौ अैंना ॥ ८९ ॥ कर कंकन अंगुल
मुंद्रका ॥ पग नूपर कट मै षुद्रका ॥ अंक सवज्र
जवा दुज विध ॥ चिहन चरणा हिरणा डुषकंद ॥
९० ॥ नष मणि गण अत प्रभा प्रकास ॥ और रत्र
भा न अंधतम नास ॥ और सकल अंग गन बक्र भू
षन ॥ जिन के ध्यांन मिटै सब दूषण ॥ ९१ ॥ वेस कु
सोर परम सुकमार ॥ नष सिष ध्यावै वारंवार ॥ च
रनन तें प्रत अंग ध्यावै ॥ रोक गहै रोक हि छुटका
वै ॥ ९२ ॥ यौं लेन षतें सिषा प्रजंत ॥ निसदिन हि
रदै ध्यावै संत ॥ और वासना सब परहरै ॥ प्रेम रू
प अगिम मन धरै ॥ ९३ ॥ या विध जब मन निरम

लहोई ॥ तबफिरअंगनधावैसोई ॥ अतसुंदरमुषमें
मनधारे ॥ अवरसकलचितवनविसारे ॥ ९४ ॥ या
विधमनआपनेंवसहोई ॥ तबवैराटमेंधारेसोई
सकलविराटरूपममजांने ॥ मोतेंभिंनकछूनही
मांने ॥ ९५ ॥ यौं वैराटममरूपहिजांने ॥ निसचल
भयोभेदकौंभांने ॥ तबताहूतेंमनहिनिवारे
सुधनिरंजनब्रह्मविचारे ॥ ९६ ॥ ब्रह्मविचारनि
रंतरकरे ॥ सजनआकारहूरपरहरे ॥ आतमब्र
ह्मएककरिदेषे ॥ चेतनरूपअषंडतलेषे ॥
९७ ॥ निजानंदनिसचलनिरधारा ॥ सतसरूप
वारनहीपारा ॥ अरुअजनमोआपिआप ॥ सुष
दुषरहतपुंननहीपाप ॥ ९८ ॥ कालनकरमजी
वनहीमाया ॥ आपेआपनिरंजनराया ॥ जेसेअ
गनअषंडतहोई ॥ तांतेजुदेपतंगाकोई ॥ ९९ ॥
बैकरअगनहीमांहिसमावे ॥ तबहिपतंगानाम
कहावे ॥ असेआतमब्रह्मविचारे ॥ एकजांनकर
द्वैतनिवारे ॥ १०० ॥ असीजांनतविचारहिकरते ॥
निसदिनब्रह्ममांहिमनधरते ॥ त्रिगुणाकारस
गलत्रमभागे ॥ होइब्रह्मसोवतसोजागे ॥ १०१ ॥

ब्रह्म

होइ करि बू[ब्रह्म]लीन जावे॥ जहां हूं ते बकरो न ही आ ६६
वे॥ अैसी विध नवक्रष न दहे॥ मेरो निजानंद पद लल
है॥ १०२॥ दोहरा॥ यह है पें मे तोसों कह्यो जां करि हरि
पुर जाइ॥ मारग में बक्र विघन है ते ना बां समझाइ
१०३॥ इति श्री भागवते महापुरांणे एकादस स्कंधे श्री
क्रिस्न उधव संबादे ध्यांन जोग वरननं नाम चतुरदसोध्या
इ॥ १४॥ श्री भगवांनो[वाच] उधव योग पंथ समझावों॥ तामें ब वाच
क्र ते विघन बतावों॥ जो इंद्रे मन प्रांणहि बाधे॥ साव
धांन होइ योग हि साधे॥ १॥ मो में धरे आपनो चित
तां को सिध विघन है नित॥ जो यह सिधन को परहरे
रे॥ सो मम चरनन को अनसरे॥ २॥ तिन सों कबहूं
रहे लुभाई॥ तो अमस कल ब्रिथा ही जाई॥ अैसे क्रा
शान वचन मन धारी॥ उधव कीनी प्रस्न मुरारी॥ ३॥
उधवोवाच॥ किह प्रकार धारणां देवा॥ अर सिधन
को कहि विध सेवा॥ तिन के नाम क्रिपा कर कहो॥
योगन के विघनन कों दहो॥ ४॥ उमम्आधीन सिध
है सकला॥ उमरी क्रिपा तें पावें कला॥ उधव प्रस्न
हिरदे मो धारी॥ तब बोले गोपाल मुरारी॥ ५॥ श्री भ
गवांनोवाच॥ उधव सिध अगारां कही रें॥ मम धारणां

करि जो लहीये ॥ तिन में अष्ट सिध परधांन ॥ दस मध्य
मते करों बषांन ॥ ६ ॥ जां ते देह रूप अणा होई ॥ कि
तहूं रहै अवरण न कोई ॥ अणमां नाम सिध यह
जांनो ॥ महां मोहनी माया मांनो ॥ ७ ॥ जो तन करे म
हां विसतार ॥ जहां तहां कछु वार न पार ॥ महिमां
नाम सिध सो कहीये ॥ कबहूं भूलन तां को गहीये ॥
८ ॥ जो यह देह अत लघ करे ॥ मुष्ट न आवे दिष्ट न
परे ॥ सो यह लघमां सिध कहावे ॥ मम जन तां के नि
कट न आवे ॥ ९ ॥ जां ते इंद्रे भोग न करे ॥ जहां तहां वा
छन विसतरे ॥ तिन सब भोगन जां कर लहीये ॥
प्रापत नाम सिध सो कहीये ॥ १० ॥ ऐक ठौर बैठो ही र
सिक है ॥ देषै सुने सकल ई कहै ॥ ताहि अगोचर रहै न
काई ॥ सो प्रकांम सिध कहाई ॥ ११ ॥ इंद्री देह बुध मन
प्रांना ॥ त्रिहूं लोक जिन को इसथांना ॥ तिन को त्यों
प्रेरे ज्यों जांने ॥ ताहि ईसरता सिध बषांने ॥ १२ ॥ वि
षै सुषन को कदे न गहै ॥ जां ते अत आनंद तर रहै ॥
नाम अवसथा सिध कहावै ॥ मेरो भगत निकट नहीं आ
वे ॥ १३ ॥ जो जो इछ्या मन मैं ल्यावे ॥ सो सो सकल पलक
में पावे ॥ वसता नाम सिध है सोई ॥ मेरो जन न आदरै को

ई ॥ १४ ॥ अष्ट सिधरे अनतप्रधांन ॥ इनतें मधमनजाषों 
आंन ॥ तनके गुण व्यापहि नहि कोई ॥ नांम अनूप
म कहीए सोई ॥ १५ ॥ दूरश्रवन सुने सत्र बैंना ॥ दूर
दरस देषे सत्र नैंना ॥ मनके वेग मनोजव धावे ॥ का
मरूप बहुरूप बनावे ॥ १६ ॥ परके तनमें करे प्र
वेस ॥ तन छाडि परकायप्रवेस ॥ निज इछा तें तजे
सरीर ॥ सो सुछंद मृत है वीर ॥ १७ ॥ मिले अपसर
न विचरे देवा ॥ देषे तिनहि लहे बहु सेवा ॥ सो सु
र क्रीडा दरसन कहीये ॥ मिथ्याफल हि कदें नही
गहीए ॥ १८ ॥ जो संकलप करे सो होई ॥ यथासंक
लप कहीए सोई ॥ जहां गयो चाहे तहां जावे ॥ अ
प्रतहति गत सोई कहावे ॥ १९ ॥ रोदस मिलें अष्ट
दस कहीए ॥ औरो पंच उछ नही गहीए ॥ वरत
मांन अरु भूत भविष ॥ सन कछु जांने लष अलष
२० ॥ यह है सिध त्रिकाल ग्यांन ॥ आगे सिध बषां
नो आंन ॥ सीत उसन आदिक जे दुंद ॥ तिनहि ना
वारे सोई अदुंद ॥ २१ ॥ विष अरु अगन सूरज ज
लथंभना ॥ जां ते होवे असो अचंभना ॥ प्रितसनसो
सिध कहावे ॥ हरिजन तां के निकट न आवे ॥ २२ ॥

वे अष्टदस अरु ऐ पंच ॥ मिलत्रेई सकल प्रपंच ॥ ऐ
मैं मूल रूप उचारी ॥ साषा बहुत नहीं विसतारी ॥
२३ ॥ समधारणा करे ते आवै ॥ योगन कौं बहु वि
ध विच लावैं ॥ जो इन तें नहीं विचलेक बही ॥ तौ स
म चरन न पावे तबही ॥ २४ ॥ जां धारणां हूं ते जो
आवे ॥ जेसे योगी कौं विचलावे ॥ सो सज उधव तो
सो कहौं ॥ योगपंथ के विघन न दहौं ॥ २५ ॥ सुरगुन
रूप जो कछु विसतारा ॥ सो नांनां विध रूपह मारा
ताही ताहि मांहि मन लावे ॥ तैसी तैसी सिध हि पा
वै ॥ २६ ॥ सबद सपरस रूप रस गंध ॥ पंच भूत
के सूषम बंध ॥ तिन मैं जां जां मैं मन लावे ॥ तां
ते तां रूपहि मिल जावे ॥ २७ ॥ सहां ततमें मन नहीं
लगावे ॥ पंच भूत साषा करध्यावे ॥ जां जां साषा
९ मैं मन धारे ॥ तां ही तास सदेंव हि धारे ॥ २८ ॥ पं
च भूत के जे प्रमांणा ॥ तिन मैं योगी धारे ध्यांना ॥ तां
तां समल घदेह हदे करे ॥ काहू सों कछु गह्योन परे
२९ ॥ सां तक अहंकार मन धारे ॥ तां को मेरो रूप
विचारे ॥ तब जे इंद्रे जो गन करे ॥ बहुत जांत वि
घन विसतरे ॥ ३० ॥ तां ते सुष यह जोगी पावे ॥

सो वज्र आपत सिध कहावै ॥ मेरो सूत्र रूप मन आं
नै ॥ तांतें त्रिभुवन की गत जांनै ॥ ३१ ॥ जो कर दी
वा ले घर दिखै ॥ यौं त्रिभुवन अवरन न पेखै ॥ मेरो
काल रूप मन धारै ॥ सर्व व्यापक सर्व ईस विचारै
३२ ॥ तांतें सिध ईसता पावै ॥ त्रिभुवण जांनें त्यौं व
रतावै ॥ जाही सौं जोई करवावै ॥ ता के अंतर त्यौं उ
पजावै ॥ ३३ ॥ आदि पुरष सो मेरो रूप ॥ तां मैं धा
रै चित अनूप ॥ तांतें सिध अवसथा पावै ॥ विश्व
न बिन आनंद वधावै ॥ ३४ ॥ निरगुण रूप ब्रह्म
मन धारै ॥ सर्व करतास सर्व ईस विचारै ॥ तांतें वस
ता सिध हि लहै ॥ सोई सो पावै जो जो चहै ॥ ३५ ॥ सु
ष सरब मैं मोहि विचारै ॥ तां मैं योगी मन कौं धारै
तांतें सुध आप हूं होई ॥ षट उर मीन व्यापै कोई
३६ ॥ गगनाधार प्रांण मन धारै ॥ सबद रूप उर
मांहि विचारै ॥ तब जहां लगै पवन आकास ॥ सुनै
तहां लौं वचन न पास ॥ ३७ ॥ सूरज कौ नैनन मैं धा
रै ॥ अर सूरज मैं नैन विचारै ॥ अप्रछिन मोहि कौं
लेषै ॥ तब सो त्रिहूं लोक कौं देखै ॥ ३८ ॥ पवन सहि
त मो मैं मन धारै ॥ जहां तहां मन रूप विचारै ॥ अ

मे मनकों जहां चलावै ॥ मनके वेग तहांई जावै ॥ ३९
सोर मेरे रूप विचारे ॥ तिनही तिनमें मनको धारे
चांहे जयो रूप तब जोई ॥ वार न लागे होवै सोई ॥
४० ॥ कस्यो प्रवेस चाहे जा महि ॥ ध्यांन आपनो
आंने ता महि ॥ तब ता छिण में जावे ऐसो ॥ भृंग फू
लतें फूले जैसो ॥ ४१ ॥ मूलद्वार पग बंध लगावै ॥ प्रां
न चलाइ सीसमें ल्यावै ॥ ब्रह्मरंध्र होइ गवनहि क
रे ॥ जो मन होइ ताहि अनसैरे ॥ ४२ ॥ सुरग देव सुर
वन ता ध्यावै ॥ मेरो रूप जांन मन ल्यावै ॥ तब तें सहि
त बिवा नहि आवैं ॥ तां योगी कों सुष उपजावैं ॥ ४३
जो जो वसत रिदे मो धारे ॥ तां तां को प्रभु मो हि विचा
रे ॥ सोई सो पावै ततकाल ॥ जबही चाहे काल अका
ल ॥ ४४ ॥ सकल नियंता सजन को ईस ॥ तिन साधी
सकल जगदीस ॥ योगी ऐसो मो कौ ध्यावै ॥ तां की
आंगन कोई मिटावै ॥ ४५ ॥ ग्यांन रूप सजन अंतरजां
मी ॥ ध्यावे मोहि सकल को स्वामी ॥ अपनी जांने जन
म मरन की ॥ ग्यांन त्रिकाल अरस जन के मन की ॥ ४६
प्रकित गुणन तें न्यारो ह्यो जांने ॥ अरु तिन कों स्वामी क
र मांने ॥ ध्यावै मोहि सदा अरु कंद ॥ तब व्यापे नही को

हूं ॥ ४७ ॥ सब मैं व्यापक सकल अतीत ॥ लिपै न सूर ६४
अगन जल सीत ॥ ऐसें मो कों ध्यावै जोई ॥ ऐसें लष
लो पावै सो ई ॥ ४८ ॥ जो मेरे अवतार न ध्यावै ॥ आयु
ध छत्र चरन मन लावै ॥ तां को कहूं न विघ्न जे होई
सब हित मांहि विराजै सो ई ॥ ४९ ॥ यों धार तां करे
म म जो ई ॥ सिध हि पावै योगी सो ई ॥ पर रो अंतरा
इ हैं सारे ॥ मेरे जगत न दूर निवारे ॥ ५० ॥ मो ते रोइ
न ते मैं नाही ॥ यां ते मम जन निकट न जांही ॥ मो हि
न लहै इन हि जो लेवै ॥ मो हि जजे तिन कों रो सेवैं
५१ ॥ मो ही तें उतपत सब हन की ॥ मैं प्रतपालक
रों सब तिन की ॥ मम आधीन सिध अर योग ॥ सां
ष ग्यांन धरम अरु जोग ॥ ५२ ॥ सब को जांन सकल
को सांमी ॥ मैं सब हिन को अंतरजांमी ॥ सब मैं बाह
र भीतर एक सो मैं वरतै सकल अनेक ॥ ५३ ॥ पंच भू
त सब भूतन मांही ॥ बाहर भीतर दूजा नाही ॥ त्यों स
ब मैं ही नांही आंन ॥ आंन द्रिष्ट सो ई अग्यांन ॥ ५४
तां ते द्वैत भाव नहीं आंने ॥ मेरो रूप सकल कर जां
ने ॥ साधन सिध सकल जु मत जे ॥ मेरे चरन निरंतर
भाजे ॥ ५५ ॥ मम प्रसादि मम चरनन आवै ॥ अतअपा

रजवकुब मिटावै॥ यह मैं तो सों ना ष्योऱ्यां न॥ जां ते
श्री रसकल तत्र ग्यांन॥ ५६॥ दोहरा॥ ऐक ब्रह्मक
रि देष नो यह सुनऊहकरि ग्यांन॥ पूछी वसन
बिभूतत ब ऊधव पर मसु जांन॥ ५७॥ इति श्रीभा
गवते महांपुरांणे ऐकादसमि स्कंदे श्रीक्रिस्न ऊधव
संबादे सिधबरननं नाम पंचमोध्याइ॥ १५॥ ऊधवो
वाच॥॥ ऊमहो परमब्रह्म अविनासी॥ चिदानं
द ग्यांन प्रकासी॥ आदि अंत मध्य नाही जांको॥
कोई भेद लहै नही तांको॥ १॥ ऊमही सकल ज
गत ऊपजावो॥ ऊम प्रतपालो ऊम बिनसावो॥
ऊम अंतर बाहर सम मांही॥ सदा अलिपत लि
पो कहूं नांही॥ २॥ जहां तहां ऊमही हो ऐक॥ य
ह सम ऊरम जो द्रिष्ट अनेक॥ द्वेत्र ऊ यह जगअ
त विसतारा॥ ऊंच अरनीच विविध प्रकारा॥ ३॥
अरु यह जीव सत करि मांन्यो॥ विषियन सों ब
ऊ मांत बंधा न्यो॥ यां को ऐक द्रिष्ट कों आवे॥ के स
सकल ब्रह्मकर ध्यावे॥ ४॥ ग्यांन वंत तत वजा नहैं जे
ते॥ ब्रह्म द्रिष्ट देषत हैं तेते॥ तांते ऊम अब क रणां
करो॥ निज विभूत मो कों विसतरो॥ ५॥ तिन भेद

षसकलमैंदेषों॥ तबअधेतब्रह्मकरिलेषों॥ सुनउ
धवकेउतमबैंन॥ बोलेहरिजीकरुणाऐंनि॥ ६॥
श्रीभगवांनोवाच॥ उधवप्रश्नभलीउमकीनी॥ जांतेप
रेब्रह्मगतिचीनी॥ यहप्रश्नअरजुननेंकरी॥ तांसों
मैंयांविधउचरी॥ ७॥ ताहीविधअबतोहिसुनावों॥
ऐसेब्रह्मद्रिष्टउपजावों॥ केरवअरपांडवकुरषे
त्र॥ जबहूंजुरेभारथकेहेत॥ ८॥ तबअरजुननेंकौ
रवसजनदेषे॥ सकलबंधअपनेकरलेषे॥ इनस
जनकोंजोमैंमारों॥ आपहिआपनरकमैंडारों॥
९॥ ऐसीविधआंन्योअहंकारा॥ आपहिमांन्योमा
रनहारा॥ तबमैंताहिग्यांनसमझायो॥ तांकोसं
भ्रमसोंनासिटायो॥ १०॥ प्रश्नकरीअर्जुनतबऐ
सी॥ उमसोसोंकीनीहैजैसी॥ तांतेउत्तरकौंउचरों
याविधब्रह्मद्रिष्टकौंकरों॥ ११॥ उधवमैंसजहन
कोस्वांमी॥ अरसजहनिकोअंतरजांमी॥ आपहीं
तेंसबकोउपजावों॥ सजपोषोंसजकोंवरतावों
१२॥ सकलरहैंमेरेआधीना॥ मोहीमेंसजहोवेंली
ना॥ तांतेंसजमेंदूजानाही॥ योंविजूतजांनोमं
नमाही॥ १३॥ परतोकोंविसेषसोकहों॥ तेरीहेत

द्रिष्ट कौ दहौं ॥ सरब रषकन मांहि मैं रषक ॥ तिन मैं का
ल सरब को लषक ॥ १४ ॥ सो मैं प्रक्रित गुणन की आ
दि ॥ पंचभूतान मैं भूतादि ॥ सूत्र सकल बधव मैं जा
नो ॥ ततन मांहि महा तत मानो ॥ १५ ॥ सत्र सूषम मैं जीव
मो देषो ॥ सत्र दुरजन मांहि मन लेषो ॥ वेद यगन मैं
ब्रह्म महि जानो ॥ ओअंकार मंत्रन मैं मानो ॥ १६ ॥ छं
दन मांहि गाइत्री छंद ॥ मैं अकार अषर मैं व्रंद ॥ स
भ देवन के मध्य पुरंद्र ॥ सकल विसुन मैं मैं विसंद
१७ ॥ नीलकंठ ऐकादस हर मैं ॥ विरान नाम द्वादस
दिनकर मैं ॥ तिन मैं भ्रिगजे सपत महां रिष ॥ तिन
मैं मनजे सत्र राजरिष ॥ १८ ॥ देवरिषन मैं नारद जा
नो ॥ कांमधेन धेनन मैं मानो ॥ सिधन मैं मैं कपल स
रूप ॥ पंषीयन मांहि गरुड मम रूप ॥ १९ ॥ प्रजापत
मैं न मैं होंद ष्य ॥ तिन मैं मकरजहां लोंम छ ॥ वादन मां
हि अध्यातम वाद ॥ सत्र असुरन मैं मैं प्रहलादि
२० ॥ तम प्रकासिक मांहि दिनेस ॥ य ष्य र ष्य गरा मां
हि धनेस ॥ तिन मैं सोंम सकल जे उडगन ॥ सत्र धा
मैं तन मैं हो कंचन ॥ २१ ॥ गजन मांहि मैं गज ऐराव
त ॥ ता मैं अनंग जे स्रिष्ट उपजावत ॥ तहां वरराज

हांसन जल जंत॥ नागन मैं मम रूप अनंत॥ २२॥ नरन ७१
मांहि मम रूप नरेस॥ सरपन मैं वासक सरपेस॥
ऊचेसरवा हयन मैं जांनो॥ फंनधरन मैं मम हि मांनो॥ २३
सकल म्रिगन मैं मैं म्रिगराजा॥ नदीयन मैं गंगासरि
ता जा॥ सब आश्रमन मांहि संन्यास॥ वरनन मांहि
विप्र मम वास॥ २४॥ सकल सरन मैं रूप समुंद्र॥ स
कल धनुषधारन मैं रुद्र॥ मैं हों धनुष आयुधन मांहि
परम निवास मैं रुतन मांहि॥ २५॥ जे अतग हिन हिमा
चल तिन मैं॥ पीपल मैं सब नासपतन मैं॥ मैं परो
हतन मांहि वसिष्ट॥ तहां विरहसपत जे ब्रह्मइष्ट
२६॥ सैनापतन मांहि सेनांनी॥ धरम प्रविरतक ब्र
ह्मा जांनी॥ सकल औषदन मैं जव जांनो॥ पितरन मां
हि अरजमां मांनो॥ २७॥ ब्रह्मयग सब यगन मांहि
वरत अत्रो हि समै हि को नाहि॥ वांइ अगन जल सू
रज बांनी॥ अरमन रोषट साधन जांनी॥ २८॥ चतुर
देह आतमा विचार॥ ब्रह्म अचरज मैं सनतकुमा
र॥ छसत्रन मैं सत रूपा रानी॥ पुरषन मैं सायंभू जां
नी॥ २९॥ सावधांन मैं मैं संबतसर॥ अनूप वैरतिन
मैं उअस्वंतर॥ मैं हों धरम अस्यै को दांना॥ गुहज नही

प्रियमौंनसमांना ॥ ३० ॥ त्रियापुरषसंजोगीजेते ॥ ब्र
ते ह्माहूंतेओरेसज्ञतैं ॥ सकलबांनरनमैंहनुमंता ॥
रूतनमांहिमिमरूपबसंता ॥ ३१ ॥ मंघ्रिसरमासन
मैंजांनो ॥ नषत्रनमैंमैंअभिजितमांनो ॥ देवलअस
तलरहितेइंदर ॥ कमलकोससज्ञहिनमैंसुंदर ॥ ३२
युगनमैंसतियुगसेनांम ॥ वेदनमैंवेदमैंसांम ॥ व्या
सनमांहिव्यासकृष्णपांइन ॥ तिनमैंतुमजेविप्रानप
परांइन ॥ ३३ ॥ कविनमांहिकविशुक्रहिजांनो ॥ आ
कतवंतसमयहततनमांनो ॥ विद्याधरतिनमांहि
सुंदरसन ॥ पदमरागतिनमैंजेमनगन ॥ ३४ ॥
मज्ञत्रिशराजातनमैंऊसजांनो ॥ हौंमवसतमैंमोघ्र
तमांनो ॥ तिनमैंधनजेसज्ञविविसाइ ॥ जेमारग
सज्ञतिनमैंन्याइ ॥ ३५ ॥ अंगसमाधयोगअंगनमैं
षिमां मैंहोंषिमांवंतनमैं ॥ धीरजमैंजेधीरजवंत ॥ मैंहों
बलनमांहिबलवंत ॥ ३६ ॥ छलनमांहिमैंहोंजूवा
मेरेंहेतकरममैंहूवा ॥ वासदेवअंकरणबीर ॥ प्र
ड्समनअरअनुरूधसरीर ॥ ३७ ॥ नारांइणहयग्री
वमहीधर ॥ नरहरिअरयमद्धिगनिपुत्रवर ॥ वि
वाहरचनमैंपूजाजांनो ॥ वासदेवतहांमोकोमानो

३८। तिनमैंथिरताजेसमजूधरा॥ पूरबचित्रना ७२
ममैंअपसरा॥ मैंहोंविसवाविसुगंधूब॥ धरनी
मांहिगंधमैंसरब॥ ३९॥ रसजलमांहिसबदआ
कास॥ रविससितारनमैंपरकास॥ तेजवंतपाव
कमैंजांनो॥ विप्रनगतनमैंबलमांनो॥ बीरन मैं
मांहअरजुनबज्रसार॥ मैंसनातपतथितासिंघा
र॥ इंद्रेमनबुधआदिकजेते॥ मेरीआकतप्रविर
तेंतेते॥ ४१॥ सजनहेतसनअरथनगह्यो॥ जे
जडतिनमैंचेतनरह्यो॥ सबदसपरसरूपरसगं
ध॥ तिनतेंपंचभूतसनबंध॥ ४२॥ इंद्रेमनमहत
तअहंकारा॥ त्रिगुनमहतरेप्रक्रितविकारा॥ प्र
क्रितपुरषजहांजेते॥ मेरोरूपसकलहैंतेते॥ ४३
मोबिनकहूंकछूहेनांही॥ मैंहीप्रगटवसांसत्र
मांहीं॥ जोप्रमांनागनो मैंकबहीं॥ तोतिनपारन
पांवोकबही॥ ४४॥ परमनिरमतजेब्रहमंना
तिनकोंगनतपरेनहीछंना॥ तातेंकहोंविभू
तकहांलों॥ जोकछुमेरोरूपजहांलों॥ ४५॥ अरू
अबयुगतबिभूतहिकहों॥ चेतदिष्टअैसीविध
दहों॥ लजाहेजबिमांधनदांन॥ ईसवरजताऔ

न॥४६॥बलसोंनाअरधीरजजहां॥समबिभूत
जांनोसज्जतहां॥रोविभूततोसोंकछुकही॥अत
अपारकहबेकोंरही॥४७॥मनथिरकरएाका
जयहजांनो॥यहईग्यांनरिदैमतमांनो॥इंद्रेबु
धदेहसमप्रांना॥निसचलकरदिबोभगवांना॥
४८॥मनतेंसजअकारनिवारो॥चेतनमेंरोरू
पविचारो॥रोकअबंमतजहतहसोई॥आपाप
रनहिजांनोकोई॥४९॥ऐसेजांनब्रह्मकोंपा
वो॥ब्रह्महिपाइजगतनहीआवो॥अरतनम
नइंद्रेअरप्रांना॥थिरकरिजिननधस्योसमध्यां
ना॥५०॥तांकोबकृतअंतआचरना॥जपतप
दांनवरतादिकवरना॥काचेकलसजलज्योंज
लजैसे॥पलपलछिवजावैसजतैसे॥५१॥तां
तेंवचनकायमनप्रांना॥सजकोबंधकरेसमध्यां
ना॥सोहिध्याइसोसांहिसमावे॥तबसंसारमांहि
नहीआवै॥५२॥दोहरा॥जोउधवतोसोंकह्योय
हविभूतकोग्यांन॥त्योंहीसूषमअसथूलसभदे
षेश्रीभगवांन॥५३॥इतश्रीभागवतेमहांपुरांणे
एकादससिकंदेश्रीक्रिस्नउधवसंबादेविभूतयोगो

॥ ॥ दासनमैं उधव निज दास ॥ जाके हिर
दै तां न प्रकास ॥ तिन जीवन की हित मन धरी ॥ तांते
प्रभु क्रिपा सों करी ॥ १ ॥ उधवोवाच ॥ प्रभु तुम क
लप आदि उचर्यो ॥ जगत न मि तध रम विसतर्यो
वरनाश्रम नर जेते ॥ तिन धरम न सों लागे तेते ॥ २ ॥
तिन महि कोई जगत हि पावै ॥ कोई करम सिं धव
हि जावै ॥ तांते तुम करणी मैं देवा ॥ जासो इन धरम
न को सेवा ॥ ३ ॥ धरम करत जो उपजे जगत ॥ तुमरे
चरन बढे अनरकत ॥ छूटे काल जाल जवकूप ॥ ल
है तुमारो ब्रह्मसरूप ॥ ४ ॥ यद प मन विधसों विसता
र्यो ॥ जब तुम हंस रूप प्रगधार्यो ॥ पर बहु काल
कहे ते गयो ॥ तांते धरम लीन होइ गयो ॥ है कछु औ
र कौ रै कछु और ॥ तांते जीवन पावै ठौर ॥ तांते तुमक
रणी कर राषो ॥ वहे जा त ते जीवन राषो ॥ ६ ॥ अर
यह तुमही जानो देवा ॥ तुम बिन हू जो लहै न सेवा
तुमही कहो सुनो उरधरो ॥ तुमही राषो तुमही करो
७ ॥ ब्रह्मा हू की सभा मंझारी ॥ वेद जहां नित मूरत
धारी ॥ तहां हू यह कोई नहि जांने ॥ ज्यों बंधे त्यों स

मेबषांने॥८॥ अरयदकैसेकोरिमनआवै॥ करमक
रैतेंजगतहिपावै॥ अरउमयादीकोंतनधास्यो॥
जांतेनिजधरमहिविसतास्यो॥९॥ जोबैऊंगपि
यांनोकरिहो॥ यहनिजधरमनहीउचरहो॥ तापी
छैकोईनहीकरहै॥ यहजगकेसेकैनिसतरहै॥
१०॥ तांतेउमअक्करणांकरो॥ यहनिजधरमबे
गविसतरो॥ असीसुनउधवकीबांनी॥ तबहसबो
लेसारंगपांनी॥११॥ श्रीभगवांनोवाच॥ धंनधंनउध
वजनमेरे॥ हूजोकोईसमांननतेरे॥ मेरोनिजजन
कहीरोसोई॥ हेतपराएवरतेजोई॥१२॥ तांतेउमप
रकारजकरो॥ मोतेंपरमधरमविसतरो॥ उधवप
रमधरममभगत॥ अोरसकलतेंकरेविरकत
१३॥ जगतबिनाजोकोईधरम॥ सोमतजांनोपरम
अधरम॥ जबैमैंप्रिथमकीयोसंसारा॥ तबनहिक्र
तोकरमविसतारा॥१४॥ जेईजेमांनवतनधरे॥ सोहि
सेवतेतेउधरे॥ होइक्रितक्रितचलहिममधांम॥ तां
तेंसोक्रितयुगसेनाम॥१५॥ अोअंकाररूपतबबे
द॥ असेकछूकृतेनहीभेद॥ सजनंदेमननिसचल
करैं॥ मेराध्यांननिरंतरधरैं॥१६॥ असेसजपापन

परहरे॥ सनमेरेचरननअनुसरे॥ त्रेताविषेनरो
षतमंद॥ विप्रनतेंमांनेआनंद॥१७॥ तिननमि
तउदमबज्ञकरें॥ राजसतेंपापनविसतरें॥ तब
तिनहेतवेदविसतरे॥ बज्ञतमांतकरमनकीनें
कोरे॥१८॥ वरणांश्रमकेभेदउपारो॥ न्यारेन्यारेक
रमगहारो॥ अपनोधरमत्यागजोकरे॥ सोनरजा
इनरकमेंपरे॥१९॥ ऐसेबज्ञविधनवहिदिषा
यो॥ घोरकरमनमेंवहिरायो॥ तांतेनाषोआत
मग्यान॥ ग्याबिनसकलकरमकोतजन॥२०॥
बज्ञरोंबज्ञआरंभनचहै॥ राजसतेंनिसचलजो
रहै॥ तिनकेहेतयगउपजायो॥ विज्ञानरूपक
हिसमनसुनायो॥२१॥ विज्ञानजजनकीजेतामां
ही॥ बेतद्रिष्टआंनीजेनाही॥ मैंमुषतेंविप्रउप
जायो॥ षत्रीबाहनतेंजोबनायो॥२२॥ जंघन
तेंवैसपादनतेंसुद्र॥ पदनीचेऔरेबज्ञसुद्र॥
पुनग्रहसतजंघनतेंकीयो॥ ब्रह्मचरजउरतें
मनलीयो॥२३॥ वषासथलकीयोबनवास॥ म
सतकतेंरच्योसंन्यास॥ तांतेसकलपितामेंरोक

सो तें उपजे सकल अनेक ॥ २४ ॥ तां ते मोहे मेट जो क
रे ॥ सो सब बंधन कों विसतरे ॥ जां जां अंगन तें जो
उपज्यो ॥ त्यों त्यों तांका लषण निपज्यो ॥ २५ ॥ ऊ
चे अंगन तें सो ऊचो ॥ नीचे अंगन तें सो नीचो ॥ ति
५ नतें बहु बिध नऐ सुभाव ॥ तां ते उजे नांनां भाव ॥
२६ ॥ सम दम सत षिमा संतोष ॥ सदा दियाल न उ
पजे रोष ॥ तप अरु सोच निरत मम न गत ॥ इन
लषण विप्र अनुरकत ॥ २७ ॥ षिमा तेज बल उ
दम धीर ॥ सूर उदार अचल गंभीर ॥ विप्र जगत
मेरे द्रिढ भाव ॥ ऐ षत्री के नऐ सुभाव ॥ २८ ॥ बुध
आसकत दान आरंभ ॥ विप्र भगत उदम स्त्रारंभ
वैस नयो लीने ऐ लषण ॥ मंद बुध पर महा विच
षण ॥ २९ ॥ गऊ अन अरु त्रिहूं वरन कों सेवै ॥ ति
नतें कछू लेहे सो लेवै ॥ सत संतोष कपट ता नाही
ऐसे लषण सूद्रन मांहीं ॥ ३० ॥ मिथ्यावाद अ
सोच अरु चोरी ॥ बुध नासतक हिरदै कठोरी ॥ का
म क्रोध अरु लोभ विकार ॥ वरन नीच के ऐ परका
र ॥ ३१ ॥ कांम क्रोध मद त्रिसना रहित ॥ सत षिमा

परस्वारथसहित॥ जीवदयाअरतजेअधरम॥ य
हसाधारणसनकोधरम॥ ३२॥ ब्रह्मचरजकेधर
महिकहौं॥ जांतेजगतउपाईचहौं॥ विप्रअरछ
त्रीवैसत्रैवरणां॥ इनकोसकलवेदविधकरणा
३३॥ गरभादांनादिकसंसकार॥ त्रिहूंवरननको
यहआचार॥ जबतेंबडरजनेऊपावै॥ तबतेंगुर
केनिकटरहावै॥ ३४॥ बहुबिधगुरकीसेवाकरै॥
वेदपडेअरथहिउरधरे॥ जनेऊमेषलाकरजप
माला॥ दंडकमंडलअरम्रिगछाला॥ ३५॥ दंतव
सत्रनतनमलननिवारे॥ सीसजटाहूसतनकर
सुधारे॥ आसणांचंचलकदेनकरे॥ लोकचरतन
रिदेनधरे॥ ३६॥ मूत्रपरीषत्यागइसनान॥ होम
अरजपभोजनजलपांन॥ इनमेंवचननहीउचरे
नषकेसादिकदूरनकरे॥ ३७॥ सदानिरंतरत्रिड
ब्रतधारे॥ कबहीभूलनबिंदहिनारे॥ जोआपेजे
जावेकबही॥ बहुतजांतपछतावेतबही॥ ३८॥
करइसनानअरप्रांणायाम॥ जापकरेत्रैदीसेनाम
अगनअरकगुरअरगाइ॥ सुरमुनबंदननितकर
राहि॥ ३९॥ संध्याउपासककरेत्रिकाल॥ वचनन

बोलै हाल न चाल ॥ गुर को मेरो रूप हि जांने ॥ नर की
बुध कहैं नहीं आंने ॥ ४० ॥ सरब देव मैं गुर कों ले
षे ॥ तिनके कछू आचार न देषै ॥ जिष्या अरु और क
छ जोई ॥ गुर को आंन समरपै सोई ॥ ४१ ॥ जब गुर तां
कों आग्या दैवै ॥ तब प्रसादि आप हूं लेवै ॥ बैठे गा
टै आवत जात ॥ सो जन सैंन रात पर जात ॥ ४२ ॥ दी
न जांत गुर सेवा करै ॥ अंजुल मों पी छै अनसरै ॥ ऐ
से वरत अषंडित धारै ॥ मन हूं मैं नहीं सो मन विचारै
४३ ॥ ऐसे गुरकूं लव रते सोई ॥ जो लग वेद समाप
त होई ॥ पुन ब्रह्मा के लोक हि चाहै ॥ तो ग्रहस्त
ता नहीं संबाहै ॥ ४४ ॥ गुर को देह समरपन करै
वेद विचार रिदै मों धरै ॥ गुर अरु अगन अपसन
मांही ॥ सेवै मोहि अवर कछु नाही ॥ ४५ ॥ जुवती अ
रु जुवतीयन के संगी ॥ इनको कदे न होइ प्रसंगी
दरस परस वां नी परहास ॥ त्यागे हरमां न अरतत्रा
स ॥ ४६ ॥ सौच आच मन अरु इंद्रसनां नां ॥ संध्या उपा
त सना रदिं अग्नि मांना ॥ तीरथ सेवा जप तप निछ्या
तजे दरस संन्या बताइ छ्या ॥ ४७ ॥ मन अरु वचन
देह वस करै ॥ मेरो भजन रिदै मों धरै ॥ अरु मन मन्न

जनमजनकोधरम॥ भजनाबिनांसभधरमअध
रम॥४८॥ अैसोब्रह्मचरजब्रतधारी॥ क्रिडतपनि
सदिनवेदविचारी॥ विगतपाप अैसीविधहोई॥ मे
रीभगतलहैतबसोई॥४९॥ अैसीविधभवसागर
तरे॥ मेरोपरमरूपमनधरे॥ अरजोकोईहोइसकां
म॥ तबसोकरेजुवतीअरधांम॥५०॥ केनिहकाम
गहेबनवास॥ केअधिकारसहितसंन्यास॥ अर
जोउपजेमेरीभगत॥ तोनहीकरेकहूंआसकत
॥५१॥ यहहैब्रह्मचरजकोधरम॥ यांतेहूजोसकल
अधरम॥ अबैंग्रहसतआश्रमसमझांवों॥ तेरेम
नआनंदबधावों॥५२॥ ब्रह्मचरजजोनहिगहिरा
वे॥ तोग्रहसतआश्रममेंआवे॥ गुरतेंवेदपडेज
बसबही॥ गुरदषणांदेवेपुनतबही॥५३॥ गुर
कीआग्यालेउरधरे॥ तबविधसोंइसनाननहिक
रै॥ तबदेषेउतमकुललषणा॥ करेविवाहतीया
विचषणा॥५४॥ ज्योंदेषेअपनोअधिकार॥ त्योंही
करेविवाहिविचार॥ विप्रविवाहेचारोंवरन॥ वा
प्रछोमषत्रीकोकरन॥५५॥ वेसविवाहेवेसअर
सूद्र॥ सूद्रएकहीकुचनषूद्र॥ उतममसोजोएकहा।

करे॥ बक्तनकष्टनहीविसतरे॥ ५६॥ श्रुतअधेन
यगअरदीन॥ त्रिहूंबरनकोएकसमांन॥ दीनग्र
हनयगकरवांवन॥ अधिकविप्रकोवेदपठाव
न॥ ५७॥ परएतीनवरतहैंऐसे॥ अगनमधजल
वरषैजैसे॥ इनतेंब्रह्मतेजनहीरहै॥ तांतेइन
कोंविप्रनगहे॥ ५८॥ करसिलावरतदेहनिरवा
है॥ तांतेअधिकोनहीसंबाहे॥ विप्रदेहपूरनत
ग पपारे॥ सोविप्रनलैंनहीगवांरे॥ ५९॥ बक्तनां
ततनकष्टहिकरीरे॥ हरिजनजहरिहीकोंअनस
रीरे॥ सिलावरतकरराषेदेहा॥ नहीममताजु
वतीसुतगेहा॥ ६०॥ अथितपालजोरजतमना
ही॥ मोहीकोंदेषेसत्रमांही॥ जीवनमुकतहोइ
सोविप्र॥ मेरेचरननपावेषिप्र॥ ६१॥ जोकोईमम
जगतहिकरे॥ तांकोकछुअपदापरे॥ सोअपदा
मिटावेकोई॥ सोमेरोहितकारीहोई॥ ६२॥ तांकों
मेंउधारोऐसे॥ नांवनसोंअंजोनिधजेसे॥ परष
त्रीनिजधरमविचारे॥ सकलपालसांहिरदेधारे
६३॥ षत्रीसत्रकेंकुषनिवारे॥ सकलजीवप्रत
पालहिधारे॥ सोषत्रीसुरलोकहिजावे॥ वासव

सहित महा सुष पावै ॥ ६४ ॥ जो आपदा विप्र कों परे
तौ सो ब राज ब्रित कों करे ॥ यदप षडग ब्रित है
ऊची ॥ पर सो अति हिंसा तें नीची ॥ ६५ ॥ जो षत्री
कों पडे विपत ॥ तौ सो गहे वराज की ब्रित ॥ किंवा
विप्र ब्रित कों गहे ॥ अथवा म्रिग वा कर निरबहे
६६ ॥ वैस हि परे आपदा कबही ॥ सूद्र विरत कों
धारे तबही ॥ अर जो विपत सूद्र कों परे ॥ तौ प्रत
लों म जो वरतहि करे ॥ ६७ ॥ या विध जबही मिटै
विपत ॥ तबही गहे आपनी ब्रित ॥ पंच यग रोप्र
तिदिन करने ॥ ग्रहसती कों नाही परहरने ॥ ६८
करकै पाग रिषन कों जजे ॥ करक छहों म देवतन
नजे ॥ नूतन बल अर स राध सों पितर ॥ जल अ
नाद न्राकतसो अनवर ॥ ६९ ॥ तिन स न्न हि नैमें मो
कों जांने ॥ और स न्न न परकरणां गांने ॥ जो स हि ज
ही कहूं धन पावै ॥ किंवा न्यांइहूं तें उपजावै ॥ ७०
तौ सो लोक आप तें पोषै ॥ और यग करि मोहि संतो
षै ॥ जेती लगत घरे में होई ॥ तेतो ई धन राषै सोई
७१ ॥ और सकल म म अरथ लगावै ॥ नूलन हू जे
मारग जावै ॥ यदप रहै ऊटं ब हि मांही ॥ तौ हू लि

पेकदेकहूंनांही॥७२॥निसदिनहिरदेकरैविचारा
मिथ्यामांनेसजनपरखारा॥ इसत्रीपुत्रबंधसजनैअसे
जलकेनिकटबटाऊजेसे॥७३॥रैसजनयोंप्रतदे
हतेंआवें॥जूंनिंद्राप्रतसुपनांपावें॥जूंजूंजागेवा
रंवारा॥तूंतूंमिटैसुपनविवहारा॥७४॥योंहीरे
य प्रतदेहहिआवे॥सोविषिनैलगआपबंधावै॥अ
रयोंहीसरगादिकलोक॥पारेहरषगयेअतिसो
क॥७५॥तांतेसकलवासनांदहो॥अथितमांनअ
वनमैंरहो॥अहंकारममतानहीआंनो॥सजनमा
याबंधनकरजांनो॥७६॥सजनकरमनमैंरहित
करो॥मोविचअंतराइपरहरो॥प्रेमसजावफिडउ
रमैंराषे॥औरसकलहिरदेतेंनषे॥७७॥असेपु
त्रजरोंबनजावे॥किंवाग्रहसतहीमांहिरहावे
असोग्रहीमुकतकरिमांनो॥औरकछूहिरदेन
हीआंनो॥७८॥अरजोहोइजवनआसकत॥जु
वतीसुतआदिकनसोंअनरकत॥विषियालंप
टत्रिशनाआतर॥त्यांनरहतकरमनमैंचातुर॥
७९॥आपहिपरवसताहिनजांने॥औरनकीचिंता
उरआंने॥नाईब्रिधपिताहेमेरो॥ मोबिनदुषल

है बकतेरो ॥ २० ॥ यह अब लालच संतजों की ॥ मो ७२
बिन होइ कवन गत तांकी ॥ ऐसे नाथ मो बिन सम्र
बाला ॥ क्यूं कर जीवें अति बेहाला ॥ २१ ॥ मो बिन द्र
नहि कवन प्रितपाले ॥ कवन विविध दुषन को टा
ले ॥ ऐसे निसदिन आंने चिंता ॥ कबहूं नहि होवे ना
स चिंता ॥ २२ ॥ कदें न सुष पावे यह लोक ॥ ग्रसा रहे
चिंता में सोक ॥ या बिध चिंता कर तन अपारा ॥ नरक
हूं जावे वारंवारा ॥ २३ ॥ दोहरा ॥ बूझे च रज अरू
ग्रह सतको मैं भाष्यो यह धरम ॥ यांतें उधव औ र
कछु सो सत जांन अधरम ॥ २४ ॥ इति श्री भागवते
महापुरांणे एकादस सिकंदे श्रीकृष्ण उधव संबादे
वरणाश्रम धरम निरूपणो सपतदसमो ध्याइ
१७ ॥ श्री भगवांनो वाच ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीभगवांनोंवाच॥ अबमैंकहोंधर्मबनवास॥ अर ७५
अधिकारसहितसंन्यास॥ जातेंमेरीभगतहिपावै
भगतपाइममचरननआवै॥१॥ वरषपचासहूंतें
उप्रांत॥ तबबनजाइरहैएकांत॥ नारसुतनमेंरहै
नईहां॥ धर्मविचारकेरहेअनीहां॥२॥ कंदमूलफ
लवरतहिकरै॥ वलकलम्रिगछालातनधरै॥ त्रि
णपत्रनकीसेजसवारै॥ इंद्रियनकेसनअरथनिवा
रै॥३॥ केसरोंमनषहूरनकरै॥ देहदंतमलहिपरह
रै॥ भूमसैंनत्रिकालइसनान॥ मलनउतारेमूसल
समांन॥४॥ ग्रीषमरूतपंचागनसाधे॥ वरषामैंछा
यानहींबांधे॥ सीससकलजलधारासहै॥ सीतकाल
जलमांहीरहै॥५॥ असीभांतकरेतपऊहिकर॥ अं
तिकेसमेंहोइमहांसुषकर॥ अगनपकरूतपकफ
लआदि॥ भोजनलघपवित्रअनादि॥६॥ मूसलऊष
लकेपाषांन॥ केनषहाथनसोंकाटेधांन॥ देहजीव
काआपेआंने॥ अधिकनगहेनसंचेजांने॥७॥ तिन्हीं
तिनसोंमोकोंजजे॥ औरयगबनवासीतजे॥ अगनहो
त्रअरपूरनमास॥ तूंहीदसअरचातरमास॥८॥ इन
सबदिनकोममहितकरै॥ मोबिनऔरनहिरदैधरै

यौं तप कर मोकों आराधे ॥ तब होइ सुष कर मन नहीं बां
धे ॥ ९ ॥ यौं होइ सुष लहै मम जगत ॥ और त्रिगुन विस
तार विरकत ॥ यौं तब ही मम चरनन पावै ॥ सो जन ब्र
ह्मलोक मैं जावै ॥ १० ॥ अर जो ऐसे कसट हि करै ॥ पर
काम नाहि हिरदै धरै ॥ तांस मम मूरष है जो नांही ॥ तातें स
कल बिरथा अम जांही ॥ ११ ॥ यौं पंच हत रखर बन पा
छै ॥ गहै सुष संन्यास हि आछै ॥ सकल क्रिया को त्याग हि
करै ॥ मन सों मम सेवा अनुसारै ॥ १२ ॥ करम रचे तस जन
लोक न जानै ॥ तातें षिराज्ञं गर कर मानै ॥ ताही हेत
म करै स+त्याग ॥ मनव चक मैसों त्रिडवै राग ॥ १३ ॥ वेदवि
हत विध मोकों जजै ॥ हिउजकौं सरबंस देत जे ॥ जब
कोई संन्यास हि करै ॥ तब ही सुर विघन न विसतरै ॥
१४ ॥ पर यह विघन गनै कछु नाहीं ॥ मेरे चरनन धरै उर
मांही ॥ जो कबहीं कछु वसत्र हि राषै ॥ तो कोपीन अ
रु सन नाषै ॥ १५ ॥ दंड कमंडल कर मैं धारै ॥ जूं मलै
तूं नहीं और विचारै ॥ देष देष धरन पग धरै ॥ वसत्र
हि छान जल पान करै ॥ १६ ॥ सतवंत बांनी कौं बोलै ॥
हिरदै विचार करै नहीं डोलै ॥ मौंन धार बांनी कौं सं
धै ॥ अरकाइया कर मनहिं बंधै ॥ १७ ॥ प्राणायाम

मनहिवसकरे॥सजनईजेअरथनपरहरे॥अरएचि
हननहीजामांही॥जिषधरेजतीसोनाही॥१८॥जि
ष्याकरेसपतग्रहविप्र॥औरकहूंकछगहेनछिप्र
सोऊविप्रचतुरविधजेते॥जांनग्रहेजिष्याकोंतेते
१९॥विप्रकहीजेदसपरकार॥तिनकोउमसोंक
होंविचार॥देवविप्ररिषविप्रहिजांनो॥विप्रविप्र
अरषत्रीमांनो॥२०॥वैससूद्रअरऐकबिडाल॥पसू
अरम्लेछचंडाल॥विद्यानितआपपडेपडावै॥सक
लअरथकोततबतावै॥२१॥इंद्रीजितसीतलसंतोष
देवविप्रसोनिवरतरोष॥तपअरसतअहिंसाकरै॥
दिनदिनषटकरमनअनुसरे॥२२॥काललोपकबहूं
नहीहोई॥रिषब्रहमणाकहीयतहैसोई॥बिनहिंसा
फलमूलदिल्यावे॥तिनहीसोदेहहिवरतावे॥२३॥
वरषासीतउसनसनसहे॥विप्रविप्रनितसरधागहे
अहंसादिकनकरेअरोह॥रणमैंसूरतजेनहीमोहि
२४॥नीतसहितगनेआरंभ॥षत्रीविप्रहिरहेनहीदंभ
अरजोउतमवणजहिकरे॥पसूराषेषेत्रीविसतरे॥२५
सोवऊवैसब्राहमणाकहीऐ॥ताँतेलेजिष्यानहीगही
ऐ॥तेललूणघितदूधबललष्य॥तिलअरनीलमही

मधमध्य ॥ २६ ॥ इनको वराजकार तहे जोई ॥ सूत्रव ।
प्रकहीयत है सोई ॥ मनमूतनके त्रो हेकरे ॥ सनके
छिद्र नदेषत फिरे ॥ २७ ॥ प्रतिदिन हिंसासों अधिका
र ॥ विप्रक हावे सो मंजार ॥ न ष्पत्र न ष्पत्र का रजका
रज ॥ ग मत्र ग मन लबेत्र नारज ॥ २८ ॥ क्रितघनस
कलपसनके लषरा ॥ सो पसु ब्राहमराकहैं विचष
रा ॥ वापीकूप तलाव षुरावैं ॥ बनबागादिक नासक
रावैं ॥ २९ ॥ संध्या अरु इसनान न जांने ॥ असो विप्र म
लेछ बषांने ॥ निंदक लोनी परधन हरे ॥ निरदै क्रूर कु
टल ताकरे ॥ ३० ॥ सो चंडाल विप्र कर मांनों ॥ असे सद
सविधविप्र न जांनो ॥ ताते उतम वित्र ष्पाकरे ॥ औ रसक
लहू जे परहरे ॥ ३१ ॥ सात घर नतें भिष्पा पावे ॥ ताही
कर संतोष उपावे ॥ सो ले जावे नदी तडागा ॥ ताते कछु
इक करे विभागा ॥ ३२ ॥ कोई मांगे तां को देई ॥ के जल
मांहि प्रवाहि करेई ॥ विचरे धरनी होइ निहसंगा ॥ क
देन कछु सवारे अंगा ॥ ३३ ॥ तन मन नइं द्रे निग्रह करे ॥
मेरो रूप हिरदे मां धरे ॥ निसदिन रहे आतमां रामां ॥ वि
षे सुषनको सुनेन नामां ॥ ३४ ॥ समदरसी अरधी रजवंत
सदा रहे निरनेहकंत ॥ मेरे भाव भयो अति सुध ॥ परम

विवेकी जांनि जे लक्ष ॥३५॥ आपहि मांहि विचारै एक
कहूं न देषै भूल अनेक ॥ आतम अंस ब्रह्म कौं जांनै
बंध मुकत दोऊ भ्रम मांनै ॥३६॥ बंध न जब इंद्री
य न वस होई ॥ मुकत इंद्रय न बांधे सोई ॥ ऐसे जांन
के इंद्रिय न जीते ॥ मोहि सिमरत तें काल बितीते ॥३७
उहू लोक तें होइ विरकत ॥ किनहूं सों नहीं होवै आ
सकत ॥ पुरयां मांहि आइ जो परै ॥ जिष्या अरथ प्रवे
सहि करै ॥३८॥ देस पवित्र सैल बन सरता ॥ बांनप्रस
त जहां जहां आचरता ॥ तहां तहां नित ही चल जावै ॥
तिन तिन आश्रम न जिष्या पावै ॥३९॥ तिन तें लेहि स
ला को अंन ॥ तातें होवै मन परसंन ॥ ताही तें निरमल
ता लहै ॥ उपजै ग्यांन सकल दुष दहै ॥४०॥ इंद्रे अरथ न
सत न देषै ॥ बिराजं गर मन नाम स्वं तप पेषै ॥ तातें सन
तें गहे विरकत ॥ नहि उदम मम मन आसकत ॥४१॥
य ह सम अहंकार रहित जांनो ॥ आतम विषै सुपन सम
म मांनो ॥ कहूं न उदेग चित वनाकरे ॥ मन क्रम वचन
दूर पर हरे ॥४२॥ होइ विरकत तजे सन्न आंन ॥ माया
मोहित तजे अभिमांन ॥ मेरें जगत हिरदे मो आवै ॥ तव
सन्न वरना श्रम छुटकावै ॥४३॥ विध निषेध दोऊ भ्रु

मजांने॥ विदसिम्रितकी संकनमांने॥ अतिबुधिपरबा
लिकसमरहै॥ विधनिषेधकछुकरैनगहै॥४४॥स
मजांनेपरजूं उनमत॥ चेतनमैंदीसेजडवत॥ प्रह
पतबांनीरतनहोई॥ कबहूंवादनगांनेकोई॥४५॥
बाहरमध्यएकसमरहै॥ कबहूंकोईपषनगहै॥ जूं
जूं कहैसुनेतूं तूंही॥ ततमतोनहीत्यागेकांही॥४६॥
काहूतेंउदवेगनआंने॥ अरकाहूकोंआपानजांने॥
निंद्याआदिसहेडरबैंन॥ अंतरधरैनिरंतरचैंन॥४७
काहूकोअपमांननकरै॥ मनक्रमवचनमांन विस
तरै॥ पसुसमांनेवेद्रिकूगंने॥ सकलविकारदेह
केमांने॥४८॥ जूंआतमअपनेतनमांही॥ सोईसबमें
दूजोनाही॥ जूंबऊघटनमांहिससिएक॥ घटनसं
गजांनीएअनेक॥४९॥ तातेंइसटअनिष्टहिकरै॥ सो
सबआपेकोंविसतरै॥ तातेंआतमबुधहिराषै॥ भेद
देहक्रितितेंसबनाषै॥५०॥ समेअसमेजोभोजनआ
वै॥ तोहूंकछूनमनमोंल्यावै॥ करमरचतसबदेहहि
जांने॥ तिनहीतेंसबसुषदुषमांने॥५१॥ तेसबसुष
दुषकरमसरीरा॥ योंआतममेंजूंम्रिगनीरा॥ केवल
आहारहिनहिचाषै॥ सहिजप्रापतदेहहूंराषै॥५२॥

ग्यांन राषै होइ विचार ॥ लहै मोहि छूटै संसार ॥ जो
मेरी इछ्या तें आवै ॥ उतम मधम जो कछु पावै ॥ ५३ ॥
यौं असन वसन आदिक चहै ॥ जैसो आवै तैसो गहै ॥ प्र
अपै की बुधन आंनै ॥ दोऊ मिथ्या ही कर मांनै ॥ ५४
काई टेक न मन मैं धरै ॥ मो बिन और सकल परहरै
सोच आचमन अरु इसनाना ॥ और कछु आचरण है
नांना ॥ ५५ ॥ ते कछु संका तें नही करै ॥ जो कछु सो इछ
त आचरै ॥ तिनों मेरे श्रुत को नै नाही ॥ दोऊ भ्रम जां
त न+मन मांही ॥ ५६ ॥ परतथा पकर मन न आचरै ॥ लोक
न को हित मन मैं धरै ॥ तौ ग्यांनी वेद किंकर नाही ॥ वि
धि निषेद जांनै भ्रम मांही ॥ ५७ ॥ पर अपनी इछ्या आ
चरै ॥ लोकन को हित मन मैं धरै ॥ तां के [illegible] नेद क्रिष्ट
कहूं नाही ॥ ग्यांन क्रिष्ट देषत सब मांही ॥ ५८ ॥ पूरब
संसकार रहै जो लौ ॥ देह मांहि सो वरतै तौलौं ॥ बहुरौं
सो भव मैं नहीं आवै ॥ मेरा निजानंद पद पावै ॥ ५९ ॥ अ
र जां कौं उपजै वैराग ॥ कस्यो चाहै या भव को त्याग ॥ प
रम मंत्र जन जुगत नही पावै ॥ सो सतगुर की सरनी आ
वै ॥ ६० ॥ अमही बिना लहै सो युगत ॥ पावै मोहि होइ जी
व मुकत ॥ गुर कौं ब्रह्म रूप कर देषै ॥ मान व बुध कदैं न

हीलैषै॥६१॥सरधासहितश्रासासनतजे॥मनक्रम
वचननिरंतरनजे॥जोलगब्रह्मविचारनपावै॥तो
लगगुरतजकहूंनजावै॥६२॥पाछेजांजांनेतांरहै॥
परमहंसकेधरमहिगहै॥परजिनषटरिपजीतेना
हीं॥इंद्रेअरथविचारतमांहीं॥६३॥चंचलबुधन
ग्यांनवैराग॥ताकोसकलब्रिथाहैत्याग॥जेषदिषा
इजीवकोकरे॥तांकोदोषकहूंनहीटरे॥६४॥देवपि
तरअरनूतननाषे॥तिनकोरिणअपरोसिरराषै
अंतरगतमैंमाहिछपावै॥आपेवंदेबंधनपावै।६५
सोसुषकहूंनलहैयहलोक॥अरतांनष्टहोइपर
लोक॥रोहैंवरनाश्रमकेधरम॥इनतेंजगतलहैहुहि
करम॥६६॥अबचारोंकेधरमप्रधांन॥न्यारेन्यारे
करोंबषांन॥समअरअहिंसासंन्यासीको॥श्रुतबि
चारतपवनबासीकों॥६७॥हिरदैदयायगममकर
म॥ग्रहसतीहरिगुरसेवाधरम॥ब्रह्मचरजतपसोच
संतोष॥सकलसुहिरदैकितहूंनहिरोष॥६८॥मेरो
नजनसकलममकारन॥रोसनहिनकेधरमसधार
न॥ग्रिहीदेवैबनतारितदांन॥नूलनगमनकरैदि
नआंन॥६९॥याबिधअपनेअपनेधरम॥मेरेहैतक

रेसमकरम॥सबमैंजांनेमेरोभाव॥काहूपरनहींधरे
अभाव॥१०॥सोमेरीद्रिडभगतहिपावै॥औरसकल
सहिजेछुटजावै॥तांतेंउपजेमेरोग्यांन॥देषैमोहिमि
टैसबअग्यांन॥११॥ऐसोहोइपावैममरूप॥बक्रन
आवैयाभवकूप॥जेहैंसकलवरणाश्रमा॥तिन
केरोषैंभाषेधरमा॥१२॥भगतसहितएमोहिमिलां
वैं॥भगतबिनाभवसिंधवहावैं॥ऐसोतततलहैतेनत
रे॥औरसकलनितजनमैंमरैं॥१३॥दोहरा॥यह
उधवतोसोंकह्योवरणाश्रमकोधरम॥जातेंममभ
गतहिलहेछूटेबंधनकरम॥१४॥इतश्रीभागव
तेमहांपुरांणेएकादससिकंदेश्रीक्रिश्नउधवसंबा
देवरणाश्रमधरमनिरूपणांनामअष्टदसों।उधवरे
जोवरणाश्रमां॥तिनकेमैंसबभाषेधरमा॥इनमैंर
हेममभगतकमावे॥तातेंमेरेग्यांनहिपावै॥१॥ग्यां
नपाइसकलभ्रमजांने॥वरणाश्रममिथ्याकरमांने
सबसाधनतजमोकोंध्यावै॥औरकछूहिरदैनहीआ
वै॥२॥ग्यांनीकेमेंहीहोंसाधन॥अरमेरोहीनितआ
राधन॥मोहीकरमोकोंआराधे॥तनमनदेमोसोंबां
धे॥३॥मोहिबिनासरगादिनलेई॥मेरेईचरननचित

देई॥ मोबिन मुकत कहूं नहीं गहै॥ मोबिन सकल वास
नादहै॥४॥ मैंही हितू मैं ताके प्रेय॥ मोबिन औरसक
ल अतिअप्रेय॥ जेईसहित ग्यांनविग्यांन॥ तेई जांनेमो
हि सुजांन॥५॥ ग्यांनीतें मेरे प्रेय नाही॥ सदा वसे मेरे म
न मांही॥ मैं ताको मेरे हैं सोई॥ दूजो नहीं परसपर को
ई॥६॥ यद्दपि पैहे तीरथ ब्रत दांनां॥ कहां कहां लग जे बि
ध नांनां॥ तेस न करे नहीं फल ऐसो॥ ग्यांनकला तें होवे
जेसो॥७॥ तातें ग्यांन हिरदे जो धारे॥ औरसकल साध
नानिवारे॥ सन्न मैं रूप आपनों जांने॥ मोहि जांन प्रभु
सेवा ठांने॥८॥ होइकर सहित ग्यांन विग्यांन॥ देषे सक
ल लोक भगवांन॥ बकूते मम निज रूप समावे॥ जहां
जाइ कोई नहीं आवे॥९॥ जब ही प्रांनी ग्यांन नहि पावे
तब ही मम निज हेत लगावे॥ तांते मम निज [illegible] तो क
हत हों॥ तेरे उर संदेह दहत हों॥१०॥ उधव भव मैं वि
विध प्रकारा॥ जनम मरन सुषदुष विसतारा॥ ते सम म
त या तन के जांनो॥ सो तन माया भ्रम कर मांनो॥११॥
त आपहि सुध निरंजन देषो॥ घे ताती एक ही लेषो॥ ए जो
सकल प्रगट देहादिक॥ ते आतम मैं कते न आदिक॥१२
अरु अंत हूं है कछु नांही॥ अब अग्यांन हूं तें वर तांही

ग्यांन द्रिष्ट कर देषै जबही । त्रिगुन रहित आप है तबही
१३ ॥ जैसे रजू मांहि अहि कहैं ॥ आदि न ज्यों तो अंत न ही
रहै ॥ भ्रम ते मध मंद मत मांने ॥ है नाही पर है सो जांने ॥
१४ ॥ त्यों देहादि सकल भ्रम देषो ॥ आप हि सदा ब्रह्म महि
लेषो ॥ ऐसे सुन हरि जी सों ग्यांन ॥ उधव तब पूछो भगवां
न ॥ १५ ॥ उधवो वाच ॥ हि प्रभ ग्यांन क्रिपा कर कहो ॥ मेरे नां
नां भ्रम को दहो ॥ अरु त्यों ही भाषो विग्यांन ॥ भगत वैराग
रे परम निधांन ॥ १६ ॥ जाकों चाहैं सकल महंत ॥ जातें हो
इ जगत को अंत ॥ या बिन ग्यांन ध्यांन कछु नाही ॥ साधन
सकल ब्रिथा सभ जाही ॥ १७ ॥ जाको पाइ मुकत न ही
लेवै ॥ और सुषन पर द्रिष्ट न देवै ॥ ऐसी भगत क्रिपा क
र कहो ॥ अपने जन हि औरनि रषहो ॥ १८ ॥ यह भव सा
गर बिकट अनंत ॥ जामैं भ्रमत न पावै अंत ॥ ता पर तपे
त्रिविध संताप ॥ तिन मैं परे आप ही आप ॥ १९ ॥ तातें जी
व महां दुष पावै ॥ सुष मांने सो दुष होइ आवै ॥ ता को र
षक दूजो नाही ॥ मैं विचार देष्यो उर मांही ॥ २० ॥ तुम रे
चरन छत्र सिर धारे ॥ सो सभ सत संताप निवारे ॥ ता को द
स दिस अंम्रित वरषै ॥ ता के दरस औरस भव हरषै ॥ २१ ॥
ज्यों काहू कंगाल हि लीजै ॥ ता के सीस छत्र ले कीजे ॥ सो

होइ अनूप महां सुष पावै॥ अरु औरन के दुष मिटावै॥२२
तूं तव वचन छत्र सिर धारे॥ सो अपने भव दुष निवारे॥
सो भै तीन लोक के मांही॥ ता सम और कहूं को नांही॥२३
अरु जे जे तां की सरनी आवै॥ ते ते सकल परम सुष पावैं
या भव कूप पर्यो बेहाल॥ तां पर नस्यो महां अहि काल
२४॥ तां ते विषई विषे सुष जांने॥ तिन निमित बहु उद
म ठांने॥ तातें सदा अमित दुष पावै॥ जां को कबहूं अंत
न आवै॥२५॥ तां को क्रिपा पियूष पिवावो॥ काढ कूप तें मृ
तक जीवावो॥ वचन अंम्रित की वरषा करो॥ अपने गु
ग्यान बोध उर धरो॥२६॥ तुम ही जगत पिता जग स्वांमी
जगपालक सर्व अंतरजांमी॥ असे वचन सुने भगवां
न॥ तब उधव सौं भाष्यो ग्यांन॥२७॥ श्री भगवांनोवाच
उधव प्रश्न करी तुम जोई॥ परम पुत्र कीनी थी सोई॥
सरसिज्या पर भीषम परे॥ हम को दे ष वचन उचरे॥२८
ते सभ वचन मैं तोहि सुनावो॥ भगत ग्यांन वैराग जनावों
प्रक्रित पुरष महत तत अहंकारा॥ सबदादिक जे पंच प्र
कारा॥२९॥ त्रै गुन अरु इंद्रे दस एक॥ पंच भूत षिल भ
ऐ अनेक॥ इस थावर जंगम विविध प्रकार॥ इन अष्टवी
स को है विसतार॥३०॥ इन बिन और कहूं कछु नांही॥ ऐ

कद्रिष्टदेषैसबमांही॥ जांकरसकललोककरिजांने
तांकोसाधूज्ञांनबषांने॥३१॥ अरजबजांनेएकोतत
मायाजांनेसकलअनत॥ आतमब्रह्मएककरजांने
देहादिकसबमिथ्यामांने॥३२॥ रजूजांनजों सरपनि
वारे॥ त्यों समसतममरूपविचारे॥ ज्योंजोगीदिसामो
हिमिटावै॥ आगोंदिसकीषबरपावै॥३३॥ करतनिरं
तरज्ञांनविचार॥ दिषैब्रह्ममिटैविसतार॥ ताकोकही
यतहैविज्ञांन॥ जांतेलहैमोहितजआंन॥३४॥ आदिन
अंतेरहैनअंत॥ सोईहैअबहूंवरतंत॥ वरणाकारप्रग
टहैंजेते॥ आदिनथेअरअंतनतेते॥३५॥ तातेंअबहूं
मिथ्यादेषै॥ तिहूंकालमांहीकोंलेषै॥ जेसेतिहूंकालमैं
धरणी॥ घटमटादिकमिथ्याबरणी॥३६॥ श्रुतिकोम
तोहिरदेमैआंने॥ नेतनेतश्रुतिसदाबषांने॥ नांनांका
रभेदभ्रमजाषै॥ ब्रह्मसतहजोसबनाषै॥३७॥ सकल
घटनमैंएकबतावै॥ ऊचनीचसबभेदमिटावै॥ ऐसी
भांतविचारेवेद॥ जांनेमोहिमिटावैभेद॥३८॥ अरत्यों
हींसबप्रगटदेषै॥ सपतधातकेसबतनलेषै॥ अरदेषै
उपजतबिनसंत॥ योंप्रतष्यविचारेसंत॥३९॥ अरसत
पुरषजरोहैंजेते॥ तिनकेवचनविचारेतेते॥ एकेमतोस

मनको लेषै ॥ तिसविचाररिदे मोंपेषै ॥ ४० ॥ अरतंत्रन
नवहिरदै विचारै ॥ चेतन राम अचेतन मारै ॥ सजैं दैषै
चेतंन अधारा ॥ इंजे देह बिबिध बिसतारा ॥ ४१ ॥ इन
चारोंको मतो विचारै ॥ मोहि जांन सब भेद निवारै ॥ स
कलद्रिष्टतें होइ विरक्त ॥ चेतन ब्रह्म सदा अनरक्
त ॥ ४२ ॥ कर मरुचत सब मिथ्या मांनै ॥ ब्रह्मलोकलों
नासवंत जांनै ॥ जो देष्यो सुन्यो हिरदै मैं आवै ॥ सो सब
बंधन जांन बहावै ॥ ४३ ॥ मेरी भगत होइ सो धरै ॥ जिन
ते भगत होइ सो करै ॥ भगत अरु भगत हितू हैं जेते
उमसों पीछे भाषे तेते ॥ ४४ ॥ अब बहु रों तव दीन विचा
रें ॥ भगतन भगत साधन उचारें ॥ मेरी कथा सुनें अर
कहै ॥ प्रीत सहित उर अंतर गहै ॥ ४५ ॥ पूजा मैं अतिना
स चाधारे ॥ बहुत भांत इसथी न विसथारे ॥ वंदन करे
प्रदषणा देई ॥ अरु अष्टांग प्रणांम करेई ॥ ४६ ॥ सब
भूतन मैं मोकों जांनै ॥ परम भजन मेरो तन मांनै ॥ मम
भगतिनकों बहु बिध सेवै ॥ तन मन धन तां को नित दे
वै ॥ ४७ ॥ मेरे हेत करे जो करै ॥ मो बिन औरन हिरदै ध
रै ॥ मेरे गुण न कहै उर धारै ॥ दूजी सकल कांम मों टारै
४८ ॥ मेरे अरथ अरथ सब त्यागै ॥ सुष अरु भोगन तें बै

रागे॥ जपतपयगहोमब्रतदांना॥ सैंनचलनन्नोज
नजलपांना॥४९॥ इत्यादिकसत्रममहितकरे॥
जांतेंअंतरसोपरहरे॥ सदाआपकोंमोहिनेवेदे॥ प्रे
मत्रासत्रउरग्रंथहिछेदे॥५०॥ ऐसेजबममजगत
हिलहे॥ तबहिविसेषकछूनहिरहे॥ साधनसिधस
कलसोलहे॥ जोक्रिडकरममचरननगहे॥५१॥ का
लकर्मतेंहोवेअचल॥ जबहीपाइजगतकोबल
जबमेरेविषेचितकोंधारे॥ तबहोइसांतकंरजतम
टारे॥५२॥ धरमईस्वरजग्यांनबैराग॥ इनकोंसहिज
लहेबडभाग॥ अरजेमेरीजुगतनपावे॥ देहगेह
सोंचितलगावे॥५३॥ तबहोवेरजतमअधिकार॥ बं
धेअधरमपरेसंसार॥ बंधमुकतकोचितहेकारण
बोडेचितचितहीतारण॥५४॥ मोमैंधारेमोकोंलहे
नवमैंधारेनवमैंवहे॥ तातेंधरमग्यांनवेराग॥ ईस्वर
ताआदिकजेभाग॥५५॥ तेसममतमेरेअधीन॥ तातें
होवेममलेलीन॥ सेवतमोहिसकलरोपावे॥ मोबिन
कोईनिकटनआवे॥५६॥ मेरीजगतकहावेधरम
उधवइजोसकलअधरम॥ एकब्रह्मदरसनसोग्यांन
याबिनओरसकलअग्यांन॥५७॥ अरउधवसोहेवे

रागु॥ जोसमसतविषयनकोत्याग॥ अरुईस्वरजसिध
अणमादि॥ ममसेवकसेवतहैआदि॥ पथ॥ तातेंजो
ममसरनहिआवैं॥ तेईजगतमुकतकोंपावैं॥ दो
हरा॥ असेअदभुतबैंनजबकहेक्रिपाकरक्रिस्न
तबभाष्योब्रह्मद्रिष्टकोग्यांनहिराष्यापक्ष्म॥ पथ्य॥
उधवोवाच॥ हेप्रनपूरनकरनाकरो॥ जौंहैत्योंसन
विधविसतरो॥ जोउमधरमजगतक्रितनाष्यो॥
ब्रह्मद्रिष्टकोग्यांनहिराष्यो॥ ६०॥ अरवैरागादिक
समझावो॥ मेरेसनसंदेहमिटावो॥ तूंहीसकल
ततसोभाषो॥ होइअततहूरकरनाषो॥ ६१॥ यम
कहीजेकेपरकार॥ अरत्योंभाष्योनेमविसतार॥
अरसमकोंनकोनदमदेवा॥ कोनषिमांअरधित
कोतेवा॥ ६२॥ कोंनसोचअरकोनतपदांन॥ कोंनस
तकोकूठबषांन॥ कोंनत्यागकोहैधनिष्ट॥ कोनय
गदबणांवरिष्ट॥ ६३॥ बलअरदयालाजअरसु
ष॥ विद्यालजासोभाअरदुष॥ पंडितमूरषग्रह
स्तअनरकत॥ सरगनरकबंधअरमुकत॥ ६४
कोंनदरिद्रकोंनधनवंत॥ कोंनक्रिपणकोईस्वर
जवंत॥ अरहूनतेंउलटेजोहैंजेते॥ असमअदमआ

दिकैहैं कैते॥ ६५॥ मोसों देवदयाकरभाषो॥ राषोतत
अततहिनाषो॥ यौंसुनउधवकेबकप्रश्नन॥ तब
बोलैकरणांमैक्रिश्न॥ ६६॥ श्रीभगवांनोवाच॥॥
हिंसारहितसतऐश्रय॥ संगविवरजतमनकोहिय
लजामैंनआसकतधीर॥ ब्रह्मचरजअरषिमांगंभी
र॥ ६७॥ ऐषादसयमगहैनिवरती॥ अरतुंद्वादस
नेमप्रवरती॥ सोचअरकपटरहितधरमाधर॥ ज
पतपअरमप्रूजासाधर॥ ६८॥ तीरतअटनआथि
तकोपोषन॥ गुरसेवाअरद्रिडसंतोषन॥ परउप
काररहिंमविसतारे॥ जुगतमुकतचाहेसोधारे॥ ६९
समजोमोमैंनेष्टाबुध॥ दमइंद्रेनिग्रहिमनसुध॥
जोऊषनउपजावेकोई॥ तिनतैंजांकेदुषनहोई॥ ७०
सकलसहेकलमननहीआंने॥ तांकोममजनषिमा
बषांने॥ जिहवाइंद्रीचंचलहोई॥ तिनद्वोनोंकोधा
रैजोई॥ ७१॥ रसअरअबलाकोनहीगहै॥ ताकोमम
जनथिरताकहैं॥ मूतओहित्यागसोजांन॥ जोगत
जैसोतपनहीआंन॥ ७२॥ सोईसूरजोजितेसुभाव
सोईसतकलममभाव॥ मोकोंलषावैवचनसोस स
ति॥ मोबिनबोलैसकलअसत॥ ७३॥ करमनमैंजो

होइ असंग॥ सो वक्र परम सो चैहै अंग॥ सोहै त्याग तजे
फल करम॥ सो धनिष्ट परम मरम धरम॥ ७४॥ य ग रू
प मैं है नहीं आंन॥ सो दषलों देह मम ज्ञांन॥ प्रांणांयां
म परम बल कहीए॥ जांकर बनो उञत्र मन गहीए॥
७५॥ जाग सोइ मम मइ सरज पावै॥ चैतंन निजानंद है
इ आवै॥ मेरी जगत रोकथ हलाज॥ जगत बिना सो स
कल अलाज॥ ७६॥ जांतें भेद मिटै सो विद्या॥ और
जु धव जी सकल अविद्या॥ लजा मां न अकरम न ग
है॥ मम जन तां को लजा कहें॥ ७७॥ निहकंचन निर
पेष न सो ना॥ इत्यादिक जे गुण तेसो ना॥ सो सुष जो
सुषदुष अतीत॥ मुनन पाप उसनन हीं सीत॥ ७८॥
विषयन की इछा दुष जांनो॥ गुण सपंन हं आढ सम
मांनो॥ बंध मुकत की जुगत हि जांने॥ मम जन पंडि
त ताहि बषांनें॥ ७९॥ अहंकार जांके जग आदि॥
अपनेक हे देह गेहादि॥ सो सम सत मूरष हीं जांनो
यां ते और न आ सस त मांनो॥ ८०॥ जां कर मोहि लहै सो
पंथ॥ जो प्रविरत सो सकल अपंथ॥ नितसं तोषी सो
त लहि हिरदै॥ सांतक चित सकल सुहि हिरदै॥ ८१॥ यह
सरग सुष को निरधार॥ नरकन मो तां मस अधिकार

सतगुरऐकबंधूकरिजांनो॥ औरसकलवैरीकरिमां
नो॥८२॥ सतिगुरहैसोमेरोरूप॥ जांतेजीवतजेन
वरूप॥ सतगुरबिनाबंधूनहीकोई॥ सतगुरबि
नासोवैरीसोई॥८३॥ मांनवतनसोईग्रहिकहीऐ
जांकेगहितग्रहीहोरहीये॥ सोहरिद्रजोत्रिसना
वंत॥ किरपणाइंद्रीयांवसवरतंत॥८४॥ विषिय
नअनाशक्तसोईस॥ विषियनवसतेसकलअ
नीस॥ इतनीप्रश्नकहीमैंतोसां॥ जांजांबिधउम
पूछीमोसां॥८५॥ विधनिषेधकेलषणजैसे॥ महां
पुरषजांनतहैंतैसे॥ विधनिषेधकोंजोलोंजांने॥ ऊ
चनीचवडभेदहिमांने॥८६॥ सोयहसकलनि
षेधहिजांनो॥ भेददृिष्टमैंविधमतमांनो॥ विधना
षेदनषेदहिदेषो॥ उहूंतेंपरेताहिविधलेषो॥
८७॥ विधनिषेदपसूमांनवमांने॥ पंडितकदेहा
रैदेनहीआंने॥ तांतेविधिनिषेदभ्रमजांनो॥ मेरो
रूपसकलकरिमांनो॥८८॥ दोहरा॥ विधनिषे
दभ्रमजांननोज्ञांनकह्योजबक्रिष्न॥ वेदवचनत
बसिमरकरउधवकीनीप्रश्न॥८९॥ इतश्रीनाग
वतेमहांपुरांणेएकादसमसिकंदेश्रीक्रिष्नउधवसं

बादे गुणदोषवरननंनाम उनीसमोंध्या॥ हेप्रभजीउ
मकरणाकरो॥ मेरोयहसंसापरहरो॥ तुमरीआग्याक
रिहैवेद॥ ताहीमेंदीसेयहभेद॥ १॥ विधनिषेदसोवे
दबषांने॥ ताहीतेंसबकोईमांने॥ तुमरीआग्याकरि
भ्रमलेषे॥ जांतेविधनिषेदनहीदेषे॥ २॥ अरयोहप्र
गटदीसेदेवा॥ विधनिषेदकेबहुविधभेवा॥ प्रगट
विविधहैंवरनआश्रमा॥ तिनकेविविधजांतकेकरमां
३॥ तिनकेफलप्रगटस्वरगादि॥ अबकोनहियहपं
थअनादि॥ अरनिषेदप्रगटप्रतलोंम॥ अरभ्रिस
टादिकजेअनलोंम॥ ४॥ वरननमेंशंकरहैंजेते॥ अ
रतिनकेकरमोपुनतेते॥ तिनकोफलप्रगटनारक
कादि॥ कहेहुतेजोफलदांनादि॥ ५॥ जांकेफलद्विवेद
जोकहै॥ ताकोकारनतूंहीलहै॥ अरतूं [illegible]बदेसबकेका
ल॥ प्रगटविधनिषेधगोपाल॥ ६॥ अरजोविधनिषे
दनहीसत॥ तोसुषअरदुषदेफलअसत॥ कोईस्वर
गनरकनहीजावे॥ तोबहुश्रमकरविधिनकरावे॥
७॥ अरयहक्याकहीयेवारंवार॥ तुमरेवचननआंनप्र
कार॥ यहतोकहीउमारेवेद॥ जांतेविधनिषेदकेभे
द॥ ८॥ देवपितरमुनमांनवजेते॥ वेदहैंनकरिदेषेंते

ते॥ विधिनिषेदतिनकेफलजांने॥ अरत्यों त्यांहीतेऊ
ठांने॥ ९॥ सकलउपारीआगपामांही॥ जूं ज्यांथापेत्यां
वरतांही॥ सोमिथ्याकूं कहीऐवेद॥ यांकोमोहिबता
वोभेद॥ १०॥ वेविधिवचनवधेसंदेह॥ वहिसतकि
धोप्रजनेऐज॥ यहपूरनसंदेहमिटावो॥ ऐकजांतकेव
चनसुनांवो॥ ११॥ यहविधपरमग्यांनविसतारो॥ अप
नेरचेजीवनिसतारो॥ सुनऐसीउधवकीबांनी॥ तब
बोलेश्रीसारंगपांनी॥ १२॥ श्रीभगवांनोवाच॥ ऊध
वपरमग्यांनअबकहों॥ तेरेमनभ्रमग्यांनहिदहों॥ मैं
भाषेहैं तीनउपाइ॥ करमअरग्यांनभगतसमझाइ॥
१३॥ ज्योंजांकोदेख्योअधिकार॥ तांकोतैसोकीयोविचा
र॥ जोभाषोंसमझहनकोग्यांन॥ तोतेविषईतजैंनआं
न॥ १४॥ तांतेक्रमक्रमसकलछुडावो॥ लेकरग्यांनमध
ठहिरावों॥ तांतेवचनसकलममसत॥ विधनिषेदयों
नहीअसत॥ १५॥ परऐसकलग्यांनकेकारण॥ ग्यांनलहै
तैसकलनिवारण॥ ऐउमसाटीब्रह्मकीजांनो॥ तांतेकछू
संदेहनआंनो॥ १६॥ ब्रह्मलोकलोंदुषकरिमांने॥ ताही
तैंजगमिथ्याजांने॥ तातेंतिनकेउदमदहे॥ औरसकल
तजथिरहोइरहे॥ १७॥ ताकोग्यांनजोगअधिकार॥ थि

रहैकरणोग्यांनविचार॥ अरजिनविषयनदुषनहीजां
ने॥ अरतिनकेउदमनहीमांने॥१८॥परममगुणासुण
सुषकरिमांने॥ मेरोभजनमलोकरजांने॥ तांकोजगत
जोगअधिकार॥ ऐसोजांनेततविचार॥१९॥ अरजेविष
यनकेअधीन॥ तिनकेउदमसोंलेलीन॥ कथासुनन
कोनहिअवकास॥ अरममप्रीतनहीअभ्यास॥२०॥ ति
नकोकरमजोगसुषदाई॥ इनतेअयनओरउपाई॥ ये
तीनोभाषतहैंतोसों॥ निसचलचितहोइसुनीयेमोसों
२१॥ मेरेबहुबिधगुणविसतारा॥ कथाप्रसंगविविध
प्रकारा॥ तिनमेंप्रीतनउपजेजोलो॥ करमजोगनहीउ
पजेतोलो॥२२॥ अरजोलोंनहिबढेबेराग॥ विष्यनको
नहिमिटेअनराग॥२३॥ तोलोंकरमजोगनहीतजे॥
करमनहीकरमोकोंभजे॥ अपनेधरममांहिथिररहै
कबहूंभूलनिषेदनगहै॥२४॥ यगमहोछेबहुबिधक
रे॥ सकलधरममममहितविसतरे॥ मनतेंइछासकलमि
टावे॥ सोनरसरगनरकनहीजावे॥२५॥ ऐसेग्यांनज
गतकोलहे॥ मेरीजगतरिदेद्रिडगहै॥ उधवयामांन
वतनऐसो॥ सकलस्रिष्टमेंनाहीजेसो॥२६॥ सरगन
रककेवंछेयांको॥ परकूंहीनहीआवेतांको॥ ग्यांनज

गतयातनकौकरलैहै॥ औरसकलकरिजोजलवैहै।२७।
जोऐसोमानवतनपावै॥ सोसमसतकांमनांमिटावै॥
तजेनिषेदसकलईकरम॥ औरकांमनांहेतजोधर्मि
२८॥ अरुनहिबकुरौंनरदेहा॥ परमरतननहीपो फिर
वैएहा॥ यदपबकुरौंनरतनपावै॥ परकछुग्यांनादि
कनरहावै॥२९॥ मातपिताभाईकुललोग॥ ग्यांनमि
टावैकरसंजोग॥ षांनपांनआदिकबकुसाधे॥ बाल
पनतेंतांकोबांधे॥३०॥ तातेंजौलगनाहीमरे॥ तौल
गजतननिरंतरकरे॥ यातनकौंमिथ्याकरिमांने॥ अ
रुउनबुझसदानाकरिजांने॥३१॥ तांतेजतनप्रिथम
हीकरे॥ सावधांनताहिरदैधरे॥ यातनमेंआसक्त
नहोई॥ करेउपाइमुकतकोसोई॥३२॥ जूंपंषीतरु
वासाकरै॥ तामेंप्रीतमांनमनधरे॥ अर तांविरषहि
काटेकोई॥ जिनकेहिरदैदयानहोई॥३३॥ बिरष
संगजूंपंषीपरे॥ तिनकेवसकौंकरहोइमरे॥ परि
जोप्रिथमहिबिरषहित्यागे॥ काटतदेषआपउठभा
गे॥३४॥ आपहिऐसीभांतबचावै॥ पीछेतहांरहेज
हांभावै॥ तूंहीनरतनतरआधारा॥ आतमपंषीकी
यौआगारा॥३५॥ तांकोनिसदिनकीयोप्रकार॥ स

दु निरंतर बारंबार ॥ ऐसे दुष करे मन त्रास ॥ त्रिथ मैं त्या
गे नर को वास ॥ ३६ ॥ मो मैं आइ बसेरा करे ॥ तो ते बकु
रन जन महि मरे ॥ मां नव तन भवसागर नावा ॥ मेरी कृ
पा तें यह पावा ॥ ३७ ॥ जा मैं गुर षेवट सुषदाई ॥ सानकू
ल मैं पवन सहाई ॥ तो हूं आपहि जो नहि तारे ॥ नाव जो
ब भवसागर मारे ॥ ३८ ॥ तां को आतम घाती जांनो ॥ दू
जो आपन घाती मांनो ॥ अरु जो भव तें होइ विरकत ॥
दुष मैं जो न न हो वैरक्त ॥ ३९ ॥ सो समसतई द्वै वस क
रे ॥ मन निसचल कर मो मैं धरे ॥ जो मन धारत अचलन
होई ॥ तो हूं आ तर होइ न सोई ॥ ४० ॥ ऐके वार न सकल
निवारे ॥ क्रम क्रम सकल उपाध हिटारे ॥ षुध्या त्रिषा
जीते तन की ॥ कछु इक पूरे आसा मन की ॥ ४१ ॥ लेवे सो
त जबे के हेत ॥ सावधांन नितर है सुचेत ॥ आगे फल की
अवध बतावै ॥ दुषदिष लाइ व्रिकत उपावै ॥ ४२ ॥ ऐसे
ही क्रम क्रम मन धारे ॥ क्रम क्रम सकल विकार निवारे ।
इंद्रे गुण हिरदै नही आंनै ॥ सास जीत मन की गत जांने
४३ ॥ मन जीतण को परम उपाइ ॥ यां ते मन गत जीती जा
इ ॥ जैसे अवस तुरंग महाई ॥ असधार वस होइ न सोई ॥
४४ ॥ तब ताप रचड कर असवार ॥ हठ न ही करे रोक ही

वार॥ कछुवांको दूधसहितचलावे॥ पीछे देचाबुकदो
डावे॥४५॥ ऐसी विधदेहको वसकरे॥ तूं योगी क्रमक्र
मम न धरे॥ सांषविचार निरंतर करे॥ जां बिध या जग
उपजे मरे॥४६॥ ततनकी उतपत विचारे॥ जूं ज्यों बि
नसे त्यों त्यों धारे॥ सकल उपाध सु उरकी देषे॥ आप हा
परे सकल तें लेषे॥४७॥ या बिध जो लग मन वस हो
ई॥ तो लग करे विचार हि सोई॥ ऐसी बिध जब सांष वि
चारे॥ गुरके वचन हिरदै में धारे॥४८॥ तब सज्ज ही ते हो
इ विरकत॥ मन धारणा में होइ अनुरकत॥ योग साधनां
अष्ट प्रकार॥ अरु यह आतम देह विचार॥४९॥ अरु म
म सुमरन की रतन ध्यांन॥ मन जीतन को पंथ न आंन॥
जोग अरु सांष जगत ए तीन॥ सज्ज पंथन में लीने बीन
५०॥ इन ते चौथे नहीं उपाइ॥ जां ते मन मों में ठहिराइ
तां ते चौथे कछू न करनो॥ इन पंथन मो को अनसरनो
५१॥ अरु जो कहुं पाप होइ आवे॥ सावधांन ता उरन र
हावे॥ तो हूं औरु न करे उपाइ॥ सो सो पाप इनों ते जाइ
५२॥ औरु करे नां नां विध जोई॥ सो सो अधिक मलनता
होई॥ विध निषेद सज्ज ही मल जांनो॥ को ऊ कछू उतम
मत मांनो॥५३॥ विधि निषेद रा कीने होई॥ जां ते बंध रहै

सत्रकोई॥ जैतेंबहुतअरंभनिवारे॥ अपनेअपनेआवि
धिआचारे॥५४॥ तांपीछेसनबंधजनावो॥ करोअबं
धसकलछनावो॥ सकलनत्यागेंएकहिवार॥ जांते
कीनीबहुपरकार॥५५॥ तांतेविधिनषेदनहीकर
णां॥ सकलत्यागमोमैंमनधरणां॥ विधिनिषेधजि
नमिथ्याजांने॥ अरजनवसुषसजडषकरिमांने॥५६
परसमरथतजबेकोनाही॥ प्रबलहांनप्रगटोनां
ही॥ तांकोजगतजोगअधिकार॥ सहिजेछूटेसकल
विकार॥५७॥ मेरीकथानिरंतरसुने॥ हिरदेमोंमे
रेगुनगुने॥ द्रिडविस्वासहिरदैमें राषे॥ मेरेगुणनामनि
मैं रंतरभाषे॥५८॥ सोयद्दिपविषयनेरहै॥ परमनक्रमव
वहै चनत्यागे॥ सोनितजगतयोगसोजजे॥ मोविचअंतराइ
सोतजे॥५९॥ मोतनपंथपूजाविसतरे॥ ममहितजोक
छसोकरै॥ याबिधसकलवासनानासे॥ मेरोरूपहिरदै
परकासे॥६०॥ तांतेब्रह्मरूपममजांने॥ द्वैतभावमिथ्या
करिमांने॥ संसेकरमजरमजैजागे॥ अहंकारतजसोव
तजागे॥६१॥ जहांतहांमोहीकोंदेषे॥ मोबिनओरकछू
नहीलेषे॥ ऐसोहोइममरूपसमावै॥ यांतेजनमबहु
रनहीआवै॥६२॥ तातेंजाकोमेरीभगत॥ निसदिन

र
ममचरननअनंकत॥ तातेंयद्दिपनाहीज्ञांन॥ अरना ९२
हीवैरागनिधांन॥ ६३॥ तोहूंसोमोकोंअनसरे॥ अत
कसतरभवसागरतरे॥ वरणांश्रमकेधरमनकरे॥ बहु
तज्ञांनतपकोअनसरे॥ ६४॥ निसदिनसांषज्ञांनविचा
रे॥ गहिवैरागसकलकोटारे॥ साधेयोगअष्टप्रकार
दांनवरतादिकबहुतप्रकार॥ ६५॥ ऐसजनआपहि
तेंचलआवे॥ ममजनकेआधीनरहावे॥ मेरीजगत
सकलसिरताजा॥ जेसेसकलनरनमेंराजा॥ ६६॥ जु
गतमुकतिपलनहिपरहरे॥ ममजनकीनितसेवा
करे॥ अरयदिपमैंबहुविधकहों॥ जुगतमुकतक
छुदीनीचहों॥ ६७॥ परमेरोनिजजननहींलेवे॥ सक
लत्यागममचरननसेवे॥ निरपेषताप्रमहेश्रेय॥ मो
बिनसकलवसतकोहेय॥ ६८॥ निसप्रेहतायहसुष
अपार॥ जहांनकालकरमअधिकार॥ मैंनिसप्रेहन
सप्रेहजोहोई॥ मेराजगतकहीजेसोई॥ ६९॥ मेरेसम
लषणाहेंजामें॥ मेरोरूपजांनीयेतामहि॥ जोनिसप्रेह
नितममजगत॥ मैंनिसप्रेहतासोंअनरकत॥ ७०॥
तातेनिसप्रेहतासुषऐसो॥ सकलविश्वमेंनाहीजेसो
निसप्रेहजनमेरोसुषपावे॥ इसप्रेहाकेनिकटनआ

वै ॥ ७१ ॥ जे एकांत भगत है मेरे ॥ तिनके पाप पुंन नही ने
रे ॥ राग द्वेष वरजत समदरसी ॥ त्रिगुणातीत बुद्धि
के परसी ॥ जे ईजे जन इन मैं आवैं ॥ ते ई ते मेरो पद पां
वैं ॥ ७३ ॥ दोहरा ॥ जो इन पंथन को तजे करे करम अ
धिकार ॥ तिन पसु जीवन को कहै विधि निषेद विसता
र ॥ ७४ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे एकादसस्कंधे
श्री क्रिस्न उधव संबादे ग्यांन करम भगत जोग नाम वीस
मो अध्याइ ॥ २० ॥ श्री ॥ ग्यांन भगत अरु करम उपाई ॥ आपम
लण को पंथ बताई ॥ पर जे अति ही पसु अग्यांन ॥ इ
नकैं छोभ करे कछु आंन ॥ १ ॥ बक्त कांम नांहि रहै दे
धारे ॥ तिन हित बक्त करम विसतारे ॥ ते पसु उषन
रंतर पावैं ॥ भव प्रवाहि मांहि वहि जांवैं ॥ २ ॥ तिन
हित विध निषेद उचारे ॥ तिनके बक आरंभ निवारे
अपनो जो अधिकार ॥ तामैं वरतै तजि विसतार ॥ ३ ॥
ऊंच नीच सभ परहरे ॥ अपने करम मांहि अनुसरे
सो सो तिन है तिन विध ही जांनो ॥ तामैं अवर निषेद हि
मांनो ॥ ४ ॥ एक छवस तबुध मति देषो ॥ जीव पसुन को
बंध न लेषो ॥ उपजी वसत सो सकल असुध ॥ परिकहि
नाषो सुध असुध ॥ ५ ॥ ऊ भ ऊ भस कल छमा वराकारन

अपनो

मैंयहकीयोभेदउचारा॥ पापछनाइधरमग्रहिवाकं
याबिधिबकुंअरंभछु,नवांऊ॥ यहसमसतजगको ६
विविहार॥ यांतेजगकोवारनपार॥ षितजलतेजप
वनअकास॥ सनजगपंचभूतपरकास॥ ७॥ ब्रह्माआ
दिइसथावरपरजंत॥ पंचभूतकरसभवरतंत॥ अ
रऐकैआतमसभमांही॥ तातेंभेदकहूंकछुनांही॥ ८
परतथापमैंनाषेंवेद॥ तांकरिकीनेनांनांभेद॥ ता
नकेस्वारथसुषकेहेत॥ विधउचारेफलनसमेत॥ ९
देसकालअरद्रवसुभाव॥ इनकेभाषेनांनांभाव॥ रो
कनिषेदरोकविधभाषैं॥ योंसंकोचमांहिसभराषें॥
१०॥ जाहिदेसक्रिस्नम्रिगनाही॥ अरजहांद्विजसेवा
नकराही॥ अरजहांक्रिस्नम्रिगहूंरैहै॥ परमलेछ
तहांवासागहैं॥ ११॥ अरयदपउतरकोतहांनांही॥
परमघइहरआदिककेमांही॥ अरजोमघआदिकप
रहैरे॥ परकद्रजताहूरनकरे॥ १२॥ अरकद्रजतामि
टीहोई॥ परजोहोवेसरसोसोई॥ सोसोदेसनिषेदक
हीजै॥ तांमैंवासादिकनहीकीजै॥ १३॥ तिनतेंऔरदे
ससुचजांने॥ तिनमांहीवासादिकठां . ने॥ अरजोका
लधरमकोनाही॥ सूतकआदिकतेजामांही॥ १४॥

सोसोकालनिषेदकहीजे॥ उतमसोजामैंविधिकीजे॥
वसत्रादिकजलआदिकसुध॥ मूत्रादिकतेंहोइअसु
ध॥ १५॥ सुधअसुधवचनतेंत्योंही॥ सुधेतेग्रहपादि
कयोंही॥ जबहीपाककर्योहैसुध॥ बऊतकालको
होइअसुध॥ १६॥ कहीएजूममसोणअसुध॥ बऊत
कालतेंहोवैसुध॥ जूमेंजोवरषाजलहोइ॥ बऊतका
लतेंसुधसोहोइ॥ १७॥ ऐसीजांतअवरहूंजांनै॥ सु
धअसुधभेदपहिचांनै॥ बिनइसनानादिकसुधबा
लिक॥ इसनानादिकबिनअसुधजुवादिक॥ १८॥
जीरणवसत्रनिरधनकोंसुध॥ दरबवंतकोपरमअ
सुध॥ औरोंसकलसकतसमांन॥ सुधअसुधेकीयोबषां
न॥ १९॥ सोसनेदेसकालअनुसार॥ विधनिषेदकोकी
योविचार॥ धातअरपात्रवसत्रगजदंत॥ तेलअरू
घ्रितहेमादिअनंत॥ २०॥ कालअगनिजलमाटीवा
इ॥ यथायोगहोइसुधकराइ॥ अरजोकछुलगऊ
तोडरगंध॥ जोलगधोवैमिटेनगंध॥ २१॥ तोलगजां
नअसुधनमहीए॥ गंधगएतेंनिरमलकहीए॥ सक
तअवसथा ॥ तपइसनान॥ संसकारसुनकरम
अरदांन॥ २२॥ ममसिमरनतेंहोवैसुध॥ करेअनथा

होइअसुध॥मेरोमंत्रलीएविधजांने॥मंत्रविहीननषे २४
दहिमांने॥२३॥अरपेमोहिसुधसबकरम॥करेविप
रजेहोइअधरम॥देसअरकालकरमअरकरता॥इं
द्रेमंत्ररोषटआचरता॥२४॥एजबसुधहोइतबसुध॥
असुधहोइतेंहोइअसुध॥अरकहूंहोवेसुधअसुध
कहूंअसुधयोंहोवेसुध॥२५॥सुधअसुधनेदेहेजोके
राजनंदकोहोतहेताते॥जोकहीएऊंचेकोकरम॥
नीचेकोहेऔहअधरम॥२६॥अरजोकछुहेधरमनी
चेकों॥सोईहेअधरमऊंचेको॥ताहीतेंदोनोभ्रमजां
ने॥मेरोजगतकंदेनहीमांने॥२७॥जोकबहूंविष
अंम्रितलीजे॥लेंऊंचेनीचेकोंदीजे॥तोतिनमांको
भेदनहोई॥मरणोअमरएकसमदोई॥२८॥योंएव
धनिषेधहिहोवे॥ऊंचनीचकीऔरजोवे॥परएदो न
ऊहेंकछुनाही॥आपविचारेअंतरमांही॥२९॥नी
चेनीचकरमआचरे॥मदरापांनादिकहूंकरे॥तोहूं
तिनकोदूषणनाही॥सोनितहीहेदूषणमांही॥३०॥
अरजोग्रहीकरतहेसंग॥रितकेसमेजुवतीपरसं
ग॥तोतांकोदूषणकछुनाही॥सोनितहीहेदूषणमां
ही॥३१॥जैसेपयोधरनमेंकोई॥ताहिनपडनेकोभे

होई॥ परजोकछूचढेहै ऊंचे॥ संगकरेंढहिआवेनीचे
च ३२॥ तातेंतिनकोसंग नकरणो॥ मनक्रमवचनसक
लपरहरणो॥ ज्योंज्योंप्राणीछोडेकरम॥ त्योंत्यों छूटे
पावैमरम॥३३॥ बेमधरमसत्नहनकोएह॥ मेटेसोक
मोहिसंदेह॥ यानिमतमेंवेदसुनाए॥ थोरेथोरेमेंव
हिराए॥३४॥ पीछेजूमकरसकलनिवारे॥ ऐसीजां
तजीवनिसतारे॥ जबनरविषयनउतमजांने॥ तब
तिनमैंआसक्तहिठांने॥३५॥ तांतेंहिरदेउपजेका
म॥ तांतेतहांकलहिकोधांम॥ ताहीतेंक्रोधहिउप
जावै॥ तबअविवेकआवैहीआवै॥३६॥ सोअविवेक
हरैसत्नज्ञांन॥ तांतेंप्रांनीमृतकसमांन॥ तांतेकाज
अकाजनजांने॥ निसदिनबहुविधचिंताठांने॥३७
सत्नउरषारथहोवैहीन॥ निसदिनरहैदुषतेंअर
दीन॥ तातेंसमझेआपनआंन॥ मिथ्याजीवैविरष
समांन॥३८॥ जांहोवैलुहारकीषाल॥ स्वासलेतयौं
षोवैकाल॥ अरजुनकहैकरमफलजेते॥ सरगा
दिकनांनांविधकेते॥३९॥ तेतेकहिकररुचउपजा
ई॥ मेटनषेदनविधकरवाई॥ जैसेऔषधकटुक
पीयाए॥ बालिककोंलाडूदिषराए॥४०॥ औषदको

फललाहूनाहीं॥ औषदहीतेंरोगसनजाहीं॥ सरगहे
तजोकरमनकरै॥ सुनसुनततफलहिपरहरै॥ ४१
तबअनरथतजअरथहिपावै॥ मोमेंहोइनिहकर्म
समावै॥ अरऐजबतेजनमहिपावै॥ तबतेआपहि
विषैकमावै॥ ४२॥ पुत्रकलत्रकुटंबअरधांना॥ इ
नकेहेतचाहेसुषमांनां॥ आपकोआपकरेअनरथ
तिनकोमूरषजांनेअरथ॥ ४३॥ ऐसेयाजवमेंनि[illegible]त
जरमें॥ कहेनजांनेसुषकोमरमे॥ अरतिनकोजोज
रमतदेषै॥ सदानिरंतरदुषतलेषै॥ ४४॥ सोतिनको
कबहूंनबतावै॥ अरथअरकामनकहेंछिडावै॥
तातैंमैंतोसतविधजांनो॥ कैसेकरमअरकांमब
षांनो॥ ४५॥ परजोकछुस्रुतिमांहिसुनाऐ॥ अरथध
रमअरकांमबताऐ॥ तातेंसकलछुडावनकारन
हितविचारकीनोउचारण॥ ४६॥ ऐसेंबेदततनही
जांने॥ मूरषपुहपतबैंनबषांने॥ फलनहेतअरंजे
करम॥ तिनकोकहेंनछूटेजरम॥ ४७॥ कांमीक्रिप
णलोभअधिकारी॥ त्रिसनाव्याकुलसदाविचारी
फूलहिमांहिफलकरमांने॥ कांमनलागततन
हीजांने॥ ४८॥ मैंतिनकेनितहिरदेमांही॥ परतोहूं

तेजांनेनाही ॥ जांतेयहसबजगतपसारा ॥ अरसमस
तजाकेआधारा ॥ ४९ ॥ जाकीशक्तिपाइसबवरतें
चुंबकसंगलोहज्यूंनिरतें ॥ जाकीआग्यासुनहीमांने
म कोईअरजाज्ञाननहीमांने ॥ ५० ॥ ऐसोमैंप्रगटसंदेस
जैसेसकलदेहमैंसीस ॥ परतेकांमकरततमअंध ॥
मोहिनदेखैंऔरनबंध ॥ ५१ ॥ जैसेरोगनेनमैंहोवै ॥ अ
गनजोतवसतनहीजोवै ॥ यौंअज्ञानअंधकरमष्ट
देखैनहीनिकटमैंइष्ट ॥ ५२ ॥ तोमोबिनममप्रतीतनजां
नै ॥ हरिजीबिनयग्यादिकठांनै ॥ तिनपरहनेत्यांहीप
रलोक ॥ जनमजनमपावैनवसोक ॥ ५३ ॥ जबयांके
बकुहिंसादेखी ॥ हनहनजीवजीजीवकांपेखी ॥ तिन
केहेतकहीयहबांनी ॥ हिंसायगहिमांहिबखांनी
५४ ॥ पसुबधऐकयग्यमैंभाख्यो ॥ औरसमसतहरक
रनाख्यो ॥ जबयांनीतामैंठहिरावै ॥ तबफुनभेदहि
सकलमिटावै ॥ ५५ ॥ यानमितपसहिंसाभाखी ॥ सो
मूरखननतककरराखी ॥ तातेबकुबिधकरमनकौरै ॥
बकुकांमनाहिरदेमैंधरै ॥ ५६ ॥ पसहिंसाकरिकौरै
विहार ॥ जेजेपावैबकुतप्रकार ॥ देवपितरभूत
नकोजजे ॥ उरमोसुषइच्छानहीतजे ॥ ५७ ॥ सपन

उलसुरगादिकलोक॥ तिनकोउतमसुनयालोक ५६
तिनकीइछाहिरदैधरै॥ दरबखरचैकरमनविस
तरै॥ ५८॥ विघनहोइबक्तकरमनमांही॥ सरगादि
कहूंपावैनावै॥ जूंकोईसाहूरपरजावै॥ धनहितग्र
हिकेधनधदिलमावै॥ ५९॥ पीछेपरैविघनजेकोई
तोइतनोतेंजावैसोई॥ तूंजेबक्तबिधकरमनपावै॥
तेपसकहूंलोकतेंजावै॥ ६०॥ सांतकतेजेदेवनजैं
यक्षादिकनराजसीजजे॥ तांमसभूतप्रेतबक्तसेवैं॥
तनमनधननिततिनकोंदेवैं॥ ६१॥ ईहांयगबक्तत
विधकीजे॥ विप्रनबक्ततदखणांदीजे॥ तातेंसरगादि
कसुखपावै॥ तहांबक्ततविधजोगमुगावै॥ ६२॥ फुन
जबहोवैतनकोअंत॥ तबहूजेभूमैंधनवंत॥ ऐसीजां
तकोंमनाकरै॥ तिननमितकरमनविसतरै॥ ६३॥ ता
नकोमेरीबातनभावै॥ जगतकहांतेंहिरदैआवै॥ य
दपवेदकरमउचारै॥ धरमअरथकामविसता
रै॥ ६४॥ परतथापब्रह्मनहिबतावै॥ क्रमक्रमहूजोस
कलछुडावै॥ परश्रुतकोआसानहिजांनै॥ तेकछुतेक
छुऔरबखांनै॥ ६५॥ प्रांणसरूपपरासेनाम॥ पसंतीको
मनमेंधांम॥ तीजीकंठमधमामूल॥ चोथीप्रगटवैखरी

असथूला ॥ ६७ ॥ भेद तीन को कोई न जांने ॥ तातें औरौं
और बषांने ॥ अंतपार कोई नही पावै ॥ जां सा इर को
थाहि न आवै ॥ ६८ ॥ अतगंभीर अरथ है यां को ॥ को
ई भेद न जांने तां को ॥ मैं मन हन मैं अंतरजांमी ॥ आक
त अनंत सकल को स्वामी ॥ ६९ ॥ सरब व्यापी ब्रह्म सरू
प ॥ लिपत न कछू जा को रूप ॥ कवल नील माहि
तंत जैसे ॥ सबद रूप मन हन मैं ऐसे ॥ ७० ॥ सोई प्र
गटै बहु बिसतार ॥ मन हूंतें आवै मुष द्वार ॥ जां म
करी तंत विसतारे ॥ कर विसतार बहुर संघारे ॥ ७१ ॥
वेद रूप त्यों मम विसतार ॥ ओं अंकार मूल अकार ॥
तां ते अषर बहुत प्रकार ॥ तिन तें छंद वार नही पा
र ॥ ७२ ॥ चार चार अष्यर अधिका ही ॥ छंद होत ऐसी
विधि जां ही ॥ एक ही तें यौं होइ अनेक ॥ बहुरौं सक
ल एक के एक ॥ ७३ ॥ गाइत्री छंद अष्यर चौवीस ॥ उस
नक छंद अष्ट अरवीस ॥ जो बतीस अनुष्टुप सो है ॥ ब
रहती नाम तीस षट को है ॥ ७४ ॥ पंकती नाम अष्यर चा
लीस ॥ त्यां ही त्रिष्टुप चौतालीस ॥ जगती छंद अष्ट चा
लीस ॥ कहत पार नही कोट वरीस ॥ ७५ ॥ या विध प्रग
ट वेद विसतार ॥ जां को कहू वार नही पार ॥ कहि करि

हिरदै मैं कहां बतावैं॥ लेकर अंत कहां ठहिरावैं॥ ८७
७६॥ ऐसो मतो न जांने कोई॥ मो बिन पावै विधु न्हो
ई॥ यग रूप कर मोंको राषै॥ सकल देव मैं मोंको भा
षै॥७७॥ मेरे हेत करम करवावै॥ मोतें उपज्यो सक
ल बतावै॥ अंत सकल को नाषै नास॥ मोकों कहे नित
परकास॥७८॥ नांनां रूप न बृथा जनावै॥ एक ब्रह्म
कहि सकल सुनावै॥ जेसे साप जेवरी मांही॥ त्यों स
न जगत बतावै यांही॥७९॥ मोकों नित निरंजन भाषैं
अंजन सकल दूर करि नाषैं॥ तातें श्रुति नित मोहि ब
तावै॥ पर यह तत न हि कोई पावै॥ ८०॥ सो पावै जो म
म आधीन॥ होइ निहकांम हो इ लेलीन॥ परमानंद सु
ष को आगारा॥ पावै मोहि छुटै भवपारा॥८१॥ दो हरा॥
यों सुनकरि श्रुति तत को उधव लह्यो आनंद प्रश्न क
री तब क्रिश्न सों जां ते छूटे फंद॥८२॥ इति श्री भागवते म
हांपुरांणे एकादस स्कंदे श्री क्रिश्न उधव संबादे वेद
स्तुति ब्रह्म परमतत्व निरूपणं नाम इकी॥ हे देव तत हैं
केते॥ कहो क्रिपा करि मोकों तेते॥ जिनं कर रचत स
कल संसारा॥ जो दीसै नांना विसतारा॥१॥ उमतो आष्ट
विंसते कहे॥ तिमें त्रिडकर मन मोंगहे॥ पर बकतेरा।

षबकूं बिधि कहैं ॥ अर तिन तें सुनतूं ही गहैं ॥ २ ॥ कोइक
है तत छैबीस ॥ अर त्यों कोइक है पचीस ॥ कोइ षटअ
रकेइ चार ॥ कोइ नाषे सपत विचार ॥ ३ ॥ कोइ नव को
करे विवेक ॥ कोइ नाषैं दस अर एक ॥ कोइ ततबतां
वैं षोडस ॥ अर त्यों एके कहैं त्रियोदस ॥ ४ ॥ कोइ नाषैं द
स अर सात ॥ ए विषम तें सिं भ्रितव ष्यात ॥ कोंन परो
लै जन लै नाष्यो ॥ अपने अपने मत ही राष्यो ॥ ५ ॥ क्रि
पा करो निजबैंन सुनावो ॥ सत मत तो सौ मोहि जनावो ॥
सुन उधव के बैंन रसाल ॥ क्रिपासिंध बोले गोपाल
॥ ६ ॥ श्रीभगवांनोवाच ॥ हे उधव ज्यों ज्यों सन नाषैं ॥ ति
न तें जिन तें तत निराषै ॥ तें ते उ मम सन जांनो सत ॥ त
त विचारै सन्नै अ सत ॥ ७ ॥ माया देष कहैं जो जेते ॥ मा
या मांहि मतइ ते ते ॥ मोहि देष जो तिन को देषै ॥ तो स
म सत इ मिथ्या पेषै ॥ ८ ॥ माया माहि युगत वी चारै ॥
अपनो अपनो मतो उचारै ॥ यह यों यह यों यह यों
नाहीं ॥ कहैं सनै मिल आपन मांही ॥ ९ ॥ यह यों ही है
ज्यों मैं नाष्यो ॥ तेरा कह्या सत नही राष्यो ॥ या विधम
म माया अमलारो ॥ तिन नांनां विध पंथ चलारो ॥ १० ॥
मम माया की सकत अनंत ॥ तिन के पंथन को नहीं

अंत ॥ जबसमदमउर अंतर आवै ॥ तबऐभेदसकल
मिटजावै ॥ ११ ॥ जेते ततसकल माया के ॥ जिनतें भए
मते नां नां के ॥ ऋमक्रम ततउपजते गए ॥ त्यों त्यों भेद
बहुतविध भए ॥ १२ ॥ जैसें ऐक ब्रिषविसतार ॥ तांकी
संपत बहु परकार ॥ कहु साषाबहु तें परसाषा ॥ अर
तिन के बहु तें उपसाषा ॥ १३ ॥ तिन को बहुत भांतवि
सतारा ॥ पांनफूलफल विविधप्रकारा ॥ ताविरषहि
वरनें जो कोई ॥ जों ज्यों कहै सत तं तूं ही ॥ १४ ॥ यों रेहो
इक है जो साषा ॥ बहु तें होइ मिलें परसाषा ॥ उपसाषा
मिल बहुबिध होवै ॥ तस जन पंथ सत तत बजोवें ॥ १५
यों संसार ब्रिषविसतार ॥ मायामूल बहुत परकार ॥
तत सकल साषा परसाषा ॥ अर तिन के बहु बिध उप
साषा ॥ १६ ॥ तां ते जं वरनें त्यों मत ॥ पर सो मो मैं सकल अ
मत ॥ त्यों ही ज्यों जिन के मन आयो ॥ त्यों त्यों तिन वरन सु
नायो ॥ १७ ॥ माया करि बंध्यो सो आतम ॥ ता तें छोरे सो प
रमातम ॥ रोधै अर रजडै ते चोवीस ॥ तिन को मिले सकल
छबीस ॥ १८ ॥ अर जे बंध मुकत हैं दोई ॥ ते न्यर मम माया
सत न कोई ॥ तां तें ब्रह्म जीव बै नाही ॥ यों पचीस जांनो
मन मांही ॥ १९ ॥ सत रज तम यह गुण हैं जेते ॥ सो सरूप
माया के तेते ॥ रज उतपत सांत क प्रतपाल ॥ तांमस रूप

ग्रहस्तहै काल ॥ २० ॥ राजसहूं तें करम अरु अधकार ॥ तांम
सतें अविवेक अपार ॥ सांतक गुणतें उपजे ज्ञांनां ॥ मा
याके गुण ऐहैं नांनां ॥ २१ ॥ इन तें परे आतमां मांनो ॥ ता
तें ब्रह्मरूप करजांनो ॥ पंचवीस ताहीतें कहै ॥ अरु तां
हीसु नओ रांगहै ॥ २२ ॥ सो है काल गुणन विसतारे ॥ सू
त्र सुभाव सो सकत पसारे ॥ तातें काल रूप हरि जांनो ॥
सतिस रूप ताहीको मांनो ॥ २३ ॥ तां तें तत अधिक नहीं
गहीऐ ॥ पंचवीस छवीस हिकहीऐ ॥ प्रक्रित पुरषम
हतत अहंकार ॥ तनमात्रा ति पंच प्रकार ॥ २४ ॥ करन
अर त्वचा नैन रसना घ्रांन ॥ ऐ पांचो इंद्री हैं ग्यांन ॥ गुदा
उपसथ चरन कर वांनी ॥ पांच करम इंद्रीऐ जांनी ॥ २५
मनदसहूं इंद्रीयनको राजा ॥ जांकी सकत करे सब का
जा ॥ छित जल तेज पवन आकास ॥ अष्टविंसत ते गुण
मिलपास ॥ २६ ॥ गत उपसरग कर मम नवचन ॥ ऐ पां
चो इंद्रे फल रचन ॥ तातें अष्टाविंसत तत ॥ अधिकन
जो षैं ज्ञांनी सत ॥ २७ ॥ श्रिष्ट आदि थी माया एक ॥ पुर
ष सकत तें नई अनेक ॥ तनमात्रा महतत अहंकार
ऐ हैं कारन सपत प्रकार ॥ २८ ॥ पंचभूत अरु मन इंद्री द
स ॥ कारज रूप प्रक्रित ऐ षोडस ॥ सत रज तम गुन ती
न प्रकारा ॥ तिन तें रच्यो सकल विसतारा ॥ २९ ॥ कारज

कारनप्रक्रितरोजांनो॥पुरषनमितसाषीमांनो॥दुन्हा
ग्राकतपुरषतेंपावै॥मिलेसपततब[illegible]उपावैं॥३०
सपतधातकेसत्तविसतारा॥आतमद्रिष्टाकोआधा
रा॥सकलेततसपतमैंआरे॥तांतेएकनसपतबना
रे॥३१॥पंचभूतआपहिउपजारे॥तिनकेबज्जविध
देहबनारे॥आपप्रवेसकीयोहरितिनमैं॥चेतनदी
सतहैजिनजिनमैं॥३२॥ऐसीविधषटविसतार॥आ
पमांहिबज्जकरेविचार॥प्रिथमीआपतेजत्रैतत॥
अरआतमनिरमलसत्तमत॥३३॥याविधचारतत
विसतारा॥ऊचोनीचोसजनसंसारा॥पंचभूततनमात्रा
पंच॥पंचइंद्रीयनमिलपरपंच॥३४॥मनआतमांम
लदससात॥ततसपतदसजोतात॥मनआतमांएक
करजांने॥तेजनषोडसततबषांने॥३५॥पंचभूतअ
रइंद्रीपंच॥तीनगुनमिलेसकलपरपंच॥ऐसीवि
धकरिपंथचलावैं॥नेरहिकोसत्तजगतबतावै॥३६
इंद्रेपंचपंचईभूत॥आतममिलसत्तजगउधभूत
ऐसीविधएकादसकहै॥तांहीत्योंमुनहिरदैगहै॥३७
पंचभूतमनबुधअहंकारा॥आतममिलनवकोवि
सतारा॥ऐसीविधबज्जमारिगकहे॥युकतविचारहिं
रमागहे॥३८॥प्रक्रितपुरषकोलहेविवेक॥इनको
दै

जांनेएकक्कोएक ॥ ऐसोसुनततनकोग्यांन ॥ ऊधवपू
छ्यौप्रश्नसुजांन ॥ ३९ ॥ ऊधवोवाच ॥ हिप्रभजीयहग्यां
नसुनावो ॥ मेरेउरकोभरममिटावो ॥ चेतंनग्यांनरू
पअबिनासी ॥ सुधानंदपरमप्रकासी ॥ ४० ॥ ऐसोआ
तमउमेरोरूप ॥ परेगुणानंतेंपरमअनूप ॥ जडबिना
समेपरमअसुध ॥ दुषमरूपपलसुषनहीसुध ॥ ४१ ॥
ऐसीप्रक्रितपुरषतेंन्यारी ॥ तोहूंभेदैपरसपरप्या
री ॥ प्रक्रितमांहिआतमभिलरह्यो ॥ अरआतमप्र
क्रितकरगह्यो ॥ ४२ ॥ इनमेंभेदनजांन्योपरे ॥ एकमेक
होइसनरूंअनुसरे ॥ इनमेंप्रक्रितकहांलोंकहीये ॥
कोंनआतमांजोभिडमहीये ॥ ४३ ॥ करकरणांबांनीवि
सतरे ॥ वचनबांनसंसेपरहरे ॥ उममायाबंध्योसंसा
र ॥ उमहीतेंहोइहैउधार ॥ ४४ ॥ उमहीमायाकीग
ब तजांनो ॥ क्रिपाकरिउमहीतंजांनो ॥ बानीसुनीज
गतअपनेकी तबबोले श्रीक्रिस्नविवेकी ॥ ४५ ॥
श्रीभगवांनोवाच ॥ हेउधवयहग्यांनअगाध ॥ कोई -
एकलहेहैममसाध ॥ सोयहग्यांनसुनावउतोहि ॥ तूंहैं
सदाअनवरतीमोहि ॥ ४६ ॥ उधवप्रक्रितरचेसंसा
र ॥ सूषमइसथूलविविधप्रकार ॥ उपजेविनसेहो
इबिनास ॥ तांतेंआतमनितप्रकास ॥ ४७ ॥ उधव

यह है मेरी माया॥ तिन सत रज तम गुण उपजाया॥ ति
न को त्रिविध सकल विसतार॥ जां को कछु वार न ही
पार॥ ४८॥ त्रिगुन कहे इन को पर बहु भेद॥ जिन तें जी
लहै बहु भेद॥ अध्यातम रूप अधभूत॥ त्रिविध रू
प सम जग अधिभूत॥ ४९॥ त्रिगअध्यातम दिष्ट अ
धिभूत॥ रवि अधिदेव क मिल अधिभूत॥ तीनो मिले
परसपर जब ही॥ तिन को कारज सीजे तब ही॥ ५०
तीनो बिना कछु नहीं होई॥ तीनो मिल वरते सब कोई
उचास परस पवन त्वं जानो॥ करन अर सबद दिसा
यों मांनो॥ ५१॥ नासा गंध अस्वनी सुता॥ जिह्वा रस
वरण जल जुता॥ चित चेतना अंतरजांमी॥ बुध बोध
ना ब्रह्मा सांमी॥ ५२॥ अहंकार अहंकर ता रुद्र॥ मन
मांनी देवता चंद्र॥ या विध त्रिविध प्रपंच पसारा॥ सक
ल पर आतम निज सारा॥ ५३॥ इन तीनो बिन जग
त न होई॥ त्यों आतम बिन रहै न कोई॥ आदि सकल
की आतम रोक॥ जां तें चेतन हो अनेक॥ ५४॥ आत
म सुयं प्रकास अबिनासी॥ चेतन रूप सकल प्रकासी
रोम न आतम के आधारा॥ अर आतमां सकल तें पारा
५५॥ आतम बिना कछु नहीं होई॥ अर आतमां न जांने

को ह्वै ॥ महततें उपज्यो अहंकार ॥ त्रिहूं गुणानको वि
विधप्रकार ॥ ५६ ॥ सो अग्यांन मूलकरि जांनो ॥ तांको
कीयो जगत भयो मांनो ॥ सो आतमां आप गहिलीयो
भव चैं आप आपको कीयो ॥ ५७ ॥ आतम मसदारो कही
रूप ॥ अहंकार तें परे अनूप ॥ सो जब रूप आपनो जां
ने ॥ तबही सकल उपाधि हि जांने ॥ ५८ ॥ सो कछु है य
ह नाही उपाधि ॥ पर आतम भ्रम नलई कर व्याधि ॥ सम
झे जैबें आपनो रूप ॥ तब आतमां तजे भव कूप ॥ ५९
अरतब रूप आपनो जांने ॥ जब भ्रम चरन हिरदै में
आंने ॥ यद्दिप मिथ्या संसार ॥ जो कछु दीसे विवि
धि प्रकार ॥ ६० ॥ परजो लों नहीं मोकों भजे ॥ तोलों नि
ज भ्रम ग्यांन न तजे ॥ जबही मेरी सरने आवै ॥ तबही आ
तम ग्यांन हि पावे ॥ ६१ ॥ दोहरा ॥ ऐसे श्री मुषवैंन सुन
प्रक्रित पुरष को ग्यांन ॥ उधव कीनी प्रश्न तब हरिज
न परम सुजांन ॥ ६२ ॥ उधवो वाच ॥ उभ्रमकरि रहित बु
धहे जिनकी ॥ कही ए देव कव नगत तिनकी ॥ सकल
व्यापक आतम एक ॥ क्यों कर पावें देह अनेक ॥ ६३ ॥ अ
रसु भ्रम असु भकर म्रहें जे ते ॥ त्रिगुणा सहित कहीं एस
भ ते ते ॥ तिन कर मन निहकर म बंधावे ॥ कांकरि जो

नअजोनीपावे॥६४॥अमरमरेकैसेकरदेवा॥याकोमो
हिबतावोजेवा॥यहअमबिनानकोईजांने॥यहिपबा
द्यावेदवषांनें॥६५॥जोकछपडेबंधसोहोई॥तातेत
तनजांनेकोई॥याविधिऊधवपूछीग्यांन॥तबहसबो
लेश्रीभगवांन॥६६॥श्रीभगवानोवाच॥ऊधवयहमनप
रमविकारी॥मनइंद्रीयनमांहिअधिकारी॥इंद्रयन
होइसजमनहीकरे॥सुषदितबउतदमविसतरे॥६७
सोतनतजिहूजांतनपावे॥तहांईतहांआतमआवे
जिनजिनसुषनसुनेअरुदेषे॥तिनतिनकोउतमकर
लेषे॥६८॥तिनकोसोमननितहीध्यावे॥यहतनषीरा
नएतहींजावे॥वऊतनपाइविसारियांको॥जनममर
नकहीयतहेतांको॥६९॥तातनमेंबांधेअभिमांन
छोडेपूरबतनजोआंन॥जनममरनआतमकोसोई
हजोजनममरननहीहोई॥७०॥जेसेसपनमनोरथजा
वे॥यहतनछोडओरहीपावें॥तबयातनकीसुधनर
हे॥वाहीतनकोआपहिकहे॥७१॥जनमअरमरन
सिंमृतनहीकोई॥आतमजनममरनहेसोई॥ओरक
हूआतमनहीमरे॥अरुकबहूंनाहीअवतरे॥७२॥यों
तनमेंमनकोअभिमांना॥तातेतनउपजतहेंनांनां॥ते

जांनो देहसंगमरतो सो

स आतमके आधारा॥ तन मन चित बुध अहंकारा।
७३॥ तिन संग त आतमके दुष॥ तिन तजे बिन पलन
हीसुष॥ कुथव सकल देह हैं जेते॥ सदा सकल बिन
सत हैं तेते॥ ७४॥ काल नदी प्रवाहि प्रचंड॥ तां करि प
लक परत नहीं षंड॥ जैसे नदी निरंतर वहै॥ परदेष
त कौं त्यौं ही रहै॥ ७५॥ अरु जौं तेल निरंतर जावै॥ परदी
पक आदिति वर हावै॥ अरु जैसे सत्र विरषन के फल
दीसे त्यौं पर थिर नाही पल॥ ७६॥ त्यौं ही सत्र देहन कौ
जांनो॥ कालहि ग्रस्त निरंतर मांनो॥ यदपि अवस्था
जाती लेषैं॥ बाल कुमार जुवादिक देषैं॥ ७७॥ पर तो
मूरष हूं नहीं जांने॥ मैं वाही हौं यौं करि मांने॥ यह आ
तम सो सदा अजनमां॥ देह संग तें पावे जनमा॥ ७८॥ अ
रु तां अमर निरंतर मांनो॥ जैसे अगन दारु के संगा॥ स
दा जले तउ तपत अरु अंगा॥ ७९॥ जो लग तनकी संगत
रहै॥ तौ लग आतम अति दुष सहै॥ गरभ प्रवेस बरष
न अवतार॥ बाल अवसथा तथा कुमार॥ ८०॥ जोब
न मध्य जरा अरु मरना॥ नव अवसथा देह आचरना
आतम रो केही सत्र हहन में॥ कबहूं लिपे नहीं तिन तन में
८१॥ ऐसे जांन मुकत तब होई॥ मैरे सरनागत जो कोई

अपनो दादो पिता विचारे ॥ तिनको मरतो उर मैं धारे
८२ ॥ नाई ज्यों अब मैं अनरकत ॥ त्यों ही तेऊ तें आस
कत ॥ ते तो प्रगट काल वस नरे ॥ परवस परे छोड सब
गये ॥ ८३ ॥ मेरी यों कैहै गत ऐसी ॥ नाई पिता दादे की जे
सी ॥ अर मेरे अब बालिक जैसे ॥ हमहूं हुते पिता के तैसे
८४ ॥ सकल अवसथा सो मम गई ॥ यह तो प्रगट और रही
नई ॥ याही विध जैसे सन देहा ॥ सन छूटे है पुत्र धंन
ग्रेहा ॥ ८५ ॥ यों उर मों बहु नांत विचारे ॥ अपने बंधन
सकल निवारे ॥ देहादिक सन संगत तजे ॥ सदा निरं
तर मो कों नजे ॥ ८६ ॥ बीज जनम ते पावे अंत ॥ षेती
षेत । माहि वरतंत ॥ षेती करनहार सो न्यारो ॥ यों तन
तें न्यारा करे विचारो ॥ ८७ ॥ करम बीज विसतार नाही
दगध करे जो है तन मांही ॥ तन तें आप नियारो जांने ॥
संग करे तें सुष दुष मांने ॥ ८८ ॥ ता ते तिन को संग निवा
रे ॥ याविधि आप को तारो ॥ जो तन आपन न्यारो जांने ॥ आप
तन सुष है त करम बहुवांने ॥ ८९ ॥ तिन ते नांना देह
न पावे ॥ नितही जनम मरमर जावे ॥ सांतक तें सुर
रिषते होई ॥ राजस नर के दांनव सोई ॥ ९० ॥ तांमस पस
आदिक के भूत ॥ याविध त्रिगुण जगत उदभूत ॥ यह

पआतमसदाअनीह॥कबहूंकछूकरेनसमीह॥५१
परतनकरतेकरताहोई॥संगदोषबंधनहेसोई॥
जैसेनाचेगावेकोई॥तिनकोदोजोद्रिष्टाहोई॥५२॥
तूंत्योंआपद्रिबेठकरे॥तांनतालरागद्रितरधरे॥तूं
मायागुणाकरिमनगंने॥आतमकरेआपकोमांने
५३॥तिनहीकरमनबांधेआप॥जोकछ्करेहोइस
न्नपाप॥तिनकोजांनतजेनहीजोलों॥जनममरन
दुषमिटेनतोलों॥५४॥जलप्रवाहिढिगठाढोकोई
तटविरषनदेषेचलसोई॥नैनभ्रमतजोजोईदेषे
तबसन्नधरनीभ्रमतीलेषे॥५५॥तेसेयहआतम
थिरजांनो॥औरसकलचंचलकरमांनो॥निसच
लमनकरदेषेजबही॥निसचलब्रह्मरूपसन्नत
बही॥५६॥जैसेसुपनमनोरथमिथ्या॥यौंसन्नजग
तअरविथ्यासुषा॥परयदपजगसतिनकोई॥तोहूं
कदेंनिवरतनहोई॥५७॥जैसेसुपनसतकछुना
ही॥परजौलोंहेनिंद्रामांही॥तोलगसकलसतई
जांने॥मूरषआपद्रिनहीपछाने॥५८॥तूंभ्रम्यांन
नीदवसजौलों॥जनममरनभ्रेमिटेनतौलों॥ता
तेउधवसन्नभ्रमजांनो॥महांअनरथरूपकरमांनो

नो॥९९॥विषयनके उदमद छुटकावै॥अरजेहैं ते सक
ल मिटावै॥जो लग आपहि सम झहि नाही॥तो लग
है नां नां न मांही॥२००॥अरु आपहि नहि समझहि
जौ लौं॥ग्यांन प्रकास होइ नहीं तौ लौं॥भ्रम माया अधी
न निरंतर रहै॥जग उपहास सीस सब सहै॥२०१॥के
इ एकक रें अभिमान॥केइ गहि बांधे अग्यांन॥केइ
मूंतें थूकें तन मैं॥मारें धूरि नीच के अंगन मैं॥२०२॥ए
के ढाहि के मूंड मुडावें॥ऐकें निंदे चोट चलावें॥ऐसे
बहु बिध दुख उपजावे॥बहु बिध नेके बैंन सुनावें
२०३॥परु जो अपनो अर्थ विचारे॥सो यां को मन मैं न
ही धारे बहुत कष्ट तें मन न डिगावे॥सो नवत जम म
चरन न आवे॥२०४॥मेरो पंथ षडग की धारा॥जो न
डिगे सो उतरे पारा॥हरि के बैंन न दुःहि कर जांन॥ऊध
व प्रग्यान करी मैं मांन॥२०५॥उधव वाच॥हे प्रभु रो
उम बैंन सुनाये॥तुमेरे उर दृढ कर आये॥जो अ साध
ऐका जधिकावैं॥ तां ते सहै कवन विध जावैं॥२०६॥मे
रे रिदै ग्यांन ठहिरावो॥सहिन उपाइ मो हि समझावो
जैसे सहिन उतम करि जांनो॥अरु त्यों औरन पास बषां
नो॥२०७॥पर तें आइ परे नही सहे॥अंतप्रकृति वस

होइरहै ॥ केवलजे तवचरन अधारा ॥ तिनके कोई
नही विकारा ॥ १०८ ॥ ते नित निस चल सीतल रूप ॥
छ नित आनंद परम अनूप ॥ तिनको कदें लिपे कों नाही
सदा वसे तव चरनन मांही ॥ १०९ ॥ और सकल प्रक्रि
त अधीन ॥ सदा विकारन आगे दीन ॥ तांते उमही क
श्यां करो ॥ त्वां नादिक सम मन हिरदै धरो ॥ ११० ॥ दोहरा ॥
ऐसे कीनो प्रश्न जब उधव परम सुजांन ॥ ताको उस
हि न उपाइ तब बैन जन भगवांन ॥ १११ ॥ इति श्री भा
गवते महापुरांणे एकादस स्कंदे श्री क्रिस्न उधव
संबादे तत विज्ञान वरननं नाम बाईसमो ॥ हे उधव ऐ
ऐसा नहि कोई ॥ दुरजन वचन न षुभत नहि होई ॥ दु
रजन वचन बांण जो सहै ॥ मन कर मवचन षोभ न न
ही लहै ॥ १ ॥ जो ऐसो सो साधक होवै ॥ योंबिन साध प
द नही पावै ॥ बैंच के सी सहने म हिबांन ॥ अरति हने
दहि परम इसथांन ॥ २ ॥ तो तिन के दुष होइ न ऐसा
दुष्ट वचन बांण न ते जैसा ॥ पर मैं तो हि उपाइ सुनावां
सहित सीलता उरव हिरावां ॥ ३ ॥ मो सों सुनो एक इत
हास ॥ जा तें होइ हिरदै प्रकास ॥ जिष करो कुरां न मैं
भाषी ॥ तां की तो हि सुनाऊं साषी ॥ ४ ॥ कीया अ साध

भाषाढेरा । श्रीभगवांजीवाध

नबहुअपमांना॥ त्रिसकारतांन्योविधनांनां॥ तबता
सिषकगाथाकही॥ ऊमतआपनीसनहींदही॥ प
सोअबसुनोसुचितह्वैमोसों॥ निजजनजांनकहततहीं
तोसों॥ मालवदेसरहितग्रहिजांको॥ षेतीवराजजी
वकातांको॥ ६॥ क्रोधवंतलोभीअरकांमी॥ विप्रनके
अपजसकोगांमी॥ जांकेहोइद्रव्यअधिकाई॥ अरजो
नहीदेइनहीषाई॥ ७॥ आपनकौंपीडाउपजावै॥ पु
त्रादिकषांनेनहीपावै॥ देवअरपितरअथितनही
पोषै॥ वैंनहूंकरिनहीकदेसंतोषै॥ ८॥ सोकद्रजजोत्रै
सोहोइ॥ तांतेनीचऔरनहीकोई॥ तांतेकद्रजंदिजम सो
यो॥ सबजगमैंजिनअपजसलयो॥ ९॥ जातअथितबां
धवनिजतनको॥ इनहूंहेतनषरचैधनको॥ पुत्रादि
ककलपहिउषसैंहैं॥ जातजातडरवैननकहैं॥ १०॥
पुत्रकलत्रअरकंन्याजाई॥ जहांलगेसनबंधसगाई
तेसनत्रोहिनिरंतरकरें॥ ताकोअप्रियसनआचरें॥ ११
ऐसोदेषपापअततांको॥ यथ्पसमांनवितहैजांको॥ ध
रमकांमदोनोकरिहीन॥ उहूंलोककेसुषतेषीन॥ १२
जिनहितपंचयग्पनितकरे॥ सकलगृस्तमंनकोन
रे॥ तिनतबदेवनकीनोकोप॥ जांतेनयोविप्रधन

लोप ॥ १३ ॥ कछू दरब जा तन हिर लयो ॥ चोरी कै तें न रोक
हु गयो ॥ कछुक अगन लगे तें जस्यो ॥ कछुक धर न मांहि
बिसर्यो ॥ १४ ॥ कछुक राज विग्रह तें गयो ॥ यों बक्कत जांत
षीण सनन्नयो ॥ जब ताको सब धन हिर लीयो ॥ तिस.
कारत बसन्न हन कीयो ॥ १५ ॥ बक्कत कष्ट करि धन उप
जायो ॥ सो न हि दीयो न आप न षायो ॥ तां तें उपजी चिंता
चित ॥ निसदिन वस्यो हिरदै मैं वित ॥ १६ ॥ हो वै तप तेष
द कौं पावै ॥ आंसू कं व बक्कत विध आवै ॥ असी विध उप
ज्यो वैराग ॥ जां तें सकल दुषन को त्याग ॥ १७ ॥ तब सो वि
प्रवचन उचारे ॥ बक्कत जांत आप हि धिधिकारे ॥ अहो बु
था मैं कष्ट हि पायो ॥ आपको दुष आप उपजायो ॥ १८ ॥
बक्कते अम उपजायो दरब ॥ सुपन समां न्नयो सो सरब ।
ना मैं [illegible] बार च्यो ना मैं षायो ॥ न मैं ऐक हि अरथ लगायो
१९ ॥ दरब कद रजन को है जे तो ॥ ऐक हूं अरथ न आवै
तेतो ॥ ना यह लोक न ही परलोक ॥ केवल बंढे दुष अै
सोक ॥ बक्कत कष्ट करि ईहां उपावै ॥ पुन परलोक नर
क मैं जावै ॥ परम जस बनको जस सुध ॥ अरजो पंडित ग्यां
न प्रबुध ॥ २० ॥ सकल गुणन के हैं गुण जे ते ॥ लोभ लेस
तें नास हि तेते ॥ जैसे रूपवंत अत कोई ॥ के हूं अंग न ल

षणाहोई ॥ २२ ॥ खेतकष्टकोछुटकारोएक ॥ मेटेगुणअर
रूपअनेक ॥ यौंथोरोईहोवेलोन ॥ मेटेसकलरूपगु
णसोन ॥ २३ ॥ जबतेंधनकोसाधनकरै ॥ दरबदेहतन
दमविसतरै ॥ तबतेंत्राससोकमैंलहै ॥ चिंताअगिननि
रंतरदहै ॥ २४ ॥ सिधनरोअररिषकजोग ॥ नासलगेन
हीसुषसंजोग ॥ चोरीहिंसामिथ्यादंन ॥ कामक्रोधवि
षमरणाथंन ॥ २५ ॥ वैरअरगरनसपरधाजेद ॥ अप
तीतचिंताजेषेद ॥ यहपंद्रहजबहींइअनरथ ॥ तब
तिनहूंतेहोवैअरथ ॥ २६ ॥ तांतेंपरमअंनरथकहा
वै ॥ जलोचहैसोहरवहावै ॥ अरननामसुनजूलेलोक
बिनविचारपावैदुषसोग ॥ २७ ॥ पुत्रकलत्रबंधअरभा
ई ॥ मातपिताहितसजनसहाई ॥ दरबदेहतसजनकरैंवि
रुध ॥ आपआपमैंठांनेयुध ॥ २८ ॥ दरबकाजअतक्रोध
हिकैं ॥ तिनकोमारेआपहिमरे ॥ धनहितप्रानपर्छुछुट
जावै ॥ आपहिमूढनरकमैंजावै ॥ २९ ॥ जाकोदेवबहुत
विधध्यावैं ॥ परयहनरदेहहिनहिपावैं ॥ सोनरतनता
मैंद्विजदेह ॥ करणामेहरजीकोग्रेह ॥ ३० ॥ तांकोपाइअ
रथनहींसाधे ॥ सनतजिहरिकोनाहिअराधे ॥ महांअ
नरथअरथकरगेहे ॥ सोजवसिंधआपतेंवहे ॥ ३१ ॥ ता

तेऊ जो नही मतमंद ॥ परे दुषन मैं तज आनंद ॥ देवपि
तर रिषभूत सहाई ॥ पुत्र कलत्र आपहित जाई ॥ ३२ ॥
धन हि पाइ जो इन हि न पोषै ॥ और नहूं को नाही संतो
षै ॥ सो सब त्याग नरक मैं जावै ॥ तहां मूढ नांनां दुषपा
वै ॥ ३३ ॥ सो तनधन मैं ब्रिथा गवायो ॥ जब दुष तें नही
आप बचायो ॥ जाहि पाइ ऐसी विध करे ॥ जांतें बहुरन
जनमै मरे ॥ ३४ ॥ सो नरतन मैं ब्रिथा गवायो ॥ छो ह्यो अ
रथ अनरथ उपायो ॥ बहि बल आइ सकल मम गयो
न षसि ष अंग ब्रिध सब नसयो ॥ ३५ ॥ अब मैं अरथ कव
न विध साधों ॥ इरा राध हरि को अराध हो ॥ जाई जे अन
रथ सब जांने ॥ ते ऊ कां अरं जन न ठांने ॥ ३६ ॥ छो हे अरथ
अनरथ उपावै ॥ कांस ब आप आप दुष पावै ॥ पर ए को
ई नही सुतंत्र ॥ सकल देषीयत है परतंत्र ॥ ३७ ॥ ते जां की
माया कर मोहै ॥ नट बाजी के सम सब सो है ॥ जाई सो प्र
भु बहो बलिष्ट ॥ ब्रह्मा आदि सकल को इसट ॥ ३८ ॥ जो
धन अरजे धन के दाता ॥ जे कामादिक अरकाम विष्या
ता ॥ औरो धरम करम है जे ते ॥ मातपिता सुषदाई ते ते
३९ ॥ कहीं कहा ते हित आचरे ॥ भ्रित ग्रास त जे न हि प
रहेरें ॥ काल समान ग्रात्र है जां को ॥ कहो कहां को सुष है

तांको॥४०॥परजोदीनबंधभगवांन॥करुणांसाग
रपरमनिधांन॥तिनहीमोकोंकरुणांकरी॥जोंते
ममउरऐसीधरी॥४१॥भवसागरतेंतारेजोंको
देहनावबैरागहै तांको॥तांतेमोहिदीयोबैराग
मेरेप्रगटेपूरनभाग॥४२॥अबजोकछुआयुहो
इकछुमेरी॥तांकरिभजनकरोंहरिकेरी॥यात
नकेगुणसकलनिवारों॥मनतेंसकलकांमनांटा
रों॥४३॥सकलसाधअनमोदनकरें॥तथासतयों
कहिउचरें॥यदपआयुथोरीहैमेरी॥तोहूंहरिको
पदअतिनेरी॥४४॥निरपषपगजबहीहरिध्यां
ऊं॥एकमहूरतमैंप्रभुपांऊं॥तांतेप्रभुसमांनको
नाही॥जिनकोंगहेंप्रगटपलमांही॥४५॥मन
करमवचनअबतांकोभजों॥दूजीसकलकांमनात
जों॥ऐसेनिसचैमनमैंधस्यो॥निष्पकभयोसकल
परहस्यो॥४६॥सीतलहिरदैत्रिसनासभत्यागी॥नि
मचलभयोविप्रबडभागी॥अहंकारममताकछुनाही
एकाकीविचरेजगमांही॥४७॥इंद्रियांनवचनमन
गह्यो॥अंतरबाहरसंगहिदस्यो॥आपेकाहूको
नलषावे॥निष्प्रहितग्रहनमेंजावे॥४८॥संसका

रनहीतनकोजाके॥ जीरगाटूकवसत्र तनतांके
निषक बि्धविप्रकों जोवैं॥ तबवक्रडष्टघातकी
होवैं॥ ४९॥ कोई तांको नंदछुनावे॥ कोईपात्रषो
सलेजावे॥ कोई लेइकमंडलकरतें॥ कोई निक
सनदेहनघरतें॥ ५०॥ कोईधूरनीषमेंनारें॥ को
ईमूढक्रोधकरमोरें॥ कोई आसणकोलेनागें॥
ऊरधकर कोईपगटांगे॥ ५१॥ कोईछिंथ्याकोपर
हेरे॥ मारमारवांनीउचरें॥ कोईषोसलेद्विजपमा
ला॥ कोईवसत्रजाइलेबाला॥ ५२॥ कईआंनआं
नकरदेवैं॥ कोईषोसषोसपुनलेवैं॥ कोईनीष
अंनलेजांही॥ भोजनकरनेपावे नाही॥ ५३॥ कोई
तनमेंथूकेमूतें॥ कोईनिंदाकरेंबक्रतें॥ कोईकां
नलागपुकारें॥ कोईसीसधूरजलनारें॥ ५४॥ को
ईमोंनछुडाइबुलावैं॥ कोईबालतमोंनगहावैं
कोईताहिबंधकरराषे॥ कोईजांननपावैभाषैं
५५॥ कोईकरेंबक्रतअपमांना॥ निंदबक्रविधमू
डअजांना॥ यहहैचोरजांननहीपावे॥ दिनदेषे
निसचोरीआवे॥ ५६॥ यांकोषीराभयोहैवित॥ तां
है॰ तेयहंव्याकुलचित॥ सकलकुटंबताहिपरहस्या

जीवकाकाजनेषयहधरह्यो॥८७॥देषोयहकेसोहै 
मोटो॥महांप्रबलअंतरकोषोटो॥देषोहमपच
हारेकेते॥परयांकेउरभेदनतेते॥८८॥धीरजवं
तअभिमायहऐसो॥पवनप्रचंडमेरगिरजैसो
यांकोजांननहमकछुकह्यो॥बगज्योंध्यांनमींन
गहिरह्यो॥८९॥योंकरिक्रोधबंधलेनारे॥कावमां
हिदेऊपरमारे॥हांसीहमतबेनतीकेरे॥हितसौं
विषेबैंनउचरे॥९०॥रागोतकछुषपावेऐसो॥देवा
दिकतेंपावैजेसो॥सीतउसनवरषादिकदेवक॥
जरारोगआदिकतेंदेहक॥९१॥ऐसेबहुविधपा
वेदुष॥कदेनआवेतनकोसुष॥परसोकछूनमन
मेंआंने॥अपनेकरेकरमसनजांने॥९२॥तबति
नभाषीगाथाऐक॥हिरदेधारेपरमविवेक॥जि
षाककहेवचनतबजेई॥मैंतोसोंभाषतहोंतेई॥
९३॥जिष्यको वाचा॥सुषदुषदाइकलोकनऐते॥अ
रनहीदेहनहीसुरजेते॥नांग्रहिनहीकरमअरका
ल॥रासमसतहेमनकोष्याल॥९४॥जगतचक्रमैंम
नहीफिरावै॥जीवमहांदुषमनतेंपावै॥मनहीकरे
विषयनकोभोग॥तांतेहोइकरेसंजोग॥९५॥होवेस

तरजतमविसतार॥ तांतेजोनविविधप्रकार॥ ता
६ तेरुषनिरंतरलहै॥ देहजोगतेंनिसदिनवहै॥ ६६
तांतेरुषदाइककमनरोक॥ संतकहेंयपरमविवे
क॥ आपआतमांसदाअनीह॥ परसोमनकरक
रैसनीह॥ ६७॥ मनसोबंध्योअविद्यामांही॥ तांते
बंधनजांनेनांही॥ विषसमांनविषयनकोंषावे
ताकेसंगजीवदुषपावै॥ ६८॥ यहहैजीवब्रह्मको
अंग॥ यांकोसंअतमनकेसंग॥ मनकररहतब्र
ह्मसुषवासी॥ सदारोकरसपरमप्रकासी॥ ६९॥
तांतेबंधनमनईकरेसंगआतमांजनममेमरै॥ जब
मनरहतजीवयहहोई॥ तबशिवजीवभेदनही
कोई॥ ७०॥ तांतेजिनअपनोमनमह्यो॥ ताहिकछू
करनोनहीरह्यो॥ अरजोमनवसकीनोनाही॥ ता
अमसकलविरथावकुजाही॥ ७१॥ स्वरनादिकदे
वेवकुदांना॥ इकादसीआदिव्रतादिकनांनां॥
अपनेअपनेधरमनकरे समदमयमनेमविसत
रे॥ ७२॥ विद्यावेदपडेरुचरे॥ औरसकलधरमन
विसतरे॥ परजोवसनारीमनरोक॥ तोमिथ्याआच
रनअनेक॥ ७३॥ मनवसकाजकहेसनतेते॥ विध

आचरन वेद में जेते ॥ मन निग्रह सो उतम ग्यांन ॥ मन नि
ग्रह सो उतम ग्यांन ॥ मन निग्रह बिन सज्जन अग्यांन ॥ ७४ ॥
तांते जो मन निग्रह करे ॥ सो विध काहे को विसतरे ॥ ता
को विध न कृते कछु नाही ॥ सज्जन विधि हे मन निग्रह मां
ही ॥ ७५ ॥ अरु जो वस नांही मन येक ॥ तो विध कीने बिर
था अनेक ॥ सज्जनहन को फल मन वस करणो ॥ मन वस
का जस कल आचरणो ॥ ७६ ॥ मन को वस करे जो कोई
इंद्रे गुण आप हि वस होई ॥ मन वस बिन इंद्रे वस नाही
कर कर जतन बक्त मर जांही ॥ ७७ ॥ मन वस जे रोस क
ल वस देवा ॥ तीनो भवन करें तिन सेवा ॥ सकल बलन
तें मन बलवंत ॥ मार करे सज्जनहन को अंत ॥ ७८ ॥ मन को
कोई जीत न सके ॥ बक्त उपाइन कर कर थके ॥ ऐसे म
न को जीते कोई ॥ सज्जनहन माहि प्रबल है सोई ॥ ७९ ॥
सो न सूरा जो रिपं करे ॥ बाहर युधादिक विसतरे ॥ वैरी वस
मित्र बक्त विध गांने ॥ अनहित अरहित तिन ते मांने
८० ॥ ते अत मूड सुषी नही होवे ॥ मन जीते बिन युग
युग रोवें ॥ दुष रूप जड मिथ्या तन को ॥ आप मांन कर
बंध्यो मन को ॥ ८१ ॥ तब बक्त की ऐ देह सन बंधी ॥ ति
न सों मूरष ममता बंधी ॥ यह मैं यह सम सत है मेरे ॥ अ

अमित्र गनें बक्र तेरे॥८२॥ तातें मूढ महा दुष पावें॥ उप
ज उपज फुन फुन मर जावे॥ तातें दुष को मन नही कारण
५४ आतम को न वज लमैं मारण॥८३॥ अर जो सुषदा तोरे
ते॥ मोकों दुष दे ते हैं जे ते॥ ते सब न सुष दुष मोकों नाही॥
देह रोक सब न आपन मांही॥८४॥ तो सुष दुष दे हही पा
वे॥ आतम के कहूं निकट न आवै॥ अर यदपतन के सं
जोग॥ करे जीव है सुष दुष जोग॥८५॥ तो हूं मैं दुष दे वें
कां को॥ रूप सकल मम देषों जाको॥ आप आप कों कांड
षदीजे॥ अपनो अहित आप कूं कीजे॥८६॥ या तन में
मैं ही दुष पावों॥ और तन हूं मैं कूं उपजावों॥ दंतन चू
लजीभ काटीजे॥ तो हूं तिनें कहा दुष दीजे॥८७॥ दं
तन अर जीभ हि दुष दे है॥ सो तो सकल आप कर लेहै
इंद्रे अधिपत देवता जे ते॥ जो दुषदां नहो इस न तेते
८८॥ तो हूं आप कोप कूं कीजे॥ पर उपाध कूं सिर कर
लीजे॥ कर दीजे मुष मांहि असन सों॥ सो मुष काट हि
करहि दसन सों॥८९॥ ज्यों पावक रिप मित्र सम जांने
रागदोष नावें तूं गंने॥ यूं सब इंद्रयन के सब देवा
करें आप मों दोष अर सेवा॥९०॥ तें तें सब न जांने ताकूं क
रे॥ ज्ञांनी अपने मन नहीं धरे॥ अर जो सुष दुष दाता

आप॥ दूजे कौं कछु नाही पाप॥५१॥ तो यह भ्रम अपनो
सुभाव॥ कौंने को आंनी रोअभाव॥ अरु आतम मैं सुष
दुष नांही॥ उपजे ग्यांन सकल मिट जांही॥५२॥ आप
भूल सुषदुष करि लीने॥ भ्रम मिट जाइ आप करि ची
ने॥ तातें दोष कवन को धरीए॥ जो अपनो मन वस नहीं
करीए॥५३॥ अरु जो ग्रहि सुषदुष के दाता॥ लोक वेद
कहीयत विष्याता॥ तो आपन क्यौं क्रोध हि कीजे॥ पर को
दोष आप कर लीजे॥५४॥ ग्रहि आकास मांहि हैं जेते॥
द्वादस रास वसें सन तेते॥ राग दोष आपन मैं करैं॥ तिन
को सुषदुष नित ही परै॥५५॥ तातें राम जन भजे पावै
तिन की संगत सुषदुष आवै॥ तातें आतम सदा अजन
मां॥ वारंबार देहन को जनमां॥५६॥ तातें सुषदुष तन नहीं
पावै॥ निकट आतमां के नहि आवै॥ अरु यह दुप संगत
दुष परे॥ आप क्रोध लोका सौं करै॥५७॥ करनहार ते ग्र
हि ही जाने॥ राग द्वेष भावें त्यौं ठांने॥ अरु दुष दांन हो
इ जो करम॥ ते तो सकल आप ही भरम॥५८॥ यह जड
देह करम ता मांही॥ आतम निकट देह ही नांही॥ आ
तम चेतन ग्यांन सरूप॥ परे सकल तें ग्यांन अनूप॥५९॥
तातें क्रोध कवन सौं करौं॥ कां को दोष हिरदे मैं धरौं॥ अ

रजोदुषकालतें कहीये ॥ तौ आपन मोंकहूं न लहीये
१०० ॥ तन इंकाल हीतें दुष पावै ॥ ते आतम के निकट
न आवै ॥ काल आतमां ब्रह्मसरूप ॥ देह विलषण सदा
अनूप ॥ १०१ ॥ तातें कालहूं तें दुष नांही ॥ काल जयान
क देहन मांही ॥ ज्यों ले अगन अगन में डारे ॥ सो वह अ
गनि अगनि हीं जारै ॥ १०२ ॥ अरु जो पालाकी कणा लीजे
ले बहुते पाला में दीजे ॥ तौ ता पाला कौं जै नाहीं ॥ यदप
रहै सदा ता मांही ॥ १०३ ॥ यौं ही एक आतमां काल ॥ सुष
दुषादि देहन को ष्याल ॥ आतम सन्न तें सदा अतीत ॥
इछा रहत अनीह अजीत ॥ १०४ ॥ अरु आतमां परे तें प
रे ॥ दुंद जहां लौं ते सन्न ते रे ॥ कोइ आतम को नहीं जांने
सुषदुष कों न कवन कों गांने ॥ १०५ ॥ सुष अरु दुष जहां
लौं जेते ॥ एक प्रक्रित ही के सन्न तेते ॥ ते प्रक्रित आपज
ड रूप ॥ चेतन आतम ब्रह्मसरूप ॥ १०६ ॥ केवल मांन
ली यो संसार ॥ सुषदुष तन मन सकल असार ॥ मोहि
निसा तें जागे जेते ॥ निरमै नये तत षिण तेते ॥ १०७ ॥
तांतें अब मैं मै नहीं आंनो ॥ आपहि पर सकल तें जांनो
हरिचरनन की सेवा करों ॥ असी विध भवसागर तरों
१०८ ॥ जिइ जे आये हरिसरना ॥ तिन हीं तिन पारे हरिच

रना॥ तांते मैं हरिचरनन भजों॥ मन क्रम वचन श्रो रस ११०
मत जों॥१०९॥ ऊधव यों द्विज भयो विरकत॥ तन हूं
मैं नहीं रह्यो अनरकत॥ बकत तअ साधन बकतत जि
.गायो परलोक हू न मन में ल्यायो॥११०॥ ऐ नो षेद सत्र
हृदा लोक॥ कर विचार मैं टरो भव शोक॥ तांते उधव
सुष दुष द्वंद्वक॥ मन नहीं ऐक न आतम लाइक॥१११॥
सुष दुष दाता नाहीं कोइ॥ तो जो कछू वैतक हूं होइ
सुष दुष भ्रम तें जांनो सकल॥ आतम मेरो कर्म जन मां
श्रकल॥११२॥ नर मुझ टेह जाको नांही॥ मेरो रूप मि
ले मो मांही॥ सत्र सुष दुष मिथ्या कर जांने॥ मांन अ
पमांन हिरदै नहीं आंने॥११३॥ धीरज धर मम चरनन
भजे देहादिक की आसा तजे॥ तब भव सागर को त
र आवै॥ मेरो निजानंद पद पावै॥११४॥ तांते उधव
मन वच क्रम॥ सकल द्वैत कों जांनो भ्रम॥ सत्र तें मन को
निग्रह करो॥ निसचल कर मम चरनन धरो॥११५॥
याही कों कहीयत है योग॥ जां कर होवै मम संजोग॥
अरु जे या गाथा कों धारै॥ सुनै सुनावै सदा विचारै॥११६
तिन कों निकट दुंद नहीं आवै॥ अंतकाल मम चरनन
पावै॥ तांते यां को सदा विचारो॥ मेरो बल अंतर गत धा

भा॥११॥२३॥श्री भगवांनोवाच

रे॥११७॥दोहरा॥यहउधवतोसोंकह्योमनसंमकछिद
द्रोंन॥अबभाषतहोंसांषकोंसुनतमिटेजोभ्रांन॥११८
इतश्रीभागवतेमहांपुरांणेएकादसमिस्कंदेश्रीकि
स्नउधवसंबादेभिक्षुकगाथानामतेईसमो॥उधवतो
सोंसांषहिकहों॥द्वैतभ्रमश्रमहिबिनदहों॥जोंहि
सुनतहीछूटेद्वैत॥देषैएकब्रह्मअद्वैत॥१॥प्रिथमें
महांपुरषजेभए॥तेयहसांषप्रगटकरगए॥मुकत
सांषजीवतहीहोई॥सांषबिनाछूटेनहीकोई॥२॥
सोईसांषकहोंमेंतोसों॥निसचलमनहोइसुनीए
मोसों॥उधवप्रिथमकृतोमैंएका॥मोबिनकछून
कृतोअनेका॥३॥तबमेंप्रक्रितआपतेंकरी॥जडचे
तंनद्वैविधविसतरी॥तिनदोनोंतेंउपज्योसूत॥महां
ततकहीयतहैपूत॥४॥एकप्रक्रितकेत्रैगुणकीने
लषणतिनत्रिहूंकोदीनों॥सूत्रहूंतेंत्रिविधअहं
कारा॥भरमांवनकोबनोविकारा॥५॥पंचभूततें
प्रिथवीआदि॥अरपंचेसूषमसबदादि॥तांमसअ
हंकारतेंतनहैंजेते॥राजसतेंइंद्रेसभतेते॥६॥सांतक
तेंभएमुनअरदेवा॥जिनहिपाइभएबकृमेवा॥तब
सभहनमैंप्रेरमिलायो॥तिनसभहनमिलअंडउ

पायो ॥ ७ ॥ अंडसललमांहि थिर करह्यो ॥ ता मैं मैं निज
अंसहि धरह्यो ॥ आदिपुरषमो मेरो रूप ॥ त्रिगुणनि
यंता ग्यांनसरूप ॥ ८ ॥ तास नाभितें उपज्यो पदम ॥ जा
मैं सकल लोक को सदन ॥ पदम हूंतें तब ब्रह्मा भयो
वर ले मो सों जग निरमयो ॥ ९ ॥ राजस अधिपति भयो
विरंच ॥ तांतें प्रगट्यो सकल प्रपंच ॥ लोकपाल लोक
न सो करे ॥ तीनो लोक त्रिविध विसतरे ॥ १० ॥ स्वरगलो
क देवन कौं दीयो ॥ अंतरिष पित्रन ग्रहि कीयो ॥ भूम
लोक मैं मानव राषे ॥ असुर अहिन कौं नीचे नाषे ॥ ११
महर लोक जन तप सतलोक ॥ चारन मैं सिधन को
ओक ॥ जे सहि गुन करमां कों करें ॥ ते तीनो लोकन मैं
फिरें ॥ १२ ॥ तप अरु योग तथा संन्यास ॥ इन तें तिन चा
रों मैं वास ॥ भक्त तहूंतें जावै बैकुंठ ॥ जो सनमुह न करि
सदा अकुंठ ॥ १३ ॥ प्रलैकाल रूप है मेरो ॥ सकल जग
त भषण तिह केरो ॥ सपत लोकहूं मैं जो जावै ॥ कालत
हां हूं तां को षावै ॥ १४ ॥ कबही जाइ कह्यक कर ऊंचे ॥
कबहूं काल ढहावै नीचे ॥ ऐसी विध सनचर मतर
हैं ॥ जनमैं मरैं बक्रत दुष सहैं ॥ १५ ॥ उतम मध्यम नी
चे जेते ॥ छोटे बडे इह सथूल कि सतेते ॥ जो कछु जहां

लगैहै संसारा ॥ तेसन प्रक्रित पुरष विसतारा ॥ १६ ॥
प्रक्रित पुरष बिन और न कोई ॥ इंद्रे मन गोचर रहै जो
ई ॥ प्रिथमें निराकार मैं ऐक ॥ तांते न्यरे आकार अनेक
१७ ॥ अरपुन मैंही रहिहों अंत ॥ तांते अब हूं मैं ब्रतं
त ॥ जांकी आदि अंत है जोई ॥ तांके मधहूं मैं पुन सोई
१८ ॥ ज्यों माटी तें बहु घट न्यरे ॥ अंत फूट माटी होइ
गये ॥ माटी आदि माटी है अंत ॥ त्यों माटी मधहूं वरतं
त ॥ १९ ॥ ज्यों कंचन के बहु ते भूषन ॥ आदि ही अंत ऐक
ही स्वरन ॥ तो मधहूं और कछु नाही ॥ नाम रूप मिथ्या
होइ जांही ॥ २० ॥ त्यों सन्नदेषे तज विवहार ॥ तब मैं ही
हों सन्नविसतार ॥ आदि अंति मधि मैं ऐक ॥ मिथ्या ना
म अर रूपं अनेक ॥ २१ ॥ माया तें महतत अहंकार ॥ ति
न तें होइ सकल विसतार ॥ बहु रों नास सकल को होई
महिदादिक हूं रहै न कोई ॥ २२ ॥ प्रक्रित पुरष अरमू
ल अधार ॥ अरजो कहत महतत अहंकार ॥ मेरी श
कत तीनयों जांनो ॥ मो तें दैत क देमत मांनो ॥ २३ ॥ यावा
धि चलो जाइ विसतार ॥ नदी प्रवाहि ज्ञल संसार ॥ प्रमा
त मांकी इछा जो लों ॥ वरते सकल निरंतर तो लों ॥ २४ ॥
बहुडो प्रलै सकल कों होई ॥ सूष मह सथूल रहै नही

कोई॥ महाबलिष्ट श्राक तम म काल॥ ताकों सकल जग ११२
त यह ख्याल॥ २५॥ काल बिनासै कल बूहंद॥ कत हूं क
हूं न राखे षंद॥ अना विरष्ट होवे श तवरष॥ ताते दूह
न को आकरष॥ २६॥ छोटे बडे देह हैं जेते॥ लीन अंस
न में होवैं तेते॥ अंस जू म मैं होवै लीन॥ जू म गंध मैं हो
वै षीन॥ २७॥ गंध लीन होवै जल मांहि॥ जल सूषम र
स मांहि समाइ॥ रस तब तेज मांहि मिल जाई॥ तेज जोत
मैं जाइ समाई॥ २८॥ जोत पवन मांहि मिल रहै॥ पव
न हि तब सुपरस गुण गहै॥ सपरस ली न होवै तब गगन
गगन सबद मैं होवै मगन॥ २९॥ सबद मिल्यो तां म सअ
हंकार॥ सपत अरइंद्री दस प्रकार॥ ते सब मिल राज
स अहंका॥ मिल कर सकल हो इ संहार॥ ३०॥ सत अ २
हंकार महतत हि मिले॥ प्रकृत तब हि महतत मैं
गले॥ प्रकृत काल मैं होवै लीन॥ काल पुरष मिल हो
वै षीन॥ ३१॥ पुरष मिले पुरषोतम मांही॥ पुरषोत
म कहूं जावै नाही॥ सो पुरषोतम आहि अजनमा॥
तिस हूं की लेन ही सो जनमां॥ ३२॥ भेदाभेद रहित स
भेरोक॥ नित आनंद द्वैत वित्रेक॥ चेतन निरमल सो
न सरूप॥ पूरण अषै परम अनूप॥ ३३॥ तां ते कध

वमिथ्याद्वैत॥आदिअंतमधहूंअद्वैत॥जलबुदबुदा
समसत्नअकार॥उतममधमाविविधप्रकार॥२४॥अै
सेसदाविचारेजोई॥तांकोकौंनजांतभ्रमहोइ॥२४उ
दोतजरेतमकैसे॥नदीमांहिदावानलजैसे॥२५॥य
हमैजाष्योसांषप्रकार॥सकलद्वैतउतपतसंहार॥
यांकेग्यांनजसंसेरहै॥अहंकारद्रिडग्रंथहिदहै॥२६
छोमेरूपअरूपसमावे॥जांतिबकुरनउषकौंपावे॥
बकुरनउषकोसदाविचारे॥मोकौंजांनआपकौंता
रे॥२७॥दोहरा॥यहउधवतोसौंकह्योसांष्यग्यांनविचा
र॥अबगुणविरतनकोकहोंत्रिनत्रिंनपरकार॥२८
इतश्रीभागवतेमहापुरांणेएकादससिकंदेश्रीक्रिष्न
उधवसंबादेसांषजोगोनामचोवीसो॥उधवअबभाषोंगु
णाविरत॥जिनकेजांनेंहेनिवृरत॥जांगुणतेंजोल
षणहोई॥त्रिनत्रिंनभाषोंसोसोई॥१॥समदमछिमां
विवेकसुधरम॥लजामांननकरेविकरम॥सतदया
नहीभूलेसुध॥उतममारगमेंथिरबुध॥२॥जसअरसो
भाधीरजवंत॥परउपकारसदावरतंत॥बुधआसक
तनितनिहसंग॥संतोषीअरदांनअभंग॥३॥कोमल
बैंनसुधाचतुराई॥सीतलद्रिदेसकलसुषदाई॥अै

श्रीअध्या॥२४॥
श्रीभागवतभाषा

ल

सीजांतबक्तविधसंपत॥ सांतकगुणाकीजांनोवि ११३
रत॥४॥ आनमहनसजनहनतेंन्यारा॥ चेतनकरव
रतावनहारा॥ जोगनसकतहिरदेबक्तकाम॥ धन
अनिलाघायसअभिमांन॥५॥ त्रिसनाहासगरज
बलवंत॥ रिपमित्रादिकभेदअनंत॥ करकामनां
नजेबक्तदेवा॥ परमारथकोलहेंनभेवा॥६॥ बक्तर
अरंजनमेंउतसाह॥ सदाकठोरसदाअतचाह॥ बक्त
तविरतराजसकीऐसी॥ ऐतमसांमेंनाखीजेसी॥७
हिंसाक्रोधलोभअधिकाई॥ जहांतहांदीनअरभंज
फुवाई॥ भ्रमअरकलहशोकअरमोहि॥ निंद्राआल
सनैपरद्रोह॥८॥ निसदिनचिंताउदमहीन॥ हिरदै
आसात्रासअतछीन॥ ऐसीबक्ततांमसकीविरत॥
जिनतेंकदेंनलहेंनिरविरत॥९॥ उपजेममताअर
अहंकार॥ तांतेकरेविविधविवहार॥ तेसजमिलत
मगुणाकीविरत॥ तिनतेंबधेबक्तप्रविरत॥१०॥
धरमअरअरथकांमअनरकत॥ सरधायोगतथा
आसकत॥ धरमप्रविरतपराइणजेते॥ बक्तअंत
विसतारेतेते॥११॥ बरतेअपनेअपनेधरम॥ परया
ग्रहिअरग्रहिसुषकरम॥ ऐसजमिलेगुणानकीवि

रत॥जिनतेंबक्रबिधिहोइअविरत॥१२॥समदमादि
युगतनरजोइ॥सांतकलषणकहीयेसोइ॥राजसकां
मादिकअधिकार॥तांमसहेक्रोधादिविकार॥१३॥
जबसतधरमसोंमोकोंनजे॥दूजीसकलकांमनात
जे॥त्रियापुरषन्नावैसोहोइ॥सांतकप्रक्रितकहीजे
सोइ॥१४॥जबकांमनांहिरदैधरलेवै॥अपनेकरमन
व मोकोंसेवै॥यहसुनौराजसकोकहीये॥सुकतहेतक
बहूंनहीगहीये॥१५॥जबहिंसाहिरदैमोंआंने॥नि
जेकरिमनसोंसेवाठांने॥सोवक्रतांमसविरतकहा
वै॥तांतेमसुषकदेंनपावै॥१६॥सतरजतमती
नोगुनजेहैं॥जीवनकोंसन्नबंधनतेहैं॥तेगुणमेरीआ
ग्याकेरे॥तांतेमोहिनजेतेतरे॥१७॥चितहूंतेंउपजें
इहिसकल॥इनकोतजेंआतमांअचल॥इनकोछो
डरहेमोमांही॥बक्रेंउपजेबिनसेनांही॥१८॥करि
साधनरजतमपरहरे॥सांतकगुणकीविरधिहेकरे
सांतकसूरजज्योंपरकास॥अतसीतलज्यूंचंदबिगास
१९॥सुन्नकल्पांणमूलसुषकारी॥निसचलकरतस
कलदुषहारी॥तांतेपरमज्ञांनसुषलेहे॥चिंतासोक

मोहिभेदहै॥२०॥जबसांतकतांमसनहीरहै॥राजस
आढ्वसेंरागहै॥राजसरूपसंगबलभेद॥तांतेंमन
करभेअरषेद॥२१॥जबतेंसतरजछूटेद्वोऊ॥केवल
एकतमोगुणहोऊ॥तमविवेकनासतआवरण॥
उदमरहितजडताकरण॥२२॥तांतेंसोकमोहको
वासा॥निंद्राआलसनिसदिनआसा॥असेगुणतां
मसकेहोई॥पुनसांतकतेंसुनगुणसोई॥२३॥चित
प्रसंनसकलनिहसंग॥सोसांतकममग्रहहैअंग॥ज
बतनेमनइंद्रेअरबुध॥थिरनहीहोइलहैनहीसु
ध॥२४॥तांनेविविधकरमविसतार॥सोजांनोराज
सअधकार॥जबविकरमनबऊबिधगहै॥आसाबु
धनिरंतररहै॥२५॥सोकविषादचेतनाहीन॥सोतां
मसउदमबलछीन॥जबउपजेसांतककोभाव॥त
बसनहोवैदेवसुभाव॥२६॥राजसतेंअसुरनकीब्रित
भूतगुणनकीतमउतपत॥सांतकतेंजागणोहोई
राजसपावैसुपनासोई॥२७॥तांमसहूंतेंसुषोपतल
है॥ब्रह्मतुरीयानिरंतररहै॥सांतकऊरधलोकनजा
वै॥राजसनरआदिकतनपावै॥२८॥तांमसनीचथा
वरआदि॥याविधनरमैंजीवअनादि॥सांतकबिरध

मांनजोह्वोइ॥तांमेंमरणालहेसनकोई॥२९॥सोदेवन
केलोकनजावे॥राजसमैंमरनरतनपावे॥तांमसमें
मरनरकनलहै॥तीनोगुणतजमोमेंरहै॥३०॥मेरे
हेतकरमजोकरे॥तांमेंदूजोफलनहीधरे॥सोवकसां
तकसुकरमकहावे॥तांतेजीवमहांसुषपावे॥३१॥
फलनमितममकरमनगांने॥तांकोराजकरमबषां
नें॥हिंसाहितकरेममकरम॥सोतांमसहेवमोअधर
म॥३२॥भेदरहितसोसांतकज्ञांन॥भेदसहितसोरा
जेज्ञांन॥बालउलमूकजोहोइ॥तांमसज्ञांनकहीजे
सोइ॥३३॥आतमदेहरहतजोएक॥सोहेमेरोज्ञांन
विवेक॥होइविरकतवसीएरेकंत॥सांतकवासक
हैंसोसंत॥३४॥ग्रहमोंकहीएराजसवास॥तांमसजो
असुरादिकवास॥थावरचलममूरतजहां॥निर
गुनवासकहीजेतहां॥३५॥सांतककरताजोनिह
संगी॥सोराजसफलकरमप्रसंगी॥विधकररहत
तांमसीकरता॥आसालागकरमविसतरता॥३६॥
आपहिमेटरहैममसरना॥तांकोसतनिरगुनअच
रना॥सोजननिरगुनकरताकहीऐ॥तांकेसंगपरमप
दलहीऐ॥३७॥जोनिहकरमआतमांजांने॥सकलज

तनकीसरधाठांने॥ सकलत्यागनिसचलजोहोई॥ सां
तकसरधाकहीऐसोई॥३८॥राजससरधाठांनेकर
म॥ तांमससरधाकेरेविकरम॥ निरगुनसरधामेरी
भगत॥ जांतेमिटेसकलआसकत॥३९॥पंथपवि
त्रबिनाश्रमपावै॥ जामेंअपनोधरमनजावै॥ जांतेउ
पजेनांहिविकार॥ सोकहीऐसांतकआहार॥४०॥
षाटामीगतीषनषारा॥ दुषदाइकराजसीआहारा
जोअसुधहिंसातेंआवै॥ सोतांमसीआहारकहावै॥४१
मम जनअरमेरेउचष्ट॥ सोनिरगुनजोजनअतइ
ष्ट॥ इंद्रेसुषत्रिसनादिकदहे॥ तजेअरंजनथिरह्वै
रहे॥४२॥आतमतेंउपजेसुषजोई॥ सांतकसुषक
हीयतहैसोई॥ इंद्रेसुषराजसीकहीऐ॥ निंद्राआल
सतांमसगहीऐ॥४३॥मेरेप्रेमभगतसुषजोई॥ निरगु
ष नसुंकहीयतहैसोई॥ द्रबदेसफलकालअरतांन॥ क
रताकरमअवसतादांन॥४४॥सरधानेष्टाअरआका
र॥ त्रिगुननिरमतभजनविसतार॥ जोकछुकह्योसुन्यो
अरदेष्यो॥ मनअरबुधजहांलगलेष्यो॥४५॥सोसब
प्रक्रितपुरषविसतार॥ त्रिगुननिरमतसकलपसा
र॥ इनतेंजीवलहेसंसार॥ त्रिगुनकरमभैंवारंवार॥

४६॥ जोइनतीनोगुणानिवारे॥ चितआपनोमोमेंधा
रे॥ सोमेरोनिरगुनपदपावै॥ बकरोंयाजवमेंनहीआ
वै॥४७॥ तांतेयहऐसीनरदेहा॥ जांकरमिटेंसकल
संदेहा॥ होवैप्रगटग्यांनविग्यांन॥ पावैमोहिमिटेस
४८ मआंन॥ तांतेपंडितसकलनिवारे॥ मोकोंसेवआप
कौंतारे॥ योंबिनसकलअपंडितजांनो॥ जेतोआत
मघातीमांनो॥४९॥ सकलनतेंहोवैनिहसंग॥ साव
धानपलपरेनसंग॥ इंद्रीप्रांणदेहमनजीते॥ सम
वरचादिनरैंनबितीते॥५०॥ जोकछुसकलसोसांत
ककरे॥ राजसअरतांमसपरहरे॥ देहादिकतेंनिसप्रे
हहोई॥ आगेइछाकरेनकोई॥५१॥ मोमेंधारेनिसच
२ लबुध॥ तबपावैअंतंगतसुध॥ याविधसांतकहूंछु
टकावै॥ तांतेंलिंगसरीरमिटावै॥५२॥ लिंगसरीरमि
टेजवतजे॥ निरमलरूपआपनोजजे॥ ऐसेहोइजो
मोकौंजांने॥ बाहरभीतरचेतनमांने॥५३॥ मोमेंलीन
मोहीमेंरहै॥ बकरोंकालअगननहींदहै॥ रहैनिरंत
रमेरेसंग॥ तांतेकदेनहोवैभंग॥५४॥ दोहरा॥ उधवयह
तोसोकहीतीनोगुणाकीब्रित॥ अबबकरोंग्यांनहिक
होंजांतेहोइनिवरत॥५५॥ इतश्रीभागवतेमहांपुरां

भगवांनोवाच

एएकादससिकंदे श्रीक्रिस्नउधवसंबादे त्रिगुणविरत
निरूपणोनामोध्याइ२५॥श्री॥उधवचयह नरतन है ऐसो
सकलस्रिष्टमैं नाहीं जेसो॥ यातें न करि भजन नहि
पावै॥ जो तें नवतन जगमैं आवै॥ तो तें ऐसे तन कों पा १
इ॥ सो मिलने कों करे उपाइ॥ अंतर मांहीं मोहि विचा
रै॥ औरे सकल वासनां टारे॥२॥ भजन भगत नके लछ
ण जांने॥ त्यों त्यों आपआप मैं गांने॥ अंन्यासे तब मो कों
पावै॥ काल व्याल बकरो न हीं आवै॥३॥ मायागुणस
भमि थ्या जांने॥ मेरो ग्यांन पाइकर जांने॥ यों होइ रहै
देहके मां हीं॥ तोहूं फेर लिपे कहूं नाहीं॥४॥ परयद
पहोवे ऐसेहूं॥ करे असाधसंग नही तोहूं॥ सिसन अ
रउदर पराइणजे ते॥ मन कर म वचन तमीर ते ते
५॥ करे असाध एक को संग॥ तोहूं ग्यांन ध्यांन कों भंग
असंतसंग न रज बहीं करे॥ ताके संग नरक मैं परे॥६
ऐसे अंध अंधके संग॥ कूपपरे सुषहो वै भंग॥ यां की
गाथा भाषों एक॥ जांतें उपजे परम विवेक॥७॥ जब उ
रबसी बिरहित नदह्यो॥ सोक मोहसागर मैं बह्यो॥ त
बपरूरवा भाषी जोइ॥ तो सों गाथा भाषों सोइ॥८॥
राजा परूरवा चक्रवरती॥ तां की आंण जहां लों धरती

आपहूंतें उतरी उरबसी ॥ सो मिलके न्रिपके ग्रहि बसी ॥ ९
बहुरों आप मुकत जब भई ॥ तब तजे निरप हि उरब
सी गई ॥ न्रिप बिरलाप करे बहु रोवै ॥ पर सो न्रिप की ओ
रन जोवै ॥ १० ॥ राजा न गनें देह सुध नाही ॥ बांनी बिकल
दीनता मांही ॥ लजा रहत मत मंद जेसे ॥ चल्यो उरबसी
पीछै तेसे ॥ ११ ॥ अहो प्रिया तुम गढी होवो ॥ मेरी ओर क्रि
पा कर जोवो ॥ मोकों मार काहे जोवो ॥ क्रिपा करो मेरे ग्रह
आवो ॥ १२ ॥ मिल उरबसी संग सुष पायो ॥ सो सो सकल ड
ष होइ आयो ॥ त्रिपत न भयो भोगवत भोग ॥ पायो उरब
सी को संजोग ॥ १३ ॥ तां उरबसी संग छिरा आकरष्यो
तां ते भलो मांन करि हरष्यो ॥ तन मन नहि रहै कछु नही
आंने ॥ निस दिन मास वरष नही जांने ॥ १४ ॥ तब ता न्रिप
के पूरन भाग ॥ जां तें प्रगट भयो वैराग ॥ तब न्रिप वचन
बषांने जेई ॥ तो सों मैं भाषत हों तेई ॥ १५ ॥ परूरवा वाच
अहो एक देषो मम मोह ॥ आपहि कीयो आपकों द्रोह ॥
गह्यो कठन देव की माया ॥ जिन मेरो सब भ्रम आयु गवाया
१६ ॥ इन मो को [illegible]हि कायो बहुतेरो ॥ सरबंस आइ लीयो
मांन्यो हिर मेरो ॥ मैं दिन रात न जांने जात ॥ अंम्रित करि विष
षात ॥ १७ ॥ वरष संबूह गए मम बीत ॥ सकल विकार न ली

नोजीत॥ देषोमैंकेसेनहि कायो॥इसत्रीकेकरआपवि
कायो॥१८॥जोमें राजाहोंचक्रवरती॥जीतसमसतवस
कीनीधरती॥सकलनृपसमचरननसेवैं॥तनमनध
नसन मोकोदेवै॥१९॥सोमैंविकानोंइसत्रीहाथ॥जंबां
नरबांजीगरसाथ॥ज्योंज्योंइसत्रीमोहिनचायो॥त्योंत्यों
मैंमूरषसुषपायो॥२०॥तांपररांजसहिततजमोहि॥
त्रियासमांनकरचलीविछोहि॥नगननजयोपीछेंमेंधा
यो॥ ज्यों उनमतआपविसरायो॥२१॥कोंनजांततांके
वसहोइ॥तेजप्रतापरहैनहीकोइ॥जोहोवैइस्त्रीआ
धीन॥जैसेषरीसंगषरदीन॥२२॥विद्यामोंनतपस्या
त्याग॥बनमोंवस्योछिडवैराग॥ऐसमसतकीनेकछना
ही॥जांकेइसत्रीवसेमनमांही॥२३॥यहीउरवसीजब
तेंपाई॥कांमअगनबहुजांतजगाई॥परयहअगनन
सीतलनई॥अधिकअधिकनितबढतीगई॥२४॥जे
सेअगनघ्रतजुलतहोई॥तांमेंइंधनडारेकोई॥सोत्यांअ
धिंअधिकपरजरे॥पलकनाहिसीतलताकरे॥२५॥मैं
अपनोंनहीजांन्योअरथ॥आपआपनोकीयोअनरथ॥
मूरषआपहिपंडितमांन्यो॥पर्योमूत्रमुषअम्रितजांन्यो
२६॥जोमैंइससकलनृपकेरो॥सोहोइरह्योत्रियाकोचे

रो॥ मैं मूरष तांको है धिकार॥ जिन नकीयो कछु ग्यांन वि
चार॥२७॥ इस त्री करि जांको चित हर्यो॥ ग्यांन विचा
र सकल परहर्यो॥ तांको हरि बिन कोंन छुडावै॥ इ
जो आपन छूटन पावै॥२८॥ तांते मैं हरि चरनन गहों
सकल त्याग हरि को होइ रहों॥ यह पद वा मोहि छुडा
यो॥ त्रिया भ्री तदुष कहि समझायो॥२९॥ तो हूं मैं मूर
षन जांन्यों॥ कां म अंध सुष करि मांन्यो॥ तांते तांको नहीं
अपराध॥ यह मेरो मन बड़ो असाध॥३०॥ जो मैं सरग नर
क मैं देष्यो॥ दुष ही मांहि सुष कर लेष्यो॥ रज मैं साप जांन
दुष पावै॥ अगन पतंग परे मर जावै॥३१॥ तो तिन को अ
पराध न कोई॥ आप दुष करि लेवै सोई॥ तांते इनको य
ह सुभाव॥ मैं मन मैं कां धार्यो भाव॥३२॥ जो मैं आपन
मैं परों॥ तो उर दोष किनहूं को धरों॥ देही मल न महां दु
र गंध॥ सो कर जांनी विमल सुगंध॥३३॥ सो अपनी अ
विद्या कर्यो॥ निजानंद आतम वीसर्यो॥ यह तन तो
बकतन को कहीये॥ तांमैं ममता कां गहि रहीये॥३४॥
मात पिता अपनो कर कहै॥ इस त्री एक मेक मिल रहै
के यह तन कहीये राजा को॥ के पावक जम पराहै तां
को॥३५॥ के जू को केसां न श्रिगाल॥ के अपनो मित्र के

काल ॥ यहतननतोकहीयेकिनकिनको ॥ प्रगटदीसत
हैतिनतिनको ॥ ३६ ॥ महांअसुधदेहइहिभैसी ॥ प्र
गटनरकषानहैजैसी ॥ तासोंमैबांध्योमतमंद ॥ इस
त्रीनामकालकोफंद ॥ ३७ ॥ त्वचारुधरअस्थमासअं
तंत ॥ मजामेदरोमनषदंत ॥ विष्टामूत्रसेतक्रिमहा
न ॥ इसत्रीप्रगटनरककीषान ॥ ३८ ॥ तांतेइसत्रीअ
रतांसंगी ॥ तांकेनहिहूजेपरसंगी ॥ तिनकेदरसछु
मतिमनहोई ॥ देषेबिनाविकारनकोई ॥ ३९ ॥ तांते
तिनकेदरसनकरी ॥ आपहिआपनरकमैंपरीये ॥
जोयहइंद्रेअरथनिवारे ॥ मनक्रमवचनकुहूंसंग
टारे ॥ ४० ॥ तबयहमतसहिजेथिरहोई ॥ कहेंविका
रनपरसेकोई ॥ तांतेजोइसत्रीकोंतजे ॥ सोइसत्रीति
नकीबुधतजे ॥ ४१ ॥ दरसपरसअरश्रवननिवास ॥ स
नभांतनतेंमांनेत्रास ॥ इंद्रयनकोविसवासनकरे ॥ सां
नवंतनितहीपरहरे ॥ ४२ ॥ महांपुरषजेजीवनमुक
त ॥ तिनहूंकोसुतनसंगतजुगत ॥ तोजेजगतेंछूट्योच
है ॥ तोइनसोंकूंसंगनगहै ॥ ४३ ॥ तांतेमैंसतनसंगनि
वारों ॥ श्रीपतचरनकवलउरधारों ॥ दीनबंधकरुणां
मैसांमी ॥ क्रिपाकरीयहअंतरजांमी ॥ ४४ ॥ श्रीजग

वांमेवांच॥ याविधवचनकहैनरराज॥ तजउरखसी
लोकसुषसाज॥ ज्यांनलह्योसजसंसाटाख्यो॥ मननि
सचलकरिमोमैंधास्यो॥ ४५॥ तांतेउधवयहवुरषार
थ॥ नरतनपायोबडेस्वारथ॥ जबसमसतकीसंगत
तजे॥ सतसंगतगहिमोकोभजे॥ ४६॥ संतबतावैंहि
तउपदेस॥ जिनतेसंसैरहैनलेस॥ मनकीसजआस
कतनिवारे॥ संतमहांभवसागरतारे॥ ४७॥ निसप्रेह
निरालंजसमदरसी॥ संग्रहरहतदुंदनहीपरसी॥ अ
हंकारममतानहीआंने॥ मोहिभजेंह्जोनहीजांने॥ ४८
तेयदपउपदेसनदेवैं॥ तोहूंमोहिचहैंसोसेवैं॥ तहां
कथानितमेरीहोवै॥ तेईअरथसंदेहनषोवै॥ ४९॥
मेरीकथाश्रवनजेकरें॥ तेसजपापनतेंनिसतरें॥
सुनेकहैंअंतरगतध्यावैं॥ अतआदरसौंप्रीतबढावैं
५०॥ तेसहिजेलहैंममभगत॥ सहजेहोवैसकलविर
कत॥ मेरीभगतलहैनरजबही॥ पूरनकाजभयोसा
तबही॥ ५१॥ तांकोकछूनकरणोरहै॥ ज्यांनानंदरूपम
मलहै॥ सीतनिसाकहूंहोवैकोई॥ तहांअगनपरजा
रेजोई॥ ५२॥ तमउषारजेसहिजेंजावै॥ त्यांसाधूसजदा
षमिटावै॥ यहअपारसागरसंसार॥ जांमेंडूबेंजीवअ

पार॥ ५२॥ तिनको नाव येक ही एह॥ संतरूप प्रगट
म मदेह॥ जां प्रांणी न राषे अहार॥ मेरी सरन कष्ट संहा
र॥ ५४॥ जां त्रिलोक धरम धन जांनो॥ तूं जिन तारक साधू व
मांनो॥ जिनके हिरदे प्रगट मम चरन॥ तिन बिन या
भव और न तरन॥ ५५॥ ज्यों बारह माह सूर जै है येक
यों उर मै न उघार है नेक॥ संत सु मात पिता हितका
री॥ संत सु देव बंध कष्ट हारी॥ ५६॥ तांते संगनि तकर संत
रो॥ और उपाइ न हिरदे धरो॥ तिनतें अं न्यास न
वतेरे॥ अं न्यास मो कौं अनसेरे॥ ५७॥ तब परूरवा ऐ
से कह्यो॥ सो उरवसी लोक पर हस्यो॥ सजत जग्य यो
आतमाराम॥ विचस्यो नूमैं होइ निहकांम॥ ५८॥
तांते असंत संग परहरीये॥ साधू संगनि रंतर करी
ये॥ साधू संग सु बहीं भव तारे॥ सु बहीं मम चरनन चा
त धारे॥ ५९॥ दोहरा॥ ऐसे साध असाध को सुन हरि
जी सों संग॥ तब उधव जन पूछयो करम जोग पर सं
ग॥ ६०॥ इति श्री भागवते महांपुरांणे एकादसस्कंदे श्री
क्रिस्न उधव संबादे ईलगीता नाम छबीसमो ध्याइ २६
हे प्रभु क्रिया करो अब ऐसी॥ नाथ क्रिया जोग विध
जैसी॥ जां के करत होइ सत संग॥ पावे ग्यांन होइ

निहसंग॥१॥ यह तो तव प्रितमां की पूजा॥ तांते श्रेय
कहै नहीं पूजा॥ जांको कहैं व्यास अरु नारद॥ गुरु वृ
सपत परम विसारद॥२॥ और सकल मुनीसुर जेते
परम श्रेय यह भाषत तेते॥ कलप आदि विधु सों उम
कह्यो॥ सो विध द्रिडकरि हिरदै गह्यो॥३॥ तिन श्रिगा
दिक सुतन सुनायो॥ संतन हूं तें तिन वांनी पायो॥ जे ते सक
ल वरण आश्रमा॥ इसत्री अर त्यंज सतन को करमा॥४॥
या विध और धरम हैं जेते॥ याही काज कहे हैं तेते॥ या
विध और धरम जे करे॥ तो तिन के फिर बंधन परे॥५॥ प
विध यह ईस तन धरम मन को धरम॥ याही तें काटे सतन करम
तांते पूजां विसतारो॥ क्रिपा करो जीवन निसतारो॥
६॥ उम द्याल सतन के हितकारी॥ सिंम्रित सकल होत
अघहारी॥ सुन ऐ पर उपकारी बैंन॥ बोले हरष कम
ल दल नैंन॥७॥ श्री भगवांनोवाच॥ उधव यां को अंत
न पार॥ मम पूजा विध बहु परकार॥ पर तो कौं संषेप
सुनावों॥ तांते तत सकल को ल्यावों॥८॥ पूजा विध है
तीन प्रकार॥ वेदक तंत्र क मिश्रत सार॥ वेद मंत्र अर
वेदक अंग॥ सो कहीये वेदक परसंग॥९॥ योंही तंत्र
क मिश्रत जांने जांवै ता सां पूजा गांने॥ विप्र अर

षत्रीवैससूद्रेवरना॥ इनकोजाविधपूजाकरणां॥१०॥ १२०
सोसमसतविधतोहिसुनावौं॥ जीवनकोकल्पांनउ
पावें॥ प्रितमांन्हमअगनजलवाही॥ दिजअरअप
अरकअरगांही॥११॥ औरसजनमेंमोकौंजांनै॥ यथा
योमसजपूजागांनै॥ गुरअरमोमैंभेदनजांनै॥ मांनु
षबुधहरकरमांनै॥१२॥ सुधहोइजलमाटीसंग॥
इसनानादिकसकलईअंग॥ जेजेप्रगटवेदअरतं
त्र॥ तेतेसकलपडेममंत्र॥१३॥ संध्याउपासनादि
जेकरम॥ प्रगटत्रिहूंवरनकेधरम॥ तिनतिनसोंना
तमोकोंभजै॥ होइनिषेदसकलसोतजै॥१४॥ जाही
करममसिमरनहोई॥ काटेसकलकरमकोसोई॥
सोईसोकहीयेममधरम॥ ममसिमरनबिनबंधनक
रम॥१५॥ अबजाषोंप्रतमांकेभेद॥ सेवतजिहमि
टेभवषेद॥ एकसिलाकीकहीयेमूरत॥ एककाष्ट
कीत्योंममसूरत॥ एकलेपचित्रनकीकरीये॥ एक॥ २६
चित्रउसतकलिषधरीये॥ प्रतमांएकसरनसवा
री॥ एकमनोमेमनमेंधारी॥१६॥ एकम्रितकाकौंले
कीनी॥ एसमसतमेंउमकहिदीनी॥ एममप्रतमा
अष्टप्रकार॥ जांनोममभंदरनिजसार॥१७॥ तिन

मेंनिसचलहोवैंजेती॥मैंनादिकसुकरावैतेती॥साला
गरांमआदिहैंजेती॥मेरोतनजांनेनिततेती॥१९॥
औरसकलकीपूजाकाल॥किंवाजांनेनितगोपा
ल॥लेषीलिषीमारजनकरे॥औरनइसनानादि
कविसतरे॥२०॥उमगिसम्रिग्रीसहितसुसेवै॥त
नमनधनसनमोकोंदेवै॥जोनिहकांमनिहकपट
होई॥करेजावसनमोकोसोई॥२१॥उतमवसत
हिमनकरल्यावै॥प्रेमसहितसनमोहिचढावै॥
उतमविधइसनानकरावै॥वसत्रअभरणादिकप
हिरावै॥२२॥अंनघ्रितादिकहोमहिकोरे॥धरणीर
विउसततिविसतरे॥जलकोंपूजेफलजलफूल॥
जांनेमोहिसकलमेंमूल॥२३॥जगतसहितजोअ
रपेतोइ॥ताहूतेंमोकोंसुषहोइ॥तेजोधूपदीपनै
वेद॥मोकोंबकविधकरेनवेद॥२४॥तांकीमहिमां
कहाबषांनो॥जूंहैतूंमैंहीपेजांनो॥तांतेनितमैं
प्रीतअधीन॥तोषनमांनोप्रीतविहीन॥२५॥अ
बमाहोंपूजाविधतोसों॥सावधांनहोइसुनीरोंमो
सों॥होइपवित्रकरेइसनान॥मनमेंराषेमेराध्यां
न॥२६॥पूजासाजप्रिथमेंसमलेई॥फिरउठबे

कोरहनन देई ॥ बैठे उतर के पूरब मुष ॥ निसचल
होइ प्रित मां के सन मुष ॥ २७ ॥ इन्नन सों निज आ
सन करै ॥ अंगन के न्यास विसतरै ॥ न्यास करै मम मू
रत अंग ॥ तब गंने आसण प्रसंग ॥ २८ ॥ उतम कल
स तोइ सों भरै ॥ दूजे जल के पात्र हि धरै ॥ जल मैं बकु
त सुगंध मिलावै ॥ तासों मोहि इसनान करावै ॥ २९ ॥
अरघ पाद अरवै षर कौ ॥ तीन पात्र तांते जल भरै
गंध पहुप तिन मैं बक्त धरै ॥ गाइत्री अस्त्र मंत्रन को क
रै ॥ ३० ॥ तन अपनो करै जन सुध ॥ कहूं बार न होइ
असुध ॥ हिरदै मांहि मम रूप हि ध्यावै ॥ ओ अंकार ज
हां तैं आवै ॥ ३१ ॥ जैसे ग्रह मैं दीप प्रकासे ॥ यों पावै
तन मांहि जासे ॥ पूजा सों तन मै होई ॥ पुन मूरत मै
धारे सो ही ॥ ३२ ॥ सांगोपांग करै तन पूजा ॥ कोई भाव
न उपजै दूजा ॥ दिवै अरघ पाद अचमना ॥ रचै अष्ट
दल पंकज नवनां ॥ ३३ ॥ ता पर इसथापे धरमादि
सकल शक्ति रवि ससि अगिनादि ॥ संष चक्र गदा
असि असित्र ॥ धनुष बांण मूसल हल शस्त्र ॥ ३४ ॥
ऐ आं ठैं आठों दिस आंने ॥ मणि माला ललता उर जां
ने ॥ नंद सुनंद महा बल चंड ॥ कुमद षण बल कुम

दप्रचंन्ह॥२५॥आगदिसापारषद्दसमिग्र॥गहेग
रडजोडकरअग्र॥विषवकसेनविश्वासगुरदेव
गणपतकुरगाअरसनदेव॥२६॥करजोरेहरिस
नमुषगाहे॥हरषतवचनप्रेमअतबाढे॥सनद
नकोपूजेअरघादि॥विनेनिमिरतावंदनआदि
२७॥चंदनअरकपूरउरसीर॥कुंकमअगरसुगं
धतनीर॥प्रथमेकछमधुपरकचडावै॥निरमल
जलआचमनकरावै॥२८॥पुनसुगंधजलदेइसना
न॥मंत्रवचनकरमनहीआंन॥पुंडरीकलोचनम
नभावन॥आदिपुरषमनकोउपजावन॥२९॥जे
जैब्रह्मसकलअधार॥नमोनमसतेवारनपार॥रो
तेतंत्रमंत्रउचारे॥सहंश्रसीरषासूत्रविसतारे॥३०
वसत्रजनेऊअरअंगरन॥अंगअंगतिलकादिक
करन॥उतममालाबहुतसुगंध॥प्रेमसहितमोसों
मनबंध॥३१॥बालजोगआचमनकरावै॥कुसम
सुगंधअरधूपवनावै॥बहुतजोतआरतीउतारे॥
नांनांविधनैवेदसवारे॥३२॥षीरषंडघ्रितदूधला
पसी॥लडूपुरीपकवांनसुवारसी॥विंजनकरेऔ
रबहुरतेरे॥विजोगलगावैबहुहितमेरे॥३३॥नित

दातनओबटनोतेल॥ अनवावेपंचाम्रितमेल
अलंकारदरसअरपरस॥ गीतनिरतबाजंत्रसप
रस॥४४॥ बहुतभांतनैवेदसवारे॥ नितनाहीतो
पुरबनटारे॥ मोबिनताहिनजांनेदूजा॥ हेतल
गाइकरेममपूजा॥४५॥ अगनिकुंटमहिअगन
हिधरे॥ समविधिघ्रितादिकहोममहिकरे॥ होंमक
रेपडपडममंत्र॥ जिनकोंकहेवेदअरतंत्र॥४६
करिहोममहिआचमनकरावै॥ तांकोंमेरेरूपहिध्या
वै॥ तपतसरनउजलछबिअंग॥ चतुरभुजाअरआ
युधसंग॥४७॥ पीतवसनउरमलमणिमाला॥ सीस
मुकटकंठसूत्रविसाला॥ भ्रिगलताअरलछमी
आदि॥ बहुविधध्यावैरूपअनादि॥४८॥ पुनसु
नंदादिपारषदजेते॥ बलविधांनसोंपूजेतेते
जपहिमूलमंत्रबहुवार॥ याविधवधेप्रेमअधि
कार॥४९॥ पीछेतापरसादिहेलेवे॥ लेकरसब
भगतनकोंदेवे॥ आपपायआपतबपावे॥ प्री
तसहितजेतोजीयआवे॥५०॥ फुनअरपेसुगंध
तंबोल॥ उतममालाउतमफूल॥ मेरेगुणऊंचेसु
रगावे॥ नामगुननाचेप्रेमबढावे॥ कथानितमम

सुणेसुणावै॥ मोबिनकहूं नपलगहिरावै॥५२॥ चर
नपलोसेसैं नकराइ॥ मुषतें नांमचूल नहीजाइ॥ प्रा
कितअरसंसकितवेद॥ जेईजे उसततके भेद॥५३॥
ति नति नसोंमम उसततकरे॥ वारवारचरनननपर
परे॥ पीछेधारजोरकरदोऊ॥ करेदीनहोइबेनती
सोऊ॥५४॥ हिप्रजभवसागरतें तारो॥ कालमृतभव
सोकनिवारो॥ तुमबिनमेरोअवरनकोई॥ पांवांच
रननकीजैसोई॥५५॥ हिरदैजोतजोतमैंधारे॥ मूर
तकोसिहिजाविसतारे॥ यौंअकारजहांलौंदेषै॥ तेस
मसतममूरतलेषै॥५६॥ करेयथाविधसन्नमैंपूजा
मोकोंछोडनजांनेदूजा॥ याविधओगक्रियामनला
वै॥ सोनरजुगतमुकतफलपावै॥५७॥ मोकोंतेमम
ग्रहसवरावै॥ तांमैंमममूरतमांपधरावै॥ मोकोंकरेबा
गफुलबारी॥ यात्रामहोछवकीअधकारी॥५८॥ मम
हितसदाबिरतादिकदेवै॥ फलअभिलाषाकदेनसे
वै॥ ममपूजाप्रवाहकेहेत॥ देवैगांइपुरहाटअरषे
त॥५९॥ सोममसमईसतापावै॥ त्रिहूंलोककोईस
कहावै॥ जोममप्रतमांथापनकरे॥ अबसोनूपत
होइअवतरे॥६०॥ जोमेरेमंदरसवरावै॥ त्रिहूंलोक

कीप्रनतापावे॥ पूजादिकब्रह्माकेलोक॥ जहांननां
नांभैग्रसोक॥ ६१॥ तीनोकीएलहैबैकुंठ॥ काला
दिकसकलतैंग्रकुंठ॥ जोयोंसेवैहोइनिहकांम॥ सो
ममजगतलहैसुषधांम॥ ६२॥ निहकांमीजोंवैत्योंसे
वे॥ जोतनमनधनमोकोंदेवै॥ सोमेरोनिजपावैग्यांन॥
लहैमोहिछूटेसजग्रांन॥ ६३॥ विरतसुरनकीग्र
रविपनकेरी॥ ग्ररजोकरीहोइकछुमेरी॥ दोईग्रौ
रकीकिवाग्राप॥ ताकेहरेकरेसजपाप॥ ६४॥ सोहो
वैक्रिमचिष्टामांही॥ वरषकोटहूंनिकसेनाही॥ कर
ताप्रेरकतथासहाई॥ ग्रनमोदकजिनहूचउपजा
ई॥ ६५॥ सजहिनकोफलएकसमांन॥ जोंवैंउतमग्यां
वैंग्रांन॥ तांतेममहितकरमनकरै॥ सोबऊतनले
भवजलतरै॥ ६६॥ दोहरा॥ याविधपूजाकोकरेतां
केउपजेग्यांन॥ जांतेमेरोपदलहैतांकोकरतबषांन
६७॥ इतश्रीभागवतेमहांपुरांणेएकादसवेंसिकंदेश्री
क्रिस्नउधवसंबादेमहांपुरषपूजाविधजोगोनामस
उधवतोसोंभाषोंग्यांन॥ जांतेलहैमोहितजग्रांन॥ उ
तममधमकरमसुभाव॥ जेसजजगमैंनांनांभाव॥ ति
नतिनकीनिंदानहीकरे॥ ग्ररकछनहीउसततक

सतेरा॥ प्रक्रितब्रूरषनिरमतसव्रजांनो॥ एेकजांनस
मत्रैदहिमांनो॥ ३॥ ब्रह्मा आदिकीटप्रजंत॥ एेकरू
पदेषैंमम्रसंत॥ जेजेबहुविधकरम्रसुभाव॥ तिनको
भांनेभावअभाव॥ ३॥ तोसोहोइअरथतेंभ्रिष्ट॥ मा
यामोहिचितआक्रिष्ट॥ मिथ्यामांहिचितकोंधरै॥
तौंमूरषजनमेमेरै॥ ४॥ लीनहोइजबइंद्रेदेह॥ सुप
नलहेतबआतमयेह॥ जहांमनलाग्योतहिजावे
बहुतभांतकेसुषदुषपावे॥ ५॥ पुनसुषपतमेंहो
वैलीन॥ मरलोकहीएेअहंमहीन॥ योंसुषपतअ
रदेषतसुपना॥ जनममरणबहुसुषदुषअपना॥ ६
जोलगसोवैतौलगपावै॥ जागतहीकछुवेनरहा
वै॥ त्योंयहसुषदुषपापअरपुन॥ जनममरनजो
नेसतसुंन॥ ७॥ जामेंयहसतबैतअसत॥ सोबिन
औरएेकनहीसत॥ देषनसुननकहनमेंआवै॥
मनअरबुधजहांलौंजावै॥ ८॥ तेसमसतजोकछुवे
नाहीं॥ तोसुनअसुनकहेकामांहीं॥ यदपहै मिथ्या
संसार॥ तोहूंदुषकोवारनपार॥ ९॥ जोलगदेहबुध
नहीछूटे॥ तौलगभ्रमजोपलकनछूटे॥ जैसेअप
नीधुनकीझांई॥ अरप्रतिबिंबग्रीहकीन्यांई॥ १०

सीपमेंरूपाजेवरीमेंसाप॥ अरमृगत्रिसनामांहेआ
प॥हेनाहीपरहेसोजांने॥ तिनतेंसुषदुषबहुबि
धमांने॥११॥ जोलगमिथ्याजांनेनाही॥ तौलगस
कलअनरथनजांही॥ ब्रह्मरूपयहसबसंसार॥
जहांलगीकछुदेआकार॥१२॥ ब्रह्मरूपब्रह्मंमहि
उपजावे॥ ब्रह्मब्रह्मआधाररहावे॥ ब्रह्मकरेब्रह्म
प्रतपाल॥ ब्रह्मरूपब्रह्मकोकाल॥१३॥ जेसेजलबु
दबुदजलमांही॥ जलकोंछोडदेतकछुनांही॥ त्यों
हीब्रह्मरूपसबएक॥ देषेसरमेंजीवअनेक॥ पर
यहसबजांनोनिरमूल॥ ज्यंमृगवारगगनमेंफूल
त्रिगुनरचतयहसबजगजांनो॥ तेगुणईमायाके
मांनो॥१५॥ जोयाविधसबमिथ्याजांने॥ ब्रह्मभाव
नाहिरदेआंने॥ परयदपसोजगमेंरहे॥ तोरविज्यं
गुणदोषनगहे॥१६॥ याजगमेंसुनअसुनदेषे
मिथ्याजांनब्रह्मकरलेषे॥ ज्यंप्रतिबघटादिकदे
षे॥ उपजतबिनसतमिथ्यालेषे॥१७॥ धरतीआद
कालत्रैसत॥ नामरूपतेसकलअसत॥ तूंहीब्रह्म
सततिहूंकाल॥ नामरूपमिथ्याजंजाल॥१८॥ अर

तूं करि देषै तन मांन॥ नाई ऐ जड तन मन प्रांन॥ सक
न तकौं की चेतन रहै॥ अपने अपने अरथन गहै॥२०
निराकार तें चेतन होई॥ मन अकार जहां लों कोई
तां तें सब मिथ्या आकार॥ चेतन ब्रह्म सकल आधा
र॥२१॥ अरु स्रुतकौं प्रणांम विचारे॥ नेति नेत कहि
ते सदा पुकारे॥ अरु त्यों देषै अन सब मांही॥ नाम रूप क
छु है ऐ नाही॥ २२॥ अंत न रहै कौंन आदि॥ आत
म निसचल ब्रह्म अनाद॥ ऐसे बहु बिधि को विस
तार॥ मिथ्या जांनै वारन अकार॥२३॥ मन क्रम वच
न होइ निह संग॥ ब्रह्म विचार रहि करै न संग॥ ऐसे
वचन कहै भगवांन॥ तब उधव पूछो क्रिड ग्यांन
२४॥ उधवोवाच॥ हे प्रभु यह आतम अबिनासी॥ चे
तन रूप सुयं प्रकासी॥ निरगुन निराकार नित सुध
सदा अनाब्रित सो परबुध॥ २५॥ इछ्या रहत सदा आ
नंद॥ सकल प्रकासक लिपे न कुंद॥ अरु यह देंह आक ह
त कर हीन॥ जड असुध जात होइ लीन॥ २६॥ तां ते
तिन को संग न कोई॥ महां विलषण परसपर होई
कछु इछ्या नही आतम मांही॥ अरतन सों कछु होवै

नाही॥२७॥ आतमको बंधन न नाही कोई॥ अरु आतम १२५
आवरन न होई॥ यह संसार लहे सो कवन॥ आतम
सुखसदा सुखभवन॥२८॥ यह हु कर किरपा मोहि सम
झावो॥ मेरो भर मसंदेह गवावो॥ औसो ऊधव पूछ्यो
ग्यान तब बोले जवपत भगवान॥२९॥ श्री भगवा
नोवाच॥ आतमको नाही संसार॥ अरु तिनको नहि
जो अकार॥ तिनको भी तें जो अविवेक॥ ताही कोभ
वदुख अनेक॥३०॥ इंद्रे देह प्रान मन बुध॥ इनसों
जो आतमसन बंध॥ तातें या भासे संसार॥ महां दुख
नां नां परकार॥३१॥ जो लग जो इनसों सन बंध॥ तो
लग आतम जांने बंध॥ सो अग्यांन कह्यो सभ जांनो
नाही कछू सकल कर मांनो॥३२॥ यदपमिथ्या है सं
सार॥ पर तो हूं कहूं वार न पार॥ सदा जी वदुखही में
रहे॥ वारवार तन छोडे गहे॥३३॥ ज्यों सुपना है स
त कछु नाही॥ पर सत सा चो निंद्रा मांही॥ ज्यों ज्यों
सुखदुख मन मो ध्यावे॥ सो सो सकल सुपन में आवे
३४॥ है नाही पर है सो जांने॥ नां नां विधके सुखदुख
मांने॥ जागत में कछु देहै ऐ नाही॥ सभ विवहार मि
थ्या हो जांही॥३५॥ हरख सो क दें मोह अरलो भ॥ ६

छा क्रोध अमुन अरसोग॥ जनम मरन विकार जहां लौं
अहंकार मैं सकल तहां लौं॥३६॥ आतम सदा रोक रस
रहे॥ अहंकार संग तक्षष सहे॥ इंद्रे देह बुध मन प्रांन
सूत्र अौर महा तत अन मांन॥३७॥ इनसौं मिलकरि
आतम येक॥ माया के [illegible] है अनेक॥ तिन तिन के
हित कर मन केरे॥ करमन के वस जनमें मरे॥३८॥
लिंग बंध्यो देहन मैं जावै॥ तिनके संग महां दुष पावै
बुध वचन मन प्रांण समीर॥ महां तत इंद्रे कर मस
रीर॥३९॥ सुष अरु दुष ममता अहंकार॥ तिनको नां
नां विध संसार॥ सो निरमूल सकल ई जांनो॥ ज्यूं जेव
री मैं साप त्यूं मांनो॥४०॥ ग्यांन षडग नजन मोहि पा ३
वै॥ गुर सेवा सौं सांन धरावै॥ तासौं काट होइ निहसंग
म विचरे मगन देषत मअंग॥४१॥ गुर के वचन हिरदे
मो धारे॥ आदि अंत लौं श्रुत विचारे॥ जनम मरन
देषे पर तष्य॥ तज अग्यांन हि होवे दष्य॥४२॥ साध
न धर मन मांहि थित होई॥ आतम देह विचारे दोई
जो या जग की आदि अरु अंत॥ सो ई मध्य विचारे संत
४३॥ आद अरु अंत मधमें येक॥ नांम रूप [illegible]म रूप
अनेक॥ है म येक ज्यूं आद अरु अंत॥ मध्य की येआ

तरन अनंत ॥४४॥ तो कछु है मछोभ नही आंन ॥ यों वि
चार कर देषे ज्ञांन ॥ मिथ्या सकल नाम अकार ॥ है मका
ल त्रै करे विचार ॥४५॥ त्यों जग आद मध्य अरु अंत ॥ सो
मैं आप विचारे संत ॥ आदि अंत मै एक स्वरूप ॥ सोई
मध्य ब्रिथा सत्न रूप ॥४६॥ जाग्रत सुपन सुषोपत अ
वस्था ॥ आदि अरु अंत मैं स्वसथा ॥ इनके नास जो
जो रहै ॥ सकल छोभ ता को बुध गहै ॥४७॥ इंद्रे अरु इंद्र
यन के देवा ॥ इंद्रे विषयन के बहु न्हेवा ॥ तिसत्न जोरे
के बिन नाहि ॥ सति ब्रह्म सो षोजै मांहि ॥४८॥ जाहि प्र
कास तसक प्रकासे ॥ जाकी शक्त सतसो नासे ॥ मुष ल
को मुष करननके करन ॥ कर के कर चरनन के चरन
॥४९॥ नासा नास नैनन के नैन ॥ जिह्बा जी न्हबैन नन के बैं
न ॥ या विध सकल प्रकास करे एक ॥ ता बिन मिथ्या सक
ल अनेक ॥५०॥ ऐसे नाम रूप विसतार ॥ जिनसों कुरना
सत्न संसार ॥ तिसत्न आदि जो ते कछु नाही ॥ अरु न हिरदै
अंत हूं मांही ॥५१॥ तांते अब हूं मिथ्या मांने ॥ कारण ब्र
ह्म निरंतर जांने ॥ नाम धर्यो सो सकल विकार ॥ त्रिहूं का
ल मैं माटी सार ॥५२॥ यह जो कछु सो ब्रह्म समसत ॥ आ
दि मध्य अरु सत्न के अंत ॥ ऐसे बहु बिध वेद बषांने ॥ ब्र

ह्मवताइ द्वैत सत्त जांने ॥५३॥ आद मम सतज्ञ तो कछु ना
ही ॥ मन आत्मा सत है मो मांही ॥ यां ते परे ब्रह्म मम रू
प ॥ सकल प्रकासक आप अनूप ॥५४॥ यह विच नहीं
भासि आत्मा से ॥ तां की शक्त शक्त प्रकासे ॥ तां ते स
कल ब्रह्म ही लेखो ॥ तज कर रूप अरूप हि देखो ॥५५
इन के परे रूप निज जांनो ॥ अर रोसत्त मम मरूप हि मां
नो ॥ द्वैत छोड मन निसचल ह्वै रहो ॥ जांन ब्रह्म ते ब्रह्म महि
ल हो ॥५६॥ ऐसो जो नित करे विचार ॥ मिथ्या जांने स
ब आकार ॥ गुरसेवा करि ज्ञांन वधावै ॥ चेतन मोहि अ
षंड तधावै ॥५७॥ यह तन सो आतम मां नाही ॥ तन ध
न रूप विचारे मांही ॥ अर इंद्रे ते दीपस मां न ॥ इन प्र
कासत आतम जांन ॥५८॥ अर त्यों देव पवन मन बुध
आ आतम की नही जांने सुध ॥ छित जल पवन ते जंकास
अहंकार गुण चित प्रकास ॥५९॥ सुआम प्रकृत तन
मात्रा पंच ॥ इन ही को सत्त द्वैत प्रपंच ॥ ते जड आतम
को नही जांने ॥ आतम शक्त इहां अब गांने ॥६०॥
सकल प्रकासक आतम एक ॥ ए जड जांनन स के अने
म क ॥ या विध जो मन ज्ञांन विचारे ॥ सकल उपाधसो उर
की टारे ॥६१॥ सो बन रहे इंद्रयन थंभे किवापुर

षविष्यनआरंभे ॥ तोहूंतांकोनहिगुणदोष ॥ जोसज्ज
तजपक्षचोहैमोष ॥ ६१ ॥ ज्योंघनरविकेआगेआये
तोतिनसोंकछुरविनहिछाये ॥ अरजोमेघहूरहोइ
गये ॥ तोकछुरविनप्रकासतभये ॥ ६२ ॥ रविहैपरेओ
रेघनकुंद ॥ जांनेलिपतलोकमतमंद ॥ जैसेप्रगटपव
नघनतोइ ॥ धूमधूलअरदांमनीहोइ ॥ ६३ ॥ हृतकेगु
णसीतलउसनादि ॥ उपजतबिनसतरहैंअनाद ॥
परनहीलिपतसदाआकास ॥ त्योंहीआतमपरमप्र
कास ॥ ६४ ॥ परतोहूसंगतनहीकरे ॥ मायागुणनिंत्र
परहरे ॥ जोलौंकरेनमेरीदिढजगत ॥ छूटेनाहीरज
तमगुणआकत ॥ ६५ ॥ छेदेभेदनजूलेजौलौं ॥ ममज
नसंगकरेनहीतोलौ ॥ जैसेरोगहोइतनमांही ॥ दिढ
करमूलउषाध्योनाही ॥ ६६ ॥ सोतजसंगअपथहि
करे ॥ तौसोरोगबकतविसतरे ॥ त्योंअहंकाररोगजव
मूल ॥ सोजोलगनहीजयोनिरमूल ॥ ६७ ॥ जोलोंसंग
अपथहिकरे ॥ तोलगबकरोंजगअवतरे ॥ बंधकूटं
बसिबबतेरे ॥ आवेसकलसुरनकेप्रेरे ॥ ६८ ॥ तेतेअं
तराइबककरें ॥ योगीकोंकरमनविसतरें ॥ सोतनतें
पावेअवतार ॥ बकरोंकरेजगतविसतार ॥ ६९ ॥ क

रमपंथमेंभूलेनाही॥ मेंप्रेरकताकेउरमांही॥ याविध
पाइग्यांनविग्यांन॥ देषैमोहिमिटावैअग्यांन॥७०॥ त
बतांकोतनकरमनकरै॥ लेनदेनभोजनविसतरै
पूरबसंसकारकरवावै॥ विधकोलिष्योनमिथ्याजा
वै॥७१॥ सोमुनमगनब्रह्मसुषमांही॥ तातेंकछवैजां
नेनाही॥ ज्योंबैठेअरठाढेहोई॥ आवेजाइकहूंजेको
ई॥७२॥ अनषाइजलपीवैसोवै॥ जोविवहारदेहकोहो
वै॥ सोसोकछूनजांनेयोगी॥ निसचलरहैब्रह्मरसभो
गी॥७३॥ जोकबहूंदेषैसंसार॥ इंद्रेगोचरविविधप्रका
र॥ तेतेकछूसतनहीजांनै॥ सुपनवसतज्योंजागेमांने
७४॥ प्रिथमआतमांहुतोअबंध॥ आपहिभयोप्रक्रि
तसोंबंध॥ बहुरीमोसोंविद्यापावै॥ तबदुषजांनप्रक्रि
तछुटकावै॥७५॥ तबबहुरोंताकोनहिगहै॥ मोहि
जांनमोहीमेंरहै॥ प्रिथमेंजबमोकोंनजांनै॥ तबमा
यासुषउतममांनै॥७६॥ बहुरोंजबममसरनेआवै
ममप्रसादिअग्यांनमिटावै॥ तबमायाकोंदुषमेंजांनै
परमानंदरूपममसांनै॥७७॥ तांतेंआपहिगहीउपा
ध॥ तांकोतजेजांनकरव्याध॥ सदानिरंतरमोमेंरहै॥
बहुरोनभवसागरनहीवहै॥७८॥ ज्योंरविअंससकल

ईरष्या॥ पर रवि बिना न लषै प्रतष्या॥ रवि सं जो गबकु
रें जब होई॥ तब सम मस तं देषै सो सोई॥ ७९॥ रवि बिन
अंधकार अत होवै॥ तां ते कोई नैंन न जोवै॥ रवि सं जो
ग प्रकास हि पावै॥ तब सन्त देषै तम हि मिटावै॥ ८०
पर तें नैंन त्रिकाल अलेप॥ अंधकार सों जैसे न लेप॥
तेजूं के त्यों तम हीं मां ही॥ पर रवि बिन कछु देषै ना ही
८१॥ रवि तैं तम उपाध परहरै॥ पाइ प्रकास प्रकास
हि करै॥ त्यों यह आतम मेरो रूप॥ सुयं प्रकासक परे
अनूप॥ ८२॥ जनम मरन मिरजादा रहित॥ काहूक
रक बहूं नही गहत॥ दूजे रहित आप ही एक॥ ता ही
कर ऐदे हअनेक॥ ८३॥ महां न भाव सकल अभा
वा॥ जो मैं कदे न करम सुभाव॥ नित आनंद सदा अत
सुध॥ सदा निरीह सदा परबुध॥ ८४॥ जो कर इंद्रे अर
तन प्रांना॥ चेतन होइ वरतै विध नांनां॥ जो लौं मन
अरु वचन न जोवै॥ अवरक वन विध तां को पावै॥ ८५॥
पर जब मैं तें रहतो भयो॥ तब तां को सन्न बल मिटग
यो॥ अहंकार आयो अज्ञांन॥ जां ते दूर भयो मैं मांन
८६॥ जब बकुरें मम सर नहि आवै॥ तब सो ज्ञांन प्र
कास हि पावै॥ तां ते छो पेसकल उपाध॥ जो मो बिन

करि लीनी व्याध ॥८७॥ तांको कबहूं परसै नाही ॥ परमो
बिना तजी नही जाई ॥ मोकों पाइ सकल पर हरे ॥ मेरे
चरनन कौं अनसरे ॥८८॥ रवि प्रकास मिटै तम जैसे
मम प्रकास चेतन भ्रम तैसे ॥ सो पुनि मोकों नहि विसरा
वै ॥ मोहि सेव मो मांहि समावै ॥८९॥ मो मैं उतेन माया
ल्यावै ॥ अर मो माया मैं नहि आवै ॥ तांते नित ही मो मैं र
है ॥ मो मिलपर मानंद हि लहै ॥९०॥ उधव हूतनोई
अग्यांना ॥ जो केवल मैं जांने नांनां ॥ बूझरो कछुहू जो नां क
ही ॥ जैसे साप जेवरी मांही ॥९१॥ चेतदेह जड मिथ्या जा
नै ॥ चेतन एक ब्रह्म थिर मांनै ॥ अरु ऐ पंच ततन विस
तारा ॥ उपजै बिनसै बारंबारा ॥९२॥ जांको मिथ्या वेद
बषांनै ॥ अर त्यों ही गुर साधू मांनै ॥ अरु अनभव तें त्यों
ही देषै ॥ जागे सुपन जगत त्यों पेषै ॥९३॥ ऐसो जगत
सत जो जांनै ॥ शुद्धपत वांनी वेद बषांनै ॥ अंतन श्रुत
के वचन विचारै ॥ औरे कहै तेई उरधारै ॥९४॥ जांते क
रम कांम बहु करै ॥ तांते मूरष या भव मरै ॥ करम वि
षै पतन की बुध ॥ तांते कदें न पावै सुध ॥९५॥ तांते ति
नकों लगै न ग्यांन ॥ मूरष आपहि जांनै आंन ॥ तांते विष
ई जीव समसत ॥ तिनहि भ्रमाइ करैं ते असत ॥९६॥

तांते उधव यही ग्यांन ॥ बूझ जांनकर छोडे ग्यांन ॥ मेरैं भ १२५
जन निरंतर करीऐ ॥ या प्रकार खेत परहरीऐ ॥ ९७ ॥ अ
र उधव जो योग कहावै ॥ अष्ट अंग को वेद बतावै ॥ सो
ज्यों औरे वित त्यों जांनो ॥ नव मोचन कब हूं मत मांनो ॥
९८ ॥ जब यांके तन प्रबल विकार ॥ कर न दी सकै भग
त अधिकार ॥ तांते बहु विध योग विसतरे ॥ सम विस
वास पाद परहरे ॥ ९९ ॥ प्रिथमे योग धारणां करे ॥ सीत
उसन रोग छिप रहरे ॥ जैसे कृत प पाप निवारे ॥ मंत्र नि
ग्रह बांधादिक टारे ॥ १०० ॥ जो जन षुध्या अंग सो रोग
यो तन मैं ऐकैं है योग ॥ कामादिक मन सकल विकार
जां ते मम सिंमरन आधार ॥ १०१ ॥ मम भजन गत तन की सेवा
करे ॥ तां कर दंभादिक परहरे ॥ या विध विघन समसत
निवारे ॥ मेरो भजन हिरदे में धारे ॥ १०२ ॥ अरु रोके मूढ
नर राजा साधें योग देह के काजा ॥ जो बहु देह मिटाई
चहीऐ ॥ देह मिटे मेरो सुष लहीऐ ॥ १०३ ॥ मेरो अंस स्वा
त मांहे है ॥ यांको कष दातासो देह ॥ तादेही जो राष्यो चैहे
ते आप हिया नव में वैहे ॥ १०४ ॥ तन के रोग जरादिक टा
रे ॥ स्वास जीत कर थिरत निवारे ॥ अंम्रित होइ है कलप
न अंत ॥ बहु करन पावै देह अनंत ॥ १०५ ॥ तांते विरथा

रेश्रममूढ॥मेरो नजननन पावैमूढ॥ तांते मैं अरसंतनमां
ही॥ तिनकोकबहूं श्रंवरननाही॥ १०६॥ अरप्रिथ
मैं जोयोगहिकरे॥ विघननिवारजगतविसतरे॥ तां
कोतनज्यों निसचलहोई॥ तोहूं आदरकरे नको ई
न १०७॥ छोनयोगसमाधसमेत॥ गहिमसचरखवढावेहे
त॥ योग मांहि बाढे अहंकार॥ तांते नहि छूटे संसार॥
१०८॥ तांतेसन्तजमोकोंनजे॥ ममआधीनहोइआपा
तजे॥ ममप्रसादितेमोकोंपावै॥ बहुरोंनवदुषमैंन
हिआवै॥ १०९॥ जोहोवेमेरेआधीन॥ आपहिमांनेस
नबलहीन॥ मैंआधीनहोवोंताजनके॥ ज्यों आधीन
देहयहमनके॥ ११०॥ केवलजोममसरनहिआवे
ताहीकीसनइछ्या जावे॥ तांतेविघन आवे कोई॥ विघ न
नतहांजहांइछ्याहोई॥ १११॥ ममआनंदरहे आनंदत
सन्तदेवनकोद्रावेवंदत॥ तांते उधवयहईकरणो॥
मेरो भजनहिरदेमांधरणो॥ ११२॥ जगअरआपब्रह्म
मैंजांने॥ द्वैतभावकबहूंनहीआंने॥ ब्रह्मजरोतेंब्रह्म
हिपावै॥ जनमजनमकेदुषविसरावै॥ ११३॥ दोहरा॥ ऐ
सेसुनश्रीक्रिश्नसोअतहीउहिकरग्यांन॥ पूछोसुगमउ
पाइतबउधवपरमसुजांन॥ ११४॥ इतश्रीभागवतेप्र

२८॥ उधवोवाच

हांपुराणेएकादसस्कंदेश्रीकृष्णउधवसंबादेपरमा
र्थनिरूपणोनामअष्टवीसमोध्याइ॥ हेप्रभुउमयहग्यान
कषांनो॥ सोतोमेंकहिकरजांन्यो॥ वसनांहीइंद्रेमन कर
जिनको॥ कैसेयोगहोइप्रभुतिनको॥१॥ जेहैंपरम
हंसदृढचित॥ तिनकेबूझसविहेंहीनित॥ अवरेजे
यहग्यानविचारै॥ षैंचषैंचयामनकोंधारै॥२॥ करेबक्र
बक्रतेंयोगगुसांई॥ करमकरतजोअंतसुषपांहीं॥ ति विध
नकामनवसहोइनकांही॥ अमकरजनमगवावैयों
हीं॥३॥ उमपदपरमानंदसमुंदु॥ तिनकोभेदनजां
नेषुंद्र॥ करेयोगयग्यादिककरम॥ तिनकेफंदनछूटे
नभर्म॥४॥ तांतेगरबवधैजोकरै॥ यांतेयुगयुगजनममर
रै॥ केवलजगतउमारेजेते॥ परमानंदलहैंहैंसमतेते॥
५॥ जबहीतेंतवचरननआवैं॥ उमहीतेंपूरनसुषपावै
मायानिकटनआवैतिनके॥ उमरे चरनहिरदैजिन में
के॥६॥ तांतेसहजेजगतमिटावै॥ उमचरनैंमेंसहिज न
समावै॥ उमब्रह्माआदिसकलकेनाइक॥ सनहिनको
प्रभुताकेदाइक॥७॥ उमरेचरनगहैंहैंवैदीन॥ उमतां
केहोवोआधीन॥ अरयहकहाअचंभासामी॥ उमसभ
प्रभसभअंतरजांमी॥८॥ उमकोसभतजसेवैजोई॥ करे

आप ब्रह्म तुम को सोई ॥ सीस मुकट धारहिं जेते ॥ तुम
पद मुकटन सेवैं तेते ॥ ९ ॥ राम रूप तुम जयो मुरारी ॥
जिनकी नेवां नर अधिकारी ॥ वांनर सकल सषा तु
म करे ॥ सज्जन हित के समहित आचारे ॥ १० ॥ तातें जो
तव कित तहि विचारे ॥ सो कूंपल तव जगत निवारे ॥ तु
म ही नषसष देह सवारी ॥ चेतन ज्ञाक तत्त मैं पुन धा
री ॥ ११ ॥ सदा रहै तुम मेरे आधारा ॥ तुम ही नित प्रत पा
लन हारा ॥ ता पर जीव तुमैं नहीं जांने । करता जन ता
औरन मांने ॥ १२ ॥ तौहूं तुम औगुन नहीं आंनो ॥ बहु
बिध जहत हरष्या गांनो ॥ फुन जब ही तव चरनन आ
वै ॥ तब तुम सों चारों फल पावै ॥ १३ ॥ परत थाप सो अ
तअ ज्ञांन ॥ तुम तज सेव लेइ जो आंन ॥ चार पदारथ
सेवक तांके ॥ तुमरी जगत बिराजे जांके ॥ १४ ॥ रोक ज
हां नाही तव भजनो ॥ नरक जांन सोई सो तजनो ॥ जां
ते जो होवै सरवज्ञ ॥ तुमरे उपकारन को तज्ञ ॥ १५ ॥ अ
र विध सम आयु बल पावै ॥ बहु बिध प्रत उपकार ब
नावै ॥ तौहूं तुम हि अरि रान हि होई ॥ ब्रह्मा आदि ज
हां लों जोई ॥ १६ ॥ जो तुम बाहर सत गुर रूप ॥ भीतर चे
तन ज्ञाक तअ नूप ॥ यों जीवन सब दुष निवारो ॥ आप हि

दुखभवसंकटटारो ॥ १७ ॥ तातेभाषोभजनानंद ॥ सहिज
मिलेउमछूटेदुंद ॥ ऐसुनप्रेयउधवकेवैंन ॥ बोलेक्रि
ष्नक्रिपाकेऐंन ॥ १८ ॥ श्रीभगवांनोवाच ॥ धंनधंनउध
वमभजनगत ॥ सनजीवनकेहितअनरकत ॥ तोसोंक
होंआपनोधरम ॥ जांतेमिटैसहिजसबकरम ॥ १९ ॥ क
रतेसोंआगेसुषपावै ॥ छोंभेनवजैमोमेंआवै ॥ उधव ते
करमकरेनरजेते ॥ मेरेहेतकरेसबतेते ॥ २० ॥ करमन
मेंनाषेंममनाम ॥ मेरेकरराषेंधनधाम ॥ मोमेंअरपै
मनकीविरत ॥ ताकेंसबआचरननिवरत ॥ २१ ॥ मेरी
प्रीतकरेसोकरे ॥ मेरीप्रीतहिरदेंहोहिरे ॥ जिनदेसनमें तसन
रे मेंभगत ॥ मिलकरवासहोइअनरकत ॥ २२ ॥ सुरअर
असुरनमेंहैंजेते ॥ मेरेभगतभरेहैंतेते ॥ तिनतिन
केआचरननजांने ॥ त्योंहीत्योंआपहूंगंने ॥ २३ ॥ मे
रेपरबमोहितसबकरें ॥ परबनमेंमिलापविसतरें
मेरीजहजेहजात्राहोई ॥ तहांतहांचलजावैसोई ॥ २४
गीतनिरतबाजंत्रकरावै ॥ छत्रचौरादिकअधिकावै
अतउदार ताकरसबवांने ॥ ममहितलगेभलोसोजां
नै ॥ २५ ॥ सबभूतनमेंमोकोंदेषै ॥ अंतरबाहरएकोलै
षै ॥ आपआदिजगमोमेंजांनै ॥ ज्योंआकासअनाविर.

त मांने ॥ २६ ॥ यौं सत्र मैं म जांनें सम भाव ॥ त्यागे सकल प्र
विरत सुभाव ॥ सत्रहन कौ सम मन हित करे ॥ ज्यांन दृ
ष्टि भेद हि परहरे ॥ २७ ॥ ऐकै विप्र वेद अधिकारी ॥ ऐ
कै अत्यंत महा विकारी ॥ ऐकै विप्रन कै धन हरता ॥
अर ऐकै धन कै विसतरता ॥ २८ ॥ ऐकै तेजहीन बक्र
देषैं ॥ तेजवंत ऐकै बक्र पेषैं ॥ ऐकै क्रूर सकल कै षदा
ई ॥ ऐकै सांतक सकल सहाई ॥ २९ ॥ इत्यादिक नांनां वि
ध देषै ॥ पर जो भेद कछू नही लेषैं ॥ मेरी दृष्टि सत्रु न मैं
आंने ॥ सम सजन पंडित ताहि बषांनें ॥ ३० ॥ याविध सत्र
मैं मो कौं जांने ॥ भेद देह कछु वे नही आंने ॥ थोरे काल मां
हित हि जन कै ॥ सत्रु विकार मिट जावै मन कै ॥ ३१ ॥ सुप
र धाति रसकार अहंकार ॥ सकल मिटै कछु रहै न विका
र ॥ तां ते देह दृष्टि नही धरे ॥ लोक कूटं बलाज परहरे ॥ ३२
हासी करैं सकल ई लोक ॥ पर सो आंने हरष न सोक ॥
तिनकी कछु मन मैं नही आंने ॥ सत्रु जीवन मैं मो कौं जां
ने ॥ ३३ ॥ षर षच रचं पालन अंत ॥ जहि लों मेरी दृष्टि
अनंत ॥ नमसकार तिन तिनकौं करे ॥ हंस मांन धरन
मैं परे ॥ ३४ ॥ जो लग इस थावर जंगम मांही ॥ मेरो भाव
होइ थिर नांही ॥ तौ लग मन वच कां इस मेत ॥ यौं सत्र

मैंगंनेममयेक॥३५॥ याबिधकरतरहैनरजोई॥ तांकौं
सकलब्रह्ममैहोई॥ मिटेअविद्याविद्यापावै॥ तांतेबंध
नसकलमिटावै॥३६॥ ऊधवसकलधरममहैंजेते॥ वेद
मधमैंन्नाखेतेते॥ तिनमैंएहमतोममसार॥ जातेंमिटजा
वैसंसार॥३७॥ मनक्रमवचनजहांलौंजेते॥ ममसरूप
जांनोसबतेते॥ ऊधवसबसोधरममहैमेरा॥ कहांप्रना
वकहोंतिहकेरा॥३८॥ अगुणरूपप्रगटजोहोई॥ क्योंही
बक्रमिटेनहीसोई॥ जहांलगेगुणनिरमतवसत॥ त
हांलगेसबहोइअसत॥३९॥ मैंनिरगुणसबकोपरका
सी॥ तातेंममधरमोअबिनासी॥ मेरानासकदेनहीहो
ई॥ ममधरमोथोरोईत्योंही॥४०॥ अरऊधवयहक
हाकहीजे॥ मेरेधरमकदेंनहीछीजें॥ ऊधवजेलोकक
विवहार॥ राजसतांमसविविधप्रकार॥४१॥ जिनतें
केवलहोइअनरथ॥ प्रविरतहूमैंसबकेअरथ॥ न
रकनमांहीडारनहार॥ कांमक्रोधदोषादिविकार॥
४२॥ जोतेक्रतेमोमैंकरैं॥ तोहूमोहिलहैभवतरै॥ जेसे
कंसमरणजेकरयो॥ मेरोधरमनहीआचरयो॥४३॥ प
रसोजेहूंकरमोमांही॥ ममपदपहूचोभवमैंनाही
अरगोपीयनकीयोबिभचार॥ उलंघेवेदतजेभरता

र॥४४॥ पर बिनचारो मो मैं कर्यो॥ तौ हूं तिन भवजल प
यो रह्यो॥ अर जो दोषकी सिसपाल॥ जांते जीवन ग्रासें
काल॥ ४५॥ पर सो ऊ मो मैं कर दोष॥ भवजल तर करि
पहुंचो मोष॥ यों विषरूप विकारो जेते॥ मो मैं आएअम्रि
त तेते॥ ४६॥ तांतें यह विवेक चतुराई॥ रहे बुधहू जीन
ही काई॥ जो रूठे सो माचे लीजे॥ पूरन काज आपनो की
जै॥ ४७॥ यह रूठी बिया संग रदेह॥ सकल विकार नहूं
को गेह॥ तांकर पैये हरि अबिनासी॥ निरविकार पू
रन सुषरासी॥ ४८॥ यह सभ ब्रह्म ग्यांन को सार॥ जांतें
मिटे सहिज संसार॥ मैं संषेप मों हि सभ कह्यो॥ यां ते सा
रन कहूं बेरह्यो॥ ४९॥ यह नरतन अर यह मम ग्यांन
देवन हू को दुरलभ जांन॥ यद पजीव लैहै नरदेह॥ तो
हूं ग्यांन न पावैरोह॥ ५०॥ तां ते मैं भाष्यो निज ग्यांन॥ जां
ते मोहि लहै तज आंन॥ उधव प्रश्न करी उमजे ती॥ उ
तर सहित कही मै तेती॥ ५१॥ तेस भतत वेद को जांनो
मेरो परमरूप कर मांनो॥ यह उधव मेरो संबाद॥ अ
ध्यातम पर मातम बाद॥ ५२॥ ताको सु नहि रदै मैं धा
रै॥ पावै मोहि आपको तारै॥ जो यह मेरो पूरन ग्यांन॥ म
रे भगत न देवै दांन॥ ५३॥ सो कहीयत है मेरो दाता॥ ज

हां तहां होवै विद्यमान ता॥ जो जो देह लेह सो सो ई॥ लोक
वेद न्याषत हैं त्योंही॥ ५४॥ तां ते दांन देह जो मेरो॥ मैं
आधीन होव कृतिन केरो॥ मोहि देह सो मोको पावै
तन को ले मो मांहि समावै॥ ५५॥ जो नर यां को नित
ही पढै॥ तां जन को मो सों हित बढै॥ सो जन मेरो अत
प्रेय होई॥ तां के सम हू जो नहीं कोई॥ ५६॥ जो यह सु
ने नित कर आदर॥ और सकल को करे निरादर॥ सो
करमन सों लिपैं तन होई॥ मेरी जगत लहै द्रिड सोई॥
५७॥ मैं यह परम ग्यांन उचार्यो॥ उधव तुम कछु हिर
दै धार्यो॥ सोक मोहि गयो हिरदै निवृत॥ इन तें सह
ज होइ तूं व्रिकृत॥ ५८॥ उधव यह जो मेरो ग्यांन॥ सो
मत जांनो मो तें आंन॥ तां ते दंनसहित है जोई॥ अर
नासतक नहि कावै होई॥ ६०॥ प्रीत न जांने नहि मम
जगत॥ कर बिनीत विद्यान आसकत॥ तिन को ग्या
न न दैनो ऐह॥ जां का लर मो बीज अर मेह॥ ६१॥ इन
दोषन करि होइ विहीन॥ मेरो जगत प्रीत द्रिड दीन
इस त्री सूद्र हूं ऐसो होई॥ ता हूं सों अंतर नहीं कोई
६२॥ ऐसे न सों यह ग्यांन हि कहीऐ॥ तो इन सहित प
रम सुष लहीऐ॥ जो यह मेरो जांने ग्यांन॥ ताहि जांन

बोरह्यो नग्यांन ॥ ६३ ॥ ज्यूं कोई पीवै पीयूष ॥ तांके रहै
न हू जी भूष ॥ ग्यांन अरु कर्म योग अष्टंग ॥ विषबां
नी नीत सत्संग ॥ ६४ ॥ अरथ अरु धर्म मोष अरु
कांम ॥ इन सब नहि न को मो मैं धांम ॥ तां ते मो मैं आवै
जोई ॥ इन सब नहि न को पावै सोई ॥ ६५ ॥ परम मेरो जन
कछू न लेवै ॥ सकल त्याग कर मो को सेवै ॥ तां तें सिध
अरु साधन जे ते ॥ मम मजन देषे मो मैं ते ते ॥ ६६ ॥ सन्त
जे मम चरनन न कों सेवे ॥ आपनि वेद कछू न लेवै ॥ तां
के सम हू जो को नांही ॥ सो नित मो मैं मैं ता मांही ॥ ६७
तब सुन हरि के ऐसे बैंन ॥ उधव आंसू ढारत नैंन ॥
आगे ठाडे अंजुल बांधे ॥ प्रेम मगन तन मन न क्रिडसा
धे ॥ ६८ ॥ बैं न हूं ते बोलै न हीं जावै ॥ कंठ हूं ते गद गद
सुर आवै ॥ तां ते उधव चुप कर रहै ॥ कछू मों न कछु बैं
ज न न कहै ॥ ६९ ॥ बज्रों चित दसथि त कर धीरज ॥ पू
रन प्रेम न यो पग की रज ॥ निस चं आप क्रिता रथ मां
न्यो ॥ सन सें देह रिदै ते जां न्यो ॥ ७० ॥ हरि के चरनन मा
थाधा र्यो ॥ उधव जगत वचन उचार्यो ॥ जिनने तें हरि
सों बाढे प्रेम ॥ जिन को कहि सुन पारे षेम ॥ ७१ ॥ उध
वो वाच ॥ नाथ अजन मा अरु अबिनासी ॥ परमानं

दपरमप्रकासी॥ तनतें सनधांन पावक के जावै॥ सह
जेतमसै जीतमिटावै॥ ७२॥ अरतापर तुमजरी द्याल
दासअपनेपरजरी क्रिपाल॥ तनतें सनधांन जब
आयौ॥ तबहीसजअग्यांनमिटायो॥ मोनिजजनप
रजरो क्रिपाल॥ जनममरन जै मेटो काल॥ ७२॥ य
हविग्यांनदीपकमोहि दीनो॥ जांतें सकलसुभासुभ
चीनो॥ तुमरे चरनकवलनव मांही॥ इजी और कहे
सुषनाही॥ ७३॥ जो कोतवक्रितको डुषमांनै॥ ते त
व महि मांकोन हि जांनै॥ सोतवचरनसरननही आ
वै॥ तो इजे कहां तें सुषपावै॥ ७४॥ प्रजजी तुमअ तक
रताकरी॥ ममसायासीघ परहरी॥ सकल जादवन मैं
इसनेह॥ अरजुवतीसुतवितग्रहिदेह॥ ७५॥ ऐसन
मेरे मनतें टारे॥ अपनेचरनकवलउर धारे॥ तुमवि
सतारी अपनीमाया॥ जिनयहसकलजगतभरमा
या॥ ७६॥ सो तुमग्यांनषडगसों छेदी॥ होइ क्रिपालन ऽ
जप्रीतनिवेदी॥ नमोनमसतेंग्यांनप्रकासी॥ योगयो
गेस्वर अरअबनासी॥ ७७॥ दीजे मोहि ऐकवरदेवा
निसचलहिरदैनिरंतरसेवा॥ तुमसेछोमहइजोनही
जांनो॥ तुमसेवकहोइसेवाठांनो॥ ७८॥ मोहिप्रसाद

दीजीएरोह॥ उमसोंनिस्चलबढेसनेह॥ करिबेनती
उधवभगत॥ बोलेहरिजीहोइअनरकत॥७९॥श्री
भगवांनोवाच॥ तथाअस्तउधवममभगत॥ ममचर
ननिसचलआसकत॥ अबउमउधवऐसीकरो
लोकनकेसंगहिपरहरो॥८०॥ बद्रीषंडआश्रमदे
मेरो॥ अतपुनीतदरसनजिहकेरो॥ तहांतीरथमम
स चरननकोजल॥ दरसपरसन्हानाहरैमल॥८१॥
नामअलंकनंदासोगंगा॥ निरमलकरेपरसतअं
गा॥ तहांजाइउमवासाकरो॥ फलभषणाबलकल
तनधरो॥८२॥ इंदसीतउसनादिकसहो॥ बिनेआदि
सुभलषणागहो॥ इंद्रीयनकेअरथनपरहरो॥ य
हविग्यांनग्यांनउरधरो॥८३॥ मोतेंसीष्योग्यांनउमजो
ई॥ बेगहकांतविचारोसोई॥ वचनचितसभमोमेंधरो
मेरोधरमसदाविसतरो॥८४॥ तबतीनोंगुनकोपरह
रो॥ ममनिरगुनपदमेंअनसरो॥ यहउधवयततग्या
मेरी॥ फिरउतपतनहोइहैतेरी॥८५॥ याविधक्रिस्न
वचनउचारे॥ तेउधवलेसीसतकधारे॥ चरननपरप
रदषणादीनी॥ तबचलबेकीइछाकीनी॥८६॥ यद
पिइंदहिरदेनहीआवे॥ तोहूहरिजीतजोनजावे॥

आंसू कंठ अंतर आतुर बुध॥ बिदुर बल नयो न तन
की सुध॥८७॥ कृस्न बियोग न क्यो हीं सहै॥ बार बा
र चल फिर फिर रहै॥ तब अंतर जामी गोपाल॥ ज
न को जांन्यो प्रेम बिहाल॥८८॥ निकट बुलाइ मा
ले देअंग॥ ग्यांन रूप कीनो सरबंग॥ तब अपनी पा
वडी दीनी॥ तें उधव जन माथे लीनी॥८९॥ तो हूं प्र
थ मे कृस्न न पधारे॥ जादव ले प्रभास संघारे॥ त
बहीं तहां उधव चल आये॥ कृस्न रे कहीं बैठ पाये
९०॥ फुन मैत्रे पधारे तहां॥ कृस्न देव बैठे हैं जहां
कुहूं कीयो हरि को प्रणाम॥ दरसन पाये नरो अभि
राम॥ ९१॥ गढे नैरे जोर कर द्वो ई॥ प्रेम मगन कछु
कहै न सोई॥ तब तिन को हरि भाष्यो ग्यांन॥ जैसे अं
ध कार कों भांन॥ ९२॥ मैत्रे को दीनो संदेस॥ विधगूहि
की सो यही उपदेस॥ आग्या दीनी ऊधव जन को॥
अपनी आकत की यो थिर मन को॥ ९३॥ तब ऊधव
हरि चरनन परे॥ हरि हिरदे निस चल कर धरे॥ पु
न उधव जन पकते तहां॥ नर नाराइण प्रगटे जहां
९४॥ तहां जाइ कीनो आचरण॥ जे जे भाषे थे हरि क
रण॥ बलकल अंबर फलन अहार॥ प्रेम मगन न

तब्रुह्मविचार ॥ ९५ ॥ तब त्रिहूं गुणानविसतार मिटा
यो ॥ ऊधव ब्रुह्मनिरंजन पायो ॥ यह हरि ऊधव को
संबाद ॥ हरिजी को है परम प्रसाद ॥ ९६ ॥ जा को क्री
पा करे सो पावे ॥ तज जनव सिंध ब्रुह्म में जावे ॥ जब तें
यां को नाषे सुने ॥ प्रेम सहित हिरदे में गुने ॥ ९७ ॥
तब तें पावे परमानंद ॥ श्रम ही बिना मिटे दुषद्वं
द ॥ यह सुषं मेव श्री पहरि कह्यो ॥ जां ते कछु सं
देह न रह्यो ॥ ९८ ॥ यां में ऐसो क्रिश्न प्रभाव ॥ मि
टे जगत उपजे हरि भाव ॥ जिन हरि प्रगट अंम्रित
के कह्यो ॥ जगत न पाइ सकल दुष हर्यो ॥ ९९ ॥
रोक जलध तें अंम्रित उपायो ॥ निज आधीन देव
न कौं पायो ॥ जरा रोग आदिक दुष हरे ॥ बल उ
पजाइ विगत जै करे ॥ १०० ॥ अरु जो यह अंम्रित
रोक ॥ वेद सिंध तें ब्रुह्म विवेक ॥ सो आपने जनन को
प्यायो ॥ जनम मरन जनवने । यह मिटायो ॥ १०१ ॥
ऐसे आदि पुरष अबिनासी ॥ सिमिरत जिस हि
मिटे जब पासी ॥ क्रिश्न नाम लीनो अवतार ॥ ति
न को वंदन बारंबार ॥ १०२ ॥ दोहरा ॥ ऐसे सुनि सु
कदेव सों परम तत उपदेश ॥ क्रिश्न कथा की प्रेम

ताकीनोप्रश्ननरेस॥१०३॥इतश्रीभागवतेमहापु १२६
राणेएकादसस्कंदे श्रीक्रिश्नउधवसंबादेउध
वमुक्तनिरूपणंनामउनतीसमोंध्याइ॥२९॥
राजापरीछ्यतोवाच॥॥॥हे प्रभहरिकीकथा
सुनावो॥करनसुदयहश्रंम्रितपीवावो॥हरिउ
पदेसउधवहिदीनो॥पीछेआपकहातहांकी
नो॥१॥जादवकुलकोप्रगटोश्राप॥हरिजीक
हाकस्योतबआप॥ईस्वरकोबाधानहीकोई॥अ
रुद्विजश्रापनमिथ्याहोई॥२॥सबकेतनमनमो
हंदेह॥परमानंदसुधाकोगेह॥जेनारीहरिद
रसनपांवें॥तिनसोंनैननषेंचेजावें॥३॥अरजे
हरिकेरूपहिध्यावें॥बांणीसहितमांनतेपावें
अरजेमनकरिहरिदेखारे॥तेईपलकनछोडे
पारे॥४॥नारथमेंअरजुनरथमांही॥बेठेदर
सलहेंजांजांही॥तिनतिनहरिकीसमतापाई॥
सत्रसंअततनतकालमिटाई॥५॥ऐसोतनहरि
त्यागयोकेसे॥कोईतजेनागमराजेसे॥ऐसेवच
नकहेनरदेव॥उतरदीनोश्रीसुकदेव॥६॥श्री
सुकोवाच॥द्वारावतीउठेउतपाता॥तिनको

देषकहीहरिबाता॥ उग्रसैंन आदिकसनलोग सनासुधरमांकषनसोक॥ ७॥ तिनसोंक्रिष्न वचनउचारे॥ हरिकोमतोनलषेविचारे॥ निज मायासोंमोहतकरे॥ ग्यांनविवेकसबनकेहरे ८॥ श्रीभगवांनोवाच॥ हेजादवसुनोममबात॥ द्वा रावतीबकउतपात॥ रोउतपातमृतनीग्यांन तांतेतजीरोयहदुसथांन॥ ९॥ जुवतीबालकब्रि धसबजेते॥ संषूद्धारपगवोतेते॥ अबरेसकल प्रभासेजइरो॥ तहांपसचममुरसतीनईरो॥ १० करइसनान तननिरमलकरीरो॥ सुधरिदेती रथविरतधरीरो॥ जजीरोबकतपितरअरदेवा तिनकीकरीरोपूजासेवा॥ ११॥ अरविप्रनकीपू जाकीजे॥ करइसनानदांनबकदीजे॥ गांइभू मसरनवसत्रादि॥ हयहसतीरथअंनग्रहादि १२॥ असीरवाददिजनतेंलीजे॥ जांतेविघनस कलछईछीजे॥ देवविप्रगांइनकीपूजा॥ पापहर नविधऔरनदूजा॥ १३॥ असीसुनहरिजीकीबां नी॥ सबजादवननलीकरमांनी॥ नांवनबैठ सिंधउतरे॥ चडकरिरथहिपियांनोकरे॥ १४॥

जंह हरि तिन कौं आग्या दीनी ॥ त्यों त्यों सज्जन सभा १३७
विधकीनी ॥ करह्स नानदांनबक्कृ ठांने ॥ मध्यप्र
मासआपाबक्कृ मांने ॥ १५ ॥ तब तिनकी योऊसं
बापांन ॥ तांते जूलगयौं जगपांन ॥ तब ते बिम स
तम कलई जरो ॥ हरिमाया विवेहि रलेरो ॥ १६ ॥ ता क
नमहि कलह जयो उतपंन ॥ सज्जन मैं प्रेरक हरि
परछिंन ॥ तब तिन हूं की सभा मंझारी ॥ सांतक
बीर गिरा उचारी ॥ १७ ॥ क्रितवरमां को कर आप
मांन ॥ सांतक छोभे बांनी बांण ॥ जाई जो षत्री त
नधारी ॥ अरबक्क मैं कही रे अधिकारी ॥ १८ ॥ सो
ऐसो ऐसी को करै ॥ सोवत बालन के सिर हरे ॥ य
म ह प्रदनहूं त्रिसका स्यो ॥ क्रितवरमां को अतिहि ध ।
का स्यो ॥ १९ ॥ तब क्रितवरमां कीनो क्रुध ॥ बांणी
बांण प्रकास्यो जुध ॥ अरे करे षत्री क्यों ऐसी ॥ व्या
ध क्रूर कीनी तव जैसी ॥ २० ॥ जूर प्रवा तिरायुध
जयो ॥ जां को बांह युगल कट गयो ॥ तां को वध तकी
नो ऐसे ॥ व्याध कसाई करे न जैसे ॥ २१ ॥ तब सांत
क उठ बोले बांनी ॥ सुनो सुनो हे सारंगपांनी ॥ इ
नको यस अरु आयु सिरायो ॥ तांते ऐसो मत है आ

यो॥२२॥ऐकहिवचनषडगतिनकाह्यो॥ क्रितवर
मांकोमसतकवाह्यो॥यदपबक्रमिलबक्रतनि
वाऱ्यो॥तोहूंसांतकक्रोधनटाऱ्यो॥२३॥तांतेंसक
लनरोतबक्रुध॥सांतकहीसोंठांन्योयुध॥तबतें
सकलनरोधेंश्रोरे॥ युधरच्योसाह्यरतटघोरे॥२४॥
कोईधनुषबांनसोंलरे॥कोईषडगधरेसंघरे॥को
ईसपरसांगगदाकुवार॥कोईलरहेहाथप्रहार॥
२५॥कोईगुरदगोफणांकेई॥ बिरषादिकलरेंतेते
ई॥हरषतसजेकरैंसंग्रांम॥बेगेंदेषेक्रिश्नअरांम
२६॥हयसोंहयहाथीसोंहाथी॥रथसोंरथसारथी
सोंसारथी॥षचरसोंषचरमिललरे॥षरसोंषरक्र
३८ वेंनगिरे॥२७॥नरसोंनरमिलयुधहिकरें॥ शत्र
मित्रकछुलषेनपरें॥ महांमतकछलषेंनअैसे॥
युधकरेंमहांबनगाजजैसे॥२८॥सांबहिप्रदमन
ठांन्योयुध॥त्योंअक्रूरनोजअतक्रुध॥तहांसंग्रांम
जीतअरसुभद्र॥करेंयुधबीरनकोंनद्र॥२९॥गद
सोनामक्रिश्नकेभ्राता॥नामसुचारपुत्रविष्याता
त्योंसांतकसोंमिलअनहृध॥सुहिरसुमित्रकरैंअ
तजुध॥३०॥ उलमुकनिसठसहंसमतजित॥जांन

आदि जोधे अमित ॥ आप आप मिल युध हि ठांने ॥ ह
रि करि मोह तनक हू न जांने ॥ ३१ ॥ विशान वंस दासा
का वंस ॥ सां तक अधिक भो जव तंस ॥ अरबुध सैन
सूर मधु मार थ ॥ द्वे मविसरजन अंत अरकार थ ॥
३२ ॥ आप आप मैं जुध हि ठांन्यो ॥ सजन न पर सपर हा
र दै मांन्यो ॥ पुत्र पिता भाई सों भाई ॥ मी मां अर भांएा
जे लराई ॥ ३३ ॥ काका भतीजे नाती नांनां ॥ मित्र मि
त्र मिल युध ठांना ॥ सुह्रिद सुह्रिद ग्याति न सों ग्याती
सभ मिल भरे परसपर घाती ॥ ३४ ॥ तब सर बीरा भ
रास भहन के ॥ टूटे तथा धनुष तिन तिन के ॥ आयु
ध सकल बीरा जब भरे ॥ तब तिनकर न एरका लेरे
३५ ॥ भरे मूसल चूर गाथे जे ते ॥ बज्र समांन सिंध त
ट हे ते ॥ तेई सकल कर न कर लीने हठ सों युध हि
को धहि कीने ॥ ३६ ॥ रां मक्ति श्रबकन्नां तनिवारे
पर ते मूरष कछु नहि विचारे ॥ राम क्रिश्न को रिपक
रि जांने ॥ युध बुध अंतर गत ठांने ॥ ३७ ॥ तब आपहि
कीयो तिन कोप ॥ कीयो चहे हैं सभहन को लोप ॥ तब
एरका करन तिन लीरे ॥ थोरे मांहि सभ [illegible] सम कीरे
रे ॥ ३८ ॥ विप्र आप अछादत करे ॥ हरि माया अवि

चारस नहि रे ॥ पावक क्रोध प्रगट तब भयो ॥ बांस
विप्र कुल जर भर मुयो ॥ ३९ ॥ तब कुल नास स
कल हरि देष्यो ॥ भू को भार उतार्यो लेष्यो ॥ जां का
रण लीनो अवतार ॥ सो पर हर्यो धरन को भार ॥ ४०
तब समुद्र तट मैं बलभद्र ॥ कीनो ब्रह्म ध्यान अत
भद्र ॥ आप हि ब्रह्म मांहि लेराष्यो ॥ मांनवंद हहू
रकर नाष्यो ॥ ४१ ॥ रांम पियां न लष्यो हरि जब ही ॥
लघ पीपल तल बैठे तब ही ॥ निरमल रूप चतुर
भुज धार्यो ॥ दस हूं दिस को तिमर निवार्यो ॥ ४२
जूं विधूम पावक परकास ॥ ऐसे प्रगट भयो उजा
स ॥ पीत वसन होइ तन घन स्यांम ॥ तपत सरन सो
भत अभिराम ॥ ४३ ॥ सुंदर हास सहित मुष प्रिया
कवल नैन सो ताके भया ॥ करनन कुंडल मकराका
कार ॥ सीस मुकट सो भा अधिकार ॥ ४४ ॥ श्यांम व
रन अत केस विसाल ॥ उर भ्रिगलता मणि बन
माल ॥ कंठ सूत कट सहित बिराजे ॥ छुद्र घंट का
नूपर बाजे ॥ ४५ ॥ वस्त्र आभूषण भूषत अंग ॥ दे
षत मोहे अमित अनंग ॥ आयुध सूरत वंत समस
त ॥ सिमरत जिन हि होइ मै अस्त ॥ ४६ ॥ उत मसक

लचरनअनरकत॥ जिनकौं उरध्यांवैं निजभगत
दषराजं घानीचेकस्यो॥ वांमचरन ताऊपरधर्‍यो
४७॥ यौं निसचल ह्वैइ बैठे क्रिस्न॥ सिमरत जि
सहि [illegible] मिटे सकल त्रिसन॥ अतलघमूसलषंभ
जोरह्यो॥ जलमैं डार्‍यो मछहि गह्यो॥ ४८॥ सोवह
मछजालमें आयो॥ ताके उदर लोहि सो पायो॥ ज
राव्याध कलका सो कीनो॥ लेकर सर के आगे दी
नो॥ ४९॥ सो वह व्याध जु तोबन मांहीं॥ हरिको प
द तिन जांन्यो नाहीं॥ हरिको चरन द्रिष्ट जब पर्‍यो
म्रिग मुष जांन घात [illegible] तिन कर्‍यो॥ ५०॥ सोई बांण
लगायो चरण॥ विप्रबचन नही मिथ्या करन॥
सो वह बधक निकट चल आयो॥ रूप चतुरभुज
दरसन पायो॥ ५१॥ चरन लग्यो जब देष्यो बांण॥
जरा व्याध भयो तब म्रितक समांन॥ चरनन पर
बोले भैभीत॥ कंपत अंग लग्यो ज्यों सीत॥ ५२॥ दे
अन मैं कीनो अपराध॥ तुम नहिन जांनियो मूरष
व्याध॥ यह मैं कीनो सकल अजांने॥ बांण लगायो
म्रिग मुष मांने॥ ५३॥ यह अपराध हि तुम ही टारो
जो तुम नाम लीये तें तारो॥ तुम सिमरत सब पाप

बिनासे॥ मिटे अग्यांन ग्यांन परकासे॥५४॥ ब्रह्मा आ
दिक रैं आराध॥ तिनको मैं कीनो अपराध॥ तांते प्रज
जीविल मन करो॥ मो पापी के प्रांन हरो॥५५॥ जां
ते बडे रौंको ऊ करे न ऐसे॥ यह अपराध कर्‍यो मैं
जैसे॥ जिनकी माया को विसतार॥ ब्रह्मा शिव सन
कादि कुमार॥५६॥ और श्रुति तंत्रि छांहैं जेते॥ कोऊ ही
जांन सकैं नहीं तेते॥ मो हत सकल ऊ मारी माया
जांते किनहूं पार न पाया॥५७॥ तिन मो पाप जांन
ह मजे ते॥ कौं न ग्यांतकर जांने ते ते॥ तांते अब हू जी
ने विचारो॥ बेग मोहि पापी कौं मारो॥५८॥ ऐसी ज
रा व्याध की बांनी॥ सुनी निह कपट सारंगपांनी॥
तब हि आप प्रजवचन उचारे॥ तांते सकल सोक
मै टारे॥५९॥ श्री जगवांनोवाच॥ उठउठजरा ऐय
ह मत मांने॥ अपनो कर्‍यो पाप मत जांने॥ यह स
म सत ली ला है मेरी॥ या मैं कहा श्राक तहै तेरी॥६०॥
मेरी क्रिपा जाउ उम सरग॥ जहां महां सुष नहीं उप
वरग॥ ऐसे वचन कहे हरि जब ही॥ ठस्यो बिवांन
सरग ते तब ही॥६१॥ तीन प्रक्रमां अरप्रणांम॥ क
रि के बधिक गयो सुधाम॥ चढ बिवांन सुरलोक हि

गयो ॥ जेजेसबदजहितितहिनयो ॥ ६२ ॥ तबरथली १८०
रेसारथीदेषै ॥ परहरिजीकौंकहूंनपेषै ॥ उलसीगं
धपवनजबपायो ॥ तांकेषोजक्रिआपेआयो ॥ ६३ ॥
पीपलमूलकीरेहैंआसन ॥ प्रज्ञामांनोससिसूरजा
तासन ॥ आयुधआगेमूरतवंत ॥ यौंनिजपतदेषे
भगवंत ॥ ६४ ॥ तबदारूकधीरनहीकर्यो ॥ रथ
तजबिहबलचरननपर्यो ॥ उमग्योहिरदैनैनज
लछायो ॥ प्रेममगनमुषबैननआयो ॥ ६५ ॥ तबक
रिधीरजआंसूंनिवारे ॥ हिरदैअंतरज्ञानविचारे ॥
करुणासहिततिवेचरननदेषै ॥ तेइपलककलप
समलेषै ॥ ६६ ॥ तबतेनदृष्टिमैपैयो ॥ सन्नद्रुष
रेकवारआंननयो ॥ मूलदिसानकहूंसुषपायो ॥
ज्यौंउडपतनिसमाहिछपायो ॥ ६७ ॥ तुमबिनमैज्यौं
तनबिनप्रांन ॥ जैसेनैनअंधबिनग्यांन ॥ ऐसेवच
नकहतहीसूत ॥ देष्योचलतरेकअदभूत ॥ ६८ ॥
गगनहूंतेउतमरथआयो ॥ हयनसहितअरगरुड
सुहायो ॥ मूरतमैहरिआयुधजेते ॥ रथमैंजाइचढे
समतेते ॥ ६९ ॥ यहचारित्रदारुकजबदेष्यो ॥ तब
हरिसूतहिवचनसुनायो ॥ करसनमांनदुषविस

विमलमततयोश्रवंसताहिवि

रायो ॥ ७० ॥ श्रीभगवांनोवाच ॥ सूतद्वारकाकों उधजा
वो ॥ समाचारसब जाइसुनावो ॥ सबकों मरना रा
मनिजजांनो ॥ अरु मेरो अबकरतपियांनो ॥ ७१ ॥
द्वारावती रहै मतकोई ॥ तनकोधरे जहां लौं जोई ॥
यह नरलोक तजों मैं जबही ॥ सिंधुद्वारकाबोरे तब
ही ॥ ७२ ॥ हमरे मातपितासब जेई ॥ लेअपने लोक
नतेसेई ॥ दिलीलेजइहो अर्जुनसंग ॥ रहै द्वारकाके
है जंग ॥ ७३ ॥ तिनकों यह संदेससुनावो ॥ यह सम
चरत्र तिनहि समझावो ॥ सबमाया रचना यह जांनो
नांनां रूप मिथ्या सब मांनो ॥ ७४ ॥ बिना अंगरनांना
सबरूप ॥ निसचलजांनो मोहअनूप ॥ जहां तहां
व्यापक मोहिजांनो ॥ नामरूप सबमाया मांनो ॥ ७
५ ॥ मेरे चरननिरंतरजजो ॥ दूजी सकलवासना त
जो ॥ ऐसे होइ आवो मो मांही ॥ जांते फिर दुषपावो
नाही ॥ ७६ ॥ यह सुन सूत कि असों ग्यांन ॥ छोग्यो
सोक मोहि मै अज्ञांन ॥ नमसकार करि वारंवार ॥ प्र
दषणा देइ विविधप्रकार ॥ ७७ ॥ हरिविजोगतें अ
त दुषपायो ॥ ग्यांन विचार चित ठहरायो ॥ हरिके
चरनकवल उरधारे ॥ तबदारकद्वारका पधारे

२४॥ दोहरा॥ यह न्रिप पैं तो सों कह्यो यदऊल को सं
घार॥ अब नां षों हरि को गवन अरु हरिजन उर
धार॥ २५॥ इति श्री भागवते महांपुरांणे एकादस
सि स्कंदे श्री क्रिस्न उधव संबादे यदऊल संघार व
रननं नाम तीसमों अध्याइ॥ ३०॥ ॥ श्री शुकदेवो
वाच॥ ॥ तब ब्रह्मा सनकादिक लीये॥ भ्रिगादिक
न तथा संग कीये॥ सहित भवांनी शंकर देव॥ इं
द्रादिक सुर संग उपदेव॥ १॥ विद्याधर किंनर गं
ध्रव॥ पितर महीधर चारण सरब॥ गरड लोक पं
षी अर सिध॥ हरि के दरसन कों म नाबिध॥ २॥ स
भ मिल हरि के दरसन आये॥ सभ दृग न हरि के दर
सन पाये॥ हरि के जनम करम गुन गावै॥ सभ मि
ले जैजै सबद सुनांवैं॥ ३॥ सकल बिवांनन छायो
गगन॥ वरषैं पुसप प्रेम कर मगन॥ वारंवार क
रैं प्रणांम॥ मुष तैं भाषें हरि को नाम॥ ४॥ ब्रह्मादी
क सभ ब्रह्म विभूत॥ क्रिश्न हित तिनकी उदभू
त॥ दिस मसत देषैं भगवांन॥ नैंन मूंद तब गंम्यो
ध्यांन॥ ५॥ ब्रह्म अरु आपरोक करि ध्यायो॥ चेतन्या
वस भरपूर वहायो॥ निज तन लोकन को अभिरां

म॥ ध्यांनधारणां मंगलधांम॥ ६॥ तांको आगनधार
णांधरी॥ आगन उपाइ जसमसो करी॥ तबहरि
जीबैकुंठसिधारे॥ याविधसन्नकेकारजसारे॥
७॥ तबकुंदभेरीवाजेसुरलोक॥ उपजोहरषमि
टेसबसोक॥ सतअरधीरजकीरतधरम॥ सोना
अरजैउतमकरम॥ ८॥ तेसनगरेसंगजगदीस
जांतेहरिसनहनकेईस॥ तांतेजहांकथाहरिजी
की॥ पूजाध्यांनधारणांनीकी॥ ९॥ तहांसमसतर
हैतेईते॥ सत्यादिकसन्नविधजेईते॥ ब्रह्माआदि
सकलसुरजेते॥ हरिकीगतनहीजांनेतेते॥ १०॥ ह
रिवैकुंठप्यांनोकस्यो॥ सोकिनहूंकोजांननपस्यो
कहूंनहीतनहरिकोदेष्यो॥ बनोअचंभासनद
नलेष्यो॥ ११॥ जैसेमेहिहोइआकास॥ अरदांम
नप्रगटेघटपास॥ होइकरिप्रगटगुपतहोइ
जावै॥ तांकोषोजनकोईपावै॥ १२॥ त्योंहरिकी
योपियांनोजबहीं॥ कहूंनहरितनदेष्योतब
ही॥ नूमैंप्रगटहुतेतबदेष्यो॥ गुपतभरोकिन
हूंनहींपेष्यो॥ १३॥ हेन्रिपरोहअचंभानांही॥
सकतअनंतसदाहरिमांहीं॥ यदकुलमैंहरि

कोअवतार॥ अरकरबोनांनां विविहार॥१४॥सो
समसत मायाकरजांनो॥ हरि कीत्राकतहेतसब
मांनो॥ हरिजीसदारोकरसरहै॥ करमनकरेज
नमनहीगहै॥१५॥ औरेकरमकरतसबजांनें॥ज
थांनमलीहरिजीकोमांनें॥ ऐसबदेहनकोविवहार
हरिजीइनसबहनतेंपार॥१६॥जैसेनटबाजीवि
सतारे॥बकरोंआपिसकलनिवारे॥ बाजीगरसब
हनतेंन्यारा॥योंहीहरिकेकरमअवतारा॥१७॥ज
नहरिरच्योत्रिगुनसंसार॥ नांनांभांतप्रगटआका
र॥ आपप्रवेसकीयोतिनतिनमैं॥सबवरतांबि
नासेजनमैं॥१८॥अंतआपकेआपहिरहै॥त्योंही
इनअवतारनगहै॥ गुरकोम्रितकपुत्रजिनआंन्यो
कालम्रितकोगरबनहिमांन्यो॥१९॥ ब्रह्मरासत्र
तेंउमहिबचायो॥ बंधकसरगहिदेहपठायो॥ ते
जोअपनीरष्याकरते॥ तोतनकोकाहेपरहरते॥
२०॥ सबजगकीउतपतप्रतपाल॥नासकरेजिनको
सदकाल॥ असोसकललक्षकतभेदेवा॥ब्रह्माआ
दिकरेंसबसेवा॥२१॥ हरिबिकोधरनीकोभार॥
धर्योक्रतोमांनुषअवतार॥ तांसोंतूकोभारउ

तारयो॥ पीछे वहीहूरकर मारयो॥ २२॥ ज्यूं कांटोला
गोपग मांही॥ सो कांटे बिन निकसै नांही॥ कांटेका
औ कांटा जब ही॥ आही नारदी यो पुन तब ही
२३॥ त्यों हरि स्मृतक देहकूं राषै॥ निजानंद सौं
कूं कर नाषै॥ अरपैकै अतही अज्ञांना॥ तिनकौं
प्रगट दिषायो ज्ञांना॥ २४॥ योग साधक रि राषैं
देह॥ पुरषारथ कर मांनें रोह॥ सकल विकारन
कौ आगारा॥ तांको राषत तजे सुषसारा॥ २५॥ तांते
तिनको मोहि मिटायो॥ देह तजे तें ब्रह्म बतायो॥
ऐसे तनको कीयो अनादर॥ तांतें को ई करे न आद
क र॥ २६॥ तांतें हरि बैकुंठ पधारे॥ बाजी ज्यूं देहादि
निवारे॥ ब्रह्मा रुद्र इंद्रादि जे ते॥ देषि पियां नोंहरिको
तेते॥ २७॥ विसमति नरा क्रिस्न गुन गांवै॥ अपने
अपने लोक न जांवै॥ जो हदि चलित्र पढे उठ प्रात
देव क्रिस्न की निरमल जात॥ २८॥ सो हरि उनगत क्रि
सन की पावै॥ तांतें क्रिस्न लोक में जावै॥ हरि द्वारक
धारका पगयो॥ सो वसदेव न्रिप पै आयो॥ २९॥
क्रिस्न बिजोग व्याकुल मन जिनको॥ कहा वचन ले
कहिहों तिनको॥ तिन दोनोंके चरनन परे तब सा

रथीवचनउचेरे॥३०॥आंसूप्रवाहचलैनैंननतें
अतव्याकुलअटपटबैंननतें॥जबयदकुलको
नाससुनायो॥अरबलकोनिजजांनजनायो॥३१
यौंसुनसोकतपतअतिभये॥करतविलापप्रना
सहिगये॥तहांजाइहरिकोनहीदेख्यो॥तबबै
कुंठगयेकरलेख्यो॥३२॥तबदेवकीरोहणीवसु
देव॥उग्रसैंनराजानरदेव॥हरिविजोगतेंउपज्यो
सोक॥तांतेचहैंतजोनरलोक॥३३॥रांमक्रिश्नको
ऐसोबियोग॥जांतेमिट्योदेहसंजोग॥बालजुवती
तबबोलेसन्नदेह॥अगनप्रवेसकीयोअतनेह
३४॥वसदेवहिलेषोडसनारी॥कीयोसहिगवन
म सुचिंतनिवारी॥प्रदुमनआदिजहांलोंजेते॥ति
नकीत्रियनलीएसनतेते॥३५॥सनहनकोअत
क्रिश्नबियोग॥तांतेकीयोअगनिसंजोग॥हरिकी
अबलाजहांलोंजेती॥रुकमनआदितहांलौंतेती
॥३६॥हरिकोरूपहिरदैमेंधार्यो॥अगनप्रवे
ससननमिलकर्यो॥अरजुनपरमसषाहरिजी
को॥क्रिश्नबियोगपरहारकजीयको॥३७॥तांते
अरजुनबकुकषपायो॥क्रिश्नग्यांनतबहिरदैआ

यो॥गीतामांहिकह्योहरिग्यांन॥मिथ्यादेहसतत्तनगा
वांन॥३८॥ऐसेंबहुबिधग्यांनविचार्‌यो॥क्रिश्न
बियोगसोकसनटार्‌यो॥आपआपमेंमारेजेते॥
अपनेबंधग्यातसनतेते॥३९॥जिनकोजोपिंडन
कोदूंना॥म्रितक्रियाजेतीबिधनांनां॥साईसोअ
रजुनसनकरी॥क्रिश्नप्रीततेंनहिपरहरी॥४०
तबद्वारकाक्रिश्नबिनभई॥साइरबोरपलकमें
लई॥केवलहरिजीकेग्रहिजेते॥तूंहीरहेसक
लसनतें॥४१॥नितविवहारतहांहरिजीको॥सां
भरतसुनतउधारनजीको॥मंगलसकलमंगल
नकेरे॥त्रिभवनसुखनितहोवेचेरे॥४२॥इसत्री
बालब्रिधहैंजेते॥भरतभरतउबरेथेकेते॥तेअ
रजुनदिलीलेआयो॥समाचारपांडवनसुनायो॥
४३॥उभरेसकलपिताहमजेते॥क्रिश्नपियांनो
सुनकरितेते॥उमहिवंसधरराजाकीयो॥मथुरा
तिलकवजरकोदीयो॥४४॥तेसनतजउतरदि
सगरी॥क्रिश्नहिपाइक्रिश्नमेंनरी॥जोयहहरि
जीकोअवतार॥जामेंकरमअरगुननिसतार॥४५
तिनकोकहेसुनेनरजोई॥सनपापनतेंछूटेसोई

याबिधजेहरिकेअवतार॥ बालापनतेंकरमअपा
र॥४६॥ लोकवेदमेंप्रगटजेते॥ गावेसुनेविचारेते
ते॥ तबतेंलहिहेपरमानंद॥ मिलेक्रिश्नछूटेदुष
दंद॥४७॥ दोहरा॥ यहहरिकोअवतारमेंतुमसों
कह्योसुनाइ॥ यांकोकहेसुनेजोनरनाराइणपेजा
इ॥४८॥ चोपई॥ ब्रह्मनिरीहनिरंजनसांमी॥ सकललो
ककेअंतरजांमी॥ जगतनहेतधरेअवतार॥ नांनां
मांतकरेउधार॥ ४९॥ तिनमेंक्रिश्नसुयंभगवांन
ग्यांनक्रियासचआकृतप्रधांन॥ जिनकेगुणनकह्यो
सुकदेव॥ सुनततस्योपरीषतनरदेव॥५०॥ जिन
केनामलीऐनवनाहीं॥ लेकरिराषेनिजपदमांही
ऐसेक्रिश्नजगतकोवित॥ नमसकारतिनप्रभुको
नित॥ ५१॥ तेअबसंतदाससेनाम॥ देहधरेजीवन
केकांम॥ क्रिपानिधांनजगतकरवावे॥ अपनीआ
कतहिरदेमेंल्यावे॥५२॥ ऐसीबिधजवदुषमिटा
वें॥ अपनेपरमपदहिपहुचावें॥ क्रिश्नरूपतिन
ग्यांनसुनायो॥ उधवजननिजपदपहुचायो॥५३॥
सोलेकह्योसंसक्रितव्यास॥ तांतेहोइनअरथप्रका
स॥ जोपंडितपेजांनेकोई॥ दूजोकदेनजांनेसोई॥५४

तांतेतिनअबकरयांकरयांकीनी ॥ मोसेवककों
आग्यादीनी ॥ सजलोकनकोहितमनधारी ॥ म
मउरहोइभाषाउचारी ॥ ५५ ॥ यांकोवाचेअरु
जोसुनावै ॥ ध्यांनधरेऊंचेसुरगावै ॥ तेतेलहैंग्यां
ग्यांनवैराग ॥ प्रेमभगतहरिकोअनराग ॥ ५६ ॥
प्रेमप्रवाहमगननितरहै ॥ भवदावागनकदे
नदहै ॥ असेहोइकरिब्रह्मसमावै ॥ निजानंदज
गतनहीआवै ॥ ५७ ॥ कबहूंकरेकांमनांजोई ॥ यां
तेंलहैजोचाहैसोई ॥ तांतेजेजेहोंइसकाम ॥ अरु
जेवडभागीनिसकांम ॥ ५८ ॥ तिनसज्जनकोभा
षाएह ॥ जुगतअरमुकतकोयहगेह ॥ तांतेयांसों
कीजेप्रीत ॥ यहहीसजनसंतनकीरीत ॥ ५९ ॥ संब
तसोरहसेअरबांवन ॥ जेष्टसुकलषष्टमीथित
जांवन ॥ संतदासगुरुआग्यादीनी ॥ चतुरदासय
हभाषाकीनी ॥ ६० ॥ दोहरा ॥ परमग्यांनप्रगट
कस्योममघटहोइजिनदेव ॥ तेमेरेउरनितवसें
संतदासगुरदेव ॥ ६१ ॥ इतश्रीभागवतेमहांपुरांणे
ऐकादसस्कंदे श्रीशुकदेवपरीक्षतसंबादे श्रीकि
स्नविंयांनोनामइकतीसमोअध्याइ ॥ ३१ ॥ इतश्रीऐका

दससिकंदसमापतं॥ टीकादससत्रीकंदयहकरम
जगतिअरजांन॥ पढेसुनेजोप्रीतसोंपावैपदनि
रबांण॥१॥ मोतीरांमलिषतकीयोबैठश्रीमुलतांन
अष्यरगुरमुषीतेशास्त्रीकीनेपरमसुजांन॥१॥ ॥
अथसिमरणकोअंगलिषते॥ गरीबनमोनमो
सतपुरषकूं॥ निमसकारगुरकीनहीं॥ सुरन
रमुनजनसाधवा॥ संतोसरवसदीनहीं॥१॥
सतगुरसाहिबसंतसत्त॥ मं जोतंपरनाम॥ आ
गेपीछेमधहूए॥ तिनकोंजांऊरबांन॥२॥ नि
राकारंनिरविषंकालजालभैभंजनं॥ निरले
पंनिजनिरगुनं॥ अकलअनूपबेसुनधुनि
३॥ सोहंसुरतसमापतं॥ सकलसमांनानिरत
लै॥ उजलहिरंबरहरदमं॥ बेपरवाहिअथा
हिहै॥ वारपारनहीमधतं॥४॥ गरीबऐसा
अबगतरामहै॥ आदिअंतनहीकोइ॥ वार
पारकीमतनही॥ अचलहिरंबरसोइ॥१॥
गरीबऐसाअबगतरामहै॥ अगमअगोच
रनूर॥ सुनसनेहीआदिहै॥ सकललोकभ
रपूर॥२॥ गरीबऐसाअबगतरामहै॥ गुन

इंद्रीमें न्यार॥ सुनसंनेहीरमरह्या॥ दिलअंद
रदीदार॥३॥ गरीबअैसाअबगतरांमहै॥ अ
परमपारअनादि॥ कादरकौंऊरबांनहै॥ वा
रपारनहीथाहि॥४॥ गरीबअैसाअबगतरा
महै॥ कादरआपकरीम॥ मीरांमालिकमिह
रबांन॥ रमतारामरहीम॥५॥ गरीबअलह
अबगतरांमहै॥ बेचगूनचितमांहि॥ सबद
अतीतअगाधहै॥ निरगुनसुरगुननाहि॥६॥
गरीबअलहअबगतरामहै॥ बेचगूंननिर
बांन॥ मौलेमालिकहैसही॥ महलमढीनही
थांन॥७॥ गरीबअलहअबगतरांमहै॥ नि
रधारंआधार॥ नांवनिरंतरलीजीऐ॥ रूमरू
मकीलार॥८॥ गरीबअलहअबगतरामहै
निरबांनीनिरबंध॥ नांवनिरंतरलीजीऐ
ध्यांनचकोरंचंद॥९॥ गरीबअलहअबग
तरामहै॥ कीमतकहीनजाइ॥ नांवनिरंत
रलीजीऐ॥ मुषसैंकहैनसुनाइ॥१०॥ गरीब
अलहअबगतरामहै॥ निरबांनीनिरबंध॥
नांवनिरंतरलीजीऐ॥ जांहिलमिलमीनस

मुंद॥११॥गरीबदहूंदीनमधऐकहै॥अलहअ 
लेषपिछांन॥नांवनिरंतरलीजीये॥जगतहेत
उसमांन॥१२॥गरीबअष्टकवलदलरामहै॥बा
हरभीतरराम॥पिंडब्रह्मंडमैंरांमहै॥सकल
ठौरसतनांम॥१३॥गरीबसकलषियापीसुर
तिमैं॥मनपौंनागहिराष॥रूमरूमधुनहोत
है॥सतगुरबोलैसाष॥१४॥गरीबमूलकवल
मैंरामहै॥स्वादचक्रमैंरांम॥नाभकवलमैंरांम
है॥हिरदेकवलविश्रांम॥१५॥गरीबकंठकव
लमैंरामहै॥त्रिकुटीकवलमैंराम॥सहंसकव
लदलरामहै॥सुनिबसतीसतनांम॥१६॥गरी
बअचलअभंगीरामहै॥गलतांनादमलीन॥
सुरतिनिरतकेअंतरे॥बाजेंअनहदबीन॥१७
गरीबरामकह्यातोक्याहूवा॥उरमैंनहीअकी
न॥चोरमुसैंघरलूटहीं पांचपचीसौंतीन
१८॥गरीबऐकरामकहंते रांमहैं॥जिनकेदी
लहैऐक॥बाहरभीतरभरम्हा॥पूरनब्रह्म
अलेष॥१९॥गरीबरांमनामनिजसारहै॥मू
लमंत्रमनमांहि॥पिंडब्रह्मंडसैंरहितहै

जननीजायानांहि ॥२०॥ गरीबरांमरटतनहींढी
लकर ॥ हरिदमनांवउचार ॥ अमीमहारस
पीजीए ॥ योहततबारंबार ॥२१॥ गरीबकोट
गऊजेदांनदे ॥ कोटयग्यजोनार ॥ कोटकूप
तीरथषनें ॥ मिटेनहींजंमसार ॥२२॥ गरीबको
टिकतीरथबतेकर ॥ कोटगजकरदांन ॥ को
टअसविप्रोंदीए ॥ मिटेनषेंचातांन ॥२३॥ गरी
बपारबतीकैउरधरया ॥ अमरभईछिनमांह
सुकदेकीचौरासीमिटी ॥ निरालंबनिजनाव
॥२४॥ गरीबअगमअनाहदभुमहै ॥ जहांनाव
कौदीप ॥ ऐकपलकबिछरैनहीं ॥ रहतानैंनो
बीच ॥२५॥ गरीबसाहिबसाहिबक्याकरैं ॥ सा
हिबहैपरतीत ॥ भैससीगसाहिबभया ॥ पं
फेगावैगीत ॥२६॥ गरीबरामसरीषासंतहै ॥
संतसरीषेसंत नांवसरीषानांवहै ॥ नहींआ
दिनहींअंत ॥२७॥ गरीबमहिमासुनिनिज
नांवकी ॥ गहेद्रोपतीचीर ॥ दूसासनसेपच
गये ॥ अंतनआयाबीर ॥२८॥ गरीबसेतबंधा
पाहनतरे ॥ गजपकडेथेग्राहि ॥ गनकाचढी

बिवांनमें ॥ निरगुननाममलाह ॥ २९ ॥ गरीबबा
रदढुरीकबीरके ॥ जगतिहितकेकाज ॥ सेऊकूं
तोसिरदिया ॥ बेचबंदगीनाज ॥ ३० ॥ गरीबकहां
गोरक्षकहांदतथे ॥ कहांसुषदेकहांब्यास ॥ ज
गतिहितसेंजांनियां ॥ तीनलोकपरकास ॥ ३१
गरीबकहांपीपाकहानांमदे ॥ कहांधंनाबाजी
द ॥ कहांरैदासकमालथे ॥ कहांथेफकरफरी
द ॥ ३२ ॥ गरीबकहांनानिकदादूऊते ॥ कहांज्ञां
नीहरदास ॥ कहांगोपीचंदभरथरी ॥ ऐसजन
सतगुरपास ॥ ३३ ॥ गरीबजंगीचरपटऊते ॥ कहां
कहांअधमसुलतांन ॥ जगतहेतपरगटजन
ए ॥ सतगुरकेपरवांन ॥ ३४ ॥ गरीबकहांना
रिदप्रहलादथे ॥ कहांअंगदकहासेस ॥ क
हांजनजीछनधूऊते ॥ जगतिहिरंबरपेश
३५ ॥ गरीबकहांजेदेथेकपलमुन ॥ कहांरा
मानंदसाध ॥ कहांडरबासाक्रिज्ञानथे ॥ जग
तिआदिअनादि ॥ ३६ ॥ गरीबकहांब्रह्माअ
रबिंदथे ॥ कहांसनकादकचार ॥ कहांशिवजू
अरबिज्ञानथे ॥ जगतहेतदीदार ॥ ३७ ॥ गरी

बअैसा निरमल नांव है॥ निरमल करै सरीर॥ श्री
रग्यांन मंमलीक हैं॥ चकवे ग्यांनक बीर॥३८॥ग
रीब रांम नाम सद नेपीया॥ बकरेके उपदेस॥
अजामेल से ऊधरे॥ जगत बंदगी पेस॥३९॥ग
रीब नांव जलंधर कूं लीया॥ पारि षपर बांन
धन सतगुर दाता धनी॥ दई बंदगी दांन॥४०॥
गरीब गगन मंमल में रहित है॥ अबनासी आप
अलेष॥ जुगन जुगन सत संग है॥ घर घर षेलै से
ष॥४१॥गरीब काया माया षंम है॥ षंम राज अर
पाट॥ अमर नांव निज बंदगी॥ सतगुर सैं जई सा
ट॥४२॥गरीब अमर अनाहद नांव है॥ निरलेप
परमपार॥ रहतार मतारां महै॥ सतगुर चरनजु
हार॥४३॥गरीब अबिनासी निहचल सदा॥ क
र ताकों ऊरबांन॥ जाप अजपा जपत हैं॥ गगनि
मंमल धर ध्यांन॥४४॥गरीब बिन रसनां के बंद
गी॥ बिन चिसमां दीदार॥ बिन स्रवन बांनी सु
ने॥ निरमल तत निहार॥४५॥गरीब मैं सौदाग
र नांव का॥ टांडे पस्या बहीर॥ लदते लदते ला
दीये॥ बकजरन केरा बीर॥४६॥गरीब नांव बि

नाकयाहोतहै॥जपतपसंजमध्यांन॥बाहरअंतर १५८
मैंमांनवी॥अभिअंतरमैंजांन॥४७॥गरीबउज
लहिरंबरजगतहै॥उजलहिरंबरसेव॥उज
लहिरंबरनांवहै॥उजलहिरंबरदेव॥४८॥
गरीबनावबिनानिपजैनही॥जपतपकरहै
कोट॥लषचौरासीत्यारहै॥मूंडमुंडायाघोट
४९॥गरीबनांवसरोवनसारहै॥सोहंसुरतल
गाइ॥जांनगलीचैबैठकर॥सुनसरोवरन्हा
इ॥५०॥गरीबमांनसरोवरन्हाईये॥हंसपर
महंसकामेल॥बिनाचुंचमोतीचुगें॥अगम
अगोचरषेल॥५१॥गरीबगगनिमंडलमैंर
मरह्या॥गलतांनामसहमूब॥वारपारनहीछेव
है॥अबचलमूरतखूब॥५२॥गरीबअैसासत
गुरसेईये॥जोनांवदिढावै॥जरमीगुरूवाम
तमिलो॥जोमूलगवावै॥५३॥गरीबसोहंसुर
तिलगाइले॥सुनइंद्रीसैंबंच॥नांवलीयातब
जांनीये॥मिटैसकलपरपंच॥५४॥गरीबनांव
निहचलनिरमला॥अनंतलोकमैंगाज॥निर
गुनसुरगुनक्याकहूं॥प्रगटयासंतोकाज॥५५

गरीबअबिनासीकेनांवमें॥कौंननांवनिज
मूल॥सुरतिनिरतसेंषोजले॥बासबनीअ
कफूल॥५६॥गरीबफूलसहीसरगुनकह्या
निरगुनगंधसुगंधि॥मनमालीकेबागमें॥
दल जवररह्याकहांबंध॥५७॥गरीबजवरबि
लंब्याकेतगी॥सहंसकवलमांहि॥जहांनां
वनिजमूलहै॥मनमायातहांनांहि॥५८॥
गरीबपंजतकोटअनंतहैं॥ग्यांनीकोटअनं
त॥सुरताकोटअनंतहैं॥बिरलेसाधूसंत॥
५९॥गरीबजिनमिलतेंसुषऊपजै॥मिटेंको
टउपाध॥जवनचउरदसढूंढीये॥परमसने
हीसाध॥६०॥गरीबरामसरीषेसाधहैं साध
सरीषेराम॥सतगुरकौंसिरदाकरो॥जिनदी
कांनिजनांव॥६१॥गरीबजगतबंदगीजोग
सच॥ग्यांनध्यांनपरतीत॥सुनसिषरगढमेंर
है॥सतगुरसबदअतीत॥६२॥गरीबऐसा
सतगुरसेईये॥पारउतारेहंस॥जगतमुकत
कीदातसें॥मिलहैसोहंबंस॥६३॥गरीबसो
हंबंसबषांनीये॥बिनदमदेहीजाप॥सुरत

निरतसैंअगमहै॥ लेसमाधगरगाप॥६४॥गरी
बसुरतिनिरतमनपवनपर॥सोहंसोहंहोइ॥
रूपोमंत्रगोरजकह्या॥अमरजईहैसोइ॥६५
गरीबररंकारतोधुनिलगे॥सोहंश्रुतिसमाइ
हदबेहदपरबासहोइ॥बाहुरनआवैजाइ॥
६६॥गरीबगुऊंगाइत्रीनावहै॥बिनरसनाधु
निध्यांन॥महिमासनकादिकलही॥रूपोशंक
रबलजांव॥६७॥गरीबअजबमहलबारीक
है॥अजबसुरतबारीक॥अजबनिरतबारी
कहै॥महलधसीबिनबीक॥६८॥गरीबराम
नामकेपटतरे॥देबेकोंनहीऔर॥सोउदमता
दिनतरे॥अमरकरीजदगोर॥६९॥गरीबसु
कदेसुषमेंऊपजे॥राईसीगससोइ॥मोनाथ
अरसिधचौरासी॥संगउपजेथेदोइ॥७०॥गरी
बअैसारामअगाधहै॥अबिनासीगहिरगंभी
र॥हदजीवोंसैंहरहै॥बेहदीयोंकेतीर॥७१॥ग
रीबअैसारांमअगाधहै॥बेकीमतकरतार॥
सेससहंसफुनिरटतहै॥अजोंनपायापार॥७२
गरीबअैसारांमअगाधहै॥अपरमपारअथा

है॥ उर मैं कित समष्या लहै॥ सो लेअ लष अलाह
७३॥ गरीब ऐसा रांम अगाध है॥ निरलै निहच
ल थीर॥ अनहद नाद अषंड धुनि॥ तन मन
नहीं सरीर॥ ७४॥ गरीब ऐसा राम अगाध है
बाजीगर जगवंत॥ निरसिंध निरमल देषि
या॥ वार पार नहीं अंत॥ ७५॥ गरीब पारब्रह्म
बिन परष है॥ कीमत मोल न तोल॥ बिना तु
जन अनराग है॥ बजरंगी अनबोल॥ ७६॥ ग
रीब महिमा अबगति नांव की॥ जांनत बिर
लै संत॥ आठ बषत धुनि ध्यांन है॥ मुनिजन र
टैं अनंत॥ ७७॥ गरीब चंद सूर पांनी पवन॥ ध
२ रनी धौल अकास पांच तत तहां जबडे॥ बिजम
तेदार षवास॥ ७८॥ गरीब काल करम करै बं
दगी॥ महां काल अरदास॥ मन माया और ध
रमराइ॥ सच सिर नांव उपास॥ ७९॥ गरीब का
ल फेरे कर तार सें॥ मन माया का नास॥ चंद नअं
ग पलटे सधे॥ इक षाली रहि गया बांस॥ ८०॥
गरीब सजन सलौंना रांम है॥ अबगत अंतन
जाइ॥ बाहर भीतर ऐक है॥ सब घट रह्या समा

दू॥८१॥गरीबसजनसलौंनारांमहै॥अचल 
अजंगीऐक॥आदिअंतिजाकैनही॥जांकातूं
हींदेष॥८२॥गरीबसजनसलौंनारांमहै॥
अचलअजंगीअैंन॥मह्हिमांकहीनजातहै
बोलेमधरेबैंन॥८३॥गरीबसजनसलौंना
रांमहै॥अचलअजंगीआदि॥सतगुरमहि
रमतासका॥साषजरतसजसाध॥८४॥गरी
बसजनसलौंनारांमहै॥अचलअजंगीपी
र॥चरनकवलहंमारहैं॥हमहैंदांमनगीर
८५॥गरीबसजनसलौंनारांमहै॥अचलअ
जंगीआप॥हदबेहदमैंअगमहै॥जपैअज
पाजाप॥८६॥गरीबअैसाजगलीजोगीया॥
जांनतहैसजषेल॥बीनबजावैमोहनी॥जुग
जंत्रसजमेल॥८७॥गरीबब्रह्मादिकसेमोही
या॥मोहेसेसगनेस॥शंकरकीतारीलगी॥अ
फिगसमाधहमेश॥८८॥गरीबगनगंध्रपज्ञांनी
गुनी॥अजबनवेलानेह॥क्यामहिमांकहूंनां
वकी॥मिटगऐसकलसंदेह॥८९॥गरीबसुन
बदेसीबसरह्या॥हमरेनैंनोमंज॥अलषप

लकमैंषलकहै॥सतगुरसबदसमंझ॥२०॥
गरीबसुनबदेसीवसरह्या॥हमरेहिरदेमांहि
चंदसूरऊगेनहीं॥निसवासरतहांनाहिं॥२१
गरीबसुनबदेसीबसरह्या॥हमरेत्रिकुटीती
र॥संषपदमझनचांदनी॥बांनीकोकिलकी
र॥२२॥गरीबसुनबदेसीवसरह्या॥सहंसक
वलदलबाग॥सोहंध्यांनसमाधधरन॥तरती
बरबैराग॥२३॥गरीबसुमरनतबहीजांनि
ऐ॥जबरूंमरूंमधुनहोइ॥ऊंजकवलमैंबै
ठकर॥मालाफेरेसोइ॥२४॥गरीबसुरतसुम
रनीहाथले॥निरतमिलेनिरबान॥ररंकार
रमतालषै॥असलबंदगीध्यांन॥२५॥गरीब
अष्टकवलदलसुनहै॥बाहरभीतरसुनि॥
रूंमरूंममेंसुनहै॥जहांकालकीधुनि॥२६॥
गरीबउमहीसोहंसुरतहो॥उमहीमनऔपौ
न॥इसमेंइसरकौनहै॥आवैजाइसुकौंन॥२७
गरीबइनमेंइसरकरमहै॥बंधीअविद्यागां
ठ॥पांचपचीसोंलेगई॥अपनेअपनेबांट॥२८
गरीबनांवबिनासूनानगर॥पड्यासकलमें

ओर ॥ लूट न लूटी बंदगी ॥ हो गया हंसा जोर ॥
९९ ॥ गरीब आगम निगम कों खोज ले ॥ बुध बिबेक
बिचार ॥ उदे अस्त का राज दे ॥ तो बिना नांव बि
गार ॥ १०० ॥ गरीब ऐसा कों न अजागीया ॥ कौरे ज
जन कों संग ॥ लोहे सैं कंचन भया ॥ पारस के सत सं
ग ॥ १०१ ॥ गरीब पारस उपरा नांव है ॥ लोहा हम
री जात ॥ जड से तो जड पलिटिया ॥ उमकूं केती
क बात ॥ १०२ ॥ गरीब बिना भगत क्या होत है ॥ धू
कों पूछो जाइ ॥ सवा सेर अंन पावते ॥ अटल रा
दीया ताहि ॥ १०३ ॥ गरीब बिना भगति क्या होत
है ॥ भांवैं कासी करवत लेह ॥ मिटे नहीं मन वास
ना ॥ बहु बिधि भरम संदेह ॥ १०४ ॥ गरीब भगत
बिना क्या होत है ॥ भरमरह्या संसार ॥ रती कंचन
पाया नहीं ॥ रांवन चलती बार ॥ १०५ ॥ गरीब संग
सुदामा संत थे ॥ दालिद्र का दरियाव ॥ कंचन म
हल बखस दीये ॥ इंद लजे टच ढाव ॥ १०६ ॥ गरीब
द्रो कौ नीका जीव था ॥ सैं ना जात गुलांम ॥ भगति
हेत ग्रिह आईया ॥ धरया सरूप हजांम ॥ १०७ ॥ ग
रीब नांमा के बीठल भये ॥ और कलंदर रूप ॥ ग

ऊजिवाईजगतगुर॥पातऱ्याहजर्हांसूप॥१०८
गरीबपीपाकूंपरचाहूवा॥मिलेलगतजगावां
न॥सीतासुधसमा बतरहै॥द्रावतीनिधांन॥
१०९॥गरीबधनाजगतिकीधुनलगी॥बीजदी
याजिनदांन॥सूकाषेतहस्याहूवा॥कांकरबो
ईजांन॥११०॥गरीबरैदासरंगीलारंगहै॥दीये
जनेऊतोड॥यगजौनारचौलेधरे॥ऐकरैदास
इकगोड॥१११॥गरीबमांझीमरदकबीरहै॥
जगतकरैउपहास॥केसोबनजाराजया॥जग
तिबठायादास॥११२॥गरीबसोहंऊपरओर
है॥सतगुरूतइकनांव॥सबहंसोकाबसहै॥
मुनिबसतीनहीगांव॥११३॥गरीबसोहंऊप
रओरहै॥सुरतिनिरतकानाहि॥सोहंअंतर
पैठकर॥सतसुकृतल्यौलाइ॥११४॥गरीबसो
हंऊपरओरहै॥बिनामूलकाफूल॥ताकीगं
धसुगंधहै॥जाकूंपलकनभूल॥११५॥गरीब
सोहंऊपरओरहै॥बिनबेलीकाकंद॥रामरसा
इनपीजीये॥अबचलअतआनंद॥११६॥गरी
बसोहंऊपरओरहै॥कोईइकजांनैभेव॥गा

पगुसांईगैबधुनि॥जाकीकरलेसेव॥११७॥ग
रीबसुरतलगेअरमनलगे॥लगेनिरतधु न
ध्यांन॥चारजुगनिकीबंदगी॥ऐकपलकपर
वांन॥११८॥गरीबसुरतिलगेअरमनलगे॥ल
गेनिरततिसठौर॥ऊंकारबकस्यामिहरकरि
अमरलईजदगौर॥११९॥गरीबसुरतलगेअ
रमनलगे॥लगेनिरततिसमांहि॥ऐकपलकत
हांसंचरे॥कोटपापअघजांहि॥१२०॥गरीबअ
बगतिकीअबगतकथा॥अबगतहैसतख्या
ल॥अबगतिसोंअबगतमिले॥करजोरेतबका
ल॥१२१॥गरीबअमरअनूपमआपहै॥और
सकलसनबंध॥छुछमसैंछुछमसही॥पूरन
पदपरचंद॥१२२॥गरीबअधमउधारनजग
तिहै॥अधमउधारननांव॥अधमउधारनसं
तहैं॥जिनकीमैंबलजांव॥१२३॥गरीबगजग
नकाअरजीलनी॥उपारीप्रेमसहेत॥केतेप
ततउधारिया॥सतगुरगांवैंनेत॥१२४॥गरीब
रांमरसांइनपीजीयै॥योहऔसरयोहदाव॥फि
रपीछैपछतांहिगा॥चलाचलीहोजाव॥१२५॥

गरीबरां मरसोइ नपीजीऐ॥ चौषा फूलचुवाइ
सुनसरोवर हंस मन॥ पीयाऐ मत्र घाइ॥१२६
कहता दास गरीब है॥ बांदी जां म गुलां म॥ तुम
हो तैसी कीजीयो॥ जगति दिंबर नाम॥१२७॥
अथ हैरान को अंग लिष्यते॥ ॥गरीब सीस चरन
बिन चलत है॥ बिना दसत बकसीस॥ बिन ही
रसनां गावतां सो बसे हमारे सीस॥ गरीब सिर
पर तो आकास है॥ चरनो तलै जमीन॥ जाका षो
जे लषा ई रो॥ कहां गया सिंध मैं मीन॥२॥ गरीब
सतगुर षोजल षाई या॥ गुलजारादी या हाथ॥
अजर अमर बिनसे नही॥ संष जुग न जुग साथ
३॥ गरीब कजाति रछा है नही॥ बे ग्यान ही बिसा
ल॥ मनइछा फल देत है॥ कहीं कौ मीकही ला
ल॥ ४॥ गरीब अधर रङली चा अधर घर॥ अधर
बिंब बक तेज॥ अधर मकलाली जीऐ॥ अधर
सिंघासन सेज॥ ५॥ गरीब आधी साषी सिर कटे
सारा सबद न बूझ्या॥ अछर लाष पढे क्या होई॥
मालक तष तन सूझ्या॥ ६॥ गरीब सुरति त्रिति
लागी नही॥ मुष सें जपीया रांम॥ दो जिकथ के

षांहि गा॥ बिना सुरति के कांम॥ ७॥ गरीब आठ प
हिर आगे रहै॥ पलक बिछुर नही जाइ॥ ऐसी मू
रति अजब है॥ तिल मैं रही समाइ॥ ८॥ गरीब म
न बुध मेती अगम है॥ सुरति निरति नही जाइ॥
पिंड ब्रह्मंड सैं न्यार है॥ सो पद षोजि लषाइ॥ ९
गरीब सुंन समां ना गगन मैं॥ गगनि समां ना सुन
पुंन समां ना पाप मैं॥ पाप समां ना पुंनि॥ १०॥ गरी
ब पुंन पाप सैं रहित है॥ सोहं सा निह बीज॥ परम
हंस पूरन पुरष॥ अबगत अलष अछीज॥ ११॥
गरीब पिंड प्रांन नही तास कै॥ दम देही नहीं सी
न॥ नाद बिंद आवै नही॥ पांच पचीस न तीन॥ १२
गरीब पद मजल कै सुंन मैं॥ बकबांनी विसतार
आप झपड दी षुलगया॥ बिन चिस मूं दीदार॥ १३
गरीब नैंन मूंद कै देषले॥ निरगुन झड की लोइ॥
सब जगति मै है रांन हूं॥ एक कहूं अक दोइ॥ १४॥ ग
रीब नैंन मूंद कै देषले॥ निरगुन झड का मूल॥
बाहर भीतर जगमगे॥ बिन झाझी का फूल॥ १५॥
गरीब सीलाक लासुंनान गत॥ जगमग जगमग
होइ॥ अनरागी पद पर महंस॥ रा षा सुरति समोइ

१६॥गरीबसुरतनिरतकावासकित॥कहांमह
लबिसरांम॥बिनडांडीकाफूलकित॥कितहै
अबगतरांम॥१७॥गरीबतनकेअंदरमनव
से॥मनअंदरचितचोष॥सुरतनिरतिजहांफू
लहै॥त्रिकुटीफूलअजोष॥१८॥गरीबचित
घनचात्रिकजूंरटे॥ध्यांनचंदचकोर॥सोछुछ
मकेमहरमी॥उनेगनीबिनजोर॥१९॥गरीब
छुछमसूरतकोंनहै॥कोंनकहोबैराठ॥बिस
रूपकिसकूंकहो॥बोलोऔघटघाट॥२०॥गरी
सेस बसीसपरध्यांनधर॥लघमूरतजहांदेष॥दीर
घकेहैसीसपर॥लीलंबरजहांलेष॥२१॥गरी
बपीतंबरजहांपरसले॥संषचक्रसुकताल
त्रिगलताअंफलकला॥यहछुछमकाष्याल
२२॥गरीबलघसैंदीरघहोतहै॥दीरघसैंलघ
फेर॥तिलमैंतालिबबसतहै॥सुईसमांनसुमे
र॥२३॥गरीबचित्रभुजीछुछमकला॥सहंस
भुजाबैराठ॥कोटभुजाबिसरूपहै॥गुरूलषा
ईबाट॥२४॥गरीबपरमांनंदपदपरसलेह॥
संषभुजासेलांन॥तीनूंमूरतषूबहैं॥अबगत

गति ऊरबांन॥२५॥गरीब जगल विद्यापावैन
ही॥बिकट पंथ वहगैल॥सुर नर मुनिजन थ
कत हैं॥संत करैं जहां सैल॥२६॥गरीब छिन मैं च
ढै आकास कूं॥छिन मैं जाइ पताल॥छिन छि
नउर मैं देषले॥छिन मैं नैं नो नाल॥२७॥गरीब
आपा पद दासु लगया॥जहां चाहै तहां देष॥कहूं
न मुंन मौ लेषडा॥जाके रूप न रेष॥२८॥गरीब
अरस कुरस मैं गरक है॥पांच ततगल तांन॥सु
न गगन मैं रमरह्या॥नहीं जिमीं असमांन॥२९॥
गरीब बाजे बजें असंषधुन॥लहरी लहर समुं
द॥बिच गूंन चिंता मनी॥देषत है नहीं अंध॥३०
गरीब सबद घटा घन गरजहीं॥दिल दांमन द
मकार॥बाहर भीतर देषले॥सं ष कला च मकार
३१॥गरीब इस तें आगे क्या कहूं॥अकथ कथा
अनराग॥कोट सिध आगे षडी॥मुक्त अध का बैरा
ग॥३२॥गरीब लोक रचन इक सिध है॥सो ब्रह्मा
कूं दीन॥जगत दहेत जोंन्या नहीं॥योह सौदा क्या
कीन॥३३॥गरीब मै औतार सर सकला॥अस र
सिंघा रे आंन॥जगत मक्ला मालवे॥रह्या पेरे

राजांन॥३४॥गरीबब्रांकरूसेसुरत्रांनहैं॥परलोक
रेपरेत॥तीनूंपदईबूबहैं॥परसेलोकनसेत॥३५
गरीबसुरनरगनगंध्रवसजे॥मुनजनमहलन
जांहि॥सेतलोकनहीपाईए॥ऋलजेतीनूंमां
हि॥३६॥गरीबचित्रगुपतआरधरमराइ॥आर
धंगीऔंकार॥इनपांचोसिरपैरदे॥जबपावैही
दा र॥३७॥गरीबसेतदीपसेतलोकहै॥सेततख
तगुलजार॥सेतचौरजहांहोतहैं॥सेतजोरज
से नकार॥३८॥गरीबरिमझिमरिमझिमरंगहै
नूरजहूरखवास॥सतगुरमिलैंकबीर॥जब
पावैहंसाबास॥३९॥गरीबसंखकलाकूंछाड
कर॥एकनांवसूंलाग॥संखकलाहैंनांवमें॥क्या
गिरहीबैराग॥४०॥गरीबनावनांवसनकोक
है॥नांवनचीन्हैकोइ॥नांवबिहूनानांवहै॥नि
हचेहीमैंजोइ॥४१॥गरीबसमांथांनइककब्रिछ
है॥हदफहिंबरलील॥बाधेकबंधसुरतका
तौएकपलकनहींढील॥४२॥गरीबसुरतसुहा
गनसुनमैं॥हरदमपीवकैपास॥जितचाहेतित
लेचले॥सुरतगुरूपीदास॥४३॥गरीबसुरतिसां

घासननिरमला॥मलागीरमकरंद॥सुरतनि
रतकेअंतरे॥अबगतसबदसमुंद॥४४॥ग
रीबसुरतिनिरतद्वोहंसनी॥मनहंसामधमेल
त्रिबैंनीठठनातेहैं॥अगमअगोचरखेल॥४५
गरीबउजलसरोवरउजलजला॥उजलहंसति
हधांम॥उजलऊंजेओलीलाकरैं॥सुखसागरवि
सरांम॥४६॥गरीबसुखसागरकीलहरमैं॥हंसा
रहेसमाइ॥अजरअमरधुनआरती॥अनहद
नादबजाइ॥४७॥गरीबगलतांनागुलजारपद
संषकलाकलधूत॥मोलामगानमुरारिहे॥अन
रागीअनचूत॥४८॥गरीबसुषडबजुगतेंचूत
सो॥लोकपाललगजांन॥ओअंकारअरधरम
राह॥उहांलगखेंचातांन॥४९॥गरीबसतगुर
षअनचूतहै॥सकललोकसनठांव॥एकपल
कनहीविसरीये॥रटिएआगेंजांम॥५०॥गरीब
अचलविसंनरबसरहा॥ऊजडवसतीमांहि
हरदरीयासूनरसदा॥रिजमांषालीनहि॥५२
सनपदईकामूलहे॥सकलसिधहैंतीर॥दास
गरीबसतगुरषनज॥अबगतिकलाकबीर

५२॥अथ जरना कौ अंग लिष्यते॥ ॥ ॥गरीब ऐसी
जरना चाहीये॥ जूं प्रिथी तत थीर॥ षोदे सैं कस
कै नही॥ ऐसा बजर सरीर॥१॥गरीब ऐसी ज
रना चाहीये॥ जूं अपतेज अनूप॥ क्हा वे धो वे थूक
दे॥ ता मस नही सरूप॥२॥गरीब ऐसी जरना चाही
ये॥ जूं पौन तत परवांन॥ ऊटल वचन कोई कहो
मांने नही अमांन॥३॥गरीब ऐसी जरना चाही
ये॥ जूं अगन तत मैं होइ॥ जो कछ परे सु सनजरै
बुरा न वाचे कोइ॥४॥गरीब ऐसी जरना चाहीये
जूं गगनि तत गलतांन॥ बुरा न ला वाचे नही॥
ता मैं सकल समांन॥५॥गरीब ऐसी जरना चाही
ये॥ जूं तरवर के तीर॥ काटें चीरें कसटकूं॥ तौ बी
मन है धीर॥६॥गरीब ब्रिछ नदी अर साधजन॥ ति
हूं वां है क सुभाव॥ जल नावे फल ब्रिछ दे॥ साध
लषावें दाव॥७॥गरीब ऐसी जरना चाहीये॥
जूं घन हर जल मेद॥ सजन दीऊ पर वरषता॥ नां
दिल दोष सनेह॥८॥गरीब दीगी अनदीगी कहैं
६० जिन की त्यों मैं दादि॥ संग सैं कदे न बीछडूं॥ षेलो आ
दि आंनादि॥९॥गरीब दीगी अणदीगी कहैं॥ जि

नकी ल्यों मैं दादि ॥ संग सैं कदे नवी छडूं ॥ परमसने
ही साध ॥१०॥ गरीबदी ठी अनदी ठी करैं ॥ जिन
की ल्यों मैं दादि ॥ संग सैं कदे नवी छडूं ॥ हरदंम
नांव अराध ॥११॥ गरीबदी ठी अणदी ठी करैं ॥ स
न अपने सिर लेहि ॥ संग सैं कदें नवी छडूं ॥ जो मुझ
सरब स देह ॥ गरीबदी ठी अणदी ठी करैं ॥ जिनके
हूं मैं संग ॥ जगत पुरातन देतहूं ॥ चढतनवे लारं
ग ॥१३॥ गरीबदी ठी अणदी ठी करैं ॥ जिनके हूं
मैं साथ ॥ जगतपुरातन देतहूं ॥ पीडा लगैन गात
१४ ॥ गरीबदी ठी अणदी ठी करैं ॥ जिनके हूं मैं ती
र ॥ बजर टूटंते राषहूं ॥ पीडा नहीसरीर ॥१५॥ ग
रीबदी ठी अणदी ठी करैं ॥ सो साधू परबीन ॥ नां
वरते निरबंध हैं ॥ छापे दे नोदीन ॥१६॥ गरीबदी
ठी अणदी ठी करैं ॥ सो साधू सिरपोच ॥ जो बीते सो
सिर धरैं ॥ देहन काहूं दोस ॥१७॥ गरीबदी ठी कूंक
हि देत हैं ॥ जिनके दिल नहीं थीर ॥ जिनके संग
हम नां रहैं ॥ सो ऊठन बे पीर ॥१८॥ गरीब जरना
जोगी जगतगुर ॥ जरना है जगदीस ॥ जरना आ
प अलेष है ॥ राषो अपने सीस ॥१९॥ गरीब जरना

जोगी जगत गुर ॥ जरना अलह अलेष ॥ जरनां क
दें न जिगम मैं ॥ जरना किचल देष ॥ २० ॥ गरीब
जरना जोगी जगत गुर ॥ जरना आप करीम ॥ ज
रना हम रेउ रब है ॥ जंम नहीं चंपे सीम ॥ २१ ॥ ग
रीब जरना जोगी जगत गुर ॥ जरना अलष अला
हि ॥ जरनां कूं ऊरबांनजां ॥ जरना बेपरवाह ॥
जरना २२ ॥ गरीब जोगी जगत गुर ॥ जरना रमता रांम ॥
जरनां कूं ऊरबांनजां ॥ जरना है किंकांम ॥ २३ ॥
जरना गरीब पूरन ब्रह्म है ॥ जरना करता आप ॥ जो कु
छ लषै सो म न जरे ॥ जरना है गरगाप ॥ २४ ॥ गरीब
जरे सु अषै निरंजन कहीये ॥ जरे सकल मैं देव ॥ ज
रना जोगी गुरमुषी ॥ जरना अकल अभेव ॥ २५
गरीब जरनां जोगी जुग जुग जीवै ॥ ऊरना परलै
जाइ ॥ जरना जोगी जगत गुर ॥ पद मैं रहै समाइ
२६ ॥ गरीब जरना जोगी जुग जुग जीवै ॥ ऊरना प
रलै होइ ॥ जरनां जोगी जगत गुर ॥ सब दस मां
ना सोइ ॥ २७ ॥ गरीब कञानी कसैंक पूरजां ॥ कर
नी कैं करार ॥ जरना जोगी जगत गुर ॥ आपत
रे जग त्यार ॥ २८ ॥ गरीब सिंघ साध का एक मत ॥

जीव तहीं कूं बांहि ॥ योह जग मुरद फरोस है ॥ पर
घारे नहीं जांहि ॥ २९ ॥ गरीब सिंघ साध का एक म
त ॥ जच्छ न कैरें विचार ॥ योह जग मुरद फरोस है
नां जांहि आंन घार ॥ ३० ॥ गरीब ऐसी जरना चा
हीये ॥ जूं अलल पंष के अंग ॥ अंडा छूटे अकास
तें ॥ बकर मिले सतगुरं ॥ ३१ ॥ गरीब ऐसी जरना से
चाहीये ॥ जूं अलल पंष कै होइ ॥ सतसंग तस्या ब
तनया ॥ विछुर गया दिन दोइ ॥ ३२ ॥ गरीब ऐसी
जरनां चाहीये ॥ जूं चंदन के अंग ॥ मुष सैं कछू न
कहत है ॥ तन कूं षात जु अंग ॥ ३३ ॥ गरीब ऐसी
जरना चाहीये ॥ जूं पारस कै होइ ॥ लोहे सैं सो नां
करै ॥ कहन सुनावे कोइ ॥ ३४ ॥ गरीब ऐसी जर
ना चाहीये ॥ जूं प्रिथीपत इंद ॥ मोती मुकता होत
हैं ॥ बूठै स्वांत समुंद ॥ ३५ ॥ गरीब जरना बिन जो
गी अफल ॥ बुसत न लागे हाथ ॥ बिन जरना क्या
पाई ये ॥ नाटक केपर नात ॥ ३६ ॥ गरीब कथनी
मैं क्या होत है ॥ करनी कारन मूल ॥ करनी कर जरना
जैरे गे लै पांन फल फूल ॥ ३७ ॥ गरीब कथनी मैं ल
कथ है नहीं ॥ करनी मैं रंग लाग ॥ करनी कर ज

रनाजैरे॥ सोजोगीब्रह्मनाग॥३८॥ गरीबअनंतको
टधुनहोतहैं॥ अनंतकोटझनकार॥ ऐतीसुनज
रनाजैरे॥ सोजोगीकरतार॥३९॥ गरीबअनंत
कोटधुनहोतहैं॥ अनंतकोटछिबरंग॥ ऐतीलष
जरनाजैरे॥ सोसाधूसबदबिहंग॥४०॥ गरीबअ
नंतकोटबाजेबजैं॥ अनंतकोटरवतेज॥ ऐतील
षजरनाजैरे॥ सोसाधूपरसेसेज॥४१॥ गरीबसाहि
बसैंपरचेनहो॥ कनीयांबीचअदीन॥ ऐतीलषज
रनाजैरे॥ सोसाधूपरबीन॥४२॥ गरीबसाहिबसैं
परचैनहो॥ उसदरबारअबाद॥ ईहांनप्रगटहो
तहैं॥ परमसनेहीसाध॥४३॥ गरीबकाछबाचप
रबंधहै॥ सतवादीनरसूर॥ साहिबकेदरबारमें
जिनमुषरहसीनूर॥४४॥ गरीबकाछबाचकंकू
त्रिरहै॥ सतवादीनरहोक॥ सांईकेदरबारमैं॥ रहै
जिनोंकीटेक॥४५॥ गरीबजरनासाहिबसंतहैं॥
जरनासतगुरसाच॥ जरनांपांचोततहैं॥ असीज
रनाकाछ॥४६॥ गरीबजरैसुअबचलरहैगा॥ झ
रैसुप्रलैमांहि॥ जरनाजोगीनामरै॥ आवागवन
नजाइ॥४७॥ गरीबजैरैसुनिरगुननूरहै॥ जरैसु

निरगुन तंत ।। जैरै मुसाहिब आप है ।। जैरै मुसत
जगवंत ।।४८।। गरीब ग्यान जोग कूं सहज जैरै ।। जैरै
नांव निरधार ।। अग सिध नौ निध कूं जैरै ।। आपे अ
धम उधार ।।४९।। गरीब जगत मुकत कूं सहज ज ह
रै ।। जैरै जोग बैराग ।। आपा ठहरावै नहीं ।। यौं मत
पूरन जाग ।।५०।। गरीब दया धरम सत कूं जैरै ।। ज
रै सील संतोष ।। मनी ऊफर व्यापे नहीं ।। मिलपद
रहै अजोष ।।५१।। गरीब सुष सैंकट है सुमरन जरै ।। स
रवन सुने सुसोइ ।। मन की धार न सहज जरै ।। सो ज
न निहिचल होइ ।।५२।। गरीब च्यार मुकत जर ना ज
रै ।। जिसत बैकुंठ बिलास ।। काया माया सहज जरै
सो साधू निज दास ।।५३।। गरीब परपटन नगरी ब
सें ।। भेदन का हृदेत ।। कीडी कुंजर पोषता ।। अपनां
नांव न लेत ।।५४।। गरीब परपटन नगरी बसै ।। नि
रधार आधार ।। लष चौरासी पोषता ।। असी जर
ना सार ।।५५।। गरीब चौरासी जांनै घडे ।। षेले षेल
अनंत ।। जा की जर ना देषकर ।। जे को साधे संत
५६।। गरीब चौरासी जांने घडे ।। षेले षेल अपार
षांनपांन सहज देत हैं ।। असा सुमरथ सार ।।५७।। गरी

बकहि नज नावे औरकूं ॥ जो कछ्छ करै सु लीना ॥ जा
की जर ना दे षकर ॥ संत नरोवे दीना ॥ ५८ ॥ गरी
ब परचे कोट अनंत हैं ॥ अजमत कोट अनंत ॥
कीमत कोट अनंत हैं ॥ जरना जोगी कंत ॥ ५९ ॥
गरीब कछ मछ कूरंभ हैं ॥ सेस धौल धुनि धार
ब्रह्मंड न कोट अनंत हैं ॥ रूंम रूंम की लार ॥ ६० ॥
गरीब ऐती लष जरनां जरै ॥ कारन कवन अले
ष ॥ संत सूर जरनां जरैं ॥ कोई हमरी जरना देष
६१ ॥ गरीब धौल गगन निठै नार हैं ॥ वसुधा ब्रह्म वि
लास ॥ हमरी जरना देषकर ॥ बसत जरै कोई दा
स ॥ ६२ ॥ गरीब निरगुन सुरगुन सजन कला ॥ बक
नक्षर
रंगी बरियांम ॥ पिंड ब्रह्मंड पूरष ॥ अबगत र
मतारांम ॥ ६३ ॥ गरीब अनंत कला कलधूत है ॥
अनंत कला परवांन ॥ ऐसी जरनां हूं जरैं ॥ धनका
दर ऊरबांन ॥ ६४ ॥ गरीब सचजांनत हैं जगतगु
र ॥ कहि न सुनावे कोइ ॥ ऐसी जरनां हूं जरैं ॥ नां हल
किसी सैं होइ ॥ ६५ ॥ गरीब जुगन जुगन के पाप
सच ॥ जुगन जुगन के मैल ॥ जांनत हैं जगदीस
हूं ॥ जोर की रोबद फैल ॥ ६६ ॥ गरीब करमो कार

नदेषकर॥मौंनरहै मसताक॥तेरीजरनादेष 
करि॥संतोहासिलहाथ॥६७॥गरीबजरनाब
नजाजुलैहै॥जरनानादसमोइ॥ऐसीजरनांत
बजैरै॥जातनसीसनहोइ॥६८॥गरीबजरनां
जरैसुजालमजोगी॥जरनाजालिमजिंद॥जरनां
जरैसुआपेआपं॥कालकरमनहीफंद॥६४॥गरी
बपडदाकदेनपाडियै॥जेसिरबलैंअंगीग॥चाब
कतोडोंचौपटे॥गुनहगारकीपीग॥७०॥गरीब
पडदाकदेनपाडिरे॥जेसिरबलैंअंगार॥चाब
कतोडोंचौपटे॥गुनहगारसिरजार॥७१॥गरी
बपडुदाकदेनपाडीरे॥आपनेहीसिरलेह॥चा
बकूतोडोंचौपटे॥गुनहगारमुषषेह॥७२॥गरी
बपडुदाकदेनपाडिरे॥जेसिरआईहोइ॥चाब
कतोडोंचौपटे॥सारऊडंतालोइ॥७३॥गरीब
पडदाकदेनपाडीरे॥जेजातीहोइसीस॥चाबक
तोडोंचौपटै॥ऊकमसरैजगदीस॥७४॥गरीब
पडदाकदेंनपाडीरे॥जेजातीहोइज्ञांन॥चाबक
तोडोंचौपटे॥नीरषीरकूंछांन॥७५॥गरीबरोती
जरनांतबजैरै॥जबसतगुरसोंहोइभेट॥बका

ब्काईकतेंहैं॥ जिनहदी गुरज्ञेद॥७६॥ गरीबजा
नकेअंतरलगनहै॥ ओरकहैंगेरां म॥ बकाब
काईकरतेहैं॥ आंनकबेंबेकां म॥७७॥ गरीब
प्रिथीकागुनलीजीये॥ श्रोगुनउरनहीधार
जिनकेदिलमेंरोकहै॥ दूजेकूंलेमार॥७८॥ ग
ह्ला रीबसबदअनाहदजोरते॥ दूजानहीउपाव॥
सुनमंडलमेंरमरे॥ नाजहांकरमलगाव॥७९
अनहदमंदलबाजहीं॥ बारहमासअचंन॥ दा
सगरीबकबीरकूंजगतिदईअरंन॥८०॥ अ
थलेकोअंगलिष्यते॥ ॥गरीबलेलागीतब
जांनीये जगसेंरहैउदास॥ नांवरटेनिरभेकला
हरदंमहीरमास॥१॥ गरीबलेलागीतबजानी
ये॥ जगसैंरहैउदास॥ नांवरटेनिरकंदहोइ॥ अ
नहदपुरमैंवास॥२॥ गरीबलेलागीतबजानि
ये॥ हरदंमनांवउचार॥ येकेमनयेकेदिसा॥ सा
ईकैदरबार॥३॥ गरीबलेलागीतबजानीये॥ ह
रदंमनांवउचार॥ येकेमनयेकेदिसा॥ बडारहै
दरबार॥४॥ गरीबलेलागीतबजानीये॥ हर
दमनांवउचार॥ धीरेधीरेहोइगा॥ श्रोहमल

हदीदार॥५॥गरीबलै लागी तबजांनीऐ॥हर
दमनावहनोज॥बिकटपंथपावै नहीं॥मीनी
केसाषोज॥६॥गरीबलै लागी तबजांनीऐ॥
हरदमनां वहनोज॥मैं मेरीकूं पटकदे सिर मै
सैं भारीबोझ॥७॥गरीब लागी तबजांनीऐ॥ले
कीलगीडकांन॥लेलंगरसौदाकरै॥छानम
हातमषांन॥८॥गरीबलै लागी तबजांनीऐ॥
लैकीलगीडकांन॥वषतपरै सौदाकरै॥कोठेभा
रेषांन॥९॥गरीबमहगासमसतादेषले॥सौदाक
रैविचार॥हूनेंतीनेचौगने॥करहैं शाहूकार॥१०
गरीबमहगासमसतादेषले॥सौदाकरैसमोहू॥
हूनेतीनेचौगने॥करलेजातोकोहू॥११॥गरीब
पूंजीशाहूकारकी॥बनजारासंसार॥पूंजीमा
लगवाईया॥नाहकबहै बिगार॥१२॥गरीबऐ
परपटनऐगली॥बजरनदेषैंआइ॥सतगुरसूं
सौदाहूवा॥जरलेमालअघाइ॥१३॥गरीबऐप
रपटनऐगली॥बजरनदेषैंआइ॥सतगुरसूं सौ
दाहूवा॥लीजेमाललदाइ॥१४॥गरीबऐमुकती
निजपीठहैं॥ऐमुकतैबैजार॥सतगुरसूं सौदा

नया॥ नरले बालद लार॥१५॥ गरीब रांम नांम
निज सार है॥ रांम नांम निज मूल॥ रांम नांम
सौदा करो॥ रांम नांम नहीं भूल॥१६॥ गरी
ब हस ठनियां मैं आइ कर॥ इन चारों कूं बंध
कांम क्रोध छोह चूंहरा॥ लो नलपटीयां अंध
१७॥ गरीब मोद मवासी पकर ले॥ ममता का
सिर ताज॥ कुरमत दांम न गीर है॥ कि चलन
गरी राज॥१८॥ गरीब ज्ञांन जो गम्य रजगत ले
सील संतोष स साध॥ लै लागी तब जांनीये॥ छू
टे सकल उपाध॥१९॥ गरीब ज्ञांन जो गम्य र ज
गत ले॥ सील संतोष बिबेक॥ लै लागी तब जां
नीये॥ जब दिल आवै ऐक॥२०॥ गरीब गगनि
गरज गाठी चवै॥ हीरा घनट कसार॥ लै लागी
तब जांनिये॥ उतरे नहीं षुमार॥२१॥ गरीब ग
गनि गरज गाठी झरै॥ चौआ फूल चवंत॥ सिर कै
साटे पाईये॥ कोई साधू जन पीवंत॥२२॥ गरीब
गगन गरज घन बरषही॥ बाजें दीरघ नाद॥ अ
मरापुर आसन करैं॥ जिनके मते अगाध॥२३॥
गरीब गगनि गरज घन बरषही॥ बाजे अनहद

दस्तर॥ लै लागी तब जांनियै॥ मन मुख सदा हजू
र॥२४॥ गगन गिरा जघन बरषही॥ दास मन षिमै
अबंद॥ दास गरीब कबीर हैं॥ सकल दीप नौं
षंद॥२५॥ अथ रस को अंग लिषते॥ ॥ गरीब
रस मौले के महल मैं॥ ऊंचे अरस ऊकांन॥ जहां
क लाली हाट है॥ अतमी गर सवांन॥१॥ गरीब
रस मौले के महल मैं॥ गगन झरै बाजोर॥ पीवैं
सूरे संत जन॥ कूरचले मुष मोर॥२॥ गरीब रस
मौले के महल मैं॥ मंदल अरस झरंत॥ जहां क
लाली हाट है॥ चोबा फूल चवंत॥३॥ गरीब फू
ल चवैं चिंतामनी॥ कलस बिना इक अंग॥ सु
रत सुरा ही फिरत हैं॥ दे प्याला तत्र चंग॥४॥ ग
रीब फूल चवैं चिंतामनी॥ अरस पटन के घाट
तन मन कीचे अरपिये॥ कीजे सिर की साट॥५॥
गरीब फूल चवैं चिंतामनी॥ प्याले कंद कपू
र॥ काफूर कूं कडवा लगै॥ मीगअ प्रितसूर॥६॥
गरीब फूल चवैं चिंतामनी॥ औघट घाट अपं
थ॥ सांनी ध्यांनी नां लषैं॥ फिर फिर गये अनंत
७॥ गरीब बजर पौल प्योढी लगी॥ अंदर अर

सकांन॥ मिहरदयासैंपाईए॥ सतगुरदेवैंदा
न॥८॥ गरीब सगन मंडल मसतपुर॥ मतवालौं
कीजीर॥ सुनतेही उस सत्र तजैं॥ काहर थरै नधी
र॥९॥ गरीब रस का रासा समझले॥ सार ग बंधे
प्रांन॥ सबद कुलाहल होत हैं॥ गगन मंडल
इसथांन॥१०॥ गरीब योट सरासा समझले॥
पिंगुल सुरत लगाइ॥ बीसों विसवे बसत है॥ पी
वत हैं सत जाइ॥११॥ गरीब संख सूर ससतान हैं
कलाली दरबार॥ बकरा मिले कहां पे सरस॥ अ
कृत जन मसुधार॥१२॥ गरीब संख सूर ससतान
हैं॥ कलाली की हाट॥ पुनरि पजन मत फार है
फेर कहां पै ओट घाट॥१३॥ गरीब गगन ऊंज गग
ने गुफा॥ गगन मंडल मन जाइ॥ चढे तचा खे प्रेम
रस॥ पीवै अतन्न घाइ॥१४॥ गरीब ऊची साखा
सुनिफल मऊ वा मध र अपूरा॥ बी जबा
कलाहे नही प्रेम पियाले घूंट॥१५॥ गरीबसि
खर सुंदर सिंध सर॥ जाम थहंसा न्हांइ॥ कला
ली कुल बंचते हैं॥ छप्पन नगर गढ मांहि॥१६॥ गरी
ब यो हर रस मंहिंगे मोलका॥ पीवत हैं कोइ एक

ताहिबजरकीचूलहै॥ जंमसिरमारेमेष॥ १७॥ १६२
गरीबनैंनोहींमैंबासना॥ प्रेमनगरकेलोर॥ घ
टाउठेगरसांनकी॥ गूंजेदादरमोर॥ १८॥ गरी
बप्रेमलहिरछांनीनहीं॥ निरमलनासादंत
महकंतमूलसुवांना॥ मिलेपियारेकंत॥ १९
गरीबहोठकंठमुषमंजना॥ त्रिगटीचंदलिला
ट॥ सोन्हिचेपक्जचेसही॥ गऐकलालीहाट॥ २०
गरीबसबदसालमैंपूछले प्रेमनगरकीरीत
बक्जजोजनक्याकरतहैं॥ ऐकैकनकेसीत॥ २१
गरीबपलकबिलंदअलीलधज॥ जोहलगेबे
राठ॥ सोउमन्हिचैजांनियों॥ वेगयेकलालीहाट
२२॥ गरीबहंसगवनम्रिगनैंनछब॥ चलैहैंमध
रीचाल॥ सोउमन्हिचैजांनियों॥ वेदरबारकला
ल॥ २३॥ गरीबश्रवनसरोधासाधहीं॥ इलापिं
गलाफेर॥ सुषमनकेघरगवनहै॥ सोलीऐक
लालीहेर॥ २४॥ गरीबनषसपेदमधलालरं
ग॥ ॐनकजेहाकंठ॥ मेरडंडसूधाकीया॥ बं
कनालनहींबंट॥ २५॥ गरीबकांनकरनलघ

तासकै ॥ दीरघबुधबिलंद ॥ अष्टकचलकरमां
मई ॥ रागदोषनिरदंद ॥ २६ ॥ गरीबमूलसंको
चनसुरपलट ॥ बाहबिंदवमकीन ॥ सोउत्तमक्षि
चैजांनीयो ॥ वैसुनिसरवरकै मीन ॥ २७ ॥ गरीब
टूटीब्यौं मउरधषडी ॥ चूतडचकलाफेर ॥ सोउ
मक्षिचैजांनियो ॥ वैहंसाचढेसुमेर ॥ २८ ॥ गरीब
कूंभीनाजसंकोचनी ॥ ठोमीलंबनत्तछ ॥ राह
मैंनसंजमकला ॥ ध्यांनकरैंजेकछ ॥ २९ ॥ गरीब
तालूकंठगुलालरंग ॥ रसनालंबसुलंब ॥ पीत
पसावप्रषले ॥ जहांगम्यानगतरणाधंन ॥ ३० ॥
गरीबसीसकटोरीगिरदगत ॥ तलूवेपावडीआं
हि ॥ सोउत्तमक्षिचैजांनियों ॥ वैबैठेमावरीयांहि
३१ ॥ गरीबदसतजुजाजंघजोरहैं ॥ कूतविसं
भरनांव ॥ सोक्षिचैउतमजांनियो ॥ वैपञ्चेउस
धांम ॥ ३२ ॥ गरीबबचूचीकवलऊलाहलं ॥ छाती
छतरफेर ॥ हिरदेमैंनददफलगे ॥ जोबैठेग
ढफेर ॥ ३३ ॥ गरीबमसतकपुंदराजीतहैं ॥ षट
करमोंसैंबल ॥ चौरासीआसननकरैं ॥ वैलेहहंसा

कूंबेल ॥३४॥ गरीबप्रेमनगरमैंसोरहैं॥ पल १६२
कनबाहरजांहि॥ सोउमक्किचेजांनियो॥ वेस्व
मीमहांरसषाहि॥ ३५॥ गरीबछुछमहारवि
चारसैं॥ अनजुषतानहीलेहि॥ अमरकरैंअन
भूतगत॥ सबदसंदेसादेह॥ ३६॥ गरीबनैंसुर
सेतीसुनतहैं॥ रूंमरूंममैंगाज॥ सोउमक्किचे
जांनीयों॥ जहांजगतिवछलकाराज॥ ३७॥ ग
रीबररंकाररंगजीनियां॥ अनंदीअनराग॥ रा
मरसाइनपीवते॥ मिटेदिलोंकेदाग॥ ३८॥ गरी
बबडबडकरैंसुभूतहैं॥ थोडाबोलैंदेव॥ मांन
महतचाहैंनही॥ ऐलछनलषलेह॥ ३९॥ गरी
बदसइंद्रीलारेलगी॥ पचीसोंपरभाव॥ तीन
गुननसेवनकरैं॥ उरीयापदमैंआव॥ ४०॥ ग
रीबप्रेमनगरकीपीठमैं॥ गरबाईयोमतकोइ
मनसूरदेषसूलीचढ्या॥ अनलहककहिसोइ
४१॥ गरीबसीसकटेस्पाबतरह्या॥ हाथकटे
हरिहेत॥ मनसूरसदामासूरहै॥ अजरअम
रहेषेत॥ ४२॥ गरीबप्यालानपीयाप्रेमका

हक
रूठी लब कूं चाट ॥ नां जां नो क्या हो दूगा ॥ जोग
ऐक लाली हाट ॥ ४३ ॥ गरीब अनलहक रिसैं मि
ली ॥ हू सर रही न देह ॥ संमर साह नजर र पीया
प्याला लोंके गुन ऐह ॥ ४४ ॥ गरीब मन सूर मसत
कूं होगया ॥ सिर र फांस परवेस ॥ जा पर नोबत
यह हुई ॥ के साहै श्रीहदेस ॥ ४५ ॥ गरीब जल
बल को दूला होगया ॥ मतवाला मन सूर ॥ दू
सकल गायार बैसें ॥ प्रेमनगर घर दूर ॥ ४६ ॥
गरीब कलाली के कलस की ॥ लगी छीट मनसू
र ॥ फूल फूल परवेस है ॥ सबद समांना नूर ॥ ४७
गरीब ऐर बदी फुल वाडीयां ॥ फूल फूल ऊम
लांहि ॥ प्रेमनगर दे प्रेम बिन ॥ सजदी बहिब
हि जांहि ॥ ४८ ॥ गरीब उजल कलाली उजल
हट ॥ उजल पियाले पाब ॥ गगनिदरी बेजाई
ऐ ॥ प्रेमनगर मैं दाब ॥ ४९ ॥ गरीब उजल अगा
ही उजल सर ॥ उजल हंस परबीन ॥ प्रेमनग
र मैं चाली ऐ ॥ ध्यांन धरो करबीन ॥ ५० ॥ गरीब
सं
उजल गत गति न जल है ॥ उजल नु मबै राठ

गाई मै खेलन संचरे ॥ उस सरवर कै घाट ॥ ५१ ॥ ग १६४
रीब पाष पियाले पाष हंस ॥ पाषे पीवनहार
पाषक लाली फूल है ॥ पाष महल मतवार ॥
५२ ॥ गरीब रांम रसाइन प्रेम रस ॥ सौंह गाईस
रन्हांन ॥ सो बात न की ऐकहै ॥ सीस दीजीये दां
न ॥ ५३ ॥ गरीब नगर नवेला बंक मग ॥ संत सू
र गह राहि ॥ पौहचे सो पारंग है ॥ कादर गोते षा
हि ॥ ५४ ॥ गरीब बेडे संष असंष है ॥ नौका निरम
ल नांव ॥ सतगुर षेवट षूब है ॥ गरज पडे तो
आव ॥ ५५ ॥ गरीब सीस काट आगे धरै ॥ ऊपर
सच का पांव ॥ प्रेम नगर ऐसे गये ॥ तेरी गरज प
डे तो आव ॥ ५६ ॥ गरीब प्रेम नगर पनघट प
ला ॥ संष सहेली संग ॥ देष तहीं दिल चाव है ॥
कदे न होइ चित भंग ॥ ५७ ॥ गरीब ऐक नैरे ऐ
क जर चली ॥ ऐक जर नेकूं जांहि ॥ ऐसा औ
घट घाट है ॥ संष सहेली नांहि ॥ ५८ ॥ गरीब
संष सुहेली ऐक पीव ॥ प्रसप्रस प्रवान ॥ लेंहि
परबीप्र लोक की ॥ सुनि सरोवर न्हांनि ॥ ५९ ॥
गरीब मासा घटै न तिल वधै ॥ विधना लिषे जु

लेष॥ साचा सतगुर भेटकर॥ ऊपर मारे मेष॥ ६०
गरीब प्रेम नगर के बाग में॥ पडे हिं मोले पाष
फूलैंसं षसुदेलीयां॥ चले प्रेम नगर टुक झांक
६१॥ गरीब बजर न निकसन होत है॥ प्रेम नगर
ब कुनीर॥ बेर बुरद नी बटत हैं॥ अमी महारस
षीर॥ ६२॥ गरीब पीतंबर पटओढही॥ सहेल्हेंप
हिरांन॥ बाजे बजैं असंषगत॥ अबगत नगर
अस्थान॥ ६३॥ गरीब संषबेदी चोर चंपा॥ गगनि
ते मंडल धुन सुनी॥ हंस करीला करैं जहाँ उहाँ॥ सं
तबैठे हैं मुनी॥ ६४॥ गरीब कुलसकला लीन रहा
है॥ ऐकरती नहीं बैंच॥ के ते अमली झुक रहे है॥
अमी महारस ऐंच॥ ६५॥ गरीब कलाली ऊल
मंदनी॥ है ऊल मंदन षूब॥ प्याला दीजे प्रेम का
बार षडे महमूब॥ ६६॥ गरीब आशिक हूसिक
छाने नहीं॥ लगे बिरहे के बांन॥ कलाली दर धू
म हीं॥ राषे सचका मांन॥ ६७॥ गरीब रांमरस मांह
नरंगफल॥ जो पीवै तिस रंग॥ रती मिल्या मन
ऐक सूरकूं॥ अनलहक सतसंग॥ ६८॥ गरीब रती
रत्या फिरै॥ दृढी प्रेम की रीत॥ प्रेम लग्या मन

सूरकूं॥ ऊनियां गावै गीत॥६९॥गरीब षुरासांन १६५
का बलकला॥ बुगदाद बनारस रोक॥ बिलाइ
तअरब बलकल गहम हीधारेजे ष॥७०॥गरीब
सुरग पियाला रस ला रस॥ह मही नरेकलाल॥ह
मेकलाली ऊं नहम॥ह महीहैं मतवाल॥७१॥ग
रीब धंना जिंदा जगदीस हूं॥ सकल जेद परवेस
महादेव मद नां छिके॥ पार न पावै सेस॥७२॥ग
रीब ब्रह्मा विश्न न विसाल बुध॥ कलाली ऊलबं
स॥ प्याले पीवैं प्रेम के॥ बैठे हाट हसंत॥७३॥गरीब
गोरषदत्त षुमार है॥ रो मर सांइ न छाक॥ धूकाध्यां
न अंग मां नहै॥ सुषदे बोले साष॥७४॥गरीब प्र
हलाद प्रेम कि चेपीया॥ सुलतानी सतनाइ॥
रोके चोट सिधारीया॥ जिने मिलन का चाव॥७५
गरीब गोपीचंद रु नरथरी॥ जे देना मां नेह॥ रंका
बंका रंग है॥ दो मतवाले रेह॥७६॥गरीब सनका
दिक सुर जेद ही॥ चासों चूर मचूर॥ ऊ षफरी
द छिरा रहे॥ बरषत है मुषनूर॥७७॥गरीब ना
रद मुनि निरगुन जडी॥ ऊंजक रिषक लधूत॥
जो गजिलंधर रस पीया॥ ऊर बासा अबधूत॥७८

गरीबविस्वामित्ररसपीया॥वसिष्टमुनीविधसा
ध॥कपलदेवगलतांनहैं॥लागीमुनिसमाध॥
७९॥गरीबमारकंडऔररोंमरिष॥बकताला
ककाकुजसुंन॥इंद्रिषप्पालेपीवें॥प्रेमक
लापरचंन॥८०॥गरीबगोरैऔरगनेसलग॥
सावत्रीमनचाव॥लछमीलालचलगरही॥प्रे
मषेलनकानाव॥८१॥गरीबतेतीसोंकरनां
करैं॥सहंस्त्रगसीमांन॥सिधचौरासीचावहै
कलालीरसपांन॥८२॥गरीबअष्टावक्ररसपी
या॥नौंजोगेसरनेह॥कलालीकीहाटपर॥आ
वैसोसिरदेह॥८३॥गरीबजनकबदेहीजगम
गे॥पीपाऔररैदास॥कनकजनेऊंकाढिया॥
पंडितनऐंदास॥८४॥गरीबबाजीदधंनास
मनमंफे॥काटरकलाकमाल॥सेऊकातोसिर
कट्या॥फेरचढ्यादरहाल॥८५॥गरीबनामि
कदाहूदंगहैं॥माधोऔरमलूक॥सूरकबीर
सोहगाकीया॥कदेंनलागेसूष॥८६॥गरीबमी
रांबाईरसपीया॥कमालीकलमांहि॥रूपोरीसं
जमकररही॥गनकबिवांनकजांहि॥८७॥ग

रीबहरचंदरसियाप्रेमका॥अजामेलअधिका
र॥गनकाचढीबिवांनमैं॥अजुध्यासजलार
४८॥गरीबद्रोपतसुताकेचीरकूं बढतनला
गीबेर॥दुसासनसेपचगये॥पीतंबरअसमे
र॥४९॥गरीबपंनोयगअसमेदमैं॥बालनी
कअधिकार॥संषपचाइनघुरतहैं॥जैजैजै
जोनार॥५०॥गरीबबैलोचनकेबलजये॥बे
दीयगकरंत॥आसनकूंपेइंद्रके॥असेबलहैं
संत॥५१॥गरीबबावनहोइबलकेगये॥तीन
पैंडसजकीन्ह॥बलछलइंद्रकोंदई॥करबंध
रमुसकीन॥५२॥गरीबबलपठऐपातालकूं
धूकूंसुरगहराज॥सांसादोनोंकूंनही॥जगत
मुकतकीलाज॥५३॥गरीबजनीछनऔरमंदो
वरी॥नलनीलदोसंत॥अंगदपाइकदहनूमा
न॥किनेनपायेअंत॥५४॥गरीबलछमणसीतां
रांमसत॥कलाविसंजरआप॥अनंतअना
हदष्यालहैं॥जपलेअजपाजाप॥५५॥गरीब
नरसीलाहैं नरहरपीया॥प्रेमरसांइनपूर॥हूं

पीजांलीसंतकी॥ सनमुखसदाहजूर॥९६॥
गरीबकलालीकारनकवन॥ सोफीमिलेनबूं
द॥ दरसेततननिरमला॥ नहींगगनमेंधूंध
९७॥ गरीबअमलीआनंदमेंरहैं॥ निरमल
ऐं ततजुहार॥ प्यालेपीवेंप्रेमके॥ बरखतनूर
फुहार॥ ९८॥ गरीबआनंदमूरत नहैं॥
ऊरबांनाऊरबांन॥ सूरतसुंदरपाखपद॥ दे
खाअकलअमांन॥ ९९॥ गरीबकांमधेंनकल
बृछपद॥ जोधारेसोहोइ॥ जिननेनोंओहदे
षिया॥ सोकांनपीवोधोइ॥ १००॥ गरीबकांमधें
नकरीलाकलप॥ मनइछाफलफूल॥ सुरत
विसंभरहोतहै॥ एकपलकनहीभूल॥ १०१॥
अमलीमहिलकबीरहै॥ प्रेमीपारिखपार॥
दासगरीबऊलमंदनं॥ अबगतसतिजुहा
र॥ १०२॥ गरीबअगमअथाहअपारहै॥ नि
रालंजन्निहअंछ॥ बेदकतेबांनांचढे॥ बांवन
२ अछबंच॥ १॥ गरीबबांवनअछरमूलमर॥ बि
नामूलसोमूल॥ बिरंगनबसतविसतारहै॥ कहा
मूलबिनफूल॥ २॥

अथ चिंतावलीको अंग लिषते॥ गरीब पांनी की जलबूंद सैं॥ साजब नाया जीव॥ अंदर बाहर अंदे सथा॥ बाहर विसरया पीव॥ गरीब पांनी की जलबूंद सैं॥ साजब नाया साच॥ राष नहीं रे राषिया॥ जठर अगनि की आंच॥ १॥ गरीब पांनी की जलबूंद सैं॥ साजब नाया साच॥ कोडी बदले जात है॥ कंचन साटे काच॥ २॥ गरीब पांनी की जलबूंद सैं॥ साजब नाया सोध॥ हूं जग मैं पंडित जया॥ पड्या अगर्भ बोध॥ ४॥ गरीब धरनी धर जांन्या नहीं॥ कीन्हा कोट जतन जलसैं साजब नाइक करमान सकीया रतन॥ ५॥ गरीब धरनी धर जांन्या नहीं॥ जिन सिर जे जलबूंद॥ गुलजार दरसे नहीं॥ चित्रा मांफि रगई धूंध॥ ६॥ गरीब धरनी धर जांन्या नहीं॥ जिन सिरजे जलबूंद॥ नाडी सहंस संवार कर॥ ल्याया नष सिष गूंद॥ ७॥ गरीब धरनी धर जांन्या नहीं॥ जिन सिरज्या तन साज चेत सकें तौ चेतीए॥ बिगरजा इगा काज॥ ८॥ गरीब पांनी की जलबूंद सैं॥ अजब बनाया ष्याल धरनी धर जांन्या नहीं॥ आइ पड्या जम जाल॥ ९

गरीब उरध मुखी जदर रहे थे ॥ तल सिर ऊपर पां
व ॥ साबन हारे राषिया ॥ जठर अगन की लाव
१० ॥ गरीब अस्त चांम रग रूं म सजन ॥ किसने की
ना गूद ॥ उदर बीच पोषन कीया ॥ बिन जननी
के दूध ॥ ११ ॥ गरीब उही उही उतकार थी ॥ जप
ता अजपा जाप ॥ बाहर आइ कर भूमी या ॥ बक
त उगरे पाप ॥ १२ ॥ गरीब उही उहीं उतकार थी
ररंकार धुन ध्यांन ॥ जिन यक्र साज बनाईया ॥ जा
कूं लेहप छीं न ॥ १३ ॥ गरीब औ जूद उरध मुष ज
पे था ॥ ररंकार कं नधीर ॥ जा ताल बकं याद किर
जिन यो हवरया सरीर ॥ १४ ॥ गरीब औ जूद उर
ध मुष जपे थे ॥ जं नी जिंद जहीं न ॥ बाहर मूल लगा
वाईया ॥ पूजत हैं पाषांन ॥ १५ ॥ गरीब जठर अ
गन सें राषिया ॥ नां सांई गुन भूल ॥ औह साहिब
दर हाल है ॥ कां बोवत हैं सूल ॥ १६ ॥ गरीब अ
ध घडी की अध घडी ॥ अध घडी की अध ॥ साधों
सेती मो गडी ॥ जो की जैसो लभ ॥ १७ ॥ गरीब पां
व घडी तो याद कर ॥ नी मां नाम न षोइ ॥ सतगु
रहे लादेत है ॥ विषे मूल न ही बोइ ॥ १८ ॥ गरी

बअलफअलहकूं यादकर॥ कादरकूं ऊरषां
न॥ सांईसेती तोडकरि॥ रत्या अधम जिहांन
१९॥ गरीब अलफअलकूं यादकर॥ जिनकी
कायोह साज॥ उस साहिबकूं याद्किकर॥ पाल्या
जलबिन नाज॥ २०॥ गरीब संसारी मैं आनक
रकहाकीया रे मूढ॥ सूवे सिंबलसे ईया॥ लागे
तिके हूं फ॥ २१॥ गरीब सूवे सिंबल सेईया॥ बा
रह बरष बिसास॥ अंत चोट षाली पडी॥ फोफे बी
चकपास॥ २२॥ गरीब सूवे सिंबलसे ईया॥ तैसी
या नर देह॥ जमकंकर उडले गया॥ मुषमें दे
करि षेह॥ २३॥ गरीब आदि समे चेत्या नही॥ अं
तिसमे अधिकार॥ मधसमें माया रते॥ पाकर
लीयेगवार॥ २४॥ गरीब अंतसमें बीते घणी
तन मन धरे न धीर॥ उस साहिबकूं यादकर
जिन घडथस्या सरीर॥ २५॥ गरीब धूमें के सा
धौलहर॥ बालूकै सीजीत॥ उस षाहदकूं या
दकर॥ महल बनाया सीत॥ २६॥ गरीब धूंमे
कैसा धौलहर॥ योह बालूका साज॥ उस षाह
दकूं यादकर॥ साची गैब अवाज॥ २७॥ गरीब

धू मैके साधौ लहरि ॥ बाल जेहा जेव ॥ गैबी सैंगै
बी मिले ॥ तो पर से दिल देव ॥ २८ ॥ गरीब गैब
अजाती पिंड से ॥ जाका गैबी नांव ॥ सुनि सनेही
जांनीए ॥ मडी महल नही गाम ॥ २९ ॥ गरीब ज
गत है तग्रिह बंधीया ॥ माटी महल मसांन ॥ ते
साहिब जांन्या नही ॥ भूल्या मूढ जिहांन ॥ ३० ॥
गरीब जगत है तग्रिह बंधिया ॥ घणा नामी घ
ट मांहि ॥ बिन सतगुर की बंदगी ॥ सांई पावे नां
हि ॥ ३१ ॥ गरीब जगत है तग्रिह बंधिया ॥ घण
ना मी घट मांहि ॥ साधू जन सेव बिना ॥ सांई पा
वै नाहि ॥ गरीब जगत है तका याधरी ॥ घणा ना
मी घट बीच ॥ नीमल गैं नही नालिहर ॥ जो वें
पर मल सींच ॥ ३३ ॥ गरीब यो है माटी का महि
ल है ॥ जा सूं कै सनेह ॥ जे सांई मिल जात है
तौ नारांइन देह ॥ ३४ ॥ गरीब यो है माटी का म
हिल है ॥ खाख मिले गधूर ॥ सांई के जांने बिना
गदहा कू नासूर ॥ ३५ ॥ गरीब यो है माटी का
महल है ॥ छार मिले छिन माहि ॥ चार शाक स
कांधे धरें ॥ मरहट कूं ले जांहि ॥ ३६ ॥ गरीब

जारबार तन फूकीये॥ होगा है है कार॥ चेत सकै
तौ चेतीये॥ सतगुर कहै पुकार॥३७॥ गरीब जा
रबार तन फूकीये॥ मरहट मैं फरा मांन॥ यात
न की होरी बनी॥ मिटी न जम की कांन॥३८॥ ग
रीब जारबार तन फूकीया॥ मेट्या षोज षलील
तूं जां नै मैं रहूंगा॥ इहां तो कबू न ढौल॥३९॥
गरीब जारबार तन फूकीये॥ फोकट मिटै फि
राक॥ चेत सकै तौ चेतीये॥ सतगुर बोलैं साष
४०॥ गरीब जारबार कै लाकीया॥ होगया मर
हट राष॥ छाजे महल मैं फेरीयां॥ क्या कोडी षु
जे लाष॥४१॥ गरीब चडक रहे राऊ दावते॥ श्री
रपाल की थांफील॥ ते नर जंगल जा बसे॥ जंम
कूं फे स्याली ल॥४२॥ गरीब अरब षरब लग द
रब है॥ उदे अस्त विच नाव॥ बिन साहिब की बं
दगी॥ डूब मूऐ दहि मांहि॥४३॥ गरीब अर
ब षरब लग दरब है॥ गपत कोट अनंत॥ नाहि
क जग मैं आईया॥ जिन सेवे नहीं संत॥४४॥
गरीब माया हुई तो क्या हूवा॥ जूल रह्या नर
जूत॥ पिता कहैं गा कौन कूं॥ हूं वेसा का पूत॥४५

या
गरीब काया मां काल है ॥ बिन साहिब के नाम ॥ चे
तसकैं तो चेतीये ॥ बिन संतो नही ठांव ॥ गरीब अ
साअजन आंजीए ॥ सूक्षेत्रि जवन राइ ॥ कांमधेंन
अरकलब्रिछ ॥ घट ही मं फल खाइ ॥ ४७ ॥ गरीब
जूनी संकट मेटहूं ॥ जेवि मरे नही मोहि ॥ जिन सं
सारी चित धरी ॥ नही छुटाऊं तोहि ॥ ४८ ॥ गरीब
लष चौरासी बंधते ॥ सतगुर लेत छुटाइ ॥ जेत
र अंतर नांव कै तो जूनी बकर न जाइ ॥ ४९ ॥ ग
रीब सब माया के ख्याल है ॥ सब माया के चोज
बिन सांई की बंदगी ॥ जंगल कै गारोज ॥ ५० ॥
गरीब महमूंदी चौतार नर खासे पहिरे खूब ॥
अंत मसांनो जाबसे ॥ बिना ज गति महमूब ॥
५१ ॥ गरीब जूनी संकट मेटहूं ॥ देहूं किदह चल
बास ॥ उर अंतर मैं रायहूं ॥ जे मकी नही तिरा
स ॥ ५२ ॥ गरीब जो जन हमरी सरनै है ॥ जाका
हूं मैं दास ॥ जगत अनाहद बंदगी ॥ अनंत लो
क परकास ॥ ५३ ॥ गरीब बेमुष षांनी जांहि
गे ॥ दोजक कूंद बहीर ॥ जाकूं नर नही सिमर
ते ॥ जिन यक्ऋघडया सरीर ॥ ५४ ॥ गरीब खासा

टीके महल मैं मगन जयाकूं मूढ॥ करसाहि
बकी बंदगी॥ जमसाहिबकूं हूढ॥ ५५॥ गरीब
दूस माटी के महल मैं॥ मन बांधी विषपोट॥
अहरनपर हीराधस्या॥ ताहि सहै घणाचोट॥
५६॥ गरीबका चाही रात्रिच दौह॥ नहीसहैघ
णाजार॥ असाधोह मन होइ दूरह्या॥ ले बालेक
रतार॥ ५७॥ गरीब हीरा घणकी चोटसहै॥ सा
चेकों नहीआंच॥ जोदरगह मैंक्याक रहि॥ जा
के संग हैंपांच॥ ५८॥ गरीबचेत सकें तौचेतीयो
सतगुरहेलादीन॥ बनवसती मैंनार हैं॥ लेजा
गा जंमबीन॥ ५९॥ गरीबचेत सके तौचेतियो॥
सतगुरकहाप्रकार॥ बिनाजगतिछूटैंनही॥
बजबिधजंमकी मार॥ ६०॥ गरीबसंतोसेती॥
ओलने॥ संसारीसें नेह॥ सोदरगह मैं मारीहै॥
सिरमैं देकरबेह॥ ६१॥ गरीबजगतगरीबी
बंदगी॥ संतोसेती हेत॥ जिनके निहचलवास
है॥ आसनदीजेसेत॥ ६२॥ गरीब कूटलवच
नकूं छाडदे॥ मगजमनीकों मार॥ सतगुरहेला
देतहैं॥ डूबेंकालीधार॥ ६३॥ गरीबदूसमाटी

के महिल में नांन रकी जे मोद ॥ राव रंक सब चलेंगे
आपे कूं ले सोध ॥ ६४ ॥ गरीब मात पिता सुत बंधु
वा ॥ देषैं ऊलके लोक ॥ रैन रदेष तफू की ए ॥ करते
हैं सब सोक ॥ ६५ ॥ गरीब महिल मंदेरी नी मस ब
चले कों न की साथ ॥ का गारै ला होर ह्या ॥ कछू न
चाल्या साथ ॥ ६६ ॥ गरीब गलतां मोगै बीच ल्या
माटी पिंड पिंजो ष ॥ आया सो पाया नही ॥ अन आ
ऐ कूं रोक ॥ ६७ ॥ गरीब योह मनमं जन की जी ए ॥
रैन रबारों बार ॥ सांई सें कर दोसती ॥ विसर जाह
संसार ॥ ६८ ॥ गरीब अंत समें की बात सुन ॥ तेरा
संगी कों न ॥ माटी में माटी मिले पोंने मिलहे पोंन
६९ ॥ गरीब रे बादर सब चलें धुंधके ॥ मनमा या चित
रांम ॥ दिषै सो रहता नही ॥ सपत दुरी सब धांम
७० ॥ गरीब जनम मजनन मके मेले हैं ॥ जनम जनम
की घात ॥ जिब उजन रसू झे नही ॥ ले चाले चा
र बरात ॥ ७१ ॥ गरीब जाते कूं न रजां नदे ॥ रहते
कूं ले राष ॥ सत सबद उर ध्यांन धर ॥ मुष सें कू
ड न भाष ॥ ७२ ॥ गरीब निरबांनी के नांव सें ॥ हि
ल मिल रहना हंस ॥ उर में करी ए आरती ॥ क

देन बूझे बंस ॥ ७३ ॥ गरीब पंछी उडे अकास कूं ॥ कि
तकूं की न्हा गवन ॥ योह मन असे जात है ॥ जैसे उ
दबुद पवन ॥ ७४ ॥ गरीब धंन संचे तौ संत को ॥ औ
रन तेरे कांम ॥ अगसठ तीरथ जे करैं ॥ नांही संत
समांन ॥ ७५ ॥ गरीब धंन संचे तौ सीलका ॥ दूजा
पर मसें तो ष ॥ ज्ञां न रतन अंजन नरो ॥ असलष
जां ना रोक ॥ ७६ ॥ गरीब दयाधरम दो मुकट हैं ॥
बुध बिबेक विचार ॥ हरद महाजरहू जीए ॥ सोदा
त्यार मत्यार ॥ ७७ ॥ गरीब नांव अमेपद निरमला क
अटल अनूप मएे ॥ योह सौदा संतकी जीए ॥ बन
जीब नज अलेष ॥ ७८ ॥ गरीब योह संजम सेलांन
कर ॥ योह मन योह बैराग ॥ बन बसती कितही
रहो ॥ लगो ब्रिहे के दाग ॥ ७९ ॥ गरीब राजकरा
मसें जालीए ॥ परपंची कूं मोहि ॥ अंत वषत आ
नंद होइ ॥ अटल जगत द्यों तोहि ॥ ८० ॥ गरीब
जा घट जगत बिलास है ॥ जा घट हीरा नांव ॥ सो
राजा प्रिथीपती ॥ जा घर मुकते दांम ॥ ८१ ॥ गरी
ब साहिब साहिब क्या करैं ॥ साहिब तेरे पास ॥ स
हंसहकी सों षोज ले ॥ उलट अपूठा सास ॥ ८२ ॥

गरीबगगनिमंडलमैंरमरह्या॥तेरासंगीसोइ॥
बाहरभीतरमेंहांनहै॥अंतरदीपकजोइ॥८३॥ग
रीबचितकेअंदरचांदनां॥कोटसूरससमांन॥
दिलकेअंदरदेहरा॥काहेपूजपषांन॥८४॥गरी
बरतनरसांइनांवहै॥मुकतामालमजीठ॥अं
धेकूंसूझैनही॥आगेजलेअंगीठ॥८५॥गरीब
नांवबिनानिबहैनही॥करनीकरहैंकोट॥संतो
कीसंगततजी॥विषकीबांधीपोट॥८६॥गरीब
झिलमिलदीपकतेजके॥दसोंदिसादरहाल॥स
तगुरकीसेवाकरैं॥पांवैंमुकतामाल॥८७॥गरी
बलेकालाहालीजीऐ॥लेकीजरीऐलार॥लेकी
बनजीकीजीऐ॥लेकाझाहूकार॥८८॥गरीबर
तनषजीनांनांवहै॥मालअजोषअपार॥येहसौ
दासतकीजीऐ॥डगनेतिगनैंचार॥८९॥गरीब
निरगुननिरमलनांवहै॥अबगतनांवअबंच
नांवरतेसोधनपती॥औरसकलपरपंच॥९०
गरीबऐसालाहालीजीऐ॥संतसमागमसेव॥
सतगुरसाहिबएकहै॥तीनूंअलषअभेव॥९१
गरीबचेतसकैंतौचेतिऐ॥कूकैंसंतसुमेर॥चौ

रासीकूं जा तहैं ॥ फेर सकैं तौ फेर ॥ ५२॥ गरीब मन
माया की दुगदुगी ॥ बाजत हैं बरदंग ॥ चेत सकैं
तौ चेती रे ॥ जांना उजे बिनंग ॥ ५३॥ गरीब नंग आ
या जगत में ॥ नंग ही हूं जाइ ॥ विचक रषा बीषा
लहै ॥ मन माया जर माइ ॥ ५४॥ गरीब फूक फाक
फार कक्कीया ॥ कहीं न पाया षोज ॥ चेत सकैं तौ चेती
रे ॥ रे माया के चोज ॥ ५५॥ गरीब नैंना निरमल नू
र के ॥ बैंना बांनी सार ॥ आरत अंजन की जीरे ॥ मा
रो सिर सैं जार ॥ ५६॥ अथ विचार कौ अंग लिष्य
ते ॥ ॥ गरीब ग्यांन विचार न ऊपजे ॥ क्या मुष बो
ले रांम ॥ संष बजावैं बांबई ॥ रते न निरगुन नाम ॥
१॥ गरीब ग्यांन विचार बिबेक बिन ॥ क्यूं दम तोरैं सा
स ॥ कहा होत हर नाम सैं ॥ जे दिल नां विसवास ॥ २
गरीब ग्यांन विचार बिबेक बिन ॥ क्यूं ओक तहैं सां
न ॥ दस जो जन जल मैं रहै ॥ जीजत नां पाषांन ॥ ३॥
गरीब ग्यांन विचार बिबेक बिन ॥ क्यूं रीक तषर
गीध ॥ कहा होत हरि नांम सैं ॥ जे मन नाहीं सीध
४॥ गरीब समझ विचारि बोलना ॥ समझ विचारे
चाल ॥ समझ विचारे जागना ॥ समझ विचारे ष्या

ल॥५॥गरीबकरैंविचारसमझकर॥बोजबूझ
काषेल॥बिनामथेनिकसेनहीं॥हैतिलमेंदर
तेल॥६॥गरीबजैसेतिलमेंतेलहै॥योंकायाम
धिरांम॥कोल्हूमेंपारेबिना॥ततनहीसहिकांम
७॥गरीबविचारनांवहैसमझका॥समझनप
रीपरष॥अकलबंदहोकैंघनाबिनाअकलका
लष॥८॥गरीबपारषकरैंसुपीरहैं॥बोलेसमझ
विचार॥नरसरूपनरहरषस्या॥अरसकलाक
रतार॥९॥गरीबबिनाविचारैंक्यालहै॥कसतूरी
नटकंत॥बिनबूझेनहीपाईहे॥गांमनगरमघ
पंथ॥१०॥गरीबसांनसफाकेचौकमें॥जहांवि
चारबिबेक॥ऊटलाईजीबकतेहैं॥निरमलअं
गाएक॥११॥गरीबबिनाविचारैंजूमहै॥सुरप
तसरीषाहोइ॥गोतमरिषगुरूवाबदे॥जाकी
पतनीजोइ॥१२॥गरीबबिनाविचारैंविचार
ता॥बैरागीसुकदेव॥सपतपुरीमेंगवनकर
दूजेजनकबदेह॥१३॥गरीबगोरषनाथसुना
थहै॥जंत्रमंत्रजोग॥सतगुरमिलेकबीरसे॥
काटदीरघरोग॥१४॥गरीबगंध्रबमैंनगदहा

न या॥ पुत्रहि पितासराप॥ बिना विचारैं बैठ नां॥
मुनेश्वर बसीलाप॥ १५॥ गरीब दुरबासा कूं तप
कीया॥ चौरासी सहंस परवांन॥ इंद्रलोक बंधेग
ये॥ खबर ऊचोंकूं मांन॥ १६॥ गरीब जादों गये वि
चार बिन॥ जुमें छपन कोड॥ दुरबासा सैं छलकी
या॥ लागी मोटी षोड॥ १७॥ गरीब दूजे बिजै थे पो
लीया॥ विज्ञान पोल दरवांन॥ बिन विचार राष
स भये॥ बड कलंक है मांन॥ १८॥ गरीब रांवन रूपा
के तप कीया॥ दीन्हे सीस चढाइ॥ दस मस्तक
बीसों भुजा॥ जो दीना सो पाइ॥ १९॥ गरीब लंक
राज रांवन दीया॥ षोस्या बिना विचार॥ पलक बी
च परलो भये॥ लंका के सिकदार॥ २०॥ गरीब सी
तां सतवंती सही॥ रांम चंद्र की नार॥ रांवन दां
ने छल लई॥ बिन हीं ग्यांन विचार॥ २१॥ गरीब
तीन वचन समझी नहीं॥ मेटे रांम की कार॥ स
मुंद सेत बंध बांध कर॥ हनवंत लंक सिंघार॥ २२॥
गरीब पारासुर सेवन करै॥ ऊट लक लाघ टमा
हि॥ पुत्री सों संजम कीया॥ ग्यांन विचार्या नाहि
२३॥ गरीब उद्दालिक के नासकेत॥ गये फूल ब

नराइ॥ पितावचन जदि मेटिया॥ तौ जंम नगरी
जाइ॥ २४॥ गरीब नारद मुनि निरगुन कला॥ त
तवेता तिहूं लोक॥ नरसे ती नारी जरो॥ यो हंदी
मा बन धोम॥ २५॥ गरीब पुत्र बहत्र वाक छल
नरसैं नारी की कह॥ मांनति जनहूं टरा नही॥ ततवे
ता मत हीन॥ २६॥ गरीब छिग नर मसैं वहिगरो
की कहा नही विचार॥ त्रिभवन नाथ विसंभरं॥
तार लात घात करे॥ २७॥ गरीब बिन विचारत न क्या
धरे॥ ऊट लाई पम प्रान॥ मांही सुध सरीर की॥
ता घट के साजान॥ २८॥ गरीब गोपी लुटाई क्रि
श न की॥ अरजन सरीखे संग॥ लष संधांनी बांन
कर॥ जीते बहु विधि जंग॥ २९॥ गरीब काबां गो
पी लूटीया॥ अरजन चले न बांन॥ होंनी होइ सु
होत है॥ समझबूझ यो हज्ञान॥ ३०॥ अथ उ
पदेस को अंग लिष्यते॥ ॥ गरीब मूल कवल उ
पदेस है॥ जे कोई समझे जीव॥ बिन उपदेस न पा
इये॥ अब गति सांई पीव॥ १॥ गरीब नारद के उ
पदेस तें॥ गोरज लागी हिग॥ जो करहै सो पाइहै
क्या हंस का बग॥ २॥ गरीब नारद के उपदेस

२२४

तें॥ गोरज लागी हिगा॥ शंकर से सुर ज्ञान कूं जस मां
सुरली ऐठगा॥३॥ गरीब अपनी करनी पाइहै॥ क
हा पिता कहा पूत॥ हिरनाकुस तो हर छले॥ प्रह
लाद जगत अनभूत॥४॥ गरीब सुकदेके तो सर
ल गया॥ गोरज दे ते ज्ञान॥ संषस मेदन पटतरै
ऐक नांव परवांन॥५॥ गरीब बिन उपदेस अचंभ
है॥ क्या जीवत हैं प्रांन॥ जगत बिना कहां गौर है॥
नरनां ही पाषांन॥६॥ गरीब बिन उपदेस अधंम ग
त॥ कहा रांवन की ठौर॥ मूल मदोवर मिल रही॥
उर मैं अजपा सोर॥७॥ गरीब कंटक जीव [illegible] कं बु
धियां॥ नां उपदेस लगंत॥ सार सबद सो जै नहीं॥
निंदे सांई संत॥८॥ गरीब उपदेसी अनरागीया॥ जा
के चरन जुहार॥ नांव रते निरमल कला॥ जाकै कि
मा लगार॥९॥ गरीब सरबस मूल संग है॥ सरबस मू
लं न्यार॥ उपदेस कला सें पाई ये॥ सुमरथ सिरज
नहार॥१०॥ गरीब अबगत पूरन ब्रह्म का॥ अरा
सी ता कर जाप॥ सुरत सुनि मैं थीर कर॥ बिनर
सना गुन लाप॥११॥ गरीब अगम कला उपदेस
है॥ जे कोई होइ मुरीद॥ तीन रोज ज्ञानी छिके ब

रसछतीसफरीद ॥१२॥ गरीबरोंकै सतगुर सकल
मैं ॥ सबद अतीतसलोंन ॥ पीर मुरीदांद्दिल मि
ले ॥ जूं पांनी गलनोंन ॥१३॥ गरीबपीर मुरीदां
आशिकी ॥ पाबध्यांनपरवेस ॥ गलतरहैं गुर
ग्यांन मैं ॥ राते सदा हमेश ॥१४॥ गरीबपीरमुरी
दांपर बहै ॥ रंगे अगमपदरंग ॥ नरमारे जरमै
नहीं ॥ सतगुरका सतसंग ॥१५॥ गरीबपीरमु
रीदांसालिकां ॥ राजिककैदरबार ॥ कसर नहीं
जाबीचहै ॥ जूं लोहा घणसार ॥१६॥ गरीबकू
टकाटसो तावदे ॥ है बेरे का लोह ॥ मिहर मुहब
त नाकरैं ॥ जासेंांकै सामोहि ॥१७॥ गरीबकूटला
ईकूं काटकर ॥ काढे घनकै गाइ ॥ सतगुर त्रिफ
ली गरसही ॥ देवैं अनगिन ताव ॥१८॥ गरीबकू
टकाट टूक गकरैं ॥ अहिरनघनकी चोट ॥ तो
डताड फिरफिरघडैं ॥ काढत हैं सब खोट ॥१९॥
गरीबकूट तहीं कसकै नहीं ॥ देवैं ताव अनंत
मिसरी मासेंां बिकत है ॥ असे ताइ रोसंत ॥२०॥
गरीबसो जातोंके लोहकों ॥ कूट टूक गमकी कु
सतगुर सिकलीगर दोऊ ॥ रोजगमैंपरबीन ॥

२१॥गरीबषेरेकीमिसरीघटी॥सहंसतावकसी
स॥ऊंतीमैंकरकाढही॥सोपूरनजगदीस॥२२
गरीबसिकलीगरकूंसिकलकर॥पांनीजलद
लकाढ॥लोहानांवपलटकर॥मिसरीअंजन
हान॥२३॥गरीबकूटलाईकूंकूटही॥ब्रह्मअ
गनकाताव॥अहरनअनहदपरधरें॥जांनह
थौडालाव॥२४॥गरीबऐसासतगुरजोमिले॥तौ
षेवाहोवैपार॥अरसपरसअहलादिजूं॥पुनि
रिपजनमननिर्धार॥२५॥गरीबकूलापिंगलाउल
टकर॥सुषमनघातजलाइ॥सिंधासीसुरबंधक
र॥चितघनचोटलगाइ॥२६॥गरीबयौहदपदे
सअगमकला॥ततबेतासुरबंध॥धमनीधांनउ
लटकर॥मिलासुषमनसिंध॥२७॥गरीबसुषम
नसूरतिसिंधघर॥सबदसमांनपिंड॥मनइछा
विचरंतहै॥सकलदीपनौषंड॥२८॥गरीबग्यारस
बारसतिरोदसी॥चौदसचौंकादीन॥पूंनोपरमा
नंदघर॥जहांहंसाकरलीन॥२९॥गरीबयज्ञनि
जबतबैरागहै॥विद्यानौधरमविसेष॥परमहंस
परनामकर॥परसोउरषअलेष॥३०॥गरीबसत

गुरचिसमें देषकर॥ मा रगमुरझाद पीर॥ सोकरनी
इकपलक मैं॥ नां वचेले बिन नीर॥ २१॥ गरीबस
तगुर नैं नानिरषकर॥ पारसपथरी मेल॥ नज
रफरोफे जोड ले॥ अली अनाहद बेल॥ २२॥ ग
रीब हाका झकमहि जूररक॥ अली जुडें तासू
र॥ कमंद कुटारी सें लडैं॥ जदमुबवर बेनूर॥ २
३॥ गरीब ब्रह्मदिसा हरदमरहै॥ हिरस करै नही
हैफ॥ पदका पोसत पीवही॥ अमल अनाहद कै
फ॥ २४॥ गरीब अली जुडै जु जारहैं॥ सांवंत संत
सुभट॥ लावैं मेल सबद सति॥ षूंट न जुडें अरठ॥
२५॥ गरीब साके सिकबंधी सही॥ सतगुर बारंबा
र॥ अली जुडे मुचते नही॥ लाजै बिरद उभार॥ २६॥
गरीब उपदेसी अजपा जपे॥ नांव निरंतर मूल॥ आ
प्पा मांहे रहत हैं॥ सबद न करैं अढूल॥ २७॥ गरी
ब उपदेसी महकंत हैं॥ कवल षिलं नहरि प्रीत
सां सासो गन तासकै॥ याह उपदेसी रीत॥ २८॥ ग
रीब कीना तकिया जीन मन॥ जीन सिज्या वाह सै
ल॥ सतगुर के उपदेस सें॥ हंसा पांवें गैल॥ २९॥
गरीब कीने जवरा गूंजही॥ कीन पकुपमकरंद

सतगुरु कै उपदेस तैं ॥ हंस लेत सुगंध ॥ ४० ॥ गरी
ब सालिक सिरजनहार कूं ॥ हरदम करले याद दि
मांनक सग गुर दीया ॥ घालत है सर सांध ॥ ४१
गरीब सालिक सिरजनहार है ॥ और दरजि कर
हिमांन ॥ सीरं सालिक सिद्दर वांन ॥ सुलतां नासु
लतांन ॥ ४२ ॥ गरीब पाष नूर जर पूर है ॥ सालिक
षेलम अपार ॥ पिंजरां नकूं साजहीं ॥ जे जे सिरजन
हार ॥ ४३ ॥ गरीब धंन सांई सुमरथ हूं ॥ जो चाहें सो की
न ॥ ऐक समुंदर सं सजीव ॥ कोई हंस कोई मीन ॥
४४ ॥ गरीब नांनां बरन बनाईया ॥ लष चौरासी जा
त ॥ करम कलम सैं लिष दीया ॥ लेष न राषी हाथ
४५ ॥ गरीब धंन सौ लेर हमांन हूं ॥ कीन्हां अजब बि
नान ॥ अलष पलक दर षलक है ॥ बांध्या सकल बं
धांन ॥ ४६ ॥ गरीब परमानंद की परष मैं ॥ है सजस
कल जहांन ॥ कादर कै कीमत सजै ॥ अब गति बे
उनमांन ॥ ४७ ॥ गरीब नांव गांव की गम नहीं ॥ त्रि
सतीस जसंसार ॥ द्वौ जिग कोई न आस गै ॥ सम चा
हैं दीदार ॥ ४८ ॥ गरीब दीदार दिवांने देषहीं ॥ दूरा
कवंद सुसकांहि ॥ जिनके सिर पर सांईयां ॥ वे नहीं

मंगन जांहि ॥४८॥ गरीब पलकौं अंदर उडु लगै
रतना लेहैं नैंन ॥ पीर मुरीदां पर बहै ॥ सम झबू
झ या हसैंन ॥४९॥ गरीब पाषप्रीत मजिन लषा
उठत लहि रगुर ग्यांन ॥ पूरन ब्रह्म प्रकासी या
क्या उजया गासिस ग्यांन ॥५०॥ गरीब बेदां ना नि
रडंदई ॥ जां न्याहै जगदीस ॥ यौह उपदेस समूल
संग ॥ सतगुर की बषसीस ॥५१॥ अथ विसवास
कौ अंग लिष्यते ॥ ॥ गरीब कहां पिंड कहां प्रांन
था ॥ कहां इंद्री मनमूल ॥ रचनहार के सेरच्या ॥ जा
कूं पलक न भूल ॥१॥ गरीब सिंध बिंद का साज है ॥
रचनहार परबीन ॥ आदि अंत अरधं गगनी ॥ सिरजे
देवा तीन ॥२॥ गरीब निरगुन सरगुन दूं कूं पषा
मात पिता का साज ॥ हारी जीती है नहीं ॥ उसी पुर
ष कौं लाज ॥३॥ गरीब जल की बूंद ज मा दूकर ॥ सा
जबनायासार ॥ जठरा अगन जलंत है ॥ जां रिव क्रि
नह जार ॥४॥ गरीब गोला का रगर बबंध्या ॥ हूंड मुं
ड गिरद कार ॥ समांधांन कूं समझ कर ॥ रच का ढे
दस द्वार ॥५॥ गरीब नैंन नाक मुष होठ कंठ ॥ सरव
न समझ नां ग्यांन ॥ माटी का पुतला पलट [illegible] जामैं जो

देप्रांन॥६॥गरीबउचामासदामीगुदा॥योहर्क
रूपकागात॥रचनहारविधनापुरब॥धातसमो
ईमात॥७॥गरीबनाडीनादबंधांनकरा॥जत
नबनायाजोर॥धंनसोलेमहबूबहूं॥दसमेंअन
हदघोर॥८॥गरीबपिंजरापीतबनाईया॥हाफि
जसुवटामांहि॥नौंदसमासउदररष्या॥अमीम
हींरसबांहि॥९॥गरीबअरधसीसउरधोंचरन
यहपिछलीतकसीर॥कूंजीनरकपठाईया॥ज
डीयाचरमजंजीर॥१०॥गरीबधरमराइकीबाल
से॥कूंजीनरकपडुंत॥सतगुरमिलेंकबीरसे॥तौ
जमजंजीरझडंत॥११॥गरीबजूनीसंकटजगर
गत॥सकलपडेहैंप्रांन॥थावरजंगमजीवसत्र
कूंजीनरकपियांन॥१२॥गरीबसुरनरगनगंध्र
पसत्रै॥षेलैंबारोंबार॥निरगुनपितासुर गु
नमहतारी॥अद्याकाअधकार॥१३॥गरीबबां
नपांनउजकोंदीया॥गरजकलाअनुसार॥बी
रसमुंद्रअरसगत॥पोषनप्रांनअधार॥गरीब
बांनपांनउजकोंदीया॥राजिकरिजकसंगीत
उहींउहींथागरजमें॥बादरङनीसांप्रीत॥१४॥

गरीब कुनी द्विवां नी दो जगनि॥ कहां कुनी सें नेह
जाका हूं विसवास नरष॥ जिन दीनी उर देह॥
१६॥ गरीब नर नाराइन रूप है॥ तूं मत जानै देह
जैसम कें तो सम झले॥ षलक पलक में षेह॥१७॥
गरीब कर विस वास उजास होइ॥ गरब मो चना
हंस॥ जूंनी संकट मेट हूं॥ बकर सिला कूं बंस॥
१८॥ गरीब अरधक पाली लटकता॥ औह दिन
कर ले यादि॥ जठरा सेती राषीया॥ ताहि सुरष
कर यादि॥१९॥ गरीब गुन मेट नगद है गती॥
ऐता आरथ बंध॥ जुग न जुग न रिछपाल है॥ साषी
सूरज चंद॥२०॥ गरीब असी महां रमदेत है॥ उद
रबी च अनूपांन॥ तिस सुमरथ की बंदगी॥ विस
र्या हूं सैतांन॥२१॥ गरीब घोर अंन मैं घोट कर
लीनी साष न राइ॥ सतगुर साहिब विसरीया
इब चाले कल कै जाइ॥२२॥ गरीब है फकीर
हरि नांम तज॥ नर सपरै कहीं और॥ सुष दे चौ
रासी परै॥ जूंनी जुगती गौर॥२३॥ गरीब करम
बंदना मोचहूं॥ नांव रटे जो प्रांन॥ जूंनी संकट ना
परै॥ सतगुर कै परवांन॥२४॥ गरीब तनमलू

कसूरत घडी ॥ उपज्या हित के हेत ॥ समझ बूझ
गुर ग्यांन ले ॥ बकर मिले हैं रेत ॥ २५ ॥ गरीब सू
रत सूरत त्रिकाल सत ॥ अपने ही उनहार ॥ सा
हिब कूं बंदा कीया ॥ भूल्या वारंवार ॥ २६ ॥ गरी
ब उंही उंही तूं करै था ॥ उदर गरभ के बीच ॥ अ
ब तूं भूल्या बंदगी ॥ जुग जुग जुग तें मीच ॥ २७ ॥
गरीब सुग्रत सिसना तो कूं लगी ॥ जटकत है दिन
रैंन ॥ थल का जल दी बंत है ॥ ऐक पलक नहीं चैं
न ॥ २८ ॥ गरीब कर विसवास अकीन रष ॥ धंनी क
है सो होइ ॥ त्रिकुटी मंजन ध्यांन धर ॥ देष परमप
द लोइ ॥ २९ ॥ गरीब प्रीत परमपद लाइले ॥ कर आ
कीन विचार ॥ सो लटकौं सिर दानिवै ॥ सो लेके द
रबार ॥ ३० ॥ गरीब संबजन म की भूल कूं ॥ छिन मैं
कर है छार ॥ दूजै की नहीं धारना ॥ सो लेका इकता
र ॥ ३१ ॥ गरीब दो जिक भिसत विसार दे ॥ उर मैं नां
व उमेज ॥ निरबांनी कूं निरषले ॥ चल सतगुर की
सेज ॥ ३२ ॥ गरीब हू आक मु आक मुसका तरक ॥ न
जर निरंजन नैंन ॥ पलकों पार षली जीऐ ॥ सम
झ बूझ या है सैंन ॥ ३३ ॥ गरीब पलक प्रीत मवस

तहै॥ अस मांनी अनुसार॥ सतगुर के उपदेस सैं॥
मौले का दीदार॥ ३४॥ गरीब पलप लपीन मदे
ब लेपांनी पवन सैं झीन॥ असे पद कूं परसले॥
जूं दरीया मैं मीन॥ ३५॥ अथ निसचे को अंग लि
ष्यते॥ १॥ गरीब अपने दिल साधू नही॥ वां को
दरस्या साध॥ कैसे सीग सैं जांनीये॥ गत कुछ अग
म अगाध॥ २॥ गरीब उसके मन की फुर तहै॥ अप
ने मन की नांहि॥ गनका चढी बिवांन मैं॥ अजामेल
की बांहि॥ ३॥ गरीब तीन धात हैं पिता की चार धा
तहैं माइ॥ सिष सामी इक सामिले॥ हंसा पऊ चेग
इ॥ ३॥ गरीब कि चे ऊपर नामदेव कूं॥ पाहन दूध
पिलाया॥ कैसे सीग मैं साहिब आये॥ नावल पो च
न पाया॥ ४॥ गरीब कि चे ही सें देवल फेस्या॥ पूजो
कूं न पहारा॥ नामदेव दरवाजे बैठ्या पंडित कूं पि
छ वारा॥ ५॥ गरीब कि चै ही सैं गऊ जिवाई॥ कि चे
व छरा चूंघे॥ दे मदि संत रजगत गई है॥ फिर कूं
न ल्यावो मूंगे॥ ६॥ गरीब गोपीचंद नर थरी जोगी
कि चै राज बिराजी॥ कि चे होइ ती मेड़े निपजे॥
क्या पंडित क्या काजी॥ ७॥ गरीब कि चे से ऊसीस

चढाया॥ चोरी संत सिधारे॥ बनियांकूं तहां पकर
लीया है॥ करदौं सी सत तारे॥ ८॥ गरीब पिता सम
नऔर माता नेकी॥ जिनके न्हिचा नारी॥ जहां क
बीर कमाल फरीदा॥ भोजन की नई त्यारी॥ ९॥ ग
रीब सेऊ के धड सीस चढाया॥ मीन मेष नहीं कोई
हाजनी जर पिले विसंभर॥ ऐसा न्हिचा होई॥ १०
तपियाके तोजक तककीनां॥ लोदीयाके घर आ
ये॥ ताडी घालली ये परमेसुर॥ न्हिचे हाथ बंधाये
११॥ न्हिचे ऊपर बालद आई॥ ओर केसो बनजारा
नौलष बोमी लद्या लदीनां॥ कांसी नगर मझारा
१२॥ न्हिचे पं डापांव बुझाया॥ जगन नाथके मां
हीं॥ अटका फूट पड्या पांवन परि॥ सरदहू बातन
नाई॥ १३॥ कांसी तजकर मघहर पोहचे॥ ऐसे न्हि
चा कही ये॥ सतगुर साष समझ ले नाई॥ थीर पकर
थिर रही ये॥ १४॥ कांसी मरे सु जाइ मुकतकूं॥ मघ
हर गदहरा होई॥ पुरष कबीर चले मघहरकूं॥
ऐसा न्हिचा जोई॥ १५॥ कांसीके सौ पंडितकूं कें॥ म
घहर मरे न नाई॥ वह तो प्रिथी सूची नांही॥ त्रिसं
षपड्या बिल लाई॥ १६॥ कांसी तजकर मघहर चा

ले॥कीयाकबीरपियांना॥चदरफूलविछोईछाजै
सबदेसबदसमांनां॥१७॥मघहरमैंतोकबरब
नाई॥बिजलीषांनपठांनां॥कासीचोराउफग
नजौरा॥दीनोंदीनदिवांनां॥१८॥कनकजनेऊ
कंधदिषायाहीरेदासरंगीला॥धरेसातसैअंग
स ताकूं॥ऐसीअदभुतलीला॥१९॥पीपातोदरिया
मैंकूदे॥ऐसाहिचाकहीऐ॥मिलेविसंभरनाथ
तासकूं॥झूठीजगतिनगहीरे॥२०॥सैंनाकेघरि
साहिबआई॥करीहजामतसेवा॥संतोकीतोसर
धाराषी॥पारब्रह्मनिजदेवा॥२१॥नरसीलाकीहुं
डीझाली॥कागदसीसचढाया धौतीकातो
व्याहिजयाजदि॥नातजगनकूंआया॥२२॥त्रि
लोचनकैजयाप्रितीया॥ऐसीजगतकमाई॥सं
तोकेतोनालफिरे॥औरतीनलोकठुकराई॥२३॥
जीवनमूलविसंभरसाहिब॥आतमदेवबिनानी
जहांजहांभीरपरीसंतनकूं॥छांनांहूधरपांनी
२४॥प्रहिलादिजगतिकूंदईकसोटी॥चौरासीब
रताया॥नरसिंघरूपधरेनाराइन॥बंजपारकर
आया॥२५॥धूकाध्यांनअपांनअगोचर॥छिजे

नमोले जाई॥ सपतपुरी पर तारी लागी॥ कोटकल
प जुग जाई॥ २६॥ नारद मुंभरी कअर व्यासा॥ गो
रष जनक बदेही॥ म्हादस कोट बंध जिन तोरी
जग तां परम सनेही॥ २७॥ सुलतांनी बाजीद फ
रीदा॥ दत्त तत तगलतांना॥ जदि राजा कूं नांवदी
या जद्दि॥ सब देस बदस मांनां॥ २८॥ कहा बंबांनो
कोट निमानों॥ राजा पारिग की न्हां॥ अकलअजी
त उदी तअध्यातम॥ गोरष से परबीनां॥ २९॥ वसी
ष्ट विसवामित्र माते॥ मन माया जिन जीते॥ काग
भुसुंड मन नही जाकै॥ अब गति आनंद चीते॥ ३०॥
रूमी रिष अर मारकंडको॥ ध्यांन लगाया पद
मैं॥ अबिनासी स्यों असे परसद्दे॥ ध्यांन लग्या अ
नहद मैं॥ ३१॥ मोरध्वज तांमरधुज राजा॥ अमरी
कअनरागी॥ हरीचंद पद हाजर नाजर॥ मनसैं
माया त्यागी॥ ३२॥ जोपत सुता के चीर बढारे॥ पीतं
बर पहिरांनां॥ अंनत जनहे कहू वार न पारा॥ हूसा
सन है रांनां॥ ३३॥ गरीब पंनो रगअसमेद मैं॥ सु
पच बजाया संष॥ जोपत के दिल मैं रथी॥ काढी
मन की बंक॥ ३४॥ गरीब न्हिचै ऊपनां वक्या॥ क

हाजूंनकहाध्यांन॥ भिक्षेबेतनिपाईया॥ कांकर
ब्रोढेजांन॥ ३५॥ गरीबकांमलुबधपार्षदरख्या
षेरविसंजररूप॥ ऐसाभिक्षाचाहीये॥ मांगेराजा
रूप॥ ३६॥ गरीबसीलसंतोषबिबेकबुध॥ दया
धरमइकतार॥ बिनभिक्षेपावैनही॥ साहिबका
दीदार॥ ३७॥ गरीसतबोलैसाचीकहैं॥ दिलमैंप
रैनबांक॥ मुज़राकीधोरामेतहके॥ अकलअकीनै
झांक॥ ३८॥ गरीबभिक्षेगोकलगूजरी॥ बिनहीबे
डेपार॥ पंडितकेदिलडूईथी॥ गुरूबारहिगरेवा
र॥ ३९॥ गरीबजूंमीरांराठौरकूं॥ राषीनहीउधार
पकरयालोहाजांनका॥ कोटरोकटकसिंघार॥ ४०
गरीबमेवनतेगथीकाठकी॥ जैसेचमकाबीज
ओटनहाराकोनही॥ अबगतअलषअछीज॥
४१॥ गरीबपूरनजाचेत्र्यांनकर॥ संगतकीयाजुहा
र॥ मोकोंपारसदीजीये॥ दालिदबिनार॥ ४२॥ गरी
बउकापूरनदसतमैं॥ सोचबनीबकनीर॥ धरती
कोषोदनलग्या॥ मेटीजनकीपीर॥ ४३॥ गरीब
पारसरहकाआंनकर॥ लगीतीरकीजाल॥ प
रसतहीसोनानया॥ कीन्हाकाबनिहाल॥ ४४॥

पूर

गरीब ऐसा किचाचाही रे॥ पारसौं न हाथ॥ जोरं
गैसो ई रंगे॥ सांई जेही दात॥ ४५॥ गरीब गगनि
मंजलक्ष निबरषीया॥ तीन बेर ततसार॥ सी
तालछमरागं मकी॥ मधमूरत करतार॥ ४६॥
गरीब सो मूरत कूं न पूजही॥ पथर मेला मार॥
सी तालिछमरागं मके लीजै चरन जुहार॥ ४७॥
गरीब॥ ग्यारह रूं जों परितपै॥ बादस मधमिलाप
छुछम मूरत सैं रते॥ ब्रह्मसबद गरगाप॥ ४८॥ ग
रीब कोडी धजी किस कां मका॥ सूमसिक लहै चा
ल॥ असी गंज बांटे नही॥ पश्यातासपर ज्वाल॥ ४९
गरीब दिल दांनी है तास का॥ सदा बरत मन मांहि
प्रिथी पारस होइ रही॥ ज्ञान वरषी तिस मांहि॥ ५०
गरीब सूरग जकूं बात हैं॥ विस मिल करै हमेस॥ द
हंदी नदी जकगरे॥ जमकूं पकरे केस॥ ५१॥ गरीब
करदी करद चलावही॥ जीव जूं न पर जाइ॥ मैं न बै
न सूं मिलरहा॥ छाती परदे पांइ॥ ५२॥ गरीब यज्ञ
तोका करकर महै॥ धरम नही यज्ञ पाप॥ दोही नबी
रसूल की॥ डूबेगे गरगाप॥ ५३॥ गरीब जीव हंसा जो
करत हैं॥ या आगे क्या पाप॥ कंटक जीव जिहां न मैं

जे प्या सिंघ अरसा प ॥५४॥ गरीब आतम परांनतु
धारही ॥ ऐसा धर मन और ॥ कोट यज्ञ असमेद
फल ॥ सबद समांनां और ॥५५॥ अथ पतब्रता
को अंग लिष्यते ॥ गरीब पतब्रता तब जांनीये
नांही आंन उपाव ॥ रोके मन रोके दिसा ॥ छाडे च
गत न जाव ॥१॥ गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ नांही
आंन उपाव ॥ रोके मन रोके दिसा दूजा नही ल
गाव ॥२॥ गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ मानै पीव
की आंन ॥ दूजे सें दावा नही ॥ रोके दिसा ध्यांन ॥३॥
गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ मांनै पीव की कांन
पीव जावे सोई करे ॥ बिन आग्यान ही मांन ॥४॥
गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ चरन कवल सें ध्यांन
रोक पलक भूले नही ॥ आंठो बषत अमांन ॥५॥
गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ जांने अपना पीव ॥
आंन ध्यांन सें रहत है ॥ चरन कवल में जीव ॥६॥
गरीब पतब्रता सो जांनीये ॥ जांने अपना कंत ॥ आं
न ध्यांन सें रहत है ॥ जो धारया सो पंत ॥७॥ गरीब प
तब्रता सो ईलबो ॥ जांने अपना कंत ॥ आंन ध्यांन
सें रहत है ॥ गाहक मिलो अनंत ॥८॥ गरीब पतब्र

ताकेब्रूतहै ॥ अपनेपीवसूंहेत ॥ आंनउपासी १२२
बहुमिलैं ॥ जिनसैंरहैसंकेत ॥ ९ ॥ गरीबब्रूता पत
सोजांनिये ॥ जाकेदिलनहीऔर ॥ अपनेपीव
केचरनबिन ॥ तीनलोकनहीठौर ॥ १० ॥ गरी
बपतब्रूताकेब्रूतमें ॥ कदेंनपडहैभंग ॥ जिन
काउबियांक्याकरै ॥ तिनकेभगतउमंग ॥ ११ ॥
गरीबपतब्रूताग्रहेजदै ॥ आंनउपासअनीत ॥
अपनेपीवकेचरनकी ॥ छाडतनांपरतीत ॥ १२ ॥
गरीबपतब्रूताकैब्रूतहै ॥ दूजादोजिगफंद ॥ अप
नेपीवकैनांवमें ॥ चरनकवलरहीबंध ॥ १३ ॥
गरीबपतब्रूताप्रसंगसुन ॥ जाकाजासैंनेह ॥ अ
पनांपतछाडैनही ॥ कोटमिलेजेदेव ॥ १४ ॥ गरी
बपतब्रूताप्रसंगसुन ॥ जाकीजासैंलाग ॥ अप
नापतछाडैनही ॥ पूरबलेबडभाग ॥ १५ ॥ गरीब
पतब्रूताप्रसंगसुन ॥ जाकीजासैंलाग ॥ अपना
पतछाडैनही ॥ जूंचकमकमेंआग ॥ १६ ॥ गरीब
पतब्रूताकेचरनकी ॥ सिरपररजलेधार ॥ अठ
सठतीरथसबकीये ॥ गंगान्हानकिदार ॥ १७ ॥ ग
रीबपतब्रूताकेचरनकी ॥ सिरपररजले[illegible]र्ष

पतब्रतापारब्रह्महै ॥ सतिगुरबोलैंसाष ॥१८॥ ग
रीबपतब्रताप्रनामकर ॥ पतब्रताकूंपूज ॥ पतब्र
तापारब्रह्महै ॥ सतगुरकूं लेबूझ ॥१९॥ गरीब
पतब्रताप्रनामकर ॥ पतब्रताकूंध्याइ ॥ पतब्र
तादीदारकर ॥ चौरासीनहीजाइ ॥२०॥ गरीब
पतब्रताचूकेनही ॥ कोटिकहोंहिअचूक ॥ और
डनीकिसकांमकी ॥ जैसासिंबलरूष ॥२१॥ गरी
बपतब्रताचूकेनही ॥ कोटिकमिलैंऊटल ॥ और
डनीकिसकांमकी ॥ जैसीपाहनमिल ॥२२॥ गरीब
पतब्रताचूकेनही ॥ धरअंबरधसकंत ॥ संतनछा
डेसंतता ॥ कोटिकमिलेंअसंत ॥२३॥ गरीबपतब्र
ताचूकेनही ॥ साषीचंदरसूर ॥ षेतचढेसैंजांनीए
कोकाइरकोसूर ॥२४॥ गरीबपतब्रताचूकेनही
साषीचंदरसूर ॥ षेतचढेसैंजांनियै ॥ किसकेमुष
परनूर ॥२५॥ गरीबपतब्रताचूकेनही ॥ जाकाइही
सुभाव ॥ जगतहिरंबरउरधरै ॥ जांवैंसरबसजा
व ॥२६॥ गरीबपतब्रताचूकेनही ॥ तनमनधनस
नजाव ॥ नांवअजैपदउरधरै ॥ छाडेमगतनजा
व ॥२७॥ गरीबपतब्रताचूकेनही ॥ तनमनजावो

सीस ॥ मोरधुज अरपन कीया ॥ सिर साटे जगदी
स ॥ २८ ॥ गरीब पतब्रता प्रहलाद है ॥ और पतब्र
ता कोइ ॥ चौरासी कठन तिरासना ॥ सिर पर बी
ती लोइ ॥ २९ ॥ गरीब रांम नाम छ्या नही ॥ अ
बगत अग मत्र गाध ॥ दावन चूका चौपटे ॥ पत
ब्रता प्रहिलाद ॥ ३० ॥ गरीब पतब्रता धू जांनि
ये ॥ और पतब्रता कौंन ॥ उतानपात का राज स
ज छ्या सकल अलौंन ॥ ३१ ॥ गरीब सोला सहं
स सहेलीयां ॥ छाडे मीर दिवांन ॥ बलक बुषा
रा तज गये ॥ देष अधम सुलतांन ॥ ३२ ॥ गरीब
सुलतांनी पतब्रत है ॥ छाड्या बलक बुषारा ॥ म
न मै जन अबगत रते ॥ सांई का दीदार ॥ ३३ ॥ ग
रीब गोरष तो पतब्रत है ॥ राष्या गुपता गोइ ॥
त्रिलोकी अरं जसज ॥ राष्या नाद सपोइ ॥ ३४ ॥
गरीब जनक बिदेही जांनीयो ॥ पतब्रता का
अंग ॥ द्वादस कोट दफतर चढे ॥ जीत चले जं
मजंग ॥ ३५ ॥ गरीब गोपीचंद भरथरी ॥ पत
ब्रता हैं दोइ ॥ गोरष से सतगुर मिले ॥ पथर
पाहन होइ ॥ ३६ ॥ गरीब बाराबर सविसंजरी

अलखरकिलाचिणाह॥ सतगुरसबदौंबंधीया
अमरजोहैं ताहि॥ ३७॥ गरीबसतगुरसबदन
उलंघीयां॥ जोधारीसोधार॥ कंचनकेमटकेभ्र
ये॥ निसतरगयाऊंम्हार॥ ३८॥ गरीबबाजीदा
बेजारमैं॥ तरकतोरककांन॥ मुतरमूहेकोंदे
षकर॥ छाड्यासकलजिहांन॥ ३९॥ गरीबबाजी
दाविचरह्यासही॥ मुतरमूहेकेनाल॥ चरनक
वलछाडिनही॥ जीवैंगेकैकाल॥ ४०॥ गरीबबा
जीदाविचरह्यासही॥ मुतरमूहेकूंदेष॥ चरन
कवलछाडेनही॥ मिलहैअलषअलेष॥ ४१
सवैया॥ ॥ बाजीदउनीसेतीविचरह्या॥ कादि
रऊरबांनसैंजारह्याहै॥ फंदटूटगयाजबऊट
मूवा॥ तहांपकरपलांनउतारह्याहै॥ १॥ अरवा
हिचलीककुकौंनगली॥ धौरापीराअककका
राहै॥ कहींपैरपियादापालिकीयां॥ कहींह
सतीकाअसवाराहै॥ २॥ सतबुदबुदाहअल है
हलषीया॥ सनजूगसकलपसारा॥ कपरेपा
रेतनसैंनारे॥ अबसतपरनामहमाराहै॥ ३॥
बीबीरोवैंचोलीधोवैं॥ तूंसुनभरतारहमारा

है॥ मैं नामांनो मससतांनजया॥ लाग्यानिज निक
टनिवारा है॥४॥ उर मैं अबिनासी आप अलह
मत गुरकूं पारउतास्या है॥ कहू गलकंटकडनां
यां हूती॥ ऐजहू बनकै सागारा है॥५॥ हमजा
नि लीया जगदीसगुरू॥ जिन अंतर महलस
वास्या है॥ ऊछतोलन मोल नही जाका॥ देष्या
नही दलका जारा है॥६॥ ऊछरूप न रेष बिबे
कलष्या॥ चाष्या नही मीवामारा है॥ गलतांनस
मांनस मांहरह्या॥ जो पिंड ब्रह्मंड सैं न्यारा है
॥७॥ सुरसें षसमा धलगाइरहै॥ देष्या इकअज
बहजारा है॥ कहै दास गरीब अजबदरीया
झिलमिलझिल वारनपारा है॥८॥ गरीब प
तब्रताके संग है॥ पारब्रह्म जगदीस॥ निराका
र निज निरमला॥ है सो बिसवेवीस॥५०॥ ग
रीब सकलसमांनाएकमें॥ ऐकसमांनाऐक
न्हिचा होइ तोपाइये॥ कहा धरत है भेष॥५१॥
गरीब पारब्रह्म की परष के॥ नैंन निरंतरना
ल॥ उरअंतर प्रकासिया॥ देष्या अबगतष्या
ल॥५२॥ गरीब पारब्रह्म की जात में॥ मिलती

हैसजजात॥ सुंनिसरोवर बिंबल जल॥ अरमअ
नूप मरात॥५३॥ गरीब आदि अनाहद अगम
है॥ पतब्रताके पास॥ सहंसकी सांत्र षटदल
थीर करौद मस्वास॥५४॥ गरीब कित पंछी का
षोजहै॥ कहां मीनी का पैर॥ दिल दरीयामैं पै
ठकर॥ देषो अबगतलहिर॥५५॥ गरीब अ
ललपंषके लोक कूं॥ जांनत है नही कोइ॥
अलल पंषका चीकला॥ घरपावैगा सोइ॥५६
गरीब त्रिकल बिकलसंसार है॥ पतब्रता दा
लथीर॥ अचल अनाहद अरस धुन॥ नोले
नही सरीर॥५७॥ गरीब लोहा कंचन होग
या॥ मिल पारस सतसंग॥ पोह मनपलटत
है नही॥ साधो के परसंग॥५८॥ गरीब जुगन
जुगनका ऊट है॥ जुगन जुगन का जिंद॥
पतब्रतासौ जांनीये॥ रहे मनोरथ बंध॥५९
गरीब बारह बांनी ब्रह्म है॥ सहंसकलाक
लधूत॥ पतब्रतासौ जांनीये॥ राषै मनसंजू
त॥६०॥ गरीब जों महदी के पांनमैं॥ लाली
रही समाइ॥ यों साहिब तनबीचहै॥ षोजक

रोसतजाइ॥८१॥गरीबबिनदरीयादादरजहां
बिनहीपरबतमोर॥बिनासांतमोतीजहां
बिनहीचंदचकोर॥८२॥गरीबबिनबादल
बीजलजहां॥बिनघनहरगरजंत॥बिनबा
गोकोहलजहां॥बिनहीफागबसंत॥८३॥गरी
बबिनहीबेलीपहुपहैं॥बिनाकेतकीमोर
बिसमूंदीदारहै॥बिनादमसतजहांचोर॥८४॥
गरीबबिनहीआसनबैठना॥बिनपगकाज
हांपंथ॥बिनहीघरेबोलनां॥समझेबिरला
संत॥८५॥गरीबबिंज्याबांनीपढैं॥बिनहीअं
गअनूप॥बिनमंदरजहांपौढनां॥अबगत
सतसरूप॥८६॥गरीबबिनहीधरनीदेहरा
जामैंअबगतदेव॥दिष्टमुष्टसैंरहतहै॥जा
कीकरलेसेव॥८७॥गरीबजूंसूवापिंजरब
सै॥बिडकीबंधलगाइ॥डरमतदिलअंदरर
है॥मंजारीनहीबाइ॥८८॥गरीबमारगबंक
पिछांनले॥उमनगमनदेखाम॥सुरतिसब
दकैसंगहै॥डरमतिदिलसैंकाढ॥८९॥गरी
बकोंनकवलमैंकालहै॥कोंनकवलसैंराम

कौंनकवलमैंजीवहै॥कौंनकवलविसरांम॥७०
गरीबकंठकवलमैंकालहै॥सहंसकवलद
लरांम॥हिरदेकवलमैंजीवहै॥अष्टकवल
विसरांम॥७१॥गरीबकौंनकवलअनभैउठै
कौंनकवलघरथीर॥कौंनकवलसैंबोलीये
कौंनकवलजलनीर॥७२॥गरीबमूलकव
लअनभैउठै॥सहंसकवलघरथीर॥कंठक
वलसैंबोलीये॥त्रिकुटीकवलजलनीर॥७३
गरीबकहांबिंदकीसिंधहै॥कहांनाडीकीनी
म॥कहांबजरीकाघाटहै॥कहांअमरीकीसी
की म॥७४॥गरीबत्रिकुटीबिंदकीसिंधहै॥नाभी
नाडीसीम॥गुदाकवलबजरीकही॥मूलहै
अमरीसीम॥७५॥गरीबकहांमनवरकाबास
है॥कहांमनवरकाबाग॥कौंनमनवरकारूपहै॥
कौंनमनवरकाराग॥७६॥गरीबहिरदेमनवरका
ते बासहै॥सहंसकवलदलबाग॥उजलहिरंबर
रूपहै॥अनहदअबगतराग॥७७॥गरीबना
सबासरकैजागने॥हासलबफानरेस॥नांव
बंदगीचितधरो॥हाजररहनापेस्त्रा॥७८॥ग

रीबसुरतिसिंघासनलाईऐ॥निरजैधुनअषं
ग॥चित्रगुपतपूछैंनहीं॥जंमकामिटैहैफंद॥७९
गरीबऐसासुमरनकीजीऐ॥कूंमकूंमधुनध्यां
न॥आठबषतअथकारकर॥पतबूतासोजां
न॥८०॥गरीबतारिंगमंत्रचितधरो॥छुछमसं
त्रसार॥अजपाजापअनादिहै॥हंसउतरहैपा
र॥८१॥गरीबअंजनमंजनकीजीऐ॥ऊलकर
नीकरदूर॥साहिबसेतीदिलमिलो॥रहासस
कलजरपूर॥८२॥गरीबहरदंमसुजराकीजी
ऐयोहततबारोंबार॥कबुधकटैकोंजीमिटै
घणांनांमीघणासार॥८३॥गरीबअजबहजा
रापऊपहै॥निहगंधीगलतांन॥पांचततनां
हीजहां॥निरजैपदपरवांन॥८४॥नेसनिरंत
रमरहा॥परगटक्यादिषलाइ॥दासगरी
बगलतांनपद॥सहजैंरह्यासमाइ॥८५॥अ
थहंसपरमहंसकीकथा॥।॥अदलीजोगकी
नीबसतअचलअनरागी॥जाकाध्यांनधरोब
डिभागी॥१॥बटकबीजकायोहविसतारा॥
जासेंउपज्यासकलपसारा॥२॥सोहंसबदह

मऊग मैं ल्याया॥ सार सबद हम गुपत छपाया ट
रू॥ ऊँ सोहं मांन मनी है॥ जाके ऊपर सबगंठी
है॥४॥ बटक बीज है हमरे मांही॥ हम हैं बट
क बीज की छांही॥५॥ सोहं ब्रह्मा सोहं इंद॥ सो
हं है भगवांन रचंद॥६॥ सोहं ओंकार सोहं सेस
सोहं का सोहं उपदेस॥७॥ सोहं चौबीसों औता
र॥ सोहं का है सब परवार॥८॥ सोहं रांवन सो
हं रांम॥ सोहं जपी रे आठों जांम॥९॥ सोहं कंस
के सचा नोर॥ सोहं की है ऊचीपौर॥१०॥ सोहं दु
रजोधन अरपंन॥ सोहं अठारा हसूहन षंन
११॥ सोहं राजा चकवेरी त॥ सोहं की सोहं प्र
तीत॥१२॥ सोहं है चौरासी सिध॥ सोहं सूरग
ऊ अरगध॥१३॥ सोहं सुरनर मुन जन जांन
सोहं का है सकल जहांन॥१४॥ सोहं का है सु
मिअर मेल॥ ऊँ सोहं का सब खेल॥१५॥ सोहं
गोपी सोहं कांन्ह॥ सोहं हंसा सब घट जांन॥१६
सो हं है सब की टपतंग॥ सोहं चौरासी लष सं
ग॥१७॥ सोहं चंदा सोहं सूर॥ ऊँ सोहं बाजै तूंर
१८॥ सोहं कं छ मंछ कूरंज॥ ऊँ सोहं सब आरं

ज ॥ १९ ॥ सोहं धर अंबर आकास ॥ सोहं पांच त
त का बास ॥ २० ॥ सोहं सहंस अगासी दीप ॥ सो
हं मोती जों सीप ॥ २१ ॥ सोहं सांत बूंद परकास
जों मैं सोहं का बास ॥ जों चौदह जवन विचार ॥
जों मैं है सोहं तार ॥ २२ ॥ जों काया मर मर जाइ
सोहं फिर फिर गोते खाइ ॥ २४ ॥ जों मारे जों मरे
सोहं लख चौरासी फिरे ॥ २५ ॥ जों सोहं की सन
बाजी ॥ सोहं पंडत सोहं काजी ॥ २६ ॥ सोहं धर
मराइस तक हीरो ॥ सोहं चित्रगुपत सो लहीरे
२७ ॥ सोहं आगे जों लेखा ॥ सोहं गुपत प्रगट स
ब देखा ॥ २८ ॥ धरम सोहं तप की न्हां जारी ॥ पु
रख विथ सीढी नीसारी ॥ २९ ॥ सोहं राज अरद
ल है जाइ ॥ जों उतपत परले जाई ॥ ३० ॥ जों सोहं
की है काया ॥ सोहं जीव जों है माया ॥ ३१ ॥ जों जि
सत बै ओं वस जन साजे ॥ जा मैं सोहं जाइ बिराजे
३२ ॥ जों बिनसे सोहं गिरे ॥ तातें जों मैं को परै ॥ ३३
सोहं सुर नर देव जित ग्यांनी ॥ सब घट जों की पह
चांनी ॥ ३४ ॥ जों आदि मूल है जाई ॥ सोहं बास म
धठहराई ॥ ३५ ॥ बिनसे फूल वासना जीवै ॥

ऐसे ज्ञान विहंगम पीवे ॥३६॥ अलल पंष जां कौं रे
विचारा ॥ उलटा जाइ मिले परवारा ॥३७॥ सार स
बद सैं सोहं बिस्या ॥ तातें लष चौरासी किस्या ॥
३८ ॥ मध्य है जिनकी ऐक टाटी ॥ हंस विछोरे बारह
बाटी ॥३९॥ सोहं गदहद होइ होइ जाई ॥ सोहं
इंद्र होइ बजराई ॥४०॥ सोहं रामचंद्र औतारा
सोहं स्यां न जरे नौं बारा ॥४१॥ सोहं लिछमन सो
हं सीता ॥ सोहं की कौं सोहं मीता ॥४२॥ सोहं म
न ओं है देही ॥ दजसैं न्यारा सबद सनेही ॥४३॥
सोहं नारी सोहं पुरषा ॥ सोहं हिंदू सोहं तुरका
४४ ॥ सोहं षोमछती सो जाती ॥ जौं सोहं की उत
पाती ॥४५॥ सपत अंद लग सोहं साजे ॥ ता पर
सार सबद धुन गाजे ॥४६॥ सोहं जल थल मई
अलमेला ॥ सोहं गुरू वा सोहं चेला ॥४७॥
ऐक सोहं जोंधर पूजा ॥ सार सबद का भेद न
सूज्या ॥४८॥ सोहं चित्र गुजी इककरता ॥ सो
हं जों चोले धरता ॥४९॥ जौं नां नां रूप विचारी
सोहं जों की है तारी ॥५०॥ सोहं अछर संध है ना
ई ॥ जिह अछर का भेद न पाई ॥५१॥ सोहं मैं

ये ध्रू प्रहलादा ॥ ओं सोहं बाद बिबादा ॥ ५२ ॥ सो
हं गोरष सोहं दत ॥ ओं सोहं मधहै सत ॥ ५३ ॥ सो
हं जनक बदेही सेवा ॥ पीछे जांन्या पद का भेवा
५४ ॥ सोहं सुषदे कूं गुर कीन्हां ॥ पीछे सार सब
द सत चीन्हा ॥ ५५ ॥ पीब्रत कूं सोहं सत जांन्या
ओं मांहे रहे बिवांना ॥ ५६ ॥ ग्यारा हस्त्र रब कीया
तप हंसा ॥ चीन्यां नहीं सबद परमहंसा ॥ ५७ ॥
रां मानंद ओं की आसा ॥ तातें बंधी सोहं स्वासा ॥ ५८
सपत अंग धर बाई देही ॥ तब जाइ पाये सबद
सनेही ॥ ५९ ॥ नामां छीपी ओं तारी ॥ पीछे सोहं ले
द विचारी ॥ ६० ॥ सार सबद जब पाया लोई ॥
आवागौंन बौहर नां होई ॥ ६१ ॥ सोहं सुलतांनी
परवांनां ॥ सोहं बाजीद दादू रवांनां ॥ ६२ ॥ सोहं
सू जा सेन जपंते ॥ सोहं पीपा धनी लषंते ॥ ६३ ॥
सोहं बालनीक रैदासा ॥ सोहं ओं सबद नि
वासा ॥ ६४ ॥ सोहं तार सबद धुन लागी ॥ आवा
गवन मिटी अनरागी ॥ ६५ ॥ सोहं जरथर गो
पीचंदा ॥ सोहं ऊपर अजब आनंदा ॥ ६६ ॥
आनंदी सों लागा नेहा ॥ बजर नहं साधरैहैं

देहा ॥ ६७ ॥ अजामेल गनका से त्यारे ॥ होते अघ पा
पी सिर जोरे ॥ ६८ ॥ सदना जात कसाई षूनी ॥ स
तगुर तार पलटिया पूनी ॥ ६९ ॥ करबा सासो हं
संग राते ॥ तातें हूं दुस्तरी सुर जाते ॥ ७० ॥ अनंत
लोक सोहं का ताना ॥ धरम राइ दुक हाक मञ्जा
न्या ॥ ७१ ॥ माया आदि निरंजन जाई ॥ अपने जा
ये आपे षाये ॥ ७२ ॥ ब्रह्मा विस्नन महेस रचे ला ॥ ओं
सोहं को है मेला ॥ ७३ ॥ सिष रसुन धरम स्रन्याई
जिन राक तमां दूनी महल पगाई ॥ ७४ ॥ ला षग ।
रासे नित उगहू ती ॥ माया आदि तषत की कूती
७५ ॥ सवा लाष घड़ी ये नित जांजे ॥ हंसा उत्तपत
परलो मांझे ॥ ७६ ॥ ऐती नांचे ला बटपारी ॥ सिर
जे पुरषा सिर जीनारी ॥ ७७ ॥ बोषा पुरषें जीव
भुलाये ॥ सुपना जिसतै बेकुंठब नाये ॥ ७८ ॥ यो
हरहट का कूवा लोई ॥ याग लबंध्या है सब
कोई ॥ ७९ ॥ कीड़ी कुंजर औ औतारा ॥ हरहट
डोर बंधे कई बारा ॥ ८० ॥ अरब अलि लइंदहैं
भाई ॥ हरहट डोर बंधे सब आई ॥ ८१ ॥ सेस म
हेस गनेसर ताई ॥ हरहट डोर बंधे सब आई

८२॥ शुकरादिक ब्रह्मादिक देवा॥ हरहट जोर बं
धे सब सेवा॥८३॥ कोटिक करता फिर तदेषा॥ ह
रहट जोर कहूं सुं निलेषा॥८४॥ चित्र गुजी जग
वांन कहां वें॥ हरहट जोर बंधे सब आवें॥८५॥
ये हहै षी षावुर का कूवा॥ यामें परया सु छिंचे
मूवा॥८६॥ मुनीयां सुरत सुहंगम डोरी॥ चलि
ये हंसा पुरष किसोरी॥८७॥ सोहं पर अदली का
डेरा॥ सतपुरष है साहिब मेरा॥८८॥ बंधो मूल ब
सुरत कों मोषो॥ बां मों पारा पवन अरोधो॥८९॥
पट न घाट लषा कूं हंसा॥ जित है अदली सत
गुर बंसा॥९०॥ मेरु डंड सूधा कर बैठो॥ त्रिकु
टी कवल में छिचै पैठो॥९१॥ इला पिंगला नली
नराई॥ सुषमन बेठ ठनासे आई॥९२॥ ग्यांन का
राछ ध्यांन की उरीया॥ ऐसे सोहं धागा जुरीया
९३॥ पिंड ब्रह्मंड अदली का तांना॥ जाका
नाम कबीर दिवांना॥९४॥ धरम राइ मारत है
बाटा॥ कोई इक हंस उतरगे घाटा॥९५॥ ब
जर पोल का षोलो तारा॥ चलदे षो हंसा दीप
हमारा॥९६॥ जहां ओंकार निरंजन नांही॥ बू

साविज्ञानबेदनहीजांही॥९७॥ अहांकरतानहीं
जांनभगवांन॥ कायामायापिंडनप्रांन॥९८॥
पांचततनींगुननाहीं॥ जोराकालदीपन
हीजांही॥९९॥ अमरकरूंसतलोकपठांऊ॥
तातेंबंदीछोरकहांऊं॥१००॥ हमहींसतगुर
षदरवांनी॥ मेटोउतपतआवाजांनी॥१०१॥
संषजुगनकालेषाल्यांऊ॥ अबगतकेकम
अदलबेगांऊं॥१०२॥ जोकोईकहमारामां
ने॥ सारसबदकूंनिसचैआंनै॥१०३॥ हमहीं
सबदसबदकीबांनी॥ हमअबगतअदली
परवांनी॥१०४॥ हमरेअनहदबाजेबाजें॥
हमरेकीयेसजेकछराजें॥१०५॥ हमहींदिल
दरियाहैंमाईं॥ हमहींबूंदसिंधघरछाईं॥१०६
हमहींलहिरतरंगउगावें॥ हमहींपरगट
हमछपजावें॥१०७॥ हमहींगुपतंगुहजगं
भीरा॥ हमहींअबगतिहमैंकबीरा॥१०८॥
हमहींमुरजीवामैंदांनी॥ हमहींसबदमहो
दधबांनी॥१०९॥ हमहींगरजेंहमहींबरषैं॥
हमहींजलथलजडेहमनिरषैं॥११०॥ हमहीं

कूंची हम मही ताला ॥ हम मही मांनक हीरे लाला १११
हम मही सराफ जौहरी कहीयां ॥ हम रे हाथ ले
षनसज बहीयां ॥ ११२ ॥ हम मही कोतवाल हैं का
जी ॥ हम मही जगल गुरू हैं बाजी ॥ ११३ ॥ ऐसज
षेल हमारे कीऐ ॥ हम सों मिले मुक्ति चैजीऐ ॥
११४ ॥ हम मही अदली जिंदा जोगी ॥ हम मही अमी
महारस जोगी ॥ ११५ ॥ हम मही पीवैं हम मही प्यावां
हम मही माती आंन चुवावां ॥ ११६ ॥ हम मैं कलाली
हम मही प्याला ॥ हम मही सोफी हम मतवाला ॥ ११७
हम मही बीर षुरदनी ल्याऐ ॥ हम मही आंन कला
ल कहाऐ ॥ ११८ ॥ हम मही आंन चवाई जाती ॥ ह
मही उतरे औघट घाटी ॥ ११९ ॥ हम राजे दन
जांने कोई ॥ हम मही सत सबद निरमोही ॥ १२०
ऐसा अदली दीप हमारा ॥ कोट बे ॐ ठहूम
की लारा ॥ १२१ ॥ संषपदम दूक फुनि परिसा
जे ॥ जहां अदली सतकबीर बिराजें ॥ १२२ ॥
कोटिक किंनर षरे कर जोरें ॥ कोटिक त्रिं मू
माथा मोरें ॥ १२३ ॥ जहां संषों ब्रह्मा बेद उचारी
कोटिक कई या रास बिचारी ॥ १२४ ॥ बाजे अ

घर मधर धुन बाजैं ॥ जहां अबगत अदली तख
त बिराजैं ॥ १२५ ॥ परमहंस पूरन परवारा ॥
अदली अमर की पिस नमारा ॥ १२६ ॥ गगनि
मंडल मैं हमरी सेली ॥ सऊतार की कीनी ठेली
१२७ ॥ परलो संष सुहंग मसूवा ॥ केते करता
होहो मूवा ॥ १२८ ॥ हम है अमर अचल अनरा
गी ॥ सबद महल मैं तारी लागी ॥ १२९ ॥ दास ग
रीब ऊक सकापेला ॥ हम अबगत अदली
का चेला ॥ १३० ॥ ॥ ॥ ॥

ਖਾਲਦੀਵੂਆ